एक गाय की आत्मकथा

गिरीश पंकज

एक गाय की आत्मकथा

(उपन्यास)

एक गाय की आत्मकथा

(उपन्यास)

गिरीश पंकज

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास
दिल्ली

प्रकाशक
नीरज कुमार, अध्यक्ष
राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास
206, द्वितीय तल, विराट भवन, कॉमर्शियल कॉम्प्लेक्स
डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47027661
ईमेल: dinkarsmriti@yahoo.co.in

संस्करण: 2014
सहयोग राशि: 200.00 रुपये

एक गाय की आत्मकथा (उपन्यास)
© सर्वाधिकार सुरक्षित
गिरीश पंकज

मुद्रक: ईनसाइड ग्राफिक्स, नई दिल्ली

समर्पण

बनारस से जुड़ी बचपन की
मधुर-स्मृतियों के साथ
मुन्नू, अरुण और
फुन्नू दीदी के लिए

ज़रूरी घोषणा

कुछ पौराणिक एवं ऐतिहासिक घटनाओं को छोड़ कर इस उपन्यास में वर्णित स्थान, नाम, पात्र आदि से संबंधित अधिकांश घटनाएँ पूर्णत: काल्पनिक हैं।

पुरोवाक्

गौ-ऋण चुकाने की असफल कोशिश

साहित्य में अब गौ-विमर्श भी होना चाहिए। इस दिशा में यह उपन्यास एक विनम्र पहल है।

अभी साहित्य में दलित और स्त्री-विमर्श का दौर है। अब तो विकलांग-विमर्श भी शुरू हो गया है। इन विमर्शों के कारण समाज में दलितों, स्त्रियों एवं नि:शक्तों को लेकर नज़रिया भी बदला है। एक समझ और सद्भाव विकसित हुआ है। बहुत-से बेहतर नतीजे सामने आ रहे हैं। लेकिन अब समय आ गया है कि हम लोग साहित्य में गौ-विमर्श भी शुरू करें। गाय की समकालीन दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। गाय को माता कहा जाता है, लेकिन इस माता की जितनी बुरी हालत है, उतनी अन्य किसी जीव की नहीं है। वैसे गौ-विमर्श कोई बिल्कुल नया उपक्रम नहीं है। हमारे वेद-पुराण तथा अन्य धार्मिक-ग्रंथों में गो-विमर्श होता रहा है, लेकिन उस गो-विमर्श में स्तुति-भाव ज्यादा है। उसका उद्देश्य यही था कि लोग गौ-अनुरागी बने रहें। लेकिन मेरे गौ-विमर्श में पीड़ा-भाव है, और मंशा यही है कि लोग गाय के सवाल पर कुछ गंभीर हों और पाखंड से ऊपर उठकर गाय की सेवा पूरे दिल के साथ करें।

वैसे तो मूलत: एक छोटा-मोटा व्यंग्यकार हूँ। ग़ज़लें भी कहता हूँ। बाल-साहित्य, नवसाक्षर-साहित्य भी लिखता रहा हूँ। विसंगतियों के विरुद्ध कलम चलाना मेरा धर्म है। लेकिन मैं धार्मिक कट्टरता के विरुद्ध हूँ। गाय को प्राय: हिंदू-आस्था से ही जोड़कर देखने की भूल की जाती है इसलिए पहले ही स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि प्रस्तुत उपन्यास मैंने एक कट्टर हिंदू होने के नाते तो कतई नहीं लिखा है। हिंदू होने के नाते भी नहीं लिखा। एक उच्चजाति में संयोगवश जन्मा, मगर लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी के आह्वान के बाद अपनी जाति नहीं लिखता। धार्मिक कर्म-कांड से भी मेरा कोई लेना-देना नहीं। विनम्रतापूर्वक कहूँ तो मन में बैठे ईश्वर से ही

मेरा रिश्ता है। बाहर स्थापित तैंतीस करोड़ देवताओं से मेरा कोई आत्मीय रिश्ता कायम नहीं हो सका। लोग चाहे मेरी आलोचनाएँ करें, लेकिन सच कहूँ, तो इन सब बातों में मेरा कोई विश्वास ही नहीं जम पाया। मगर एक विरोधाभास यह है कि गाय के मामले में कुछ भावुक हो जाता हूँ। 'धार्मिक' हो जाता हूँ : मेरा मानवीय-धर्म जाग्रत हो जाता है और कहता है कि भारत में गायों की दुर्दशा हो रही है, उसके ख़िलाफ कुछ करो। इसलिए जब कभी भी मौका मिलता है, गाय के सवाल पर कुछ न कुछ लिखता रहता हूँ। कभी 'गौ चालीसा' लिखी, कभी 'गौ आरती' तो कभी 'गौ गीत'। गाय के मामले में मेरी भावुकता का कारण यह है कि मैं भी उसे माँ की तरह सम्मान देता हूँ। गाय को माता कहा गया है: विश्वमाता। 'गावो विश्वस्य मातर:'। तथाकथित आधुनिक लोग ऐसा मानें या न मानें, लेकिन गाय हमारी एक तरह से माँ ही है। मैं यह भी मानता हूँ कि गाय में किसी भी देवता का निवास नहीं है। यह मिथक इसीलिए लोकव्यापी हुआ कि लोग गायों की पूजा करें, उसका आदर करें। उसकी हत्या न करें लेकिन हम सब देख रहे हैं कि प्रतिदिन लाखों गायें कट रही हैं। ऐसी स्थिति में भी यह कहना कि गाय के शरीर में एक-दो नहीं, पूरे तैंतीस करोड़ देवताओं का वास है, गाय के साथ भद्दा मज़ाक है। अगर गाय के शरीर में देवताओं का निवास है तो फिर सड़कों पर दर-दर भटकने वाली गायें और पॉलीथिन खा कर जान देने वाली गायों में विराजमान देवता कर क्या रहे हैं? देवता खामोश हैं तो मानव-समाज क्या कर रहा है? गौ भक्त हाथों में हाथ धर कर क्यों बैठे हुए हैं? माँ और देवताओं के लिए कुछ करते क्यों नहीं? वे इन देवताओं की दुर्दशा देख कर चुप क्यों है? इसलिए मेरा मानना है कि गाय को गाय ही रहने दें, उसमें देवताओं की तलाश न करें। हम केवल गाय को बचा सकें, तो यह इस माता पर बड़ा उपकार होगा। बेशक गाय केवल जीव है लेकिन वह कोई साधारण जीव नहीं हैं। वह अपनी बहुउपयोगिता के कारण, अपने दुर्लभ गुणों के कारण इतनी महान है, उपयोगी है कि उसे सामान्य जीव की तरह देखना बौद्धिक दीवालियापन होगा। गाय को अगर माँ कहा जाता है, तो वह इस पद के लायक है। मैं गाय को इसीलिए माँ मानता हूँ कि वह कई मामले में माँ से भी बढ़ कर है।

किसी विदेशी चिंतक की ये पंक्तियाँ कितनी सटीक हैं कि 'किसी भी समाज के चरित्र को समझने के लिए यह देखना जरूरी है कि वह अपने पशुओं के साथ कैसा बर्ताव करता है'। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने गुलामी के दौर में कभी कहा था कि गाय का सवाल मुझे स्वराज्य प्राप्ति से ज्यादा महत्वपूर्ण लगता है। गांधीजी के विचारों से कोई सहमत हो न हो, लेकिन मुझे उनकी बातों ने बहुत प्रभावित किया। गांधीजी 'हरिजन' और 'यंग इंडिया' में समय-समय पर गाय की दशा पर कुछ न कुछ प्रेरक बातें लिखते रहते थे। 'यंग इंडिया' में वे लिखते हैं, कि ''ईश्वर ने तुम्हें हमारा स्वामी इसलिए नहीं बनाया है कि तुम मुझे मार डालो। हमारा मांस खाओ, अथवा किसी अन्य प्रकार से हमारे साथ दुर्व्यवहार करो, बल्कि इसलिए बनाया है कि तुम हमारे मित्र तथा संरक्षक बने रहो।''

'हरिजन' में गांधीजी लिखते हैं कि ''गौ माता जन्म देने वाली माता से श्रेष्ठ है। हमारी माता हमें दो वर्ष तक दुग्ध पान कराती है और यह आशा करती है कि हम बड़े हो कर उसकी

सेवा करें। मगर गाय हमसे चारे के अलावा किसी और चीज़ की आशा नहीं करती। हमारी माँ प्राय: रुग्ण हो जाती है और हमसे सेवा की अपेक्षा करती है। गौ माता शायद ही कभी बीमार पड़ती है। गौ माता हमाारी सेवा आजीवन ही नहीं करती, अपितु अपनी मृत्यु के बाद भी करती है। अपनी माँ की मृत्यु के बाद हमें दफनाने या दाह संस्कार करने पर धनराशि व्यय करनी पड़ती है। गौ माता के मर जाने पर भी वह उतनी उपयोगी सिद्ध होती है, जितनी अपने जीवनकाल में थी। हम उसके शरीर के हर अंग का इस्तेमाल करते हैं। यह बात मैं हमें जन्म देने वाली माँ की निंदा के विचार से नहीं कह रहा हूँ, बल्कि यह दिखाने के लिए कह रहा हूँ कि मैं गाय की पूजा क्यों करता हूँ।'' गांधीजी ने गाय के बारे में अनेक बार लिखा और कहा है, लेकिन इस देश के लोग भी अजीब हैं। लोग गांधी 'को' तो मानते हैं, मगर गांधी 'की' नहीं मानते। अगर मानते होते, तो अपना देश सोने की चिड़िया हो जाता।

गाय का हमारे जीवन में कितना अहम योगदान है, इससे भला कौन अपरिचित है? गाय हमारी दिनचर्या का अनिवार्य अंग है। हम लोग गाय का केवल दूध ही नहीं पीते, उस दूध से बनी अनेक चीजों का सेवन भी करते हैं। यहाँ तक कि उसका गोबर और मूत्र भी हमारे काम में आता है। दवाई के रूप में। कहने का मतलब यह कि गाय के बगैर हमारी दिनचर्या ही पूरी नहीं होती। घी, दही, मठा, छाछ, पनीर से लेकर तरह-तरह की मिठाइयाँ हमारे जीवन का अनिवार्य हिस्सा हैं। इन सब का उपभोग करते हुए क्या हम गाय के ऋण से उऋण हो सकते हैं? दूसरों की बात नहीं करता, कम से कम मैं तो गाय के ऋण से उऋण होने की कल्पना ही नहीं कर सकता। गाय न होती तो हम न होते, इस सत्य को स्वीकार करने से परहेज नहीं होना चाहिए।

गाय हमें कितना कुछ देती है। गाय का दूध लोग पीते हैं लेकिन कुछ लोग उसका मांस भी खा लेते हैं। ये वही मांस-भक्षी लोग हैं, जो जीवन भर गाय का दूध-दही, घी या मिठाई आदि का भी सेवन करते रहे। इससे जी नहीं भरा, तो गो मांस-भक्षण भी किया। मतलब, जीते जी भी गाय काम की है और मरने के बाद भी वह मनुष्यों के काम आती है। ऐसी गाय को अगर हम माता न मानें तो क्या मानें ? लेकिन यह भी कटु सत्य है कि भारत में इस गौ माता की जितनी दुर्दशा हो रही है, उतनी दुर्दशा शायद ही किसी देश में होती हो। हम गाय को माता मानते हैं, विदेशी तो उसे केवल पशुरूप में ही देखते हैं, लेकिन हमसे कहीं ज्यादा गौ सेवा करते हैं। हमारी गायें सड़कों पर मारी-मारी फिरती हैं। कचरा खाती हैं। पॉलीथिनों में भरे जूठन को बेचारी गाय पॉलीथिन सहित खा लेती है और बीमार पड़ जाती है। हम अकसर यह समाचार पढ़ते हैं कि गाय के पेट का ऑपरेशन करके बीस-तीस किलो पॉलीथिन निकाला गया। सड़कों पर घूमने वाली गायें अकसर दुर्घटनाओं का शिकार भी हो जाती हैं। गाय की दुर्दशाओं की अनेक कहानियाँ हैं। गाय के प्रति लोगों के मन में करुणा जगे, इस भाव से मैं कुछ न कुछ करने की कोशिश करता रहा हूँ। अख़बारों में कभी कुछ लेख लिखे, तो कभी गीत। फिर एक दिन सूझा कि क्यों न एक उपन्यास ही लिखा जाए, जिसके बहाने मैं गौ माता की दुर्दशा का वर्णन करूँ और गौ के अर्थशास्त्र को समझने-समझाने की कोशिश करूँ। गाय

को हिंदुओं से जोड़ कर भी देखने का चलन है, लेकिन यह तथ्य हाशिये पर डाल दिया जाता है कि इस देश में अनेक ऐसे सिख-मुसलमान और ईसाई बंधु भी हैं, जो गो रक्षण के काम में तन-मन-धन से रत हैं। यह बड़ी बात है, क्योंकि गाय केवल हिंदुओं की नहीं, वह सबकी है। संपूर्ण मानवजाति की है।

जब मैंने गौ विषयक अध्ययन शुरू किया, तो सुखद आश्चर्य हुआ कि अनेकानेक मुगल बादशाहों ने अपने दौर में गो वध पर रोक लगा दी थी। गाय की हत्या को इंसान की हत्या के बराबर अपराध माना था। लिखित सबूत है कि पैगम्बर साहब ने गो हत्यारों को अपने समूह से अलग कर दिया था। गो हत्या को बढ़ावा मिला अँगरेज़ों के शासन काल में। इस उपन्यास के माध्यम से मैंने उन तथ्यों को सामने लाने की कोशिश की है कि जिससे यह धारणा दूर हो सके कि कुछ धर्मावलंबी गाय विरोधी हैं। मेरा अनुभव तो यही रहा है कि गो हत्या के पीछे अधिकतर पथभ्रष्ट हिंदुओं का ही हाथ होता है। वे अपनी बीमार गायों को कसाईखाने तक पहुँचाने के पापी हैं। कुछ हिंदू गाय का केवल दोहन करते हैं। वे पाखंड करते हैं कि गाय की सेवा कर रहे हैं। बहुत-सी गौ शालाओं में जा कर देखिए, गायें बदतर स्थितियों में रहती हैं। गौशाला संचालन करने वाले कुछ लोग गौशाला की आड़ में धंधा कर रहे हैं। प्रकट में लगता है कि वे गौ सेवा कर रहे हैं, लेकिन भीतर ही भीतर उन्होंने गाय को अपने लाभार्जन का साधन बना लिया है। गाय से लाभ कमाने में कोई हर्ज नहीं, गाय सेवा करने के लिए ही अवतरित हुई है, लेकिन बदले में हम उसकी सेवा-सुश्रूषा तो ठीक से करें। उपन्यास में मैंने इस विषय को भी छूने की कोशिश की है।

कुल मिला कर उपन्यास के बहाने मैंने गाय के ऋण से उऋण होने की असफल कोशिश की है। गाय ने हमें जो कुछ दिया है, उसके मुकाबले हम उसे कुछ भी नहीं दे सकते। यह उपन्यास एक बौद्धिक पहल भर है। मेरे पास और कुछ तो है नहीं कि गाय की वैसी सेवा कर सकूँ, जैसी सच्चे गोपालक करते हैं। बस, ये भाव-सुमन ही हैं, जिन्हें मैं गोवंश को अर्पित कर रहा हूँ। अगर यह उपन्यास कुछ लोगों के मन में गाय के सवाल को ले कर हलचल पैदा कर सके, पाखंडी गो सेवक अपना मन बदल सकें और गायों को कसाइयों को बेचने वाले तथाकथित हिंदू ऐसी गलती न दुहराने करने का संकल्प लें सकें, तो मुझे संतोष होगा। मेरी यही इच्छा है कि जीवित गोवंश या अन्य पशुओं का कटना रुके। स्वाभाविक मौत के बाद गोवंश का जो कुछ भी हो, जीते जी उसे कसाईखाने ले जाकर निर्ममतापूर्वक काटने देना एक बड़ा अपराध है। बुद्ध, महावीर और गांधी-विनोबा के अहिंसा प्रेमी देश में यह क्रूरता जारी है। गाँधी जयंती को पूरी दुनिया 'अहिंसा दिवस' के रूप में मनाती है और अपने देश में ही हिंसा को व्यापक स्वीकृति देख कर पीड़ा होती है। मुंबई के देवनार में तीन दशक से कसाईखाने के विरुद्ध आंदोलन चल रहा है। फिर भी कसाईखाना निर्बाध गति से गौवंश के संहार में भिड़ा है। यहाँ से गो मांस विदेश भेजा जाता है। देश में ऐसे अनेक कसाईखाने हैं जिनके कारण गो वंश दिनोंदिन कम होता जा रहा है। वैसे बहुत-से लोग इन सबके विरुद्ध आंदोलन भी कर रहे हैं। गौ यात्राएँ निकाल कर, गौ विषयक प्रवचन करके तथा समय-समय

पर गौ साहित्य का प्रकाशन करके वातावरण बनाने की कोशिश में लगे हुए हैं। कुछ गौशालाएँ तो अद्भुत काम कर रही हैं। ऐसे ही थोड़े-से लोगों या संस्थाओं के कारण गायें बची हुईं हैं। ये लोग प्रणम्य हैं। वे अपना काम करते रहें। उम्मीद है कि आज नहीं तो कल, कोई ऐसी सरकार जरूर आएगी, जो कसाईखानों को बंद करेगी और गोवंश वध पर रोक भी लगाएगी। आदि शंकराचार्य ने कभी कहा था - 'यद्गृहे दुःखिता गावः स याति नरके नरः' । मैं कहना चाहता हूँ - 'यदराष्ट्रे दुःखिता गावः स याति नरके शासकः'।

यह उपन्यास अपने लक्ष्य में कितना सफल हुआ है, यह तो सुधी पाठक ही बता पाएँगे। मुझे तो बस इस बात का संतोष है कि एक लेखक के नाते मैंने अपना फर्ज़ निभाने की विनम्र कोशिश की है। गायों की दुर्दशा देखकर अपने आप को रोक नहीं पाया। मुझे विश्वास है कि यह उपन्यास गो-विमर्श के लिए जागरूक पाठकों को बाध्य करेगा। गाय के प्रति आदर-भाव रखने वाले सुजन इस कृति को स्नेह प्रदान करेंगे। उनसे तो मैं कोई उम्मीद ही नहीं रखता,जो गाय को भोज्य पदार्थ समझते हैं। उन लोगों से भी अपेक्षा व्यर्थ है, जो इतने तथाकथित-आधुनिक हो गए हैं कि पशु-वध पर पीड़ा का अनुभव नहीं करते। मगर गो भक्तों और अहिंसा प्रेमी पाठकों से जरूर उम्मीद करता हूँ कि अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत कराएँगे। मैं आभारी हूँ प्रख्यात साहित्यकार-समीक्षक एवं भाषाविद् डॉ. चित्त रंजन कर का, जिन्होंने उपन्यास की पांडुलिपि को ध्यान से पढ़ा और महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए।

द्वितीय संस्करण की भूमिका

गौ माता की दशा पर केंद्रित मेरे उपन्यास 'एक गाय की आत्मकथा' को पाठकों का इतना-प्यार दुलार मिलेगा, इसकी मुझे रत्ती भर कल्पना नहीं थी। इसके प्रचार-प्रसार में लेखक होने के नाते मुझे ज़्यादा मशक्कत करनी पड़ी, लेकिन धीरे-धीरे गौ भक्त पाठकों तक पुस्तक पहुँचने लगी। अब इस पुस्तक का दूसरा संशोधित संस्करण प्रकाशित हो रहा है, जिसे राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास, दिल्ली प्रकाशित कर रहा है। न्यास के उत्साही कर्ताधर्ता, माटीपुत्र और पहली ही मुलाकात में दिल जीत लेने वाले भाई नीरज कुमार जी का किन शब्दों आभार ज्ञापन करूँ, यह समझ में नहीं आ रहा। बस, इतना ही कहना चाहता हूँ कि जब तक ऐसे निःस्वार्थी और गौ सेवा को समर्पित लोग विद्यमान हैं, गौ माता के प्रति जागरण का कार्य रुकेगा ही नहीं। मैं न्यास का कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने इस कृति को प्रकाशन के लिए चुना। राष्ट्रकवि दिनकर जी को पढ़ कर ही मैंने साहित्य के संस्कार ग्रहण किए, राष्ट्रवादी सोच विकसित हुई। ऐसे महाकवि की स्मृति में बने न्यास से मेरी कृति का प्रकाशन गर्व का विषय है। दिनकर जी ने सदैव किसानों के उन्नयन की चिंता की। मुझे पूरा विश्वास है कि न्यास के सौजन्य से प्रकाशित होने वाला मेरा उपन्यास अब और अधिक लोगों तक पहुँचेगा।

-गिरीश पंकज

एक

मैं गाय हूँ।...

हिंदुस्तान के कुछ भावुक लोग मुझे माता भी कहते हैं। गाय में भी माँ की छवि निहारने वाले महानुभाव इस निर्मम बाज़ारवादी दौर में 'आउट डेटेड' ही कहे जा सकते हैं: लेकिन ऐसे कुछ लोग अभी मौजूद हैं। यह इस देश की सांस्कृतिक परम्पराओं के ज़िंदा रहने का ही प्रतीक है। गऊ माता, गंगा माता, भारत माता और सरस्वती माँ : इन सब माताओं को लेकर आजकल नई पीढ़ी में कोई रागात्मक रिश्ता दीखता ही नहीं क्योंकि वैसा पावन परिवेश भी तो अब नहीं रहा। खैर, अपनी बात करूँ। मैं सदैव भारतीय दर्शन के केंद्र में रही हूँ। मेरे बारे में हजारों श्लोक कहे गए हैं। 'अर्थर्ववेद' का एक श्लोक सुना रही हूँ कि

''माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।

प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट।।''

..अर्थात् 'गाय रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री, अदिति पुत्रों की बहन और घृतरूप अमृत का खजाना है: प्रत्येक विचारशील पुरुष को मैंने यही समझा कर कहा है कि निरपराध और अवध्य गौ का वध न करो।' लेकिन अब तो प्रतिदिन गो-वध हो रहा है। न जाने कितने ही पवित्र ग्रंथों में मेरी स्तुतियाँ हैं। मुझ में तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं का वास बताया जाता है। इसकी भी बड़ी रंजक कथा है। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि एक बार समुद्र मंथन हुआ। मंथन से चौदह निधियाँ निकलीं। इनमें विष भी था और अमृत भी। लक्ष्मी भी थीं। वैद्य धन्वंतरि भी थे। ऐरावत हाथी, उच्चैश्रवा घोड़ा और एक गाय भी थी, जिसका नाम था कामधेनु। विष तो शंकर भगवान पचा गए। लक्ष्मी को विष्णु भगवान मिल गए। हर मनोकामना पूर्ण करने वाली कामधेनु को देवता रखना चाहते थे और ऋषि-मुनि भी। टकराव की नौबत आ गई। आखिरकार यह कामधेनु पर ही छोड़ दिया गया कि वह किसके पास रहना चाहती है। कामधेनु न तो देवताओं के पास रहना चाहती थी, न मनुष्यों के पास। उसने मुनि वशिष्ठ की तपश्चर्या के बारे में सुन रखा था। कामधेनु वशिष्ठ जी के साथ रहने पर राजी हो गई। लेकिन

देवता उस अद्‌भुत-अलौकिक गाय का साथ छोड़ना नहीं चाहते थे : सो, वे सब कामधेनु के विभिन्न अंगों में समा गए। इसीलिए गाय को सर्वदेवमयी भी कहते हैं। ''सर्वे देवा: स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौ:''। यह सुन कर अब तो मुझे बड़ी हँसी आती है। पता नहीं, यह कोरी भावुकता है या इसमें कोई सच्चाई भी है। जो भी हो, लेकिन पुराणों को रचने वाले महान ऋषियों ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि एक दिन ऐसा भी आएगा, जब मांस खाने के लिए गौ वंश काटा जाएगा। उन्होंने तो गौ-महिमा से ओत-प्रोत असंख्य श्लोकों की रचना कर के गाय के प्रति समाज में करुणा जगाने की दिशा में बड़ा काम किया, लेकिन लगता है कि ये पुराण अभी भी समाज की आत्मा में स्थापित नहीं हो सके हैं। वरना क्या कारण है कि प्रतिदिन लाखों गायें कटती हैं फिर भी इस महादेश में मुर्दा-शांति नज़र आती है? कुछ आवाज़ें उठती भी हैं, मगर नक्कारखाने में तूती बन कर रह जाती हैं बेचारी। कोई उग्र आंदोलन होता है, तो उसे गोलियों से छलनी कर दिया जाता है। बड़ी अजीब बात है: मेरे शरीर में रहने वाले तैंतीस कोटि देवता भी सड़कों पर मारे-मारे फिरते हैं और एक दिन किसी कसाईखाने में जा कर वे भी काल-कवलित हो जाते हैं। हँसती हूँ अपने आप पर। कैसी सर्वदेवमयी हूँ मैं कि अक्सर क़त्ल कर दी जाती हूँ? क्या यह देवताओं की कोई लीला है कि मैं तो निर्ममतापूर्वक काट दी जाती हूँ : मगर देवता बच जाते हैं? क्या इसलिए कि वे देवता होते हैं? और अगर ऐसा नहीं है, तो फिर पूछना चाहती हूँ कि यह कैसे संभव हो रहा है कि प्रतिदिन देवता कट रहे हैं और उनके भक्तगण खामोश बैठे हैं? यह बात कुछ समझ में नहीं आती। हजम ही नहीं होती। जो भी हो, जब तक मैं ज़िंदा रहती हूँ, तिल-तिल मरती हूँ। जब तक दूध देती हूँ, सबके लिए माँ हूँ, लेकिन जैसे ही बूढ़ी होती हूँ, मुझे भी बूढ़े माता-पिताओं की तरह घर से निकाल बाहर कर दिया जाता है। माता-पिता वृद्‌धाश्रम चले जाते हैं और मैं कसाईबाड़ा, कसाईखाना, स्लॉटर हाउस या कसाईघर, वधशाला, या जो भी कह लें। कोई फर्क नहीं पड़ता। नाम कुछ भी हो, काम तो होता है गाय-कटाई का।

..दर्दभरी है मेरी बदहाली की कहानी। हरिकथा की तरह अनंत।

'कामधेनु' अब 'दामधेनु' में रूपांतरित हो गई है। गाय अब केवल लूट का जरिया है। गाय के थन से दूध नहीं, अब रक्त टपक रहा है। गाय मांस का लोथड़ा भर है, जिसे खाने के लिए दुनिया भर की कुछ जीभें लपलपा रही हैं। गायों को क्रूर किस्म के लोग कसाइयों के हाथों बेच देते हैं। इन्हें बेचने वाला पंढरपुर के किसी मंदिर का कोई पुजारी भी हो सकता है: किसी गौ शाला का संचालक भी अथवा कोई और। बेशक गाय कभी गऊमाता थी लेकिन धरती माँ की तरह इस माँ की जो बुरी गत हो रही है, वही व्यथा-कथा सुनाना चाहती हूँ। बताना चाहती हूँ आँखों देखा हाल कि सुनो, कितना-कुछ दु:ख भोगता है गोवंश: इस आत्मकेंद्रित, स्वादकेंद्रित, अर्थकेंद्रित और पाखंडजीवी समाज में। भले ही वह हिंदू-समाज क्यों न हो। यहाँ अधिकतर लोग धार्मिक होने का स्वांग रचने में बड़े माहिर हैं। मगर वक्त आने पर अधर्म का काम ही सबसे पहले करते हैं। गाय से अगर दो पैसे मिल रहे हों, तो उसे किसी के भी हाथ में सौंप

सकते हैं। गाय की हत्या में हर धर्म के कुछ लोग लगे हुए हैं। गाय के मामले में यह देश धर्मनिरपेक्ष है। क्योंकि गोवध में सभी धर्मों के लोग संलग्न हैं। भूमाफिया अथवा कोल माफिया की तरह अब गौ माफिया भी पनप रहा है। मैंने यह महसूस किया है कि अधर्म के कामों में साम्प्रदायिक सद्‌भावना कुछ ज़्यादा गहरी दीखती है,क्योंकि तब ऊपरवाला नहीं, दिमाग़ में धन-देवता छाए रहते हैं। और जब धन-देव छाए रहेंगे तो स्वाभाविक है कि बुद्‌धि विकलांग हो जाएगी। रोज़ लाखों गायें कट रही हैं। खैर, आत्मप्रलाप न कर के अब मैं एक सुदीर्घ कथा सुना रही हूँ।...

..सदियों पुरानी बात है। विशाल भरतभूमि में देवपुर नामक एक सघन वन हुआ करता था। बहुत पहले इस जगह को शायद देवनार भी कहा जाता था। कालांतर में यह देवपुर हो गया।

देवपुर....कितना सात्विक लगता है यह शब्द। नाम से ही आभास होता है कि कभी कोई ऐसी जगह रही होगी, जहाँ देवता निवास करते रहे होंगे। लेकिन ऐसा कुछ है नहीं। देवपुर के जंगल में सदियों पहले कुछ दानवों का ही निवास था। कहते हैं कि लगभग पंद्रह-पंद्रह फुट ऊँचे होते थे ये दानव। ये दानव अकसर देवताओं को परेशान किया करते थे। स्वर्गलोक में जा कर उत्पात मचाते थे: देवताओं से लड़ते थे। अकसर परेशान किया करते और देवपुर में आकर आराम फरमाया करते थे। दरअसल सारे दानव स्वर्गलोक के 'कल्पवृक्ष' और 'कामधेनु' पर कब्जा करना चाहते थे। असुरगण वशिष्ठ मुनि की तलाश में इधर-उधर भटकते । उन्हें न पा कर दूसरे मुनियों पर अपना आक्रोश निकालते और उनकी हत्याएँ कर देते थे। असुर अपने उद्‌देश्य में सफल नहीं हो पा रहे थे। जब उन्हें भूख लगती थी, तो जंगल में विचरने वाले जानवरों को या जप-तप करने वाले साधुओं को खा जाया करते थे। असुरों को गो मांस बहुत ज्यादा पसंद था, इसलिए जैसे ही कोई गाय नज़र आती थी, वे उसका तत्काल भक्षण कर लेते थे। बहुत पहले जंगल में गायें भी विचरण किया करती थीं। यह उस काल की बात है, जब शेर और गायें एक ही जलाशय में पानी पीया करते थे। यहाँ रहने वाली गायें शेरों से नहीं, इन दानवों से भयग्रस्त रहती थीं। असुरों को कामधेनु नहीं मिली, तो वे लोक -धेनु यानी कि गाय को ही मार कर अपना गुस्सा निकालने लगे। असुरों से बचने के लिए गायें इधर-उधर भागती रहती थीं, लेकिन अंतत: असुर उन्हें उदरस्थ कर लेते थे।

..असुरों के भयंकर अत्याचार से त्रस्त हो कर एक बार गायों ने ब्रह्माजी से प्रार्थना की कि हमें इन दानवों से मुक्ति दिला दें। ब्रह्माजी गायों के आँसुओं को देख कर द्रवित हो गए और दानवों का संहार करने के लिए देवताओं को भेज दिया। भीषण देवासुर-संग्राम हुआ। अंतत: देवता ही विजयी हुए। कुछ गायों ने आत्म-बलिदान किया। उनकी हड्‌डियों से कुछ ऐसे चमत्कारिक बज्र बने, जिससे असुरों के छक्के छूट गए। समस्त मायावी असुरों का संहार हो गया। लेकिन ऐसा कहा जाता है कि उन मृत दानवों के रक्त-बीजों से ही सदियों बाद कुछ ऐसे

मानवों का जन्म हुआ, जो दिखने में तो बिल्कुल आधुनिक मनुष्यों-जैसे ही औसत कद-काठी के थे, लेकिन प्रवृत्तियाँ उन्हीं दानवी-संस्कारों से भरी हुई थीं। इन्हें हम कह सकते हैं, 'मानवाकार दानव'। इन आधुनिक मानवाकार दानवों की स्मृतियों में गौ-मांस का पुरातन स्वाद रचा-बसा हुआ था। गौ मांस खाए बिना उन्हें चैन नहीं पड़ता था। गौ मांस या किसी भी जानवर का मांस हो, उसके प्रति ऐसी ललक थी कि मत पूछो। कुछ लोग कहते हैं कि इन्हीं मानवाकार दानवों के आधुनिक वंशजों ने देवपुर में कसाईघर शुरू किया। बाद में उनके ही अन्य सगे-संबंधियों ने जगह-जगह कसाईखाने शुरू किए। उनका परिवार फैलता गया...फैलता गया। और आज तो यह विश्वव्यापी हो गया है। सिखों के महान गुरू गुरुनानकदेव जी चाहते थे कि बुरे लोग एक ही जगह बसे रहें और भले लोग खुशबू बन कर इधर-उधर फैल जाएँ। लेकिन अब तो उल्टा हो रहा है। अच्छे लोग कम हैं या फिर नज़र ही नहीं आते और बुरे लोग देश भर में इधर-उधर फैल गए हैं। हिंसक लोग पहले नंबर पर हैं।

तो ये है देवपुर का संक्षिप्त इतिहास। जंगल तो अब केवल अतीत की ही बात है। कभी हरीतिमा से आच्छादित सघन वन से ही देवपुर की विशेष पहचान हुआ करती थी, मगर अब कसाईघर ही इसकी पहचान है। आकाश में मँडराते असंख्य चील-कौवे और दमघोंटू बदबू को झेलने के लिए अभिशप्त लोग।

..देवपुर के पास ही था सरायपुर।

इस शहर पर आबादी का दबाव बढ़ा, तो भू-माफियाओं ने शहर को उजाड़ने के बाद गाँवों को भी शहरों में रूपांतरित करने का सिलसिला शुरू कर दिया। फिर वे धीरे-धीरे जंगलों की ओर बढ़े। देवपुर जंगल इन्हीं में से एक था। पहले सरायपुर जैसे कुछ शहरों के बहुत-से पेड़ और तालाब गगनचुंबी अट्टालिकाओं की बलि चढ़ गए। फिर कुछ गाँव शहर की बलि चढ़ गए। कचना, रायपुरा जैसे अनेक गाँव कल खोजने से भी नहीं मिलेंगे। गाँव खत्म हुए तो भूमाफिया लपलपाती जीभों के साथ धीर-धीरे जंगल की ओर बढ़े और देवपुर का जंगल भी साफ होता चला गया। बाद में वहाँ 'देवनार विहार', 'टाइगर पार्क', 'डीयर ऐंक्लेव', 'करुणा एवेन्यू', 'महावीर सिटी' जैसी कालोनियाँ बन गईं। ये सबकी सब 'हाइटेक' होती चली गईं। 'टाइगर' और 'डीयर' नाम से किसी को भ्रम हो सकता है कि शायद यहाँ शेरों और हिरनों के अभयारण्य होंगे, लेकिन ऐसा कुछ है नहीं। देवपुर में कभी शेर और हिरण भी विचरण किया करते थे, इसलिए उनकी याद में कालोनियों का नामकरण हो गया। यहाँ तो ऐसे-ऐसे लोग हैं कि मत पूछो। पहले किसी की जान लेते हैं, फिर उसी की मूर्ति लगा देते हैं। शेर और हिरण को देखने के लिए कॉलोनी के बच्चे चिड़ियाघर की सैर करने लगे। यह भी हो सकता है कि कल को बहुत-से वन्यजीवों के बारे में केवल चित्रों या इंटरनेट के माध्यम से बताया जाय। कोई बड़ी बात नहीं कि गायों के बारे में बताने के लिए बच्चों को किसी चौराहे पर ला कर गाय की मूर्ति दिखानी पड़े कि 'देखो बेटे, गाय ऐसी होती थी। वन्स अपॉन ए टाइम, इसे हम लोग

माता कह कर पुकारते थे। फिर धीरे-धीरे कुछ लोगों को इसका मांस अच्छा लगने लगा, तो लोग इसका दूध छोड़ कर इसे ही खाने लगे। इतना खाया..इतना खाया कि अब बेचारी केवल तस्वीरों में ही नज़र आती है। उफ्, ये पुअर काऊ।'

..देवपुर का पूरा जंगल बढ़ती आबादी की बलि चढ़ चुका था। तब मजबूरी में जंगल के बचे-खुचे खूँख्वार जानवर पलायन करके दंडकारण्य चले गए,जहाँ पहले से ही नक्काली जाति के खतरनाक लोग निवास कर रहे थे। नक्कालियों ने कभी पशुओं का शिकार नहीं किया। इनके निशाने पर केवल मनुष्य रहते थे। ये नक्काल जाति भी देवपुर के दानव-वंश से कुछ-कुछ मिलती-जुलती प्रवृत्ति वाली थी। इन लोगों को इंसानों की जान लेने में बड़ा मज़ा आता था। नक्काली लोग इंसानों की जान लेते थे और हिंस्र पशु इंसानों का भक्षण करते फिरते थे। इस तरह दोनों बड़े मज़े से जीवन बिता रहे थे।

देवपुर के बचे-खुचे जंगल में कुछ रक्तपिपासु भेड़िये, सियार और लोमड़ियों के परिवार तथा आकाश में मंडराती चीलें, गिद्ध और कौवे आदि ही बचे थे। इन जानवरों की मौज ही मौज थी, क्योंकि यहाँ कसाईखाना खुल गया था। लेकिन इन वन्य पशुओं की चिंता यही थी कि कल जब जंगल पूरी तरह साफ़ हो जाएँगे, तो हमारा क्या होगा। देवपुर के कसाईखाने में काम करने वाले लोग आए दिन जंगल में घूमते और बचे-खुचे जानवरों का शिकार करके उन्हें कसाईखाने पहुँचा देते थे, जहाँ जानवरों का मांस निकाला जाता था। जंगल में कभी भूले-भटके कोई गाय-बैल या भैंस नज़र आ जाए, तो उन्हें पकड़कर फौरन कसाईघर के हवाले कर दिया जाता था। यह सब देख कर पशुओं का समाज आपस में चर्चा करता कि 'उधर कसाईखाने की तरफ मत जाना। वहाँ बड़े-बड़े दोपाये दानव रहते हैं। सँभल कर...ये लोग हमें मार कर खा जाते हैं'।..

..पशुओं में भारी दहशत थी। वे आदमजात की गंध पा कर इधर-उधर दुबक जाते थे। उन्हें पता था कि देखते ही देखते बचा-खुचा जंगल भी साफ हो जाएगा और हम सब देवपुर के दानवों के पेट में चले जाएँगे। समझदार पशु तो दंडकवन चले गए, लेकिन मांस और रुधिर के शौकीन कुछ भेड़िए-सियार अभी जमे हुए थे। कुल मिला कर जंगल जंगल नहीं रहा। कल का जंगल अब शहर का अंतिम छोर हो गया था, जहाँ इंसानों ने बस्तियाँ बसा ली थीं। एक तरह से यह पूरे शहर का 'नॉनवेज़-परिसर' था। जैसे ही रात होती, जंगली जानवर झाड़ियों से निकलते और नालियों में पड़े रुधिर का पान करते। श्वान, भेड़िये आदि जीव वातावरण में फैली दुर्गंध को सूँघ-सूँघ कर मगन रहते थे। सब के सब कसाईखाने के बचे-खुचे मांस और हड्डियों से ही तृप्त होते रहते थे। रोज़ दावतें उड़ाते थे। 'देवनार विहार' के लोगों के मन में शुरू-शुरू में इन जानवरों का थोड़ा-सा डर था, लेकिन जैसे-जैसे इस जंगल में और इसके इर्द-गिर्द तथाकथित पढ़े-लिखे सभ्य मनुष्यों की कॉलोनियाँ बसने लगीं, तो भेड़िये और सियार आदि भी पलायन कर गए।

फिर भी शो-पीस की तरह जंगल का एक कोना लंबे समय तक आबाद रहा।

..देवपुर के इसी बचे-खुचे जंगल में अपनी जान बचाने के लिए मारी-मारी फिर रही थीं श्वेता और श्यामा। मेरी ही दो बहनें।

ये दोनों गायें सरायपुर के कुछ कसाइयों के चंगुल से छूट कर देवपुर की बची-खुची झाड़ियों में छिप कर जीवन गुजार रही थीं :लेकिन कब तक..? कसाईखाने के लिए रोज चार-पाँच हजार जानवरों की जरूरत पड़ती थी। गायें इस कटु-सत्य को जानती थीं कि किसी भी दिन अगर एकाध अनादमी की नज़र पड़ गई, तो दोनों कसाईखाने तक पहुँच ही जाएँगी।

श्वेता-श्यामा...भूखी-प्यासी, बदहाल.....

प्रतिदिन दोनों गायें दूर-दूर तक नज़रें दौड़ातीं कि कहीं कोई आदमजात तो नज़र नहीं आ रहा है। जब चारों तरफ सन्नाटा पसर जाता था, तब दोनों झाड़ियों से बाहर निकलतीं और आस-पास की बची-खुची घास और पेड़-पौधों के पत्ते खा कर फिर छिप जातीं थीं। भूख-प्यास लगने पर फिर बाहर निकलतीं। घास चरतीं, फिर कुछ ही दूर एक नाले का पानी पी कर फौरन यथास्थान छिप जातीं और जुगाली करती रहतीं। दोनों इसी बात से परेशान थीं कि पहले जंगली जानवरों से बचती थीं, अब इंसानों से भी बचना पड़ रहा है।

एक दिन श्यामा-श्वेता पास ही घास चर रही थीं कि कहीं से दो भेड़िए आ गये और उन पर हमला कर दिया। बड़ी हिम्मत के साथ श्वेता-श्यामा ने अपना बचाव किया। अपनी लम्बी-लम्बी सींगों के सहारे भेड़ियों को ही जख़्मी कर दिया। उस दिन के बाद से भेड़िये इन गायों के पास नहीं फटके। इस घटना के बाद गायों ने यही सबक लिया कि वक्त आने पर गऊ को भी अपनी सींगों का इस्तेमाल ज़रूर करना चाहिए। गायें सीधी-सादी होती हैं। वे अमूमन हिंसा नहीं करतीं, इसलिए तो लोग उनके साथ दुराचार करते हैं: उन्हें मारते हैं, उनका दूध भी निकालते हैं। लगता है कि अब गाय को अपनी जान खुद ही बचानी होगी। प्राण-रक्षा के लिए उसे अपनी सींगों के इस्तेमाल की प्रवृत्ति विकसित करनी होगी।

एक दिन की बात है। श्यामा की आँखों से आँसू बह रहे थे। यह देख कर श्वेता भी विचलित हो गई। वह समझ तो गई कि श्यामा क्यों रो रही है, फिर भी सांत्वना देने की गरज से वह बोली-

''क्या बात है दीदी? तुम तो बड़ी हिम्मती हो, फिर आज तम्हारी आँखों में ये आँसू...?''

''अब तो रोने के अलावा कोई चारा भी नहीं है, श्वेता।'' श्यामा ने अपने मन के दर्द उड़ेलना शुरू किया, 'रोने से दु:ख का काजल कुछ तो बह जाता है। खैर, मैं यही सोच कर दु:खी हो रही हूँ कि जानवरों की तो फितरत ही होती है कि वो हिंसा करें। उनके पास कोई और चारा भी नहीं। उन्हें तो अपनी भूख मिटानी है। लेकिन यह इनसान..? इसके पास खाने-पीने की कौन-सी कमी है? तरह-तरह के अनाज हैं, मौसमी फल हैं: फिर भी मानव हम निरीह-पशुओं के मांस के पीछे पड़ा रहता है। और मज़े की बात यह है कि बड़ी शान से कहता है, कि हम पढ़े-लिखे समझदार मनुष्य हैं। हुँह...मनुष्य है या मनुष्यनुमा जानवर..?''

''ठीक कहती हो दीदी, लेकिन अब क्या किया जा सकता है।'' श्वेता बोली, ''जब ये कुतर्की मनुष्य अपने को सभ्य कहता है न, तो उसकी बात सुन कर मुझे भी बड़ी हँसी आती है। यह कैसी सभ्यता है कि जो भी पशु-पक्षी दिखे, उसे गप्प-से खा जाओ? अरे, क्या तुम्हारे पास खाने-पीने की कोई कमी हो गई है? अनाज खाओ, फल खाओ। दूध पीयो। मलाई खाओ। दही खाओ। पनीर खाओ। दूध से बनने वाली मिठाइयाँ खा कर आनंदित रहो, लेकिन नहीं : मांस खाएँगे। जानवरों को काटेंगे, उन्हें पकाएँगे और फिर बड़े चाव से उदरस्थ करेंगे। जब आदमी मांस खा रहा होता है, उस वक्त उसकी मुखाकृति तो देखो: अज़ीबोग़रीब हो जाती है। लगता है कि बेचारा शताब्दियों का भूखा है। क्या यह उसकी आदिम भूख ही है, जो अब तक शांत नहीं हुई है?''

''बिल्कुल ठीक कहा तुमने।'' श्यामा बोली, 'जब ये आदमी जंगलों में भटकता था, तब तो स्वाभाविक रूप से असभ्य और जंगली था ही। उस वक्त उसकी मजबूरी थी कि पशु-पक्षियों को मारे और पका कर खा जाए। उसे भले-बुरे की कोई समझ ही नहीं थी। लेकिन अब तो - कहा जाता है कि - मनुष्य कुछ सभ्य हो गया है, किंतु उसकी हरकतें देखकर बिल्कुल ही नहीं लगता कि वह रत्तीभर का सभ्य हुआ है। चलो, मान भी लेते हैं कि वह तथाकथित रूप से सभ्य हो गया है लेकिन किसम-किसम के मांस के प्रति उसकी ललक देख कर बड़ी हैरत होती है, क्योंकि यह तो आदमखोर प्रवृत्ति है। हमारा शिकार शेर करे, भेड़िये करें या कोई दूसरा जानवर, तो बात समझ में आती है कि यह उनकी प्रकृति है : लेकिन क्या आदमी की भी कोई पशु-प्रकृति होती है? या फिर उसके अतिसभ्य होने की यह कोई नई संस्कृति है?''

श्वेता मुसकरा कर बोली-''संस्कृति मत कहो दीदी, विकृति कहो, विकृति। और इस विकृति को मानो सामाजिक स्वीकृति भी मिल चुकी है। लगता है, मनुष्य अपने जंगलीपन की याद बनाए रखने के लिए ऐसा करता होगा। इसीलिए तो बेचारा विश्व-माता कही जाने वाली गाय तक को नहीं छोड़ता। हिरण, चीतल, बकरी, सूअर, कुत्ता, तीतर, बटेर, तोता, मैना, कबूतर, मुरगा-मुरगी, मछली से लेकर चूहा, छुछुंदर, छिपकली और चींटी तक :जो भी सामने दिखता है, हजम कर जाता है। फिर भी कहता है कि हम सभ्य हैं। आधुनिक हैं। 'मॉडर्न' हैं। वाह रे सभ्य आदमजात....। सभ्य या कंदराकालीन मानव? उस युग में भी मनुष्य मांस खाता था। तब मजबूरी थी। उसे पेट भरना था। उसे पता ही न था कि अनाज क्या होता है। लेकिन अब तो खाने-पीने के कितने ही विकल्प हैं। और यह सब मनुष्य ने ही तो खोजे हैं। लेकिन मनुष्य, धन्य है तू...और तेरी ये नई सभ्यता। मांस सामने आ जाए तो तथाकथित आधुनिक मनुष्य फौरन प्राचीनतम हो जाता है। मनुष्य सूट-बूट और टाई पहने जिस तन्मयता के साथ मांस-भक्षण करता है, उसे देख कर यही लगता है कि वह कंदरा-युग में पहुँच गया है।''

श्वेता की व्यंग्यभरी बातें सुनकर बहुत देर के बाद श्यामा के चेहरे पर मुसकान उभरी। वह हँस पड़ी।

''दीदी, यह अच्छा किया कि तुम मुसकराने लगी। देखो, आखिर दुखी हो कर भी क्या होना-जाना है। ये आदमजात तो सुधरने से रही। जैसे शेर के मुँह में खून लग जाए तो वह आदमखोर हो जाता है, उसी तरह मनुष्य की जीभ में अगर एक बार भी जानवर का मांस लग जाए तो वह पशुखोर हो जाता है। फिर तरह-तरह के बहाने बना-बना कर जीवों को खाने की जुगत भिड़ाता है। कभी धर्म की आड़ तो कभी सेहत की। हम जैसों के लिए तो आदमखोरों और पशुखोरों से बच पाना बड़ा कठिन होता जा रहा है। 'बृहत्पतशर स्मृति' में लिखा है, कि गाय के स्पर्श मात्र से मनुष्य के सारे पाप खत्म हो जाते हैं।'स्पृष्टाश्च गाव: शमयंति पाप:'।'अथर्ववेद' कहता है, 'इमा या गाव: स जनास इंद्र:', यानी जिसके पास गाएँ हैं, वह इंद्र की तरह है।''

''यह भी तो कहा गया है, कि 'धेनुं सदनं रयीणाम्' अर्थात् गाय संपत्ति का घर है।'' श्वेता बोली, 'और यह भी कहते हैं कि 'अस्या: स्तनौ उर्जा दुहाते' जिसके थनों से केवल बल ही दुहा जाता है।''

''वही तो। बातें तो एक से एक हैं।'' श्यामा ने खीझभरी हँसी के साथ कहा, ''शुरू कर देंगे तो हजारों किस्से हैं, लेकिन हकीकत क्या है? हमको बेरहमी से काटा जा रहा है। क्या तुमको पता है, इस वक्त देश में राम और कृष्ण-कन्हैया की धरती पर छोटे-बड़े तीस हजार कसाईघर हैं? कहते हैं कि इन कसाईखानों में तीन-चार लाख पशु-पक्षी रोज़ काटे जाते हैं। जब भारत देश आज़ाद हुआ था, तो उस वक्त सौ करोड़ गौ वंश था, और आज़ादी के साठ साल बाद अब गो वंश घट कर आठ करोड़ ही रह गया है।''

''हूँ।'' इतना कहकर अचानक श्वेता को जैसे कुछ याद आया : उसने पूछा- ''अरे, हमारी उन बहनों को क्या हुआ होगा, जिन्हें कसाई पकड़ कर ले गए थे? हम लोग तो पता नहीं कैसे बच कर निकल आए।''

''हाँ, यह हमारी किस्मत थी, लेकिन जो गायें कसाइखाने पहुँची होंगी, उन बेचारियों के साथ तो वही हुआ होगा जो हमेशा से होता आ रहा है।'' श्यामा बोली, ''यानी काट डाला गया होगा सबको। टुकड़े-टुकड़े कर दिया होगा कसाइयों ने। उनका मांस विदेश भी भेज दिया गया होगा। भर गया होगा 'डॉलरों' से इस ग़रीब देश का ख़ज़ाना। और इस कसाईखाने के मालिक कठोरी सेठ को पता नहीं कितना पैसा चाहिए। कमाई के लिए क्या गो-वंश की हत्या ही बची थी? कसाईखाने में कटने के लिए जाने वाली गायों की चीखें अब तक मेरे कानों में गूँज रही हैं। लग रहा है कान फट जाएँगे। तुम्हारे कानों में भी तो रंभाने की आवाज़ें हलचल मचा रही होंगी?''

''हाँ बहन, खूब हलचल मचा रही हैं।'' श्वेता ने कहा, ''मैं भी चीखना चाहती हूँ। इतनी जोर से कि धरती थर्रा उठे। आकाश काँप जाए। हमारी आवाज़ उस कसाईखाने के दरवाजे तक जाए। मेरा बस चले तो मैं वहाँ जा कर अपना विरोध दर्ज करना चाहती हूँ, जहाँ रोज हजारों जानवर कटते हैं। लेकिन डर लगता है, कहीं वे निर्मम लोग हमारी जान भी न ले लें।''

बातचीत चल ही रही थी कि जंगल की नीरवता को भंग करने वाली कुछ आवाज़ें उभरीं।

श्वेता-श्यामा ने इस आवाज़ को ध्यान से सुनने की कोशिश की। धीरे-धीरे आवाज़ साफ

होती गई। यह ट्रकों की आवाज़ थीं, जो उनके निकट आती जा रही थी। दोनों गायें सतर्क हो गईं। झाड़ियों के पीछे छिप कर अपने को और व्यवस्थित करने की कोशिश करने लगीं। तभी दो ट्रक धूल उड़ाते हुए उनके सामने से गुजरे। दोनों ट्रकों में गायें भरी हुई थीं।

श्वेता का मन हुआ कि वह भी ट्रकों के पीछे दौड़ जाए। वह उठने भी लगी, लेकिन श्यामा ने उसे बैठे रहने का इशारा किया।

देवपुर में बूचड़खाना खुला, तो आसपास के गाँव-शहर के गो पालकों की जैसे लॉटरी ही निकल गई। अपनी बूढ़ी, बीमार या घायल गायों को लोगबाग किसी न किसी कसाई बेच देते थे। लोग भी बड़े अज़ीब होते हैं। वर्षों तक गाय का दूध पीते हैं लेकिन जैसे ही गायें बाँझ हो जाती हैं, कसाइयों को बेच देते हैं। कसाई इन गाय-बैलों को कसाईखाने पहुँचा देते थे। यह सब देख-सुन कर श्यामा बड़बड़ाती, 'बहन, कसाइयों की कोई जात नहीं होती। इन सबका धर्म है पैसा, ईमान है पैसा। इनका ऊपरवाला, गॉड, अल्लाह या भगवान कहें , सब पैसा है। गाय बेच कर कमाओ, चाहे गाय को काट कर। ऐसे या वैसे, सबको चाहिए पैसे, केवल पैसे। गाय या किसी भी पशु का खून बहाकर भी पैसा आता है तो भी कोई हर्ज नहीं। इन सब को इस बात का पक्का भरोसा है कि पूजा कर लेंगे, इबादत कर लेंगे, तो सारे पाप धुल जाएँगे। खुश हो जाएगा ऊपरवाला।''

ट्रकों से उड़ती धूल जब यथास्थान बैठ गई तो श्वेता ने मन में उमड़ती बातों को फिर सामने रखना शुरू किया, ''दीदी, गाय पालने वाले लोग हमें माता कहते हैं, क्योंकि हमारा दूध पीते हैं। दूध पीने के कारण ही उन्हें लगता है कि गाय माँ का ही एक रूप है, लेकिन जैसे ही हम बूढ़ी हो जाती हैं, दूध देना बंद कर देती हैं या बीमार पड़ती हैं, तब इन्हीं गौ पालकों को लगता है कि अब यह माँ बेकार हो गई है। बोझ बन गई है। बस, इसे बेचो। निकालो घर से। पाओ मुक्ति। ये कैसे हिंदू हैं, जो अपनी गो माता को ही चंद पैसों के लिए बेच देते हैं? वर्षों तक हमारा दूध पीते हैं, मलाई खाते हैं, घी खाते हैं, दही खाते, छाछ पीते हैं। हमारे कारण अपना स्वास्थ्य बनाते हैं, लेकिन जैसे ही हम अनुपयोगी नज़र आती हैं, हमें कसाइयों के हवाले कर देते हैं? वाह रे नालायक बेटो, तुम्हारे भीतर पैसों की ऐसी भयंकर भूख जगी है कि अपनी माँ को ही बेच खाए? क्या अपनी सगी माँ के साथ भी ऐसा व्यवहार करते हो? क्या यह एक तरह की दूधहरामी नहीं है?''

''अब तो यही हो रहा है।'' श्यामा व्यंग्यभरी मुसकान के साथ बोली, ''तू इस मनुष्य के पाखंड को नहीं जानती। वह अपने बूढ़े माता-पिता के साथ भी यही सब करता है। गाय को तो बेच देता है लेकिन माता-पिता जब बूढ़े हो जाते हैं, तो उन्हें बेचता नहीं, 'वृद्धाश्रम' भेज देता है, और वहीं रहने पर मजबूर करता है। अगर माता-पिता को बेचने से किसी बाज़ार में अच्छी दौलत मिलने लगे, तो हो सकता है, आदमी यह धंधा भी करने लगे। आदमी बड़ा ही

निर्मम जानवर है। माँ-बाप को या तो वृद्धाश्रम में छोड़ देगा या बीवी अथवा किसी और के झाँसे में आ कर उनका त्याग कर के कहीं और जा बसेगा। तो, इस आदमजात की तुम कुछ बात ही मत पूछो।''

''ठीक कहती हो दीदी।'' श्वेता गंभीर हो गई। कुछ देर सोचती रही फिर बोली, ''अपने देश में गौशालाएँ घट रही हैं और मधुशालाएँ बढ़ रही हैं। पुरानी कहावत याद आ रही है, कि 'गली-गली गो रस बिके, मदिरा बैठ बिकाय'। अब नई कहावत बनानी पड़ेगी कि 'जगह-जगह मदिरा बिके, दूध नज़र न आय, जिसे चाहिए दूध वो सिंथेटिक ही पाय'। कई गाँवों की हालत तो यह है कि वहाँ पाठशाला नहीं हैं, मगर मधुशाला जरूर है। इसी तरह गौशालाएँ बंद हो रही हैं और मधुशालाएँ खुल रही हैं। सरकार शराब बेच कर लाल हो रही है और धरती गाय के बिना कंगाल हो रही है। कसाईखाने बढ़ते जा रहे हैं। जब मैं ऐसी बातें सुनती हूँ कि कसाईखानों को 'हाइटेक' किया जाएगा, उसे और आधुनिक बनाया जाएगा, तो बड़ी हँसी आती है। अरे अधम, लंपट मनुष्य, पहले तू तो खुद ढंग से आधुनिक बन जा। मेरा तो साफ-साफ कहना है कि जिस दिन मनुष्य हिंसा छोड़ देगा, उसी दिन से वह सही मायने में आधुनिक होने की शुरुआत करेगा। मेरी नज़र में आधुनिकता की यही एक पंक्ति की परिभाषा है। पिछले पाँच हजार साल का इतिहास देखती हूँ, तो लगता है, अभी भी मनुष्य असली सभ्यता से काफी दूर है। वह सभ्यता की चर्चा करता है, मगर सभ्य होना नहीं चाहता। हर युग में कुछ सभ्य यानी अहिंसक आत्माएँ हुई हैं, लेकिन वे हाशिये पर ही रहीं। केंद्र में हिंसकों का ही वर्चस्व रहा। सुन ले पूरी दुनिया। हिंसामुक्त समाज ही सच्चा आधुनिक समाज है। अभी तो वह बहुत पिछड़ा हुआ है क्योंकि अभी भी उसका हिंसा से लगाव है। लोकतांत्रिक सरकारें भी प्रतिरोध की आवाज़ों का दमन करने के लिए अंततः हिंसा का सहारा लेती हैं। हिंसा मनुष्य के बर्बर, असभ्य और पिछड़े होने की निशानी है। हाइटेक मनुष्य कभी स्वाद के लिए या कभी धर्म-मज़हब के नाम पर पशु-बलि लेता रहता है। समाज को अगर सच्चा आधुनिक बनना है, तो उसे अहिंसक होना ही पड़ेगा। हिंसा, नस्लभेद और साम्प्रदायिकता....इन सबसे ऊपर उठ कर सोचने-समझने वाला समाज ही इस नई दुनिया को सुंदर, सभ्य और आधुनिक बना सकेगा।''

''वाह, क्या बात कही है। लेकिन इस दिशा में कोई सोचे तो।'' श्यामा ने गंभीर हो कर कहा, ''जिस देश की आज़ादी की लड़ाई के पीछे गौ मांस मुख्य मुद्दा था, उसी देश में खुलेआम गोवंश काटा जा रहा है। इस मुर्दा-समय में हम उम्मीद करें तो आखिर किससे करें? वह भावना तो जगे जो कभी महानायक मंगल पांडे में जगी थी और जिसके कारण 'गदर' की पृष्ठभूमि बन गई थी। मंगल पांडे को जब पता चला कि कारतूसों पर गाय की चरबी चढ़ी है, तो उसने अँगरेज़ों के ख़िलाफ़ बगावत कर दी थी। उसने अपनी जान गँवा दी, मगर चरबीवाले कारतूसों का इस्तेमाल ही नहीं किया। और आज...उसी देश में लोग पूरी की पूरी गाय खा जाते हैं। लोगों की आत्मा में स्वार्थ और स्वाद की चरबी चढ़ी है।''

''दीदी, यह वही देश है, जहाँ महान स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कभी कहा था कि 'जब देश आज़ाद हो जाएगा, तो सबसे पहले गोवध पर रोक लगाने वाला कानून बनेगा'। गांधीजी तो दो टूक कहते थे कि 'ऐसे स्वराज से मेरा कोई लेना-देना नहीं, जहाँ गो वध किया जाता हो। गाय का सवाल मेरे लिए स्वराज से भी बढ़ कर है'। लालबहादुर शास्त्री ने कहा था, 'गोवंश पर करोड़ों लोगों की आस्था है। इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती'। संत विनोबा भावे भी कहते थे कि 'पवित्र कुरान और बाइबिल दोनों ग्रंथों का मैंने अध्ययन किया है। इन ग्रंथों के अनुसार अप्रत्यक्ष रूप से भी गोहत्या करना जघन्य पाप है। उन्होंने कहा था कि गाय की उपासना हिंदू धर्म के सर्वश्रेष्ठ विचारों में से एक है। भारत में खादी के प्रश्न से भी बड़ा प्रश्न गाय के दूध का है। इसलिए हमें केवल गाय के दूध का ही सेवन करना चाहिए। गाय ज़िंदा रही तो ही हम, देश और हमारी सभ्यता ज़िंदा रहेगी। भारत में गाय हमारे परिवार का ही हिस्सा है। गाय और बैल ग्रामीण अर्थव्यवस्था के केंद्र बिंदु हैं। हम लोग गाय को पूजते हैं, मानते हैं, मगर उसे अपना मानकर उसकी उत्तम सेवा भी करनी चाहिए '।

श्वेता बोली, ''लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने भी कहा था, 'मेरे विचार से वर्तमान परिस्थिति में गोहत्या निषेध से बढ़कर कोई वैज्ञानिक तथा विवेकपूर्ण कृत्य नहीं है'। देवरहा बाबा ने कितने मार्के की बात कही थी कि 'जब तक गौमाता का रुधिर भूमि पर गिरता रहेगा, कोई भी धार्मिक या सामाजिक अनुष्ठान सफल नहीं हो सकता'। महान नेताओं और संतों ने भी एक से बढ़ कर एक बातें कहीं, अमूल्य विचार दिए, लेकिन बात बनी नहीं। एक दिन वे सब बेचारे चल बसे। बस, कटने के लिए केवल गो वंश ही रह गया है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भी कभी कहा था कि 'मैं आश्चर्यचकित हूँ कि ये पशु और पक्षी जिन्हें यदि संयोगवश सोचने-बोलने की क्षमता मिल जाए तो मनुष्य के बारे में क्या सोचेंगे, और उसके बारे में क्या बयान देंगे मुझे संदेह है कि उनका बयान मुनष्य के प्रति सद्भावनापूर्ण होगा। हमारी गौरवशाली संस्कृति और सभ्यता के बावजूद मनुष्य न सिर्फ बर्बर बना हुआ है, अपितु जिन्हें हम वन्यपशु कहते हैं, उनसे भी खतरनाक है'। न जाने क्यों हमारे देश में गो वध को लेकर कोई राष्ट्रीय कानून नहीं बना।''

'वैसे कानून तो बना है, लेकिन बड़ी चालाकी के साथ।'' श्वेता की बात सुन कर श्यामा ने व्यंग्य कसते हुए कहा, ''कानून बनाया गया और उसमें प्रावधान कर दिया गया कि बछड़े-बछड़ियों को कत्ल नहीं किया जा सकता। जवान गाय-बैल और भैंसों का भी कत्ल नहीं किया जा सकता'। इतना सुन कर कितना अच्छा लगता है कि कानून बन गया, लेकिन बड़ी चालाकी के साथ कसाइयों के लिए भी एक दरवाजा खोल दिया गया। कानून कहता है कि 'जो गाय-बैल बेकार, अनुपयोगी या बूढ़े हो चुके हैं, उनका कत्ल हो सकता है।' बस, हो गया काम। मिल गया लोगों को मौका। स्वस्थ गाय-बैल को भी बीमार बता कर उनका कत्ल किया

जाने लगा। कानून तो यह बनना चाहिए कि किसी भी किस्म के गोवंश को जीते-जी नहीं काटा जा सकता। तब तो इस देश की सच्ची आज़ादी का कोई मतलब होगा।''

श्वेता बोली, ''दीदी, तुमको तो पता ही होगा, कि 19 नवंबर, सन् 1947 को दातार सिंह की अध्यक्षता वाली एक सरकारी समिति ने गो वध पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की अनुशंसा की थी। उसका आज तक उसका पालन नहीं हुआ। इस देश के इतिहास में 23 अप्रैल, सन् 1958 के दिन को भी एक काला दिन कहा जा सकता है, जब पशुवध को व्यक्ति का मौलिक अधिकार निरूपित कर दिया गया था। उसके बाद से तो हिंसक लोगों को एक हथियार ही मिल गया। उस आदेश के बाद से ही देश में पशुवध जिस तेजी के साथ बढ़ा, वह अभूतपूर्व है। आज देश में लगभग छत्तीस हजार कसाईखाने हैं। कभी-कभी सोचती हूँ कि अपने देश के लोगों की करुणा भी गजब की है। अजब देश के गजब लोग हैं यहाँ। चिड़ियों को गरमी में पानी पिलाने के लिए कटोरे रखेंगे और शाम को ढाबे में जा कर तीतर-बटेर का मांस खाएँगे। भाई लोग शेर, सियार, मगरमच्छ आदि की लुप्त होती प्रजाति पर चिंतित रहते हैं लेकिन इस बची हुई प्रजाति की किसी को कोई चिंता नहीं। यह प्रजाति भी तो लुप्त होती जा रही है। इसे हर दिन काटा जा रहा है: पचास हजार या एक लाख। शायद इससे भी कहीं ज्यादा। कल को जब गाय लुप्त होने लगेगी तो 'गाय बचाओ अभियान' भी चलेगा। जैसे गंगा बचाओ अभियान चल रहा है। इस देश के लोगों का यह चरित्र बन गया है। पहले गंदगी करते हैं फिर चिल्लाते हैं कि 'अरे देखो, यहाँ कितनी गंदगी हो गई है'। गंगा जब गटर-गंगा बन गई तो उसे बचाने का अभियान चल रहा है। गंगा के साथ इतना दुर्व्यवहार किसने किया? क्या विदेशियों ने? अमरीका ने? पाकिस्तान ने? किसने किया? उन लोगों ने ही तो किया, जो पुण्य कमाने के लिए गंगा में डुबकियाँ लगाते रहे। मूर्ख इंसान उन प्रतीकों को समझ ही नहीं सका जो हमारे पुरखों ने गढ़े। गंगा को माँ कहा गया: इसलिए कि माँ का ध्यान रखा जाए। भगवान कृष्ण के साथ गाय है। माँ सरस्वती के साथ हंस है। लक्ष्मीजी के साथ उलूक है। माँ दुर्गा के साथ सिंह है। भगवान शंकर की सवारी नंदी बैल है। राम के साथ वानर सेना है। कृष्ण भगवान भी गौ प्रेमी थे। विष्णु भगवान की शैया भी शेषनाग हैं। यमराज की सवारी भैंस है। दत्तात्रय के साथ श्वान और दूसरे जानवर हैं। ब्रह्मा के साथ गरुड़ है। गणेश जी के साथ चूहा है। सिर्फ इसलिए कि लोग पशुओं को भगवानों का वाहन समझ कर उनकी जान न ले सकें। इसी तरह पर्यावरण को बचाने के लिए कितनी मनमोहक कथाएँ गढ़ीं गयीं। बरगद, पीपल, नीम, बेल, आँवला और तुलसी आदि कितने ही पेड़ -पौधों को पूजा से जोड़ दिया गया। नदियों और पर्वतों को पूजनीय बना दिया गया ताकि मनुष्य नदियों को साफ रख सके। लेकिन वाह रे मूढ़मति आधुनिक मानव, तू इन सब बातों को समझ न पाया और सबको नष्ट करने पर तुल गया।''

''दीदी, तुम तो बड़ी ऊँची सोच वाली हो? मुझे तो बड़ा आश्चर्य होता है कि ये सब बातें तुम कैसे सोच सकती हो?''

''यह मेरी सोच नहीं है रे। भगवान महावीर, बुद्ध, ईसामसीह, पैगम्बर मोहम्मद साहब, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, गाँधी, विनोबा और कवींद्र रवींद्र जैसे महापुरुषों की सोच है। मैं जहाँ रहती थी, वहीं पड़ोस में कोई सर्वोदयी रहता था। वह अकसर मेरे मालिक के पास आता था और उसे गाय के महत्व के बारे में बताया करता था। वह कहता था, 'यतो गावस्ततो वयम्'। जहाँ गायें हैं, वहाँ हम हैं। जैसा कभी इक्ष्वाकु वंश के किसी राजा को वशिष्ठ मुनि ने समझाते हुए कहा था कि 'हे राजन्, तुम अपनी इन सुंदर और प्रिय गायों को कभी मत बेचना। चाहे बूढ़ी हो जाएँ, कमजोर हो जाएँ। कुछ भी हो, एक भी गाय मत बेचना।' तो वह सर्वोदयी अनेक श्लोक भी सुनाया करता था। गाय के महत्व को समझाता था, लेकिन मेरे पालक सेठ दमड़ीमल पर कोई असर नहीं हुआ। एक दिन जब मैंने दूध देना बंद कर दिया, तो सेठ को समझ में आ गया कि मैं बेकार हो गई हूँ, : बस, उसने मुझे कसाई के हाथों बेच दिया। लेकिन मौका पाते ही मैं उस कसाई के चंगुल से निकल भागी और इस जंगल में तुझसे टकरा गई।''

''मेरी भी तो यही कथा है। कथा क्या, व्यथा है। तुम दमड़ीमल से बच कर भागी और मैं गोभक्त सेठ लक्खू के यहाँ से निकली। वह भी मुझे बेचने की तैयारी में था। मौका देख कर मैंने भी उसकी गौशाला छोड़ दी। वह गौ शाला नहीं, कसाईशाला थी। वह हम गायों को चारा नहीं खिलाता था, मगर दूध के लिए हमारे थनों में मुक्का ज़रूर मारता था। ज़ालिम कहीं का। खैर, उससे मुक्ति मिली। अब हम मिल गए। इसी बहाने हम एक दूसरे के आँसू तो पोंछ सकें गे। इस देश में कसाईखाने तेजी के साथ खुल रहे हैं। सरकारें भी चाहती हैं कि कसाइखाने खुलें। पशु कटें। और सबसे ज्यादा गायें कटें ताकि उनका मांस विदेश जाए और अधिक से अधिक डॉलर भारत आए।''

''लेकिन कुछ राज्यों में कसाईखाने अब तक नहीं खुले हैं। शायद जनविरोध के कारण ऐसा हुआ है।''

''हाँ, ऐसा होता है। सरकारें भी चालाक हैं न। जब उन्हें लगता है कि कसाईखाना खोलने या बंद करने से वोट पर असर पड़ सकता है, तो वे पीछे हट जाती हैं और बड़ी चालाकी के साथ गो हत्याओं पर मौन बनी रहती हैं।''

''काश, हम गायें भी वोट दे सकतीं।'' श्वेता के चेहरे पर अचानक व्यंग्यात्मक मुसकान उभरी। वह बोली, ''अगर गायें वोट दे सकतीं तो कितना अच्छा होता। तब हमारी जानें जरूर बच जातीं। इस देश में जो वोट दे सकता है, उसे ही संरक्षित करने की प्रथा-सी चल पड़ी है। उसे ही कुछ सुविधाएँ मिलती हैं। बाकी तो मानो कीड़े-मकोड़े हैं। जो वोट-बैंक मजबूत कर सकता है, वही सरकार के काम का है। जिनसे वोट नहीं मिलता, उनकी हालत देख लो। तिल-तिल मर रहे हैं बेचारे।''

श्वेता की बातें सुन कर श्यामा भी हँस पड़ी। बोली, ''हमारे साथ इस भरतभूमि में अच्छा मज़ाक चलता रहता है। हमें माँ कहा जाता है, पूजा भी की जाती है लेकिन हमारे बेटे ही हमको गलत हाथों के हवाले कर देते हैं। एक बार मैंने देखा, कचरे के ढेर पर कुछ गायें भोजन तलाश रही थीं और सामने दीवार पर नारा लिखा था, 'गौमाता, तेरा वैभव अमर रहे'। नीचे किसी सेठ छदामीराम का नाम लिखा था और नाम के साथ लिखा हुआ था, 'अध्यक्ष, सरायपुर गो सेवक संघ'। लिखने वाले ने दीवार पर क्या सोच कर यह नारा लिखा था, पता नहीं। ''गौ माता का वैभव अमर रहे'' तो क्या कचरे के ढेर पर? सोच-सोच कर बड़ी बेचैनी होती है।

धरती माता, गंगा माता और गऊ माता : इस देश में इन तीनों माताओं की हालत किसी से छिपी नहीं है। इंसानों की माताओं की तो खैर बुरी गत है ही। धरती के साथ जिस तेजी के साथ दुराचार हो रहा है, उसके कारण पर्यावरण बिगड़ रहा है। प्रकृति ने हमें कितनी सुंदर-शीतल हरियाली दी। इस बहुला-धरती में क्या नहीं है। लेकिन मनुष्य ने पागलपन की हद तक धरती का दोहन किया और हरी-भरी दुनिया को कचरे के ढेर में तब्दील कर के रख दिया। धरती से लेकर पर्वत तक प्रदूषित होते जा रहे हैं। धरती धरती न हुई, एक विशाल मुक्कड़ (कचरापेटी) में बदल गई है। गंगा की हालत ही देख लो: पापियों के पाप धोते-धोते गंगा बेचारी खुद इतनी मैली हो गई है कि उसका पानी पी कर मनुष्य तो क्या, जानवर भी बीमार पड़ जाएगा। और हम गायों की दुर्दशा की तो मत ही पूछो। ये नालायक बेटे हम पर डंडे बरसाते हैं। हमको लात मारते हैं। हमें दुत्कारते रहते हैं। और मज़े की बात, हमारा दूध भी पीते हैं। इतनी कृतघ्नता मैंने कहीं नहीं देखी।

किसी कुत्ते को रोटी डाल दो तो रोटी डालने वाले के सामने जीवन भर दुम हिलाता रहता है। लेकिन क्या इंसान कुत्ते से भी गया-बीता है? हमारे गोबर और मूत्र से कमाई भी करते हैं और एक दिन पूरी बेशरमी के साथ हमें बेच भी देते हैं। मुझे हँसी तब आती है जब गो पालक कॉमेडी करता है। वह गायों को बेच कर मंदिर जाता है और भगवान को प्रणाम करता है। सत्यनारायण भगवान की कथा भी करवाता है। वह पट्ठा उपवास भी करता है। दूर से देखो तो लगता है कि कितना धार्मिक है, अच्छा इंसान होगा मगर हरकतें शैतान सरीखी। सचमुच, इस पाखंडपूर्ण व्यवहार पर बहुत हँसी आती है। पता नहीं, यह मनुष्य अपने पापों से कभी मुक्ति पाएगा या नहीं। अगर मुक्ति का कहीं कोई प्रावधान है तो।''

''मुझे भी हँसी आती है। लेकिन अपन लोग हँसने के सिवाय और कुछ कर भी तो नहीं सकते।'' श्वेता बोली, 'अगर मनुष्य की जीभ इसी तरह लपलपाती रही तो एक दिन न गायें बचेंगी, न भैंसे, न बकरे-बकरियाँ और न मुर्गे-मुर्गियाँ। कुछ भी नहीं। आदमी अंडे खाता है और कहता है कि ये शाकाहारी हैं। सरकारी स्तर पर विज्ञापन किया जाता है, 'संडे हो या मंडे, रोज़ खाओ अंडे'। अब तय कौन करेगा कि कौन-सा अंडा शाकाहारी है और कौन-सा नहीं?

इस अंडे से चूजे निकलेंगे और इन अंडों से नहीं, कैसे पता चलेगा? खाने का बहाना चाहिए, बस। सब कुछ उदरस्थ कर जाता है यह पशुखोर मनुष्य। अपना पेट भरने के लिए मूक पशुओं के पेट चीरता है।''

श्वेता की बातें सुन कर श्यामा सिहर गई। एक बार फिर उसकी आँखें गीली हो गईं। रोते-रोते वह चीख-सी पड़ी-

''बाप रे, बड़ा खतरनाक प्राणी है मनुष्य? हिंसक पशुओं से भी ज्यादा खतरनाक।''

''हाँ। ठीक कहती हो तुम। इस पृथ्वी पर दुनिया का सबसे खतरनाक प्राणी कोई है तो वह मनुष्य ही है। काश, यह आदमी इनसान बन जाता। तब तो सचमुच पूजने का सामान बन जाता। सदियों से महापुरुषों ने आदमजात को इनसान बनाने के लिए न जाने कितने उपदेश दिए, लेकिन कुछ असर नहीं हुआ। वेद-पुराण हो, कुरानेपाक हो, पवित्र बाइबिल या गुरुग्रंथ साहब हो। सबने करुणा का संदेश दिया। सारे ग्रंथों का सार यही है कि हिंसा मत करो। जीवों पर दया करो। लेकिन वाह रे दोगला मनुष्य। उपवास करेगा, मत्था टेकेगा और ऊपरवाले को खुश करने के नाम पर मूक पशुओं की बलि ले लेगा। उन्हें खा कर सोचेगा कि उसका आराध्य प्रसन्न होगा। कुछ नादान और जड़बुद्धि किस्म के धार्मिक कहते हैं कि बलि-प्रथा हमारी परम्परा है। गोया इनका ऊपरवाला खाँटी हिंसा-प्रेमी है: बलि नहीं दोगे तो वह नाराज़ हो जाएगा और शाप दे देगा। छि:, यह कैसी मूर्खताभरी धार्मिकता है? जीव-दया करो तो पुन्न मिलेगा। जीव की बलि दोगे तो कोई देवी खुश नहीं हो सकती। कोई भी देवी बलि से खुश नहीं होती: अगर वह देवी है तो। देवी को खुश करने का इतना ही शौक है तो अपनी बलि दे दो। अपनी जान न दे सको तो अपने शरीर का ही कोई अंग क्यों नहीं चढ़ा देते? लेकिन मनुष्य को अपनी जान बड़ी कीमती लगती है। पशुओं की जान तो जान तो जान ही नहीं होती।''

''वैसे अधिकतर लोग भले होते हैं, लेकिन कुछ गुमराह मनुष्य लालच में फँस जाते हैं।'' श्यामा बोली, 'दीवाली के दूसरे दिन हम गायों की पूजा हुई थी लेकिन कुछ दिन बाद ही सेठ ने हमें बेच दिया था क्योंकि हम उसके लिए बेकार हो चुकी थीं।''

दो

श्यामा की आँखों में दीवाली का दूसरा दिन उभरने लगा।

''कार्तिक मास...शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा। गोवर्धन पूजा का दिन, जब मुझे और अन्य गायों को भी नहलाया-धुलाया गया था। गोबर से आँगन लीपा गया। सबके माथे पर लाल टीका लगाया गया था। दैहान में गायों के गले में सोहाई बाँधी गई। ...चमकदार कपड़े भी ओढ़ाए गए थे।.... उनकी आरती उतारी गई थी। चरण स्पर्श भी किया। एक-दूसरे को गोबर और गोमूत्र का तिलक लगाया गया। श्यामा को याद है कि उसके पैरों में पीतल के घुँघरू बाँधकर विशेष श्रृंगार किया गया था। यह सब चलता रहा और साथ ही राउत नाचा भी जारी रहा। एक राउत

कोई दोहा बोलता और जैसे ही दोहा खत्म होता, सारे राउत एक साथ नाचने लगते। गायों पर धान और फूल चढ़ाए गए थे। प्यारे-प्यारे गीत गाए गए। खूब जय-जयकार किया गया था। गोबर का गोवर्धन पर्वत बनाया गया। .....अहीरों ने बाजे-गाजे के साथ वातावरण को उत्सवमय बना दिया था। कुम्हड़ा, जिमीकांदा, कोचई आदि को मिला कर स्वादिष्ट सब्जी बनाई गई थी। कुछ लज़ीज़ पकवान भी बनाए गए थे। अन्नकूट उत्सव मनाया गया। गायों की पूजा करने के बाद सब लोगों ने गायों के साथ ही बैठ कर खाना भी खाया था। सब दूध-खीर का प्रसाद बाँटते हैं। तब लगा था कि हम गायों का भी कुछ अस्तित्व है।''

श्वेता बोली- ''छत्तीसगढ़ में गोवर्धन पूजा के साथ मातर उत्सव मनाया जाता है। यह उत्सव पुन्नी मेला तक चलता है। इसमें यादव समाज के लोग दोहे गा-गा कर कृष्ण भगवान का यशोगान करते हैं। राउत लोग शहर में घर-घर जा कर बाजे-गाजे के साथ दोहे पढ़ते हैं और नाचते हैं। बाँस के डंडे को कपड़े और अन्य चीजों से सजाया जाता है। राउत लोग रंग-बिरंगे परिधान पहन कर ऊपर कौड़ियों से सजी-सँवरी जैकेट भी पहनते हैं। सिर पर रंग-बिरंगी पगड़ी पहनते हैं और नीचे घुटनों तक की धोती। इसे चोलना भी कहते हैं। कमर पर घुँघरू वाली पट्टी बँधी रहती है। जब राउत मगन हो कर नाचते हैं, तब घुँघरुओं की आवाज वातावरण में नया रस घोलने लगती है। ये लोग पूरी तरह से उत्सवमग्न हो जाते हैं। 'अरर भाई हो' करते हुए झूम-झूम कर दोहे गाते हैं तो मस्ती-सी छा जाती है।''

''तुमको कोई दोहा याद आ रहा है? मुझे भी कुछ याद हैं। ''

श्यामा के सवाल पर श्वेता हँस कर बोली, ''हाँ, दो-तीन तो याद हैं। सुनाऊँ? तो सुनो,

तेंदूसार के लाठी भइया, ऊपर लगाए बूट।
एक बार के मारे ले, हाथी गिरे कि ऊँट।। ...
एक और सुनो,
तेंदूसार के लाठी भइया, सेर सेर घी खाय।
बैरी मन के मुंड परै तो, राई छाई हो जाय।। ...
एक और सुना देती हूँ,
गोरिया कपड़ा बामन पहिरे, करिया पहिरे बिंझवार रे।
रंग-बिरंगा राउत पहिरे, मानैं दीवारी तिहार रे।''

इतना बोल कर श्वेता हँस पड़ी। फिर बोली, ''आज लग रहा है कि हम लोग सचमुच गोवर्धन पूजा का आनंद ले रहे हैं। दीदी, अब आपकी बारी है। आप भी सुनाइए दोहे।''

श्यामा बोली, ''तो सुनो,

..भले गाँव अर्जुंदा भइया, बहुतेक उपजे बोहार रे।
पहली दोहा पारथौं भइया, सब देवता ल मोर जोहार रे।...
..का बाजा बजाये संगी, मोरा मन नहिं आय रे।
अइसे बाजा बजा दे संगी, डंडा में ताल मिलाय रे।''

श्वेता बोली-''अभी भी हमारे कुछ गाँव बचे हुए हैं, जहाँ अपनी प्राचीन संस्कृति के दर्शन हो जाते हैं। गाँवों में गायों की पूजा होती है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा हम गायों से ही मिलता है। गाँव के लोग हमारा महत्व समझते हैं। वरना अब धीरे-धीरे लोग अपनी परम्परा और संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। शहरों की बुरी हालत है। शहरों का असर अब गाँवों पर भी हो रहा है। गोपालन में लोगों की रुचि कम होती जा रही है। क्योंकि यह मेहनत का काम है। लोग गड्ढा खोदने की मजूरी कर लेंगे, मगर गाय की सेवा में तकलीफ होती है।''

श्यामा बोली- ''शहरों की तो बात ही मत करो। वहाँ लोग विदेशी नस्ल के कुत्ते पालने में रुचि लेते हैं। कुत्ते...जो मालिक के साथ कारों में घूमते हैं। मालकिन की गोद में कुत्ता होता है और उसका बच्चा नौकरानी की गोद में पलता है। सोचो, जो माँ अपने बच्चों से ज्यादा कुत्तों में रुचि लेती हो, उसके बच्चे बड़े हो कर अपनी माँ का कितना सम्मान करेंगे। शहर में लोग गौ पालन के कार्य को दकियानूसी समझते हैं और गाय पर लिखने-पढ़ने वालों को पिछड़ा हुआ मानते हैं। आजकल आधुनिक वही है, जो पिज़्ज़ा-बर्गर, हॉट-डॉग या बीफ की बात करे। लोग कुत्ते पाल कर खुद को मॉडर्न बताते हैं। धन्य है मेरे देश का यह पतन। यही अंतर है ग्रामीण और नागर संस्कृति में। गाँव में लोग हरियाली से जुड़े हैं, गोधन से जुड़े हैं। वहाँ नदी-तालाब हैं। शुद्ध जलवायु है। और शहरों में क्या है? प्रदूषण यानी जहरीली हवाएँ। कांक्रीट के जंगल। सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण। नंगापन। जितनी बुराइयाँ हो सकती हैं, सब शहरों में दिखाई पड़ जाती है। अब तो गाँव भी ...''

श्यामा कुछ और बोलना चाहती थी, तभी एक मेटाडोर उनके ठीक सामने आ कर रुकी। उसमें से तीन-चार लोग नीचे उतरे।

एक ने कहा-''अरे, यहीं कहीं तो मैंने देखा था यार।''

दूसरा इधर-उधर देखते हुए बोला-''ठीक से याद है न, यही जगह थी?''

पहले ने फिर पूछा-''हाँ, बिल्कुल यहीच्च जगह है।''

तीसरे ने चारों तरफ देखते हुए कहा-''तो चलो, खोजते हैं। यहीं-कहीं होंगी। कहाँ जाएँगी स्साली। झाड़ियों के पीछे छिप कर बैठी होंगी। अरे, हमारी पशुखोर नज़रों से गायें बच नहीं सकतीं। हा...हा...हा...''

क्रूर सामूहिक ठहाके नीरव सन्नाटे की छाती से जा टकराए और काँच के टुकड़ों की तरह इधर-उधर बिखर गए। सारे कसाई हँसते हुए इधर-उधर फैल कर गायों की तलाश करने लगे।

श्यामा-श्वेता समझ गईं कि अब तो बचना मुश्किल ही है। कितने दिन बच पातीं। एक दिन तो पकड़ा ही जाना था, लेकिन यह दिन इतनी जल्दी आ जाएगा, उन्होंने सोचा नहीं था।

''अरे, वो रही साली...वो....''

''अरे हौ यार, दिख गईं....सँभल कर..धीरे-धीरे''....

श्वेता ने श्यामा से कहा, ''दीदी, वे तो हमारी ओर आ रहे हैं? अब क्या करें, भागें?''

''हाँ, यही ठीक रहेगा।''

इतना बोल कर दोनों गायें उठीं और विपरीत दिशा की ओर दौड़ पड़ीं।

चारों लोग भी गायों के पीछे दौड़े। उनके हाथों में फंदेवाली रस्सी थी। गायों की गति के सामने वे सब फीके पड़ गए और गायें बहुत दूर निकल गईं। वे सब निराश हो कर लौटे और फिर मेटाडोर में बैठ कर गायों की तलाश में निकल पड़े। आखिरकार उन्होंने गायों को घेर ही लिया। बहुत तेजी के साथ दौड़ने के कारण श्यामा-श्वेता भी बुरी तरह थक चुकी थीं और एक पेड़ की छाँव तले हाँफती हुई सुस्ता रही थीं। मेटाडोर में सवार चारों लोग फुरती से नीचे उतरे और गाय को घेर लिया। इसके पहले कि गायें फिर दौड़ने की कोशिश करतीं, हत्यारों ने दोनों के गले में फंदा डाल दिया था। दोनों गायें हत्यारों की खूनी पकड़ से छूटने की कोशिश करती रहीं, लेकिन सफल नहीं हो पाईं।

हत्यारे अकसर सफल हो जाते हैं, क्योंकि वे हत्यारे होते हैं। वे जब ठान लते हैं कि किसी की जान लेनी है तो फिर लेनी है।

हत्यारों ने बड़ी मशक्कत के बाद दोनों गायों को मेटाडोर में डाल दिया और उन्हें ले चले देवपुर :कठोरी सेठ के कसाईघर की ओर।

''मज़ा आ गया बॉस, गायें तो ठीक-ठाक दीख रही हैं। पाँच-पाँच हजार तो मिल ही जाएँगे।''

''देखो, मुझे तो लगता है, काइयाँ सेठ तीन हजार से ज्यादा नहीं देगा।''

''नहीं, अपन तो पाँच हजार ही लेंगे, वरना सरायपुर जा कर खालबाड़ा के कल्लू को बेच देंगे।''

''चलो, पहले ठिकाने तक तो पहुँचें, रास्ते में किसी सिरफिरे गौ भक्त ने पकड़ लिया तो लेने के देने पड़ जाएँगे। सालों के पास और कोई काम ही नहीं रहता। जब देखो, हम लोगों के पीछे पड़े रहते हैं।''

''खैर चलो, आज तो हम लोग निकल आए न।''

बदबूदार सामूहिक हँसी एक बार फिर हवा में छितराई। इस बार यह हँसी बिल्कुल हँसिया की तरह गायों के शरीर में जा चुभी।

चारों लोगों के चेहरे पर प्रसन्नता साफ-साफ देखी जा सकती थी। वे सब के सब बीड़ी फूँकते हुए देवपुर के कसाईखाने की ओर बढ़े जा रहे थे।

कसाईखाने पहुँच कर श्वेता-श्यामा को लगा, जैसे वे घोर नरक में आ गई हैं। नरक के बारे में श्यामा ने सुन रखा था, लेकिन कसाईखाने की हालत देख कर वह सोचने लगी, नरक बिल्कुल इसी के जैसा होता होगा। शायद इससे कम भयावह।

कसाईखाने का नज़ारा दिल दहलाने वाला था। चारों तरफ असहनीय बदबू थी...नीचे खून ही खून बिखरा हुआ था।... लग रहा था खून की नदी बह रही हो।... बहुत-सी गायें इधर-

उधर खड़ी थीं। वे बीमार लग रही थीं। उनके शरीर की हड्डियाँ साफ नज़र आ रही थीं.... कुछ गायें जख्मी थीं।... कुछ लंगड़ा कर चल रही थीं।... कइयों की देहों में घाव साफ नज़र आ रहे थे, जिससे लहू रिस रहा था। ...जख्मों पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं...दरअसल उन सबको बुरी तरह पीटा गया था क्योंकि वह कसाइयों के हाथों में आने से बचने की कोशिश कर रही थीं।... कुछ खड़ी होने की कोशिश करती थीं, मगर बार-बार गिर जाती थीं।... वे इतनी जर्जर हो गई थीं कि चलने के लायक नहीं थीं। उनको इस बुरी कदर पीटा गया था कि उनके पैरों की हड्डियाँ टूट चुकी थीं।...गायों के पास खड़े कसाई लोग उनकी पूँछें मरोड़ कर उन्हें खड़ा करने की कोशिश करते थे।....उन्हें बार-बार पीटा जा रहा था। उन पर खौलता हुआ गरम पानी डाला जा रहा था। ऐसा क्यों किया जा रहा था, गायें खुद समझ नहीं पा रही थीं।....जो गायें खड़ी नहीं हो पा रही थीं, उनकी आँखों में तम्बाखू या मिर्ची डाली जा रही थी ताकि वे किसी तरह खड़ी रहें।...

'बाप रे।'.... श्यामा रोने लगी।

श्वेता की आँखों से भी अश्रुधार बह रही थी। लेकिन यातना से भरे इन आँसुओं के महाकाव्य का अनुवाद करने वाला वहाँ कोई नहीं था।

देखते ही देखते वहाँ पचीस-तीस गाय-भैंसें और आ गईं। वे समझ चुकी थीं कि उन्हें कत्ल के लिए लाया जा रहा है, इसलिए वे ट्रक से उतर ही नहीं रही थीं। यह देख कर कसाइयों ने उन्हें डंडे से पीट-पीट कर उतारा। अधिकांश गाय-भैंसें अधमरी हो गईं थीं। वे आपस में टकरा रही थीं। वे सब बदहवाश हो कर अपनी ही सींगों से एक-दूसरों को जख्मी कर रही थीं। इस कारण कुछ की सींगें भी टूट चुकी थीं। गायों के नथूनों में रस्सी बँधी थी और हत्यारे निर्ममता के साथ उन्हें खींच रहे थे, इस कारण उनके नथूनों से रुधिर बह रहा था। कसाईखाने की फर्श पर चारों ओर खून ही खून नज़र आ रहा था। जो लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे, उन सबके पैर खून में डूबे हुए थे। लग रहा था, कि वहाँ खून की नदी बह रही है। श्वेता-श्यामा भी जब मेटाडोर से उतर नहीं रही थीं, तो उनको लाने वालों ने डंडों से पीटा। जो गायें कहना नहीं मानती थीं, उन गायों को भी लगातार पीटा जा रहा था।...कभी उनके पेट में डंडे मारते, कभी पूँछ के 'नीचे' भी डंडा घुसेड़ देते थे।

श्यामा का पूरा शरीर दर्द से कराह रहा था।...

उसके शरीर से खून भी बह रहा था।...

यही हाल श्वेता का भी था।

श्यामा ने देखा कुछ गायों के चारों पैर बाँध दिए गए...और उनको एक जगह फेंक दिया गया। ये सारी गायें कटने के लिए तैयार की गई थीं। वैसे बैलों की संख्या ज्यादा थी। गाय-बैलों को काटने के बाद इनका मांस निकाल कर विदेश भेजा जाएगा। गायें कराह रही थीं, लेकिन केवल गायें ही उनकी कराहें सुन सकती थीं। वे सब एक-दूसरे को देख रही थीं और आँसू बहा रही थीं।

श्यामा कराहते हुए बोली– ''क्या यह गोभक्त भगवान कृष्ण के भारत देश का ही दृश्य है? क्या हम उसी देश में रह रहे हैं, जिसको आर्यावर्त कहा जाता था? जिसके बारे में कभी किसी कवि ने कहा था, कि 'है प्रीत जहाँ की रीत सदा मैं गीत वहाँ के गाता हूँ। भारत का रहनेवाला हूँ, भारत की बात सुनाता हूँ'?''

''हाँ, दुर्भाग्यवश यह वही देश है। कभी अहिंसा के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध देश का ही यह भयानक दृश्य है। यह है नया भारत। हाइटेक भारत। पश्चिम में रूपांतरित होता हुआ भारत। नहीं–नहीं, यह इंडिया है। 'हाइटेक' इंडिया। भारत का वह चेहरा है, जिसे कुछ लोग 'मॉडर्न इंडिया' कहते हैं : जहाँ संवेदना बेमानी है। उपदेश अर्थहीन हैं। जहाँ नैतिकता मध्ययुगीन मुहावरा है। भ्रष्टाचार परम शिष्टाचार है। परम्परा और संस्कृति से लगाव पिछड़ापन है। वह केवल अतीत की मधुर स्मृति है। धार्मिकता का आचरण पाखंड का हिस्सा है। अब केवल बाज़ार की चिंता है : 'डॉलर', 'पौंड', 'यूरो' आदि की ही फिक्र है। यहाँ हिंदू, मुसलमान, जैनी और ईसाई समाज के कुछ लोग भाई–भाई बन कर समान रूप से कसाई का काम कर रहे हैं।''

''इन सब गायों का अब क्या होगा बहन?''

''इनकी आरती उतारी जाएगी और क्या।'' श्वेता के प्रश्न पर श्यामा चिढ़कर बोली, 'अब कुछ मत पूछो। चुपचाप देखती जाओ। देख नहीं रही हो, ये सबकी–सब कटने की तैयारी में हैं। हमें भी तैयार रहना है। मेरे दिल की धड़कन बढ़ गई है। सुनो, हमें काटने वाली मशीनों की आवाज़ें। लग रहा है कि कुछ दैत्य हमें खाने के पहले दाँत पैने कर रहे हैं। यहाँ हमें जीते–जी ज़िंदा कटना है। ये दानव कहते हैं कि ज़िंदा पशुओं को काटने से उनकी चमड़ी ज्यादा मुलायम रहती है। उनका माँस भी ताज़ा बना रहता है।''

''तो....कल हम भी कट जाएँगी न?'' श्वेता रो पड़ी।

''जाहिर है। कसाईखाने में हमारी पूजा तो होने से रही। ये लोग हमारी आरती उतारने से रहे। ये लोग 'जै–जै गौ माता' नहीं कहेंगे। ये लोग कुछ इस तरह से आरती उतारेंगे–'जै–जै गौ माता, मैया जै गौ माता, मांस तुम्हारा प्यारा, यह डॉलर लाता। जै–जै गौ माता'...। आज नहीं तो कल हमारा अंत होगा ही। इस देश की अधिकांश गायों का यही हश्र होता है अब।''

''हे राम..''

''हे गोविंद.....हे गोपाल...हमें बचाओ।''

''अरे मूर्खो, पागल धनपिपासुओ, तुम यह क्यों भूल जाते हो कि तुम हमारी रक्षा करोगे तो हम तुम्हारी रक्षा करेंगे। भूल गए तुम लोग यह श्लोक कि 'गावो रक्षंति रक्षित:'?''

''अरी बहन, ये किसको सुना रही हो तुम? किसको कह रही हो पागल–मूर्ख? जब कोई मूर्ख है ही तो कैसे समझेगा तेरी बात? कौन सुनेगा और समझेगा तुम्हारा भारी–भरकम दर्शन? जब गाय केवल पैसे कमाने का एक साधन बन गई हो, तो कहाँ की गो रक्षा, कहाँ की गौ माता और काहे की दया–करुणा? हुँह.... और कहाँ का गावो रक्षंति रक्षित:?''

''हम कमजोर हो गईं तो हमें कसाइयों के हवाले कर दिया गया? वाह रे चालाक धंधेबाज़ हिंदुओ, नमन है तुमको। अरे, हमारे बारे में पहले कुछ जानकारी तो हासिल कर लो। कमजोर हो जाने के बाद भी साल भर में हम केवल तीन–चार हजार रुपये का चारा खा कर बीस हजार रुपए का खाद दे सकती हैं। कितने लोग फायदा उठा रहे हैं। कुछ पता तो करो कि एक बाँझ या बूढ़ी हो चुकी गाय भी कितने लाभ दे सकती है। कसाई को बेच कर आखिर कितने पैसे कमा लोगे? उल्टे शायद जीवन भर यह अपराध–बोध पीछा करता रहेगा कि चंद पैसों की खातिर गाय की जान ले ली। बेहतर है कि बाँझ गाय किसी गौ शाला को दान कर दो। मन में यह संतोष तो होगा कि तुम्हारी गाय कटने से बच गई।''

''वह सब तो ठीक है, लेकिन आदमी पैसे के पीछे इतना अंधा हो जाता है कि उसे फिर कुछ नहीं सूझता।''

''सच कहती हो। हमने कभी कल्पना भी न की थी कि राम और कृष्ण की इस गोभूमि भारत में हमारी ऐसी दुर्गति होगी। मांस के लिए, पैसों के लिए हमको काटा जाएगा। कभी हमको बचाने के लिए इसी देश में अनेक लोगों ने अपनी जाने दे दीं। लोगों को गो माँस खाने के लिए बाध्य किया गया तो उन्होंने आत्महत्याएँ कर लीं लेकिन गोमांस को छूना भी पाप समझा। मैंने पं. बिहारीलालजी के बारे में किसी से सुना था। उन्होंने गो मांस खाने की बजाय सपरिवार आत्महत्या करना मंजूर कर लिया, लेकिन आतताइयों की मंशा सफल नहीं होने दी थी।''

''अच्छा...ऐसा हुआ था? कौन थे पं. बिहारीलाल? क्या किया था इन्होंने? मुझे तो इसके बारे में कुछ पता ही नहीं। बता दो दीदी। शरीर गहरे ज़ख्मों से भर गया है। तुम्हारी बात सुन कर शायद दर्द कुछ कम हो जाए।''

''बात उस समय की है, जब अपना अपना देश आज़ाद हुआ था और एक नया देश बन गया था पाकिस्तान।'' श्यामा याद करते हुए बोली, 'इधर के मुसलमान उधर जा रहे थे और उधर के हिंदू इधर आ रहे थे। जाने–अनजाने और नासमझी के कारण आपस में खूनी संघर्ष चल रहा था। दोनों एक दूसरे की हत्याएँ कर रहे थे। पंजाब के टहलराम गाँव की बिल्कुल सत्य घटना है। इसे कपोल–कल्पित कहानी मत समझना। गाँव में चंद हथियारबंद पाकिस्तानियों ने लोगों ने कुछ भारतीयों को घेर लिया और तलवार की नोंक टिका कर कहा,''तुम लोग कलमा पढ़कर हमारा धर्म क़बूल कर लो, वरना सबकी लाश बिछा दी जाएगी।''

..लोग डर गए और जान बचाने की गरज से कलमा पढ़ लिया।

दरअसल वे लोग मन ही मन सोच रहे थे कि इस बीच हमारी सेना आ जाएगी तो जान बच जायेगी। हम लोगों ने तो केवल जुबान से कलमा पढ़ा है, दिल से नहीं। मन ही मन तो हम लोग हरे रामा–हरे कृष्ण ही जप रहे थे।

तभी एक पाकिस्तानी ने अपने दूसरे साथी से कहा, ''भाईजान, इन काफिरों को केवल कलमा पढ़ाने से बात नहीं बनेगी। इनका धर्म भ्रष्ट करने के लिए इन सबको गो मांस खिलाया जाए।''

बाकी लोगों को सुझाव जम गया। उन्होंने गाँव के मुखिया पं. बिहारीलाल से कहा-''तुम लोग जब तक गौमांस नहीं खाओगे, हम सबको काफिर ही समझेंगे। जो गौ मांस नहीं खाएगा, उसकी हम जान ले लेंगे।''

पं. बिहारीलाल जी ने सोचा, इन लोगों के हाथों मरने से अच्छा है खुद अपनी ही जान ले ली जाए। वे सोचने लगे कि ये लोग अभी हमारी जान ले लेंगे, फिर हमारे घरवालों के साथ भी यही आचरण करेंगे इसलिए बेहतर तो यही है कि हम सब लोग अपना जीवन समाप्त कर लें। पंडिज्जी ने कहा, 'देखो भाई, हमें थोड़ी-सी मोहलत दो। हम अपने घर वालों को भी तैयार कर लें।' पाकिस्तानी ने कहा, 'ठीक है। चार घंटे का समय दिया, उसके बाद भी अगर तुम लोग राजी नहीं हुए तो हम पूरे गाँव में कत्लेआम मचा देंगे।'

...पं. बिहारीलाल तेजी से चल कर घर पहुँचे और अपनी पत्नी, बहन और बच्चों को पूरा वाकया सुना दिया और बोले, 'देखो, इन जालिमों के कहने पर गो मांस खाने से तो बेहतर हैं कि हम लोग अपनी जान दे दें। गो मांस खाकर धर्म भ्रष्ट करने से तो अच्छा है कि हम लोग एक साथ प्राण त्याग दें। बोलो, क्या तुम लोग सहमत हो?'

बिहारीलाल जी की बात सुन कर सबने एक स्वर में कहा, 'आपकी बात से हम सहमत हैं। हम लोग अपनी जान देने के लिए तैयार हैं।'..

..घर वालों की बात सुनकर बिहारीलाल जी की खुशी का ठिकाना न रहा। वे बोले, ''ठीक है। अब मरना ही है तो चलो, उत्सव मना कर मरा जाए। हम सब नए वस्त्र पहन कर मृत्यु का वरण करेंगे। स्वादिष्ट पकवान आदि का भोग भी लगाएँगे।''

सबने बिहारीलालजी की इच्छा के अनुरूप नए वस्त्र धारण किए। घर की महिलाओं ने स्वादिष्ट पकवान बनाए। सभी ने बड़ी प्रसन्नता के साथ खाया। लगा जैसे कोई उत्सव मनाया जा रहा हो। उसके बाद....पं. बिहारीलाल जी ने वह काम किया, जिसे करने के लिए बहुत बड़ा कलेजा चाहिए। उन्होंने घर के सारे सदस्यों को एक कतार में खड़ा कर दिया और बारी-बारी से सबको गोली मार दी। आखिरी में बचे बिहारीलाल जी और उनके भाई। बिहारीलाल जी ने अपने भाई से कहा, 'भैया, पहले तुम मुझे गोली मार दो।' इस पर भाई ने कहा, 'नहीं भैया, पहले आप मुझे गोली मारें'।

दोनों भाई पहले आप-पहले आप करके झगड़ते रहे। आखिर में दोनों ने तय किया और एक-दूसरे पर बंदूक तान कर गोली दाग दी। दोनों वहीं ढेर हो गए। पं. बिहारीलाल के परिवार के बलिदान और पाकिस्तानियों के आतंक की जानकारी पूरे गाँव में फैल चुकी थी। बस क्या था, गाँव के बहुत-से लोगों ने कुएँ में कूद कर जान दे दी या खुद के शरीर को जला डाला।...

..पाकिस्तानी जब गाँव पहुँचे, तो उन्हें चारों तरफ केवल लाशें नज़र आईं।''

इतना बोल कर श्यामा रोने लगी। आँसुओं की नदी बह चली।

श्वेता बोली- ''हमारे देश में ऐसे कितने ही महान बलिदानी हुए हैं। उसी देश में अब हिंदू खुद गाय काट रहे हैं। गोमांस बेच रहे हैं...गो मांस खा रहे हैं...। ऐसे में हमारी जान कौन बचाएगा?''

श्यामा खामोश रही। उसे कोई उत्तर भी नहीं सूझ रहा था।

श्वेता-श्यामा बाकी गायों के साथ एक बाड़े में बाँध दी गई थीं। हर गाय की आँखों से आँसू नहीं, मानो खून बह रहा था। उनके मन में पीड़ा थी। गुस्सा था। लेकिन वे बेबस थीं। उन्होंने कसाईबाड़े पर नज़र दौड़ाई। उन्हें समझ में ही नहीं आया कि यह कसाईखाना कितने एकड़ में फैला हुआ है। फिर भी अंदाज लगाया, दो-तीन सौ एकड़ तो होगा ही।

''अब हमें कुछ न कुछ करना होगा, वरना ये कठोरी सेठ हम सबकी जान ले लेगा।'' श्वेता बोली।

''हाँ, कुछ करें। जल्दी। मगर क्या करें?'' श्यामा ने पूछा।

''ऐसा करते हैं कि हम लोग एक साथ जोर-जोर से रँभाते हैं, इधर-उधर भाग-दौड़ करते हैं। इस बाड़े को तोड़ने की कोशिश करते हैं। यहाँ जितने लोग हैं, हम उनको अपनी-अपनी सींगों से घायल कर देंगे। कब तक हम सीधी बनी रहेंगी? हम जब इन पर हमला करेंगे, तभी ये लोग दरवाजा खोलेंगे और हम आज़ाद हो सकेंगे, वरना दो-चार दिन में हमारी जान ले ली जाएगी।''

''क्या अपनी जान बचाने के लिए हम अहिंसक गायों को भी अब हिंसा का सहारा लेना पड़ेगा?''

''अगर इन जालिमों का मुकाबला करना है तो अब गाय को भी हिंसक बनना होगा। गाय को अपना स्वभाव बदलना होगा?''

''लेकिन...स्वभाव के विपरीत आचरण कैसे करें..? हम कोई मनुष्य तो हैं नहीं। जिस दिन गाय हिंसक हो जाएगी, समझो समाज के रसातल में जाने का समय आ गया है। गाय हिंसक हो ही नहीं सकती। उसकी फितरत ही नहीं।''

''हाँ, तुम्हारी इस बात से मैं सहमत हूँ। मगर विदेश में कुछ पापी गायों को माँस खिला-खिला कर उन्हें हिंसक बनाने पर तुले हैं।''

''छि: गाय को मांस क्यों खिला रहे हैं?''

''वो भी इसलिए कि गायें माटी-ताज़ी हो जाएँ तो ज्यादा मांस पाया जा सकता है। वे ज्यादा दूध भी देंगी। तब ज्यादा कमाई होगी। देखो, इस कसाईखाने को। कैसी बड़ी-बड़ी मशीनें लगी हैं, हम गायों को काटने के लिए। इनके सामने जीवित गाय को खड़ा कर दिया जाता है और देखते-देखते गाय के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। चारों ओर खून ही खून नज़र आ रहा है। मांस कटने के कारण बदबू भी उठ रही है। लगता है खून की नदी बह रही है। देखो...आकाश में गिद्ध मँडरा रहे हैं। मेरा तो दम घुट रहा है। हे कृष्ण, हमें बचा ले। सुना है कि तूने कभी द्रौपदी की लाज बचाई थी। हमारी भी जान बचा। हमें बाहर निकाल। तुझसे बड़ा

गोपालक कोई दूसरा नहीं हुआ। तू गायों की इतनी सेवा करता था कि तेरा नाम ही पड़ गया था गोपाल। अब मनुष्य नहीं, भगवान ही हमारी रक्षा कर सकते हैं। हे गोपाल, हे कन्हैया, हे गोविंद...हमारी नैया पार कर..हमें इस कसाईबाड़े से निकाल।''

''कलजुग है श्यामा। मनुष्यों का चरित्र देख कर अब तो भगवान भी नहीं आते।'' श्वेता आँसू बहाते हुए बोली, ''अब केवल भले इनसान ही हमें बचा सकते हैं।''

''लेकिन कोई इनसान कैसे बचाएगा। वह तो खुद हमें मारने पर तुला है?''

''धरती के सारे मनुष्य शैतान नहीं हैं। कुछ अच्छे इनसान भी होते हैं। हर युग में ऐसे ही लोगों से उम्मीद की जा सकती है। मैंने इन्हीं कसाइयों की चर्चा सुनी है। वे कह रहे थे कि आज कुछ गो भक्त इस बूचड़खाने पर हमला करने आने वाले हैं। वे आएँगे तो हमें मुक्ति ज़रूर मिलेगी।''

''लेकिन वह समय कब आएगा?'' पास ही बैठी बूढ़ी गाय ने उदास स्वर में पूछा, ''आज कोई आ जाए तो अच्छा है वरना अब तो मरना ही है। यह हालत है 'माँ' की। ये कलजुगी बेटे...हमें माता कहते हैं और हमारा ही कत्ल करते हैं।''

''तुम चिंता मत करो माई'', श्वेता बोली, ''मेरा मन कह रहा है कि लोग आते ही होंगे। हम इन कसाइयों के चंगुल से मुक्त होकर रहेंगे। हमें बचाने के लिए कोई न कोई ज़रूर आएगा।''

''कौन है इस कत्लखाने का मालिक?' बूढ़ी गाय ने इधर-उधर देखते हुए कहा, 'ज़रूर कोई विधर्मी ही होगा।

गाय की बात सुनकर श्वेता मुसकरा पड़ी और बोली, ''किसी को मत कोसो। गो हत्या के मामले में क्या हिंदू और क्या विधर्मी। सब बरोबर हैं। सच्चा 'सर्वधर्म सद्भाव' तो जैसे यहीं दिखाई देता है। जानती हो, यह देवपुर का कसाईखाना किस दानव का है? कई लोग हैं इसके मालिक। इसमें एक कोई धैनी भी है। जो खुद को जीते वह 'जैनी' और जो धन को जीते वह 'धैनी'। तो इस कसाईखाने का मालिक धैनी है। कोई भी सच्चा जैनी कभी कसाईखाना नहीं खोल ही नहीं सकता। वह खोलेगा तो गौ शाला ही खोलेगा। आखिर जैनमुनि विद्यासागर महाराज जी जैसे अनेक संत गौशालाएँ चला ही रहे हैं । इस देश में बहुत-से जैनी हैं, जो समर्पित हो कर गौशालाएँ चला रहे हैं। भगवान महावीर के रास्ते पर चलने वाला जैनी कसाईखाना नहीं, गोशाला ही खोलेगा। लेकिन कभी-कभी सज्जनों के कुल में दुर्जन भी जन्म ले लेते हैं। जैसे ये कुल-कलंकी कसाईखाने के धंधे में आ गया। वैसे इस जैनी को कोई भी अच्छा जैनी अपने समाज का ही नहीं मानता। जैनियों जैसे कोई भले लक्षण भी तो हों इसमें।''

''मैंने सरायपुर के किसी मुजफ्फर भाई के बारे में सुना है', श्यामा बोली, 'जानती हो, इस मुसलमान की अपनी रहीम गौशाला है? अरे, ऐसे कई मुसलमान हैं इस देश में जो गौ सेवा कर रहे हैं, और दिल से कर रहे हैं। ये सच्चे मुसलमान हैं। पैगम्बर मोहम्मद साहेब के बताए रास्ते पर चल रहे हैं। तो, यहाँ हिंदू-मुसलमान की बात ही नहीं है। हम गायों को यहाँ बेचता कौन है? ज्यादातर हिंदू। जैसे हिंदू बेचते हैं, वैसे ही कुछ मुसलमान, ईसाई और जैनी भी बेचते होंगे। यह

उनका धंधा है। कुछ लोग बड़े समझदार किस्म के होते हैं। धंधे को अपने धर्म से दूर रखते हैं। धर्म का असर धंधे में आ गया तो कमाई नहीं हो सकती। इसलिए निर्मम बने रहना ही इनका असली धर्म है। दुकान में ग्राहकों की जेबें काटेंगे और मंदिर जा कर भगवान से माफी माँगेंगे। पशुओं की जान लेने वालों के नाम तो पता करो। मेरा दावा है कि हिंदू ही ज्यादा मिलेंगे। इसलिए गो हत्या को गैर हिंदुओं से जोड़कर देखना एक उन्माद है, पागलपन है। तुमको शायद पता नहीं इसलिए बता देती हूँ कि अनेक समझदार मुसलमानों ने हमेशा गो वध का विरोध ही किया है। सन् 1938 में अरबी कॉलेज, लखनऊ के प्रोफेसर सैयद मोहम्मद सादिक जी ने 'गावकुशी और इसलाम' नामक एक लेख लिख कर मुसलमानों से अपील की थी कि इस्लाम में कहीं भी गो वध की बात नहीं कही गई है। दुर्भाग्य यही है बहन कि ऐसी बातें दबा दी जाती हैं। जबकि यह संदेश घर-घर तक जाना चाहिए। कई बार सोचती हूँ कि हिंसा के मामले में हमारा देश बड़ा धर्मनिरपेक्ष किस्म का है। यहाँ सब हिंसा करते हैं : हिंदू भी और मुसलमान भी। और मज़े की बात...सब पूजा-इबादत में भी कमी नहीं करते। अद्भुत विरोधाभास है। पूजा इसीलिए की जाती है कि मन में शुद्ध विचार जगें, मनुष्य सही राह चले, लेकिन यहाँ तो मनुष्य जितना पूजा-पाठ करता है, उतना हिंसक, उतना पाखंडी भी होता जाता है। यही देख कर लगता है कि धर्म केवल आड़ है। खुद को पाक-साफ दिखाने का नाटक। ''

श्यामा की बात सुनकर बूढ़ी गैया चुप हो गई तो पास खड़ी भूरी गाय बोली-

''बहन, यह जो पैसा है न, इसने ही आदमी की मति भ्रष्ट कर दी है। हालत तो यह है कि पैसे के लिए लोग अपनों को ही घर से निकाल देते हैं। भाई-भाई या भाई-बहन की आपस में नहीं बनती। खून-ख़राबा हो जाता है। यह मनुष्य जब अपने सगों का ही नहीं हो रहा है, तो हम गायों का क्या होगा? इसलिए गो-वध पर आँसू मत बहाओ। इसे कोई ताकत नहीं रोक सकती।''

''तो क्या हम अब रो भी नहीं सकते?'' बूढ़ी गाय बोली, ''लाखों गायें कट रही हैं और कहीं कोई हलचल नहीं होती? आज की बात नहीं है, शुरू से कट रही हैं। देश भर में कट रही हैं। किस शहर का नाम लूँ। धार्मिक कहे जाने वाले शहरों में भी कम नहीं कटतीं। काटने वाले कौन लोग हैं? हिंदू। सरकार सोचती है कि मांस बेचकर भी खूब पैसा कमाया जा सकता है इसलिए लगी है वह। कत्लखाने खुलें, उनको आधुनिक किया जाए। तो यह सब चल रहा है। मैंने सुना है कि हर साल पाँच सौ करोड़ रुपये का मांस बाहर भेजा जाता है।''

बूढ़ी गाय थोड़ी देर के लिए खामोश हुई। सारी गायें उसे ध्यान से सुन रही थीं। वह कुछ सोचते हुए बोलने लगी- ''पिछली बार मैं जिस जगह कचरे में अपने खाने लायक भोजन तलाश रही थी, उसी जगह कुछ गो सेवकों की एक आम सभा हो रही थी। वहाँ एक गो सेवक बता रहा था कि पूरे देश के पशुधन का मूल्य इस वक्त पचास करोड़ के आसपास है। लेकिन यह भी सच्चाई है कि आज़ादी के बाद से अब तक अस्सी फीसदी गौ वंश नष्ट हो चुका है। अभी जो बचा है, उनसे चार-पाँच करोड़ टन दूध उत्पादित होता है। एक अरब टन गोबर

मिलता है। देश में इस वक्त लगभग बीस करोड़ गाय-बैल हैं। दस करोड़ भैंसें हैं। सबसे बड़ी बात देश की साठ फीसदी ऊर्जा पशुओं से ही मिलती है।''

''आश्चर्य..फिर भी आदमी हमें मार डालता है?''

''देश जब आज़ाद हुआ था, तब देश में तीन सौ क़त्लखाने थे, मगर आज छत्तीस हजार हैं। इतने तो सरकारी रिकार्ड में दर्ज हैं। वाह, क्या प्रगति है। सवा सौ गुना। आज देश में प्रतिदिन चार लाख पशुओं को काटा जाता है। और गो वंश ..? आँकड़े बताते हैं कि रोज पचास हजार काट दिए जाते हैं। हो सकता है, इससे भी कहीं ज्यादा हो। हमारा मांस विदेश जाता है। देस-परदेस हर कहीं लोग गो मांस खा रहे हैं। सब कहते हैं कि गो मांस बड़ा स्वादिष्ट होता है। इसी चक्कर में हम कटते जा रहे हैं।''

''यह स्वाद बड़ी बुरी चीज़ है। जीभ चटोरी होती है। इसके लिए आदमी केवल जानवरों को ही नहीं खाता, कभी-कभी मानव शिशुओं को भी खा जाता है। ताइवान, युगांडा और चीन आदि कुछ देशों में ऐसे लोग मिल जाते हैं। इस इंसानी फितरत का क्या कर सकते हैं?''

''विदेश के उदाहरण मत दो बहन, जैसे हमारे देश में बड़े दयालु लोग बसते हैं, हुँह!'' श्यामा भड़कते हुए बोली, ''भूल गई अपने देश का निठारी-कांड? दिल्ली के पास है निठारी। वहाँ कोली नाम का आदमी छोटे-छोटे बच्चों के साथ कुकर्म करता था और उन्हीं को मार कर खा जाया करता था? ऐसा एक कांड तो सामने आ गया, लेकिन पता नहीं इस देश में कितने निठारी और कोली होंगे अभी। हम नहीं जानते, लेकिन हैवान अपना काम कर रहे होंगे।''

श्यामा की बात सुनकर सारी गायें सन्न रह गईं। तभी श्यामा की नज़र कसाईखाने के दूसरे हिस्से की ओर गई। वहाँ का मंज़र देखकर सारी गायें सिहर गईं।

कुछ गायों के ऊपर फव्वारे के द्वारा खौलता पानी डाला जा रहा था।... पानी इतना गर्म था कि आदमी पर पड़े तो वह फौरन ही मर जाए। वहीं एक गोल चक्का था, जिसमें बहुत-सी गायों को उल्टा लटका दिया गया।...तभी कुछ कसाई आए।.. एक ने एक गाय के गले में चाकू घुसेड़ कर उसकी नसें काट दीं।... गाय के गले से तेजी के साथ खून टपकने लगा।...गाय तड़पने लगी।....दूसरा कसाई गाय की खाल नोंचने लगा।...फिर इन गायों को मशीन के सामने खड़ा कर दिया गया और मशीन ने गायों को काटना शुरू कर दिया।...

इस दृश्य को देख कर सारी गायें काँप उठीं। सबने अपनी-अपनी आँखें बंद कर लीं।

कुछ ही पल बीते होंगे, कि तभी बाहर कुछ लोगों का शोर-सा सुनाई पड़ने लगा था। धीरे-धीरे ये आवाज़ें साफ होने लगीं। नारे लग रहे थे-

गो वध... बंद हो, बंद हो...
गायों को आज़ाद करो...
आज़ाद करो-आज़ाद करो...

मत समझो यह प्राणी है
भारत की मुखरित वाणी है
विश्व की माता...
गौ माता, गौ माता...
पशुओं का खून बहाना...
बंद करो, बंद करो...
कत्लखाना बंद करो...
बंद करो... बंद करो...
गौमाता की... जय...
हिंदू, मुस्लिम, सिख ईसाई,
गाय हमारी सबकी माई।

''अरे, ये आवाज़ें तो हमारे लिए उठ रही हैं! लो, हमें बचाने के लिए आखिर भगवान आ ही गए। यह तो चमत्कार हो गया।'' श्यामा खुशी से झूम उठी, ''हे कृष्ण, तू बड़ा दयालु है। तूने हम लोगों की सुन ली। लगता है, अब हम यहाँ से मुक्त हो जाएँगी।''

''देखो, क्या होता है।''

बाहर नारेबाजी तेज़ होती जा रही थी।

तभी श्वेता ने देखा कठोरी सेठ मोबाइल में कोई नंबर खोज रहा है। फिर उसने बात करनी शुरू की-

''ह..ह..हैलो, पुलिस स्टेशन, देखिए मैं कठोरी बोल रहा हूँ।..स्लॉटर हाउस से...गायखाने वाला नहीं, कसाईखाने वाला। जी हाँ-जी हाँ, कुछ लोगों ने हमारे कसाईखाने को घेर लिया है। प्रदर्शन कर रहे हैं। जल्दी आइए, वरना ये पागल लोग भीतर घुसने की तैयारी कर रहे हैं। हैलो...ये लोग कह रहे हैं कि गायों को आज़ाद करो...हैलो..क्या..? अरे, ऐसे कैसे कर दें। हमने खरीदी है।...हाँ-हाँ, लाइसेंस है भाई। सरकार ने दिया है। आप नए आए हैं क्या? थाने के सब लोग जानते हैं मुझे...हैलो, जल्दी आइए... हैलो... हैलो...''

सेठ के चेहरे पर तनाव साफ नज़र आ रहा था। सेठ भगवान का पक्का भक्त लग रहा था। उसने आकाश की ओर देखकर हाथ जोड़े और आँखें बंद कर लीं और धीरे-धीरे बुदबुदाया- 'हे महावीर...हे महावीर..'

इधर भीड़ और ज्यादा उत्तेजित हो रही थी।

'गोवध बंद हो... बंद हो' के नारे तेज होते जा रहे थे।...

अचानक..भीड़ का एक रेला दरवाजे को तोड़ते हुए कसाईखाने के भीतर घुस आया।

बाहर का मुख्य द्वार टूट चुका था। गो भक्तों के हाथों में डंडे थे। वे तेजी के साथ बढ़े चले जा रहे थे और नारे लगा रहे थे। उन्हें देखकर कठोरी सेठ घबरा गया। उसे लगा कि आज तो

वह अपनी जान से हाथ धो बैठेगा।

वह भागने लगा लेकिन तभी एक व्यक्ति ने दौड़ कर उसे पकड़ लिया। कुछ और लोग भी सेठ के पास पहुँच गए और उसे पीटते हुए बोले-

''अरे, पशुप्रेमी सेठ, कहाँ जा रहे हो?''

''ये... ये... क्या बद्तमीजी है!''

''यह बद्तमीजी नहीं, शराफत है। बद्तमीजी तो तब होती, जब हम लोग इन गायों की तरह तुम्हें भी इस बाड़े में बाँध कैद कर देते और तुझे डंडे से पीटते, जैसे तू इन गायों को पीटता है। बदतमीज़ी तो तब होती, जब हम भी ये डंडा तुम्हारे पीछे घुसेड़ देते, जैसे तुम लोग गायों के पीछे घुसेड़ते हो। अब तुम्हारे पीछे भी घुसेड़ें डंडा? शर्म नहीं आती, गायों की हत्या करते हो? गाय का मांस विदेश भेजते हो? साले..हत्यारे...तेरी तो..?''

''ले...ले....लेकिन मैं गायों को नहीं, बैलों को काटता हूँ। ये तो मेरा धंधा है। सरकार ने लाइसेंस दिया है। वही कहती है कि विदेशों से डिमांड आ रही है। लोगों को गो मांस चाहिए। मैं तो सरकार का ही काम कर रहा हूँ। मुझको क्यों परेशान करते हो। सरकार के पास जाओ।''

''लोगों को गौ मांस तो चाहिए ही चाहिए मगर तुमको तो डॉलर चाहिए। अरे, एक गाय से अस्सी लोगों को ही तो मांस मिलेगा न? लेकिन गाय अगर जीवित रह जाए और उसका वंश बढ़े, तो पच्चीस हजार से ज्यादा लोगों को भोजन मिल सकता है। कुछ पता है?''

''अरे यार, तुम कहाँ इस जड़मति को ज्ञान देने बैठ गए हो? इसे सिर्फ डॉलर या लात की बात समझ में आती है। यह सरकार की आड़ ले रहा है। सरकार से तो हमको निपटना ही है, पहले हम तुझसे ही निपटेंगे। तुझे और कोई धंधा नहीं सूझा बे?'' एक युवक ने लपक कर क ठोरी की कॉलर पकड़ ली, ''साले, मादर....नीच...पापी....बंद करो यह वधशाला, वरना हम तेरा वध कर देंगे। कहता है बैलों को काटता हूँ। और वह क्या है बे? तेरा बाप..? वह..वह गाय है कि बैल? क्या बैलों के भी थन होने लगे हैं? और हम तो कहते हैं कि ज़िंदा बैल भी क्यों काटेगा तू? कोई भी गोवंश क्यों कटे? साथियो, इन गायों को फौरन मुक्त करो। तोड़ दो बाड़े। खोल दो सारे दरवाज़े।''

इतना सुनना था कि सारे लोग बाड़े तक पहुँच गए और उसे छिन्न-भिन्न कर दिया। जितने भी दरवाजे थे, सबके सब खोल दिए। गाय, बैल, भैंस सबके सब बाहर की ओर भागे...। वे कमजोर थे, जख्मी थे, मगर जान बचने की खुशी में तेजी से दौड़ रहे थे। चले जा रहे थे, देवपुर के जंगल की ओर। किसी भी गाय को दिशा नहीं बतानी पड़ी कि उन्हें किस ओर भागना है। सड़क दुर्घटना में अपनी एक टाँग गवाँ चुकी गाय भी किसी तरह दौड़े चली जा रही थी। सारी गाय-भैंसें रंभाती हुई बाहर की ओर दौड़ पड़ीं। वे बेहद खुश थीं। जैसे स्कूल छूटने पर नन्हें बच्चे खुशी के मारे शोर मचाते हुए बाहर की ओर भागते हैं, कुछ उसी तरह गाय-भैंसें भी दौड़ी जा रही थीं।

भागते-भागते आखिर जंगलनुमा स्थान नज़र आया। गायें वहीं रुक गईं।

जंगल में चारों ओर गायें ही गायें नज़र आ रही थीं। गाय-बैल और भैंसे सब के सब आज़ाद होकर देवपुर के उजाड़ होते जंगल में इधर-उधर जहाँ-कहीं झाड़-झंखाड़ या घास नज़र आई, चरने लगी।

गौ माता का जय-जयकार करते हुए आंदोलनकारी कसाईखाने से बाहर आ गए। तभी वहाँ पुलिस पहुँच गई। पुलिस ने सारे आंदोलनकारियों को तोड़-फोड़ के आरोप में गिरफ्तार कर लिया लेकिन तब तक तो गायें आज़ाद तो हो चुकी थीं इसलिए आंदोलकारियों के चेहरों पर विजयी मुसकान थी। सभी एक-दूसरे को बधाइयाँ दे रहे थे। आपस में गले मिल रहे थे। आज एक बड़ा काम हो गया था। गाय को कसाइयों से मुक्त करने से पवित्र काम दूसरा नहीं हो सकता। यह सेठ हर बार न जाने कितनी गायें काट डालता था। आज कम से कम एक हजार गाय-भैंसों की जानें बचीं। इसके एवज में जेल भी जाना पड़े तो कोई बात नहीं।

पुलिस गो सत्याग्रहियों को जेल ले जाने लगी, तभी एक गो सेवक नेमीचंद ने बाहर खड़े लोगों को संबोधित करते हुए कहा-

''देखो साथियो, जो गो धन अभी आज़ाद हुआ है, उन्हें अपने कब्जे में लो और गौशालाओं तक पहुँचाओ वरना कल फिर ये कठोरी सेठ के कसाईखाने तक पहुँच जाएँगी। आज हमने न जाने कितने ही मंदिर बनाने का पुण्य कमा लिया है।''

''वह कैसे?'' सैलानी जी ने पूछा

''वह ऐसे कि हमारे जैन मुनि तरुण सागर जी महाराज कहते हैं कि कसाईखाने ले जाई जा रही एक गाय की जान बचाना एक मंदिर बनाने के बराबर पुण्य का कार्य है। वे यह भी कहते हैं कि लोग गायें इसलिए काटते हैं कि वह मूक पशु है, लेकिन लोग यह भूल जाते हैं कि वह बेज़ुबान है तो क्या हुआ, उसकी भी जान है। जैसे सुई चुभने से हमें दर्द होता है, उसी तरह गाय या किसी भी मूक पशु पर चाकू चलने से उसे भी दर्द होता है।''

''आज का दिन बड़ा ही पवित्र है', गौटिया जी बोले, हमने अनेक गायों को कटने से बचा लिया। हमें यह काम करते रहना है। हमें मिल कर गाँव-गाँव में गौ सैनिक बनाना चाहिए। जैसे हमारे सैनिक सीमा पर दुश्मनों से लड़ते हैं, उसी तरह हमारे गौ सैनिक गायों के शत्रुओं से लड़ें।''

''ठीक बात है, अपन इस दिशा में कुछ करें। कुछ प्लानिंग करते हैं। अभी तो हम गायों की मुक्ति का गीत गाएँ।''

नेमीचंद की बात सुनकर झूमरलाल, ओमप्रकाश, प्रेमकुमार गौटिया, सैलानी सिंह और हरीभाई, नीरजकुमार सहित बचे-खुचे आंदोलनकारी लौट गए। उन्होंने ट्रकों का बंदोबस्त किया और जंगल में भटकती गायों को ग्वालों की मदद से गोशालाओं में पहुँचा दिया। पास के ही शहर सरायपुर में सौ साल पुरानी महावीर गौशाला, उज्ज्वल गौ शाला और कुछ श्रीकृष्ण गौशाला में आकर गायें सुख-संतोष का अनुभव करने लगीं। कुछ गायें जो सबसे ज्यादा

भाग्यशाली निकलीं, उन्हें पथमेड़ा आनंदवन पहुँचा दिया गया। बाकी गायों को कानपुर,बनारस, नागपुर, अकोला, होसनगर,जयपुर, जलगाँव, गौहाटी, चित्रकूट, अंबिकापुर, दुर्ग, डिब्रूगढ़ आदि में वर्षों से चल रही बड़ी-बड़ी गौ शालाओं में भेज दिया गया।

श्वेता-श्यामा के चेहरे की प्रसन्नता देखते ही बनती थी। सारी गायों ने गौ शालाओं में पहुँचकर राहत की साँस ली। सबने गौ सेवकों को दुआएँ दीं, जिनके कारण उनकी जानें बच गईं।

तीन

श्वेता-श्यामा के जीवन में कभी स्थायित्व नहीं आ सका।

कल तक मारी-मारी फिर रही थीं। किस्मत थोड़ी-सी ठीक हुई तो कसाईखाने तक जाने से बच कर आ गईं। लेकिन बदहाली पीछा नहीं छोड़ रही थी। दोनों गायों को एक नकली गो भक्त की गौ शाला मिली। सरायपुर के एक सेठ दयाशंकर की 'कपिला गौ शाला'। अब जिसका जैसा नसीब, यह सोच कर दोनों गायों ने खुद को भगवान भरोसे छोड़ दिया। गाय जिसमें देवताओं का निवास बताया जाता है, जब दाने-दाने को तरसती हैं, तब लगता है कि हम गाय का नहीं, देवताओं का अपमान कर रहे हैं। लेकिन यह बात उन लोगों को भी तो समझ में आए। इस गौ शाला में भी श्वेता-श्यामा के साथ यही हुआ।

पूरे एक दिन तक भूखी-प्यासी रहने के बाद उन्हें पानी और सूखा चारा नसीब हुआ।

कुछ दिन इसी तरह निकल गए। एक दिन की आड़ में ही यहाँ चारा मिलता था। वो भी थोड़ा-थोड़ा।

श्वेता गौशाला के बदबूदार गोष्ठ में विचरते हुए बोली - ''यह गौशाला तो बिल्कुल ही रहने लायक नहीं है, लेकिन संतोष यही है कि कसाईघर से ठीक है। यहाँ हमारी जान को तो खतरा नहीं है। हमको छुड़ाने के मामले में गौभक्तों ने जैसी हिम्मत दिखाई, काश, वैसी हिम्मत के साथ अगर गो भक्त पूरे देश में आंदोलन करें तो गायें कसाईघर तक पहुँच ही न पाएँ। न पुलिस की परवाह, न डंडे का डर। जान हथेली पर रख कर ही गायों को बचाया जा सकता है। गांधी जी भी कहते थे, गाय को बचाने के लिए हम दूसरे की जान क्यों लें, अपनी जान देने के लिए तैयार रहें।''

''ठीक कहती हो बहन।'' श्यामा बोली, ''हम गायों को बचाने के लिए कभी कटारपुर के लोगों जैसा आंदोलन करना होगा। सन् उन्नीस सौ अठारह की बात है। महंत रामपुरी ने कत्लखाने ले जाने वाली गायों को रोकने के लिए कुछ हत्यारों से मुकाबला किया था। हत्यारों ने उनके पूरे शरीर को चाकू से घोंप दिया था। महंतजी की मौत के बाद वहाँ के लोग अँगरेज़ों के खिलाफ सड़कों पर उतर आए। मुसलमानों ने तो हिंदुओं की भावनाओं का आदर करने के लिए गायों को न काटने की कसम खाई थी, लेकिन अँगरेज़ उन्हें भड़का रहे थे। अँगरेज़ों के खिलाफ जो भी सामने आया, उन्हें भयंकर यातनाएँ दी गईं। ब्रह्मदास, जानकीदास,पूर्णप्रसाद

और सुखा चौहान को तो फाँसी पर ही लटका दिया गया और सौ से ज्यादा लोगों को कालेपानी की सजा दी गई।''

''गाय के सवाल पर जूझना पड़ता है। तभी गाय बचती है। जैसे एक बार डॉ. केशव बलिराम हेड्गेवार ने कुछ गायों की जानें बचाई थीं।'' श्वेता को अचानक एक घटना याद आ गई।

''ये कब की बात है?'' श्यामा ने पूछा

''अस्सी साल पुरानी बात है।'' श्वेता बोली, ''एक बार हेड्गेवार जी कहीं जा रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि एक कसाई गाय को घसीटता हुआ कहीं ले जा रहा है। गाय बार-बार रुक जाती थी तो कसाई उसको डंडे से पीटता था। यह देख डॉ. हेड्गेवार दौड़ कर कसाई के पास पहुँचे और बोले-''अरे-अरे, यह क्या पागलपन कर रहे हो?''

कसाई ने हेड्गेवार जी से कहा- ''जाओ-जाओ, मुझे अपना काम करने दो। देख नहीं रहे, गाय ले जा रहा हूँ।''

''कहाँ ले जा रहे हो?''

''तुमसे मतलब? वैसे काटने ले जा रहा हूँ।''

''नहीं, तुम इस गाय को नहीं काट सकते।''

''वाह, क्यों नहीं काट सकता? पैसे दे कर खरीदी है गाय। यह अब मेरी है। इसे काटूँ चाहे पालूँ, मेरी मर्जी।''

हेड्गेवार शांत हो कर बोले- ''देखो भाई, तुम्हें पैसे चाहिए न? मैं देता हूँ। तुम यह गाय मुझे सौंप दो।''

''नहीं, मैं तो इसे काटूँगा। मुझे पैसे नहीं चाहिए।'' कसाई ने अकड़ कर बोला। कसाई को लाख समझाने पर भी जब वह नहीं माना तो हेड्गेवार आगबगूला हो गए और कसाई की गर्दन पकड़ ली- ''गाय मुझे देता है या मैं तेरी दुर्गत बनाऊँ?''

हेड्गेवार जी के तेवर देख कर कसाई घबरा गया और हाथ जोड़ते हुए बोला, ''मुझे छोड़ दीजिए। ठीक है, आप पैसे दीजिए और यह गाय आप ही रख लीजिए।''.....

हेड्गेवारजी ने कसाई को पैसे दिए और और गाय को गौशाला तक पहुँचा दिया। तो, ऐसे गोभक्त चाहिए गाय को। तब बचेगी वह।''

''ठीक कहती हो बहन, बयानबाजी से, दीवारों पर लिखने से या 'गो वध बंद हो' वाले नारों से गायें नहीं बच सकती।'' श्वेता बोली, ''इस वक्त देश में यही हो रहा है। लोगों को बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए। हिंसा का सहारा न लें, मगर सरकार पर एक दबाव तो बनाएँ। जैसा देवपुर के कसाईखाने में किया गया।''

''लेकिन मैंने तो सुना है कि उस कसाईघर में फिर गायें आने लगी हैं। गायें ही नहीं, भैंस, बकरे-बकरियाँ सभी लाए जा रहे हैं। अब तो उसे और अधिक आधुनिक बनाया जा रहा है।''

''यहाँ तो देश भर से गो वंश आता ही है कटने के लिए। कई राज्यों में गो वध पर रोक लगी है लेकिन उन्हीं राज्यों से गोवंश की तस्करी होती है।''

श्वेता-श्यामा की बातें दूसरी गौएँ भी सुन रही थीं। सबकी सब उनकी बातों से सहमत थीं, लेकिन सवाल यही था कि हम लोग तो बच गईं, लेकिन बाकी गायों का क्या होगा, जो कल फिर कसाईखाने तक पहुँचाई जाएँगी और जिनकी हत्या कर उनके मांस का निर्यात कर दिया जाएगा।''

श्वेता कह रही थी- ''काश, देश भर में फैले हजारों कसाईखानों को बंद करने के लिए भी कोई बड़ा आंदोलन चलता। गायों की हिंसा का कारोबर बंद होना चाहिए।''

''विनोबा भावे जी के कहने पर देवनार के कसाईखाने के खिलाफ गो भक्तों ने सन् 1980 से आंदोलन शुरू कर दिया था, जो आज तक जारी है। लेकिन आंदोलन एक जगह सीमित हो कर रह गया है। ऐसे आंदोलन देश भर में होने चाहिए। यह कसाईखाना पूरे देश की पीड़ा है। यह हमारी अस्मिता का भी प्रश्न है। स्वामी विवेकानंद ने कभी कहा था, 'उठो, जागो..और गाय का खोया सम्मान वापस लाओ। उसे उसके सांस्कृतिक पद पर प्रतिष्ठित करो।' लेकिन स्वामी जी की बात उस वक्त भी नहीं सुनी गई। नतीजा सामने हैं। आज गाय संस्कृति का पद या प्रतिसाद नहीं, एक उत्पाद है, जिसका केवल भोग करना है। आश्चर्य है कि देश के दूसरे हिस्से में देवनार के कसाईखाने के खिलाफ कोई आंदोलन क्यों नहीं हो रहा है।''

''वैसे देवनार में देश भर के गो भक्त आते हैं और बूचड़खाने के खिलाफ प्रदर्शन करते हैं। कभी छत्तीसगढ़ से, कभी महाराष्ट्र से, कभी हरियाणा से, कभी दिल्ली से तो कभी राजस्थान से। सबसे ज्यादा लोग छत्तीसगढ़ से ही आते हैं। ये बेचारे और ज्यादा कुछ कर ही नहीं सकते, तो गौ माता के लिए गिरफ्तारी दे कर दिल को बहला लेते हैं कि गो मुक्ति के लिए कुछ तो किया। अपनी गिरफ्तारी देते हैं और चले जाते हैं। ''

''लेकिन इससे होगा क्या? लोग गिफ्तारियाँ देते हैं, बड़ा अच्छा करते हैं, लेकिन कोई नतीजा तो निकले। कसाईखाने के मालिक के मन में अब तक करुणा नहीं जगी। तीस साल हो गए। लोग आते हैं। प्रदर्शन करते हैं। गिरफ्तारियाँ देते हैं फिर रिहा हो कर गौ माता की जय बोलते हैं और लौट जाते हैं। रोज का यही क्रम है। सालों से यही चल रहा है। लेकिन ऐसा कब तक चलेगा? सरकार तो किसी की सुन ही नहीं रही?''

''सुनेगी, एक दिन ज़रूर सुनेगी। संत विनोबा भावे ने कहा था कि हमें अपना काम करना है। रोज की तपस्या से भी एक वातावरण बनता है। आज नहीं तो कल इस देश की मृतप्राय चेतना जगेगी। एक दिन पत्थर पिघलेगा। ऊगेगा करुणा का सूर्य। नष्ट होगा हिंसा का तिमिर। कभी तो ऐसी सरकार आएगी, जो वोट से ऊपर उठ कर मानवता के लिए कुछ करेगी। अरे, जब गाय-भैंस या कोई भी पशु मर जाए तो उनकी हड्डियों का, चमड़ों का जितना उपयोग करना है, किया जाए। आदमी भी मरता है तो उसका शरीर मेडिकल कॉलेजों को दान में दे दिया जाता है। हम मर जाएँ तो हमारा भी उपयोग करो, लेकिन केवल मांस खाने के लिए हमें जान से मार देना जीवदया की बात करने वाले महावीर, बुद्ध और गांधी के इस देश का मजाक उड़ाना है।''

''गाय करुणा का महाकाव्य है', श्यामा बोली, 'यह कथन किसी कवि का नहीं, बापू का है: महात्मा गाँधी का। वे कहते थे, 'यह सौम्य पशु मूर्तिमान करुणा है। गाय करोड़ों भारतीयों

की माँ है। गौ रक्षा का अर्थ है ईश्वर की समस्त मूकसृष्टि की रक्षा करना। सृष्टि के निम्नतम प्राणियों की रक्षा का प्रश्न और भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि ईश्वर ने उन्हें वाणी नहीं दी'। बापू ने यह भी कहा था, कि 'मैं गाय की पूजा करता हूँ और उसकी पूजा का समर्थन करने के लिए पूरी दुनिया का मुकाबला करने के लिए तैयार हूँ'। गाय उन्नति और प्रसन्नता की जननी है। वह तो अपनी जननी से भी श्रेष्ठ है।''

''गाँधी जी तो अहिंसा के बहुत बड़े पुजारी थे। लेकिन उनकी तरह सोचने वाले कितने लोग हैं अब?'' श्वेता बोली, ''विदेशियों को गौ मांस चाहिए ही चाहिए। वे डिमांड करेंगे। पैसों की लालच देंगे। पौंड और डॉलर दिखाएँगे। हमारे अपने लोग विदेशी मुद्रा की लालच में गायों को काटने की अनुमति देते रहेंगे। इधर गायों को बचाने के लिए आंदोलन होते रहेंगे, उधर गायें भी कटती रहेंगी। करुणा, दया-मया, प्यार की बातें करने वाला देश घोर व्यवसायी हो गया है। वह हर उस प्राणी की हत्या कर सकता है, जिसके मांस से उसे कमाई हो सकती है। अगर इसी तरह का निर्मम व्यापार होता रहा, तो इस देश में कुछ भी संभव है। जैसे मानव अंगों का व्यापार।''

श्यामा की तीखी बातें सुनकर गायों की आँखों से गंगा-जमुना बहने लगी।

बूढ़ी गाय भूरी ने कहा - ''बहनो, इतनी दुखद कल्पना करने की ज़रूरत नहीं। मुझे भरोसा है कि एक न एक दिन कोई ऐसी करुणामय सरकार आएगी, जो गाय के महत्व को समझेगी। देखना एक दिन गाय को अपने देश का राष्ट्रीय पशु या राष्ट्रीय धरोहर तो ज़रूर घोषित कर दिया जाएगा। जिस दिन ऐसा होगा, उसी दिन से इस देश की दलिद्दरी दूर होने लगेगी। यह देश फिर से खुशहाल हो जाएगा।''

भूरी की बातें सुनकर श्वेता-श्यामा समेत सारी गायों के के चेहरे खिल उठे। यह और बात थी कि सबके भीतर उदासी की लहरें उठ रही थीं, लेकिन फिलहाल तो आने वाले कल के सुनहरे सपने सामने थे।

तभी दूर कहीं कृष्ण-कन्हैया की बाँसुरी बजने लगी।

गौशाला की गायों को लगा कि वे द्वापर युग में पहुँच गई हैं। दरअसल गौशाला दो भागों में बँटी हुई थी। एक तरफ दुधारू गायों को रखा गया था, तो दूसरी ओर उन गायों को, जो बूढ़ी-जर्जर हो चुकी थीं। और जिनकी सेवा का नाटक करके गौ सेवा आयोग से लाखों रुपए झटके जाते थे। पहली 'डेयरी' थी, तो दूसरी 'गौ शाला'। श्वेता-श्यामा इसी दूसरी बदहाल गौशाला में रह रही थीं। ऐसी गायों की देख-रेख के लिए गौ सेवा आयोग हर साल लाखों रुपये देता है। बस, उसे हथियाने के लिए सेठ ने अपनी गौ शाला में कुछ गायें रख ली थीं। जिधर ठीक-ठाक डेयरी चल रही थी, वहाँ दो स्पीकर लगे हुए थे। उसी से बाँसुरी की सुमधुर तान सुनाई दे रही थी। बाँसुरी की स्वर लहरियाँ सुनते ही गायों के थन दूध से लबालब हो जाते हैं। विदेश में कई डेयरियों में यह प्रयोग किया गया और वह सफल रहा। संगीत का गायों पर गहरा

असर होता है। कृष्ण-कन्हैया अपनी बाँसुरी की धुनों से धेनुओं को वश में किए रहते थे। लेकिन अब के जालिम लोग संगीत की स्वर लहरियों का इस्तेमाल इमोशनल (भावनात्मक) अत्याचारों के लिए ही करते हैं। गायें भी इस सच्चाई को जानती हैं। यह एक तरह से उनका शोषण भी है, लेकिन वे गौशाला में होने वाली अपनी सेवाओं से इतनी अभिभूत हो जाती हैं कि उन्हें कुछ भी नहीं सूझता और वे ज्यादा से ज्यादा दूध देने लगती हैं। इसीलिए तो गाय को माँ कहा जाता है। माँ की तरह सहज, सरल, उदार। जितने भी विशेषण लगा दो, कम है।

श्यामा बोली - ''आज का दिन बड़ा अच्छा है। लेकिन कल क्या होगा, हम कह नहीं सकते। इस गौशाला को सेठ पूरी तरह ठीक-ठाक कर ले तो कितना अच्छा हो जाए। हम लोग अब बेकार हो चुकी हैं, लेकिन जो दूध देने वाली हैं, उन गायों को तो यह ठीक से रख ही रहा है।''

''हाँ, दूर से देखने पर यही लगता है। पास जाएँगे तो असलियत का पता चलेगा। गौ सेवकों की सच्चाई को समझना हो तो उनके निकट जाना पड़ता है। कितने खरे हैं, कितने खोटे हैं, तभी पता चलता है। अभी तो बाँसुरी बजने से लग रहा है कि सब ठीक-ठाक होगा। शायद अपने दिन भी बहुरें।''

''हाँ, अभी तो हम खुश हो लें। आज़ादी का सुख ले लें। कल की कल देखी जाएगी।''

बातचीत चल ही रही थी कि तभी कुछ गो सेवक आ गए।

सारे गो भक्तों ने गायों को प्रणाम किया। अपने साथ लाए गुड़ को गायों की ओर उछाल दिया। गायें उन पर टूट पड़ीं। इस चक्कर में गायों की आपस में भिड़ंत भी होने लगी। भगदड़ देखकर गो-भक्त रामभरोसे को सहसा अकल आई। वह बोला-

''अरे ललित भैया, गुड़ खिलाने का यह तरीका ठीक नहीं लगता। हम गाय को माँ कहते हैं और माँ को भिखारियों की तरह 'ट्रीट' कर रहे हैं। इन्हें सम्मान के साथ खिलाने से ही पुन्न मिलेगा। बेहतर हो कि हम एक-एक गाय के पास जाएँ और उसे प्रेम से खिलाएँ, उसका स्पर्श करें। उसका आशीर्वाद लें।''

''ठीक कहते हो।'' ललित भैया को रामभरोसे की बात जम गई। उन्होंने कहा- ''सचमुच, हम लोग अकसर गायों को इस तरह गुड़ खिलाते हैं, जैसे कुत्ते के आगे रोटियों के टुकड़े फेंके जाते हैं। गाय गाय है, कुत्ता नहीं।''

''गाय और भैंस में भी बहुत अंतर होता है बड़े भाई।'' रामभरोसे ने कहा, 'आप कार में चले जा रहे हैं और तभी सामने कोई भैंस आ जाए, तो आप बजाते रहिए हॉर्न। वही मुहावरा चरितार्थ हो जाएगा, कि 'भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय', लेकिन अगर सामने कोई गाय आ जाए, तो देखो, हॉर्न सुनते ही वह रास्ता दे देगी। जर्सी गायें भी रास्ता नहीं देतीं। यह मैंने कई बार अनुभव किया है। मैंने क्या, बहुतों का भी यही अनुभव है।''

''मेरा भी यही अनुभव रहा है।'' ललित भाई ने कहा, ''गाय जैसा समझदार जीव मैंने कभी नहीं देखा। इसीलिए तो हम गाय का ही दूध पीते हैं। भैंस का दूध पीएँगे, तो अकल मोटी हो जाएगी।''

तभी रामभरोसे ने मज़ाक किया, ''लेकिन माफ करना पार्टनर, तुमको देख कर लगता तो नहीं है कि तुम्हारी अकल मोटी नहीं है। भले ही शरीर भैंस-जैसा है।''

रामभरोसे के परिहास पर सब हँस पड़े।

हँसी-मजाक के माहौल में सारे गो-भक्त गंभीर हो कर गायों की सेवा में जुट गए। गुड़-चने लेकर एक-एक गाय के पास पहुँचे। गायें कतारबद्ध हो गईं। सबको जी भर कर गुड़ खाने को मिला। गायें तृप्त थीं। गो सेवक भी खुश नज़र आ रहे थे। उनके चेहरे पर इस बात की खुशी थी कि गाय को थोड़ा-बहुत खिला-पिला देने से बहुत अधिक पुण्य मिलता है। यह घाटे का सौदा नहीं है। पाप में डूबी ज़िंदगी को उबारने के लिए गाय को कभी-कभार अगर थोड़ा-सा गुड़ खिला भी दिया, तो दौलत में कोई कमी नहीं होने वाली। सबने गायों को प्रणाम किया और लौट गए।

श्यामा बोली-''जो भी हो, इन कुछ सेठों के कारण गायों का, जीव-जंतुओं का -और कभी-कभार लाचार मनुष्यों का भी - भला हो जाता है। वैसे हर सेठ लुटेरा नहीं होता।''

''ठीक कहती हो। कुछ लोग सचमुच निश्छल मन से गो सेवा करते हैं', श्वेता बोली, ''लेकिन ऐसे लोग अब कम हैं।''

''कम हैं तो क्या हुआ, हैं तो न? आने वाले समय में ये लोग भी रहेंगे कि नहीं, क्या पता।''

''इससे बड़ा सवाल तो यह है कि आने वाले समय में यहाँ गायें भी रहेंगी या नहीं? जिस तेजी के साथ गो-वंश का सफाया हो रहा, उसे देख कर डर लगता है कि भविष्य का भारत गायविहीन न हो जाए। मैं ऐसे भारत की कल्पना करके ही सिहर उठती हूँ।''

''एक गौ प्रेमी विद्वान हुए हैं सर विलियम वैडरवर्न।'' श्यामा बोली, ''वे कहते हैं, कि मैं इस बात की कल्पना तो कर सकता हूँ, कि राष्ट्र के बिना भी कोई गाय तो रह सकती है, लेकिन मैं सपने में भी यह नहीं सोच सकता कि कोई राष्ट्र बिना गाय के भी रह सकता है'। एक और विदेशी ने कहा है कि 'गाय हमारे दुग्ध-भुवन की देवी है। वह भूखों को खिलाती है, नंगों को पहनाती है और रोगी को निरोगी करती है'। देखो, विदेशी लोग कितनी गहराई से सोचते हैं गाय के बारे में और हमारे लोग...? गाय के सफाए में लगे हैं।''

श्यामा की बात सुन कर श्वेता बोली, ''गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर को नोबेल पुरस्कार मिला था। पूरी दुनिया उनके साहित्य का लोहा मानती है। लोग उनका राष्ट्रगान गाते हैं। शांतिनिकेतन जैसी संस्था उन्होंने खड़ी की। कितने लोगों को यह पता है कि उन्होंने अपने बेटे को डॉक्टर या इंजीनियर बनाने के लिए नहीं, बल्कि कृषि की उन्नत तकनीक सीखने के लिए विदेश भेजा था। उनकी अपनी एक गौ शाला भी थी। विश्व कवि के इस काम को प्रचारित क्यों नहीं किया जाता?''

श्यामा कुछ नहीं बोली, बस सहमति में सिर हिला दिया।

चार

कपिला गौशाला में पहले से ही लगभग पचास-साठ गायें नज़र आ रही थीं। एक से

बढ़कर एक गाय। वैसे इनमें कुछ जर्सी गायें भी थीं, तो कुछ देसी गायें भी नज़र आ रहीं थीं। ये शारीरिक दृष्टि से कमज़ोर लग रही थीं। कुछ विकलांग थीं, तो कुछ बाँझ। सेठ ने इनके लिए अलग से बाड़ा बना दिया था। दयाशंकर के बारे में शहर के लोगों का पता था कि वे पक्के गोभक्त थे। गौ सेवा के लिए उनको यादव सभा ने सम्मानित भी किया था। वे रोज सुबह-शाम गौशाला आते और गायों को प्रणाम करते, उनके शरीर पर हाथ फिराते। उन्होंने किसी महात्मा से सुन लिया था कि गाय पर हाथ फिराने से स्वर्ग मिलता है। कौन पागल होगा, जो इतने सस्ते में स्वर्ग न चाहेगा। सेठ स्वर्ग का आकांक्षी था तो लाभ का भी। इसीलिए उसका सख्त निर्देश था कि दूध का उत्पादन कम न हो। वह बढ़ता रहे। लेकिन इन दिनों सेठ जी खिन्न रहते हैं, क्योंकि दूध कम हो रहा है। पहले प्रतिदिन सात सौ लीटर दूध हो जाता था, आजकल पाँच सौ के आसपास होता है। सेठ का नुकसान हो रहा है रोज़ छह हजार रुपइया। इसलिए सेठ भन्नाए रहते थे।

एक दिन सेठ जी सुबह-सुबह गौशाला आए और आते ही कृष्णा यादो पर लगे बरसने-

''क्या बात है यादो, आजकल तुम गायों की देखभाल ठीक से नहीं कर रहे हो? गायों का दूध कैसे कम होता जा रहा है?''

''वो...वो क्या है सेठ जी कि बेचारे बछड़े थनों से मुँह लगा देते हैं न, तो मैं पीछे हट जाता हूँ। हें..हें, मुझे लगता है कि गाय के दूध पर पहला और अंतिम हक तो बछड़े का ही है। तो मैं उन्हें पीने देता हूँ। जब बछड़े मुँह हटा लेते हैं तब मैं दूध दुहता हूँ। इस चक्कर में दूध कम हो जाता है। अब क्या किया जाए?''

''क्या किया जाए मतलब?'' सेठ जी भड़क गए, ''अरे लल्लू, बछड़े को रोकते क्यों नहीं? ठीक है कि वो भी थोड़ा-सा पी ले तो फिर उन्हें वहाँ से हटा दो,बस।''

''लेकिन यह तो अन्याय हो जाएगा सेठ जी। बछड़े को दूध नहीं मिलेगा तो वह तड़पेगा बेचारा। उसकी माँ भी दुखी हो जाएगी।''

यादो की बात सुनकर सेठजी सिर पीट कर खिसियानी हँसी के साथ बोले - ''वाह बेटा कृष्णा, तुमको मेरे साथ होने वाले अन्याय की कोई फिकर नहीं, क्यों? मेरा जो नुकसान हो रिया है, उसकी भरपाई कौन करेगा? तैं या तेरा बाप..? मैं नहीं जानता, बछड़ों को ज्यादा देर तक दूध मत पीने दो। उनको जितना पीना होता है, पी लेते हैं। ध्यान रहे, कल से दूध बढ़ना चाहिए। रोज छह हज़ार का नुकसान हो रिया है और तैने बछड़ों की पड़ी है। धन्य है! यही है कलजुग भाया।''

''लेकिन सेठ जी, गो माता...''

''हाँ-हाँ, गौ माता की जै...और जो मैं कह रिया हूँ, उसका भी ध्यान रखियो''..यादो कुछ और बोलता कि सेठ जी आगे बढ़ गए।

श्वेता-श्यामा दोनों बड़े गौर से सेठ जी की बातें सुन रही थीं। सेठ जी चले गए तो श्वेता के होठों पर मुसकान उभर गई।

श्वेता मुसकरा कर बोली - ''देखा, ऐसे होते हैं गौ-भक्त सेठ। यह है इनका असली चेहरा। बाहर इनका सम्मान होता है। 'गौ-मित्र' और 'गौ-सेवक' की उपाधि दी जाती है और यहाँ आ कर ये सेठ गो-शत्रु बन जाते हैं? इन्हीं के लिए तो साहिर साहब ने कहा है कि 'क्या मिलिए ऐसे लोगों से जिनकी फितरत छिपी रहे, नकली चेहरा सामने आए, असली सूरत छिपी रहे।' ऐसे ही ये गौपालक हैं जो बछड़े का हक मारते हैं। समाज के वंचितों का हक भी छीनते हैं। शर्म नहीं आती इनको। हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और। हे भगवान, ऐसे ही गो सेवकों के कारण गायें बीमार हो जाती हैं। बछड़े को पूरी खुराक नहीं मिलती, तो माँ वैसे भी दूध कम देती है। यह बात समझनी चाहिए।''

''लेकिन बात समझ में आए तब न?'' श्यामा बोली, ''जब गाय पैसा कमाने की मशीन बन जाती है, तब वह माँ नहीं रह जाती। एक आड़ हो जाती है। आडम्बर। बाहर अपने को महान गौ सेवक प्रदर्शित करो और भीतर-भीतर गौ का खून चूसो, यही है आजकल की गौ सेवा, समाजसेवा।''

''कसाईखाने में जाने से पहले दीदी, तुम जिस गौशाला में रहते थी, उस सेठ के बारे में तुमने बताया था कि वो भी इस सेठ की तरह कितना 'मिठलबरा' था न? ('मिठलबरा' छत्तीसगढ़ी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है एक ऐसा आदमी जो झूठा व्यवहार करे मगर बातचीत में बड़ा मीठा हो) इतना चालू कि मत पूछो। जैसे ही कोई गौ माता का भक्त आता था, तो हम लोगों को हाथ जोड़कर प्रणाम करने लगता था। हमें छूता था और कहता था, 'अहा, मैं तो धन्य हो गया... धन्य हो गया..गौ माता की जै..'। वह जो काम नहीं करता था, वही सब कुछ लोगों को बताया करता था। कहता था कि मैं दूध में पानी नहीं मिलाता, लेकिन पक्का मिलावटी था। यह भी बोलता था कि मैं गाय पर कभी हाथ नहीं उठाता, लेकिन जैसे ही वह देखता था कि कोई गाय अपने बछड़े को दूध पिला रही है, तो दौड़कर आता और गाय की पीठ पर जोर से हाथ मार कर बछड़े को दूर कर देता था। बछड़ा बार-बार थन से मुँह लगाने की कोशिश करे, तो बछड़े को भी लात मार देता था।''

''हाँ, याद है। अच्छे से याद है'', श्यामा को पुराने दिन याद आने लगे। वह बोली - ''सेठ दमड़ीमल...कैसे भूल सकती हूँ उसको? बड़ा ही काइयाँ था। बीस गायें थीं उसके पास। उसने सबके नाम भी खोज निकाले थे। एक से एक नाम रखे थे उसने। एक बार तो दिल दहला देने वाली घटना हो गई। उसे याद कर आज भी आँखों में आँसू आ जाते हैं।''

इतना बोल कर श्यामा सुबकने लगी। श्वेता कुछ बोल नहीं पाई। थोड़ी देर तक श्यामा रोती रही, फिर उसने कहना शुरू किया, ''एक दिन की बात है। गौशाला में रहने वाली भूरी गाय का प्यारा-सा बछड़ा चल बसा। बछड़ा गाय से दूर कुलाँचे भर रहा था। कुछ देर बाद पता नहीं क्या हुआ कि चुपचाप बैठ गया और कुछ देर बाद ही उसकी मौत हो गई। पास ही बैठे नौकर कालू ने सेठ को उदास स्वरों में सूचित किया,

''सेठ जी, बुरी खबर है। भूरी का बछड़ा मर गया।''

''मर गया? मगर कैसे, अभी तो यहीं उछल-कूद कर रहा था। अभीच्चे क्या हो गया? ठीक से देख, सो रहा होगा।''

''देख लिया सेठ जी, अच्छे -से देख लिया है', कालू रोते हुए बोला, 'मर गया है बेचारा।''

''ओह, चलो । देखता हूँ।'' इतना बोल कर सेठ बछड़े के पास गया। उसे छू कर देखा। बछड़ा हमेशा-हमेशा के लिए शांत हो गया था।

सेठ जी कुछ सोचने लगे। फिर बोले, कालू, एक काम करो। दो-तीन दिन तक इस बछड़े के शरीर को कुछ नहीं होगा। तुम दूध देने के समय इस बछड़े को भूरी के सामने लिटा देना।

''क्यों सेठ जी?''

''सवाल मत करो, जो कहता हूँ, वो करो। देखो, बछड़ा सामने रहे तो गाय अधिक दूध देती है। यह बात तुम तो जानते ही हो। बछड़े को फौरन दफना देंगे तो गाय दूध ही नहीं देगी और अपना नुकसान हो जाएगा। इसलिए तुम कम से कम तीन दिन तक भूरी को दुहने के समय बछड़े को उसके सामने लिटा दिया करना। बछड़े को देखकर भूरी फटाफट दूध देगी।''

''सेठ जी, यह तो गलत बात होगी।'' कालू ने डरते-डरते कहा।

''तुम मुझे सिखाओगे कि क्या गलत है और क्या सही?'' सेठ जी भड़क उठे। अब तुम हद से आगे बढ़ रहे हो। बछड़े की मौत का मुझे भी अफसोस है, मगर क्या किया जाए। सोचो, कितना नुकसान हो जाएगा। इसलिए जैसा कह रहा हूँ, करो। मैं अभी आया।''

इतना बोल कर सेठ चला गया। कालू कुछ न बोल सका। यही तो है नौकरी वालों की विवशता। अन्याय को भी चुपचाप सहना पड़ जाता है, क्योंकि पापी पेट का सवाल जो है।

कालू ने डबडबाई आँखों के साथ बछड़े को गोद में उठाया। गोष्ठ के पास के ही एक कमरे में रख दिया। थोड़ी देर बाद सेठ एक व्यक्ति के साथ वापस लौटा। उस व्यक्ति ने बछड़े के शरीर पर कोई लेप लगाया, फिर मुसकराते हुए बोला, ''अब यह बछड़ा तीन दिन तक तो एज़ इट इज़ रहेगा।''

''थैंक्यू, डॉक्साब।''

डॉक्टर और सेठ चले गए। कालू खड़ा-खड़ा आँसू बहाता रहा, कि कैसे निर्मम लोगों के नीचे काम करना पड़ रहा है। काश, मेरे पास इतना पैसा होता कि मैं भी एक गौशाला चला सकता।

दूध दुहने का समय हो चुका था। सेठ जी के आदेशानुसार कालू ने मरे हुए बछड़े को भूरी के सामने लिटा दिया। बछड़ा हमेशा की तरह अपनी चंचलता नहीं दिखा रहा था। मृत काया भूरी के सामने पड़ी हुई थी। भूरी हमेशा की तरह उसे चाटे जा रही थी और कालू डबडबाई आँखों से भूरी का दूध दुह रहा था। रोज़ तो वह सेठ के कहने पर दूध में पानी मिला दिया करता था, लेकिन आज वह ऐसा नहीं कर पाया, क्योंकि आज दूध में अपने आँसू मिला रहा है। आज उसे लग रहा था कि ये आँसू नहीं, गंगाजल हैं, जो बहे जा रहे हैं। भूरी आज

बछड़े को कुछ ज्यादा ही दुलार कर रही थी। शायद वह समझ गई थी कि उसका बछड़ा मर चुका है। या फिर वह सोच रही हो कि उसका लाल आराम कर रहा है। जो भी हो, आज भूरी ने कुछ ज्यादा ही दूध दे दिया। तीन दिन तक भूरी अपने मृत बछड़े को चाटती रही और दूध देती रही। सेठ की ज्यादा कमाई हो गई। शायद यही है व्यापार का असली धर्म। अगर लाश के सहारे भी कमाई होती है, तो कर लो। अगर संवेदना के साथ सोचेंगे-विचारेंगे, तो धंधा नहीं हो सकता। यह सेठ हजारों निर्मम सेठों में से एक था, जिनके लिए करुणा, दया आदि शब्द बेमानी होते हैं। ऐसा करना पाप तो है, लेकिन ये सेठ बड़े चालाक होते हैं। मंदिर जा कर, सत्यनारायण की कथा करवा कर, या किसी साधु-महात्मा को घर बुला कर अपने पापों को काट लेते हैं। जैसे सेठ दमड़ीमल ने कुछ दिन बाद ही पुण्य कमाने का उपक्रम कर लिया।

....कुछ दिन बाद सेठ के यहाँ पंडिज्जी दयाकिशन महाराज पधारे। पंडिज्जी पहले भी सेठ के पास एक-दो बार आ चुके थे। उन्होंने कुछ सुंदर-सुंदर गायों के नामकरण कर दिये थे। भूरी नाम उन्ही का दिया हुआ था। पंडिज्जी को देखते ही सेठ जी उनकी ओर लपके और पैर छू कर बोले, ''धन्य भाग हमारे जो आप हमारी कुटिया में पधारे। आओ पंडिज्जी। आसान ग्रहण करो।''

गरीबी से आक्रांत कुछ पंडित माल उड़ाने के लिए सेठों के पास जाते रहते हैं। ये पंडिज्जी भी उसी गोत्र के थे। मगर थे तो कर्मकांडी। नियम-धरम से पूजा-अर्चना की। जितना स्वांग करना था, सब किया? सेठ और उनका पूरा परिवार सेठ जी की साधना देख कर झुका जा रहा था। जी भर कर सेवा करवाने के बाद दयाकिशन महाराज बोले- ''अब हमें गौशाला दिखा दो। मन की सच्ची शांति तो गऊ माता के बीच ही मिलती है।''

''आपने तो मेरे मन की बात कह दी पंडिज्जी। मैं भी गायों के बिना नहीं रह सकता। चलिए, वहीं चल कर बात करते हैं।'' इतना बोल कर सेठ जी अपनी कार में पंडिज्जी को बिठा कर गौ शाला ले आए। गौ शाला में घुसते ही सेठ जी बोल पड़े-''पंडिज्जी, ये गायें मेरी माताएँ हैं। मैं इन माताओं को अलग-अलग नामों से पुकारना चाहता हूँ। आपके आशीर्वाद से इस बीच कुछ और गायें आ गई हैं। उनके नाम भी आप रखे दें, तो बड़ी कृपा होगी। जैसे ये दूध-सी सफेद दिखती है, तो इसे आपने ही शुभ्रा नाम दे दिया था और साँवले रंग वाली को श्यामा कहा था। अब बाकी गायों के भी नाम आप दे दीजिए, बड़ी कृपा होगी।''....

.... ''पंडिज्जी सेठ की बात सुनकर गद्‌गद हो गए। बोले- 'आप जैसे गौ भक्तों के कारण ही देश में गायें बची हुई हैं, वरना सबकी सब मर चुकी होतीं। फिर पंडिज्जी गायों का अवलोकन करने लगे। उन्होंने कुछ गायों को सुंदर-सुंदर नाम दे दिए। सोने के रंग जैसी गाय को पंडिज्जी ने नाम दिया - 'सुवर्ण कपिला'।

'वाह... वाह... सुवर्णकपिला' सेठजी चहक उठे, 'आज मैं धन्य हो गया पंडिज्जी। कुछ और नामकरण कीजिए। देखिए, यह गाय गोरी है, कुछ-कुछ पीले रंग वाली है। इसे क्या कहेंगे?''

'इसे हम कहेंगे 'गौरपिंगला', पंडिज्जी मुसकरा कर बोले। फिर एक गाय को देखकर रुके और बोले सेठ जी, 'देखिए इस गाय की आँखें। कुछ-कुछ लाल और पीली नज़र आ रही

हैं। ये हुई 'रक्तपिंगाक्षी' और इसे देखिए, इसके खुर पीले हैं। यह है 'खुरपिंगला'। और इधर आइए। इस गाय की पूँछ पीली है। यह है 'पुच्छपिंगला'। इसे देखिए, इसके बाल कुछ-कुछ पीले हैं, लेकिन है सफेद। इसे मैं कहूँगा 'श्वेत पिंगला'।''

यादों में खोई श्यामा ने बताया ''पंडिज्जी जैसे ही किसी गाय का कोई नाम रखते सेठ जी पुकार उठते 'गौ माता की जय'। सेठ जी की गो भक्ति देखकर पंडिज्जी के मन में जितने नाम सूझे, उन्होंने रख दिये। कोई 'स्वर्णाभा'(यानी जिसका पूरा शरीर पीला हो) कोई 'गलपिंगला'(जिसके गले के बाल पीले हों) हल्के लाल रंग वाली को उन्होंने 'पाटला' नाम दे दिया।...

...कुछ सरल, तो कुछ कठिन । जब हर गाय का नामकरण हो गया तो सेठ जी ने आँखें बंद कर लीं और हाथ जोड़ कर खड़े हो गए। थोड़ी देर बाद आँखें खोलीं, फिर बोले -

'पंडिज्जी, ये सारे नाम मुझे लिखकर दे दीजिए। कुछ कठिन-से लग रहे हैं। लेकिन सुनने में अच्छे लग रहे हैं। कठिन नामों का उच्चारण करो तो लगता है, हम भी कुछ पढ़े-लिखे हैं। इन नामों को मैं याद कर लूँगा और फिर सबको इन्हीं नामों से पुकारा करूँगा। फिर मेरे ऊपर भी पंडिज्जी ने हाथ फेरा और बोले, ''इसके नामकरण की ज़रूरत नहीं। श्यामा वैसे भी प्यारा नाम है। परंतु सेठजी, एक बात का ध्यान रखें। गायों का नामकरण होने भर से कुछ नहीं होता। आप इन गायों की भरपूर सेवा भी कीजिए। इन्हें पूरा आदर मिले। चारा मिले, सानी मिले। पीने को पानी मिले। छाँव मिले, हवा मिले। अगर आपने ऐसा किया, तो गायें आपको आशीष देंगी। आप सीधे स्वर्ग जाएँगे। और हाँ, अगर गाय के साथ छल किया, तो नरक जाना पड़ेगा।'...

...इतना बोल कर पंडिज्जी हँस पड़े, ताकि सेठ जी को बुरा न लगे।

सेठ जी भी हँस पड़े और बोले, ''आपको शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। पंडिज्जी, गौ माता के बारे में कुछ और जानकारी दीजिए, बड़ी कृपा होगी।''

इतना कह कर श्यामा थोड़ा रुकी। ठंडी साँस लेकर उसने फिर कहना शुरू किया-

''सेठ की उत्सुकता देखकर पंडिज्जी बोले, 'सेठजी, शायद आपको ज्ञात होगा कि 'अथर्ववेद' में गायों की महिमा का बखान करने वाले अनेक श्लोक दिए गए हैं। सबका उल्लेख तो संभव नहीं होगा। वे आपको समझ में भी नहीं आएंगे। इसलिए केवल एक श्लोक ही सुना देता हूँ -

''प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रषाणे पिवन्तीः
मा व स्तेन ईशत माघशंसः परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु।।''

...मतलब यह है कि हे गायो, तुम अधिक से अधिक बच्चों को जन्म दो, चरने के लिए तुम्हें हरा-भरा चारा मिले, तुम सुंदर तालाब में शुद्ध पानी पीयो। तुम चोरों से बचो। हिंसक जानवरों से भी बचो। रुद्र का शस्त्र तुम्हारी रक्षा करे। यह अथर्ववेद में कहा है। इसका गूढ़ार्थ समझ रहे हो न? यह प्रार्थना बताती है कि उस दौर में भी गायों के सामने कुछ-कुछ संकट थे।

जैसे वे चुरा ली जाती थीं....दुष्ट उन पर अत्याचार करते थे, आदि-आदि। यह तो मानवीय दुष्प्रवृत्ति है, जो उस वक्त भी थी और आज भी बनी हुई है। हाँ, आज कुछ ज्यादा बढ़ गई है। हद से ज्यादा।''

सेठ जी भक्तिभाव की नौटंकी का प्रदर्शन करते हुए हाथ जोड़े हुए खड़े थे।

पंडिज्जी चुप हो गए तो सेठ जी बोले -''पंडिज्जी, आज तो मैं धन्य हो गया। गऊ माता के बारे में इतने अच्छे श्लोक सुन कर मन भावुक हो जाता है। लगता है, इस मूढ़मति को कुछ ज्ञान प्राप्त हो रहा है।''

''सेठजी आपने बिल्कुल ठीक फरमाया। गौ सेवा करके सत्यकाम जाबाल ने तो ब्रह्मज्ञान ही प्राप्त कर लिया था?''

''अच्छा, ऐसा भी चमत्कार हो सकता है? ये सत्यकाम किस शहर में रहता है पंडिज्जी? एकाध बार उससे मिल कर आऊँगा। उसका कोई मोबाइल नंबर हो तो दीजिएगा। या उसका कोई 'ई-मेल' एड्रेस हो: मैं बात कर लूँगा।''

सेठ की बात सुन कर पंडिज्जी जोर से हँस पड़े और बोले-''अरे सेठ जी, सत्यकाम एक पौराणिक चरित्र है। यह तो बड़ा लोकप्रिय आख्यान है। आश्चर्य कि आप इससे परिचित नहीं हैं?''

सेठ जी लजाते हुए बोले-''क्या करें पंडिज्जी, हमारा आख्यान-व्याख्यान तो केवल धन है। इससे आगे कुछ सूझता नहीं। इसीलिए तो आप जैसे महात्माओं की सेवा करके कुछ पुण्य कमाने की कोशिश में लगे रहते हैं। पंडिज्जी, सत्यकाम की कथा बता दें, तो बड़ा उपकार होगा।''

पंडिज्जी की हँसी रुक ही नहीं रही थी। वे सेठ के संवाद को दोहरा कर फिर हँसे-''सत्यकाम का मोबाइल नंबर दे दो। ईमेल एड्रस दे दो.....जय हो सेठ जी की। खैर, सुनिए। बड़ी प्यारी कथा है। जाबाला नाम की एक ब्राह्मणी थी। उसके पुत्र का नाम था सत्यकाम। जब वह गुरुकुल में अध्ययन हेतु जाने लगा तो माँ से पूछा,

'माँ, मेरा गोत्र क्या है? गुरुजी पूछेंगे तो मैं क्या बोलूँगा?'

इस पर जाबाला ने कहा, 'बेटे, यह तो मुझे भी पता नहीं। तेरे पिता ने कभी बताया ही नहीं। तू तो गुरुजी को इतना कह देना कि मैं जाबाला -पुत्र सत्यकाम हूँ।'

सत्यकाम जब गौतम ऋषि के आश्रम पहुँचा तो गौतम ने पहला प्रश्न यही किया-''वत्स, तुम्हारा गोत्र क्या है?''

सत्यकाम ने कहा-'मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता। हाँ, मेरी माँ का नाम जाबाला हैं। मैं सत्यकाम जाबाला हूँ'।

गौतम ऋषि सत्यकाम के उत्तर से प्रसन्न हुए और बोले-'तुम सत्यानुरागी हो। निश्छल हृदय वाले हो। तुम्हें कुछ संस्कार दे कर मुझे संतोष होगा'।

ऋषि ने सत्यकाम का यज्ञोपवीत संस्कार किया और कहा, 'वत्स, तू मेरी चार सौ गउओं को चराने ले जा। और जब तक ये एक हजार न हो जाएँ, वापस नहीं लौटना'।

सत्यकाम ने ऋषि के आदेश को शिरोधार्य किया और वन चला गया। वन में रहते हुए सत्यकाम गौ सेवा करता रहा। धीरे-धीरे गायों की संख्या बढ़ती गई और एक समय ऐसा आया कि उनकी संख्या एक हजार तक पहुँच गई।

सत्यकाम गो सेवा में इतना मगन था, कि उसे यह सुध ही नहीं रही, कि गायों की संख्या हजार हो गई है। तब एक दिन एक वृषभ सत्यकाम के पास आया और बोला- 'हम लोग अब एक हजार हो गए हैं। ऋषि के आदेशानुसार अब तुम हमें उनके पास पहुँचा दो। और हाँ, तुम ब्रह्मतत्व का ज्ञान प्राप्त करने आए थे न, सो मैं तुझे एक बात बताता हूँ। ब्रह्म 'प्रकाशस्वरूप' है। अब इसके बाद का ज्ञान तुम्हें अग्निदेव बताएँगे'।

सत्यकाम आगे बढ़ा। चलते-चलते शाम हो गई तो वह गायों को विश्राम देने रुक गया। गायों को जल पिला कर प्रकाश के लिए अग्नि प्रज्वलित की।

अग्निदेव ने प्रकट हो कर कहा- 'मैं तुम्हे ब्रह्मज्ञान का द्वितीय चरण बताता हूँ, और वह है 'अनंत'।

सत्यकाम ने अग्निदेव को प्रणाम किया। अग्निदेव ने कहा, 'अब तुझे अगला उपदेश हंस से प्राप्त होगा'।

प्रात:काल सत्यकाम गायों को लेकर आश्रम की ओर चल पड़ा। चलते-चलते फिर शाम हो गई तो सत्यकाम एक जलाशय के पास रुक गया। गायों ने प्रेम से जल पीया और आराम करने लगीं। तभी वहाँ एक हंस आया और बोला- 'मैं तुझे ब्रहम के बारे में तीसरी बात बताने आया हूँ, कि ब्रह्म 'ज्योतिष्मान' है।

हंस ने कहा-'अब अगला उपदेश तुम्हे एक मुर्गे से प्राप्त होगा'।

सत्यकाम आगे बढ़ा। उसे आश्चर्य हो रहा था कि ब्रह्म के बारे में उसे पशु-पक्षियों से ज्ञान मिल रहा है। गायों के बीच सत्यकाम को बड़ा सुख मिल रहा था। रास्ते में वह गायों को बड़े प्रेम से गले लगाता और गायें भी उसके पास आकर अपना स्नेह प्रकट करतीं। चलते-चलते फिर शाम हो गई, तो सत्यकाम ने फिर नदी के तट पर रुकना उचित समझा। क्योंकि सारी गायें जल पी कर अपनी प्यास बुझा कर विश्राम भी कर सकती थीं। गायें जब तृप्त हो गईं तो वह भी निश्चिंत हो कर विश्राम के लिए जाने लगा। तभी वहाँ एक मुर्गा आया और बोला- 'ब्रह्म के बारे में चौथी और अंतिम बात यह है कि वह 'आयतनस्वरूप' है।'

सत्यकाम बहुत हर्षित था कि उसे गौ सेवा करते-करते ब्रह्मतत्व के बारे में ज्ञान प्राप्त हो गया। और यह ज्ञान किसी मनुष्य ने नहीं, वरन अग्निदेव और पशु-पक्षियों के द्वारा प्राप्त हुआ। वह प्रसन्नता के साथ अपनी यात्रा पूरी करके ऋषि गौतम के पास पहुँचा और उन्हें प्रणाम करते हुए कहा- ''हे ऋषिवर, मैंने आपके आदेश का पालन किया। अब मुझे ज्ञान प्रदान करें'।

सत्यकाम की बात सुन कर ऋषि मुसकराए और बोले, 'वत्स, तूने गो सेवा का पुण्य अर्जित किया है। तुझे ब्रहम के बारे में जो बातें बताई गईं, वहीं बातें मैं भी बताने वाला था,

लेकिन अब इसकी आवश्यकता नहीं। अब तू आश्रम से भी मुक्त हो कर लोकमंगल के काम में लग जा और लोगों को उपदेश दे कर जगतकल्याण कर'।

ऋषि गौतम की बात सुन कर सत्यकाम ने उन्हें प्रणाम किया और माँ जाबाला के पास लौट आया।''

सत्यकाम की कथा सुना कर पंडिज्जी बोले, ''देखा सेठ जी, यह है गौ माता का चमत्कार। सत्यकाम ने गायों का ध्यान रखा, गौ सेवा की तो उसको जंगल में भी ब्रह्मज्ञान देने वाले मिल गए। इसलिए मेरी मानो, पूरी ईमानदारी के साथ गौ सेवा करो। एक दिन तुम भी परमपद को प्राप्त करोगे।''

सेठजी को न जाने कितनी बात समझ में आई पर वे मुंडी ज़रूर हिलाते रहे। फिर जोर की आवाज़ लगाई, ''अरे कल्लू, पंडिज्जी के लिए शुद्ध दूध लेकर आना। पानी मत मिला देना।''

पंडिज्जी चौंके और बोले, ''पानी मत मिलाना का क्या मतलब? क्या यह दूध में पानी मिलाता है? आप दूध में पानी मिलाते हैं?''

''नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं है', सेठ जी की ज़ुबान लड़खड़ा गई। वे बोले, 'ऐसा कुछ नहीं। मैं तो उसे समझा रहा था कि शुद्ध दूध ही लेकर आना। एकांत में कहीं पानी न मिला दे। आप जानते नहीं, ये छोटे लोग बड़े शातिर होते हैं।''

इधर सेठ जी की बातें सुनकर कल्लू मन ही मन हँस रहा था और बोल रहा था, ''सेठ जी, आत्मा पर हाथ रख कर बोलो कि शातिर कौन है?''

पंडिज्जी बोले-''अति सुंदर, अति सुंदर। सेठ जी आपके विचार तो बड़े सात्विक हैं। इसी तरह की सोच बनाए रखिए। गऊ माता आपका कल्याण करेंगी।''

सेठ जी बोले-''पंडिज्जी आपकी बातें सुनकर मन नहीं भरा। कुछ और बताइए न। गौ की महिमा सुनकर मेरे मन को बड़ी शांति मिलती है।''

पंडिज्जी मन ही मन कुछ सोचने लगे कि यह सेठ तो सच्चा गो भक्त लगता है। आजकल ऐसे गो सेवक कम ही मिलते हैं। सेठों में तो नहीं के बराबर। सेठ का मन रखने के लिए पंडिज्जी कुछ सोचते हुए कहने लगे-

''देखो सेठ जी, ''अथर्ववेद'' में ही गायों के बारे में अनेक श्लोक हैं। उन सबको सुनाने का तो कोई औचित्य नहीं, मैं तो बस सार-रूप में ही कुछ बातें बता रहा हूँ। क्योंकि कहा भी गया है न कि 'सार-सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय'। तो ध्यान से सुनिए और हृदयंगम कीजिए। एक गो-सूक्त है :'गायों ने धरती पर आकर हमारा कल्याण किया है। गाय हमारी गौशाला में प्रसन्नता के साथ विराजमान रहें और अपने सुमधुर स्वरों से वातावरण को गुंजायमान करें। गायें स्वस्थ हों। उन्हें चोर न चुराएँ। हमारा असली धन गाय ही हो। लोग गाय के मामले में समृद्ध बनें। जिन लोगों के बहुत-सी गायें हैं, वे इंद्र समान हैं। हे गो माता, तुम कमजोर शरीर वाले को हृष्ट-पुष्ट करती हो, नयन की ज्योति को बढ़ा देती हो। तुम जिस घर में रहती हो, उस घर को अपने स्वरों से पावन कर देती हो।''

इतना कह कर पंडिज्जी ने मुसकान बिखेरी और बोले – 'हरि अनंत हरि कथा अनंता की तरह 'गौ अनंत गौ कथा अनंता' है सेठ जी: इसलिए जितनी बातें मैंने कही हैं, उन्हें गठिया लो। ध्यान में रखो। गाय की सेवा करो और पुण्य कमाओ। भूल कर भी गाय को कभी लात मत मारना। गाय पर कभी हाथ मत उठाना वरना तुम्हें नरक जाने से कोई रोक नहीं सकता। बछड़े को दूध पीने से मत रोकना। जब वह पीकर अलग हो जाए तभी गाय को दुहना।''

इतना बोल कर पंडिज्जी उठ खड़े हुए, ''अच्छा, अब मैं चलूँ। गाय का ध्यान रखना। बोलो माँ।''...

सेठ जी ने कहा– ''माँ।''

पंडिज्जी बोले– ''अब कहो, गो माता की....''

''...जय।''

सेठ जी और उनके साथ खड़े कुछ लोगों ने जोरदार आवाज़ लगाई।

पंडिज्जी चले गए। उनके जाते ही सेठ जी ने कहना शुरू किया – ''देखो भाई, पंडिज्जी की बातें इस कान से सुनो और उस कान से निकाल दो। वरना हम तो भूखे मर जाएँगे। गौ सेवा तो करनी है मगर हमें अपना ख्याल भी रखना होगा।''

गौ सेवा में लगे सारे यादव लोग सेठ जी की बात सुनकर मुसकरा पड़े । सेठ को भी अपने पाखंड पर हँसी आ गई। वे हँसते हुए आगे बढ़ गए। बाकी लोग गो सेवा में भिड़ गए।...''

श्यामा ने पिछले दिनों को याद करते हुए एक तरह से आँखों देखा हाल ही सुना डाला था।

श्वेता बोली– ''गौ माता की दुर्दशा का असली कारण यही है कि इस देश के अधिकतर लोग गाय के बारे में बातें तो बड़ी-बड़ी करते हैं लेकिन जब ईमानदारी के साथ सेवा करने का अवसर आता है, सबके सब भूल जाते हैं अपना कर्तव्य और नफा-नुकसान देखने लगते हैं।''

श्यामा ने कहा – ''देखो, अब अपना यह नया सेठ क्या गुल खिलाता है। कहीं यह भी पुराने सेठ की तरह धूर्त न निकल जाए।''

''हाँ, देखते हैं। अभी तो हम लोग यहाँ आकर चैन की साँस ले रहे हैं। लेकिन सेठ के रंग-ढंग दिखने लगे हैं। घाटा हो रहा है तो देखो कैसे चिल्ला रहा है। कल को यह सेठ किसी न किसी बहाने हमें यहाँ से चलता न कर दे। जैसे दूसरे पापी कमजोर गायों को कसाइयों के हाथों सौंप देते हैं, उसी तरह यह सेठ भी....। हे भगवान, पता नहीं, कब तक हम ठीक-ठाक रहेंगी। क्या होगा हमारा।''

''जो भी होगा, बुरा ही होगा।''

''ऐसा मत सोचो बहिन। खैर, 'अभी तो जेहि विधि राखे राम तेहि विधि रहिए'। मन की जो पीड़ा है वह किसी से न कहिए।''

इतनी चर्चा करने के बाद श्वेता-श्यामा सामने रखा चारा-सानी खाने लगी, लेकिन चारा-सानी बहुत जल्द ही खत्म हो गया।

श्यामा रम्भाई कि शायद पास ही बैठा ग्वाला सुबरन उसकी आवाज़ सुन लेगा लेकिन उसने कोई ध्यान नहीं दिया। यह देख श्यामा ने लगातार रम्भाना शुरू किया, तब सुबरन दौड़कर आया –

''अरे, क्यों चिल्ला रही है! क्या हो गया?''

सुबरन ने देखा, गाय की नाँद में चारा-सानी खत्म हो गया है। वह समझ गया कि गाय रंभा क्यों रही थी। वह बोला, ''अरी मैया, हमरे कंजूस सेठवा ने जो कोटा तय किया है, वह खत्म हो गया है। अब मैं क्या करूँ, फिर भी तेरे लिए कुछ बंदोबस्त करता हूँ।''

थोड़ी देर बाद सुबरन ने कुछ चारा-सानी लाकर नाँद में डाल दिया लेकिन गाय फिर भी चिल्ला रही थी। सुबरन ने फिर देखा, बगल वाला नाँद खाली है। उसने नल चालू कर दिया। थोड़ी देर में पानी भर गया।

श्यामा ने अपनी प्यास बुझाई। श्वेता ने भी पानी पीया।

सुबरन ने दो सुंदर गायों पर हाथ फिराया फिर जेब से गुटखा निकाल कर खाया और पाउच को वहीं फेंक दिया। पाउच नीचे गिरने के बजाय नाँद में जा गिरा। जाहिर था कि जब वह अगली बार चारा-सानी बनाएगा, तब पाउच गाय के पेट में ही जाएगा।

श्यामा बेबस होकर देखती रही। फिर वहीं बैठकर जुगाली करने लगी।

तभी किसी गायक का सुमधुर स्वर उनकी कानों में रस घोलने लगा। कोई गऊ-गीत गा रहा था। सुबरन बड़बड़ाया, 'ये ल्लो, गो-चारण भारती बंधु आ गए। अब झेलो इनको'।

थोड़ी देर बाद एक गायक नज़र आया। तो यही है गोचारण बंधु। ये बंधु पूरे देश में घूमते हैं और गो महिमा के गीत गाते रहते हैं। गोचारण के हाथ में एक ढफली थी। उसके साथ और दो लोग भी थे जो झाँझ-मंजीरा बजा रहे थे। गीत और संगीत सुन कर गायें झूमने लगी थीं। गीत चूँकि गाय की स्थिति पर ही था, इसलिए सारी गायें गीत में कुछ ज्यादा ही रस ले रही थीं।

गोचारण बंधुओं ने गाना शुरू किया–

सुनो, सुनो भई, सुनो-सुनो...
हर धेनु ही कामधेनु है, सचमुच देवि समान है,
कोटि-कोटि इस माँ का वंदन, यह धरती की शान है।
सबके मंगलमय जीवन में, अंश गाय का रहता है,
सदियों से यह सत्य जगत को, शुभ्र दूध ही कहता है।
जो मन से करता गौ सेवा, वह सच्चा इंसान है।
कोटि-कोटि इस माँ का वंदन, यह धरती की शान है।
हैं कितने ही रूप दुग्ध के, मानो अमृतधारा है,
इस धारे के बिना जीव का होता कहाँ गुजारा है।
बिना दूध के पूत कौन जो बन पाता बलवान है।
कोटि-कोटि इस माँ का वंदन, यह धरती की शान है।

गोवध करने वाले मानव बहुत बड़े अपराधी हैं,
इनको प्रेरित करने वाले भी समाज की व्याधि हैं।
माँ को काट रहा जो पापी, वह तो इक शैतान है।
कोटि-कोटि इस माँ का वंदन, यह धरती की शान है।
वह गोपालक भी है पापी, दूध-मलाई जो खाए,
मगर कामधेनु के हिस्से कचरा, पॉलीथिन लाए।
यह भी वध का एक रूप है, माता का अपमान है।
कोटि-कोटि इस माँ का वंदन, यह धरती की शान है..
अरे, सुनो-सुनो, भई, सुनो-सुनो.....

गोचारण बंधु गायों के सामने बैठ कर डूब कर गीत गाते रहे। खुद झूमते रहे और गायों को भी झुमाते रहे। गायक बंधु आए दिन इस गौ शाला में आ कर गाय के सामने गो-गीत सुनाते हैं। वे हर गौशाला में जाते हैं और गौ से संबंधित अपने लिखे गीत गाते हैं और प्रवचन भी करते हैं। उनके कर्णप्रिय गीतों को सुनने भीड़ जमा हो जाती है। गीत सुन कर लोग उन्हें पैसे देते हैं। मगर उन पैसों को गौ गायक बंधु किसी गौशाला को ही दान कर देते हैं।

जब सब लोग चले गए, तो श्वेता-श्यामा ने सेठ की गौ शाला की ख़राब हालत पर चर्चा शुरू कर दी।

सेठ जी तो सेठजी थे। इधर गौ भक्त भी बने हुए थे, उधर गौ सेवा आयोग से अनुदान भी झटक लिया करते थे। गौशाला की गायों के शेड के लिए, हरे चारे आदि की व्यवस्था के लिए आयोग अनुदान देता है। जो गायें कमजोर हो जाती हैं, बाँझ हो जाती हैं, उन्हें कसाईखाने भेजने की साजिश होती है। लेकिन कुछ गौ भक्त ऐसी गायों को कब्जे में ले लेते हैं। तो इन गायों को आयोग गौ शालाओं में भिजवा देता है, गायों की देख-रेख के लिए गौशालाओं को हर साल लाखों रुपए का अनुदान भी देता है। कपिला गौ शाला को भी आयोग से अनुदान मिलता है। लेकिन सब लोग जानते हैं कि बदहाल गायें बदहाल ही रहती हैं और सेठजी गौ सेवा आयोग के पैसों से मालामाल हैं। सारी रकम हजम करके डकार भी नहीं लेते।

सेठ जी हर साल आयोग से लाखों रुपये झटक लेते थे फर्ज़ी बिल पेश कर के। और हमेशा इस बात की कोशिश करते रहते थे, कि आयोग की अनुदान राशि बढ़ा दी जाए। सेठ जी पक्के सेठ थे। गौ सेवा करना चाहते थे, मगर सरकार भरोसे। सरकार भरोसे या जनता भरोसे। उनके कुछ लोग पूरे शहर का भ्रमण करते और घर-घर जा कर चावल-दाल और पैसे एकत्र करते थे। एक तरफ सरकार से अनुदान तो दूसरी तरफ लोगों से दान। दोनों मिला कर सेठ और अधिक धनवान हो रहे थे। और इसे गौ माता की कृपा ही मानते थे। ठीक बात भी थी। गौ सेवा की आड़ में ही वे मेवा उड़ा रहे थे।

एक बार जब आयोग के अधिकारियों ने कपिला गौ शाला का निरीक्षण किया, तो पाया

कि दो भागों में बँटी सेठ की गौशाला का एक हिस्सा तो कबाड़शाला में तब्दील हो गया है। आयोग ने जो गायें यहाँ देख-रेख के लिए भिजवाई थीं, उनका कोई माई-बाप ही नहीं था। सेठ की डेयरी के गायों के लिए तो शेड बने हुए थे, लेकिन लावारिस गायों के लिए कोई शेड नहीं था। उनके लिए चारे की व्यवस्था भी नहीं थी। आयोग के अधिकारी ने गायों की गिनती की। पिछली बार आयोग ने यहाँ पचास गायें भिजवाई थीं, लेकिन यहाँ केवल तीस मिलीं।

''बाकी बीस गायें कहाँ हैं सेठ जी?''

''शायद घास चरने गई होंगी?''

''अच्छा, तो क्या बीमार गायें इतनी स्वस्थ हो गईं, टहलने निकल गईं? चमत्कार है यह तो।''अधिकारी ने व्यंग्यात्मक मुसकान फेंकी तो सेठ इधर-उधर देखने लगे। अधिकारी ने सेठ के चेहरे पर अंकित अपराध को पढ़ने की कोशिश करते हुए बोला-''कहीं ऐसा तो नहीं कि आपने गायें कसाइयों को बेच दी हो?''

''अरे-अरे साहब, ये कैसी अशुभ बातें करते हैं? हम तो पक्के गौ सेवक है।''

''हाँ, जब तक सरकारी अनुदान मिले, तब तक तो गौ सेवक हैं ही। क्यों?'' अधिकारी ने कड़े स्वर में कहा, ''मुझे वे बीस गायें चाहिए। यह गोरखधंधा नहीं चलेगा। क्या गौ सेवा आयोग आप जैसे झूठे गो सेवकों के लिए बना है? और गौ शाला की हालत क्या बना रखी है। हम किस बात के लिए आपको अनुदान देते हैं? यहाँ न तो शेड है, न गायों को पूरा चारा मिल रहा है। बिल वगैरा तो आप परफेक्ट लगाते हैं। अरे सेठ, भगवान से डरो। गौ माता से डरो। गो सेवा की आड़ में तो पाप मत करो। अब मैं देखता हूँ, आपको अनुदान कैसे मिलता है।''

आयोग से मिलने वाला अनुदान बंद हो गया, तो सेठ जी दौड़े-दौड़े मंत्री चमकेश्वरजी तक पहुँच गए और सीधे मंत्रीजी के चरण छूते हुए बोले-

''देखिए भैयाजी, आपके राज में हम गो सेवकों के साथ क्या हो रहा है।''

''का हो रहा है?'' मंत्री जी ने कान खुजाने के बाद सींक से दाँत साफ करते हुए पूछा, तो सेठजी रोनी सूरत बना कर बोले-

''अब का बताएँ भैयाजी। आपके राज में हमारी गौ शाला का अनुदान ही बंद कर दिया गया है। हम लोग अपने घर का पैसा लगा कर गौमाता की सेवा करते हैं। थोड़ा-बहुत अनुदान मिलता है, उससे कुछ मदद हो जाती थी, अब वो भी बंद कर दिया गया। आप के रहते ऐसा हो रहा है भैया।''

''ठीक है, देखता हूँ।''

''देखता नहीं, काम होना चाहिए भैया। आखिर हम आपके लोग हैं। चुनाव में पानी की तरह पैसा बहाते हैं। क्या हम जैसे गौ सेवकों का इतना काम भी नहीं होगा?''

सेठ ने मंत्री जी की कमजोर नस पकड़ ली थी। मंत्री ने हँसते हुए कहा-''ठीक है सेठ, चिंता मत करो, तुम्हारा काम हो जाएगा, बस।''

सेठ जी चले गए तो मंत्री ने आयोग के अधिकारी को बुलवाया। अधिकारी ने बताया,

''सर, सेठ गायों की देखभाल नहीं करता। गाय के हिस्से का सारा पैसे ख़ुद खा जाता है। गौ शाला से हम लोगों द्वारा दी गईं गायें भी गायब हो गईं हैं सर। मुझे तो लगता है, कि ये गायें कसाईखाने पहुँच गई हैं। इट इज़ नॉट फेयर।''

''अरे भाई, सेठ इतने साल से गौशाला चला रहा है। वो...वो ऐसा नहीं कर सकता। तुम वहाँ गए तो क्या देखा। कुछ गायें थीं कि नहीं?''

''हाँ, कुछ गायें तो थीं।''

''तो फिर ठीक है। बेचारा कुछ तो कर ही रहा है न। कर रहा है न?''

''हाँ, कुछ तो कर रहा है।''

''तो, ठीक है न भाई। आजकल तो हर जगह कुछ न कुछ गड़बड़ियाँ होती रहती हैं। कितनों का हम ठेका लेंगे। काम होना चाहिए। फिर भाई, वो अपना खास आदमी है। समझा करो। अनुदान जारी कर दो। मैंने उसे समझा दिया है कि गौशाला ठीक से चलाए। कोई शिकायत नहीं मिलनी चाहिए।''

''कोई बात नहीं सर, अब....आप कहते हैं तो...ठीक है... अनुदान रिलीज़ कर देता हूँ।''

तो ऐसे होशियार सेठ की कपिला गौ शाला में श्वेता-श्यामा और क्या कर सकती थीं, सिवाय चर्चा के।

''इस देश में ऐसे सेठों की भरमार है, जैसे कौवे की नज़र मैले पर ही रहती है, उसी तरह कुछ धनपतियों की नज़र मालेमुफ़्त पर ही रहती है।''

''लगता है इसीलिए ये लोग सेठ बन रहते हैं।''

''ठीक कहा तुमने, अधिकतर सेठ गाय की सेवा की आड़ में गोरखधंधे कर रहे हैं। ज़मीन हड़पना, अनुदान डकारना, गाय के दूध में मिलावट करना और गो भक्त बन कर सम्मान भी हथिया लेना। जो सच्चे गो सेवक हैं, वे बेचारे जहाँ के तहाँ रह जाते हैं, लेकिन दयाशंकर जैसे लोग लाखों-करोड़ों मे खेलते हैं।''

''दयाशंकर सेठ को देखो। हमारे लिए शेड भी नहीं बनवाया इसने। चारा भी पूरा नहीं देता। अब गो सेवा आयोग ने जब नकेल कसी है तो सुन रहे हैं, कामचलाऊ शेड बनावाएगा।''

''चारों तरफ गंदगी ही गंदगी है। इसके बीच हमको रहना पड़ता है। जीवन भर दूध देकर जिस मनुष्य को हम पुष्ट करती हैं, वही मनुष्य हमारे अशक्त हो जाने की सज़ा हमको देता है। आज हमारे साथ ऐसा कर रहा है,कहीं कल हमको किसी कसाईखाने भिजवा दे।''

''नहीं श्वेता, ऐसा अशुभ मत बोलो। कसाईखाने का नाम सुन कर मैं काँप उठती हूँ। कभी-कभी सोचती हूँ कि काश, हमें पथमेड़ा के 'आनंदवन' में रहने का सौभाग्य मिलता।''

''आनंदवन...? यह कहाँ हैं?' श्वेता ने पूछा, 'क्या यह भी देवपुर -जैसा कोई वन है?''

''नहीं रे, आनंदवन राजस्थान में है। पथमेड़ा नामक जगह है।'' श्यामा बोली,''यह वही स्थान है, जहाँ भगवान कृष्ण अपनी गउओं को चराने के लिए रुक गए थे। यह उस समय की बात है, जब भगवान मथुरा से द्वारका जा रहे थे और साथ में थी हजारों गायें। पथमेड़ा में

पर्याप्त मात्रा में चारागाह देख कर कृष्ण भगवान ने यहीं विश्राम करने का मन बनाया। उनकी गायें चारा चरती रहीं और कन्हैया बाँसुरी बजाते रहे। वही पावन जगह है पथमेड़ा। इसी जगह एक बहुत बड़ी गौ शाला है आनंदवन। मैंने सुना है, यहाँ दो लाख गायें रहती हैं। आठ गायों से शुरू हुई थी गौ शाला। आज दुनिया की सबसे बड़ी गौ शाला है।''

''द...द..दो लाख गायें? यकीन नहीं होता।''

''हाँ, किसी को यकीन नहीं होगा। लेकिन यह सच है। आनंदवन को समझने के लिए आनंदवन तक जाना होगा। आनंदवन किसी चमत्कार से कम नहीं है। और यह चमत्कार कर के दिखाया है दत्तशरणानंद महराज ने। गौ शाला शुरू करने की भी एक रोचक कहानी है।''

''वह क्या है?''

''वही बता रही हूँ। बात ज्यादा पुरानी नहीं है। सन् उन्नीस सौ तिरानवे की घटना है। कुछ गो भक्तों ने पाकिस्तान ले जाई जा रही आठ गायों को कसाइयों के खूनी पंजे से मुक्त कराया था। ये गायें दत्तशरणानंद जी के पास पहुँचीं। तभी उनके मन में गौ शाला का विचार आया और काम शुरू हो गया। फिर वे गौ सेवा में ऐसे रमे कि हर साल गायों की संख्या बढ़ती गई। और आज आलम यह है कि आनंदवन में दो लाख से ज्यादा गायें हो गईं हैं। आसपास के गाँव गौ मय हो गए हैं। अब तो अनेक लोग इस गौ शाला को मदद करने के लिए आगे आ रहे हैं। यहाँ गायें मुक्त हो कर विहार करती हैं। उनको खाने-पीने की कोई कमी नहीं। नियमित रूप से यहाँ विकलांग, बीमार गायों की देख-भाल होती है। पंचगव्य से तरह-तरह की दवाएँ भी बन रही हैं। सत्साहित्य का प्रकाशन हो रहा है। बच्चों को भारतीय संस्कारों की शिक्षा-दीक्षा भी मिल रही है। यह सब देख कर लगता है कि द्वापर युग साकार हो उठा है। गायों का स्वर्ग है यह आनंदवन। इसीलिए कह रही हूँ कि हर लाचार-बेबस गायों को ऐसे आनंदवन मिलें। काश, यह देश आनंदवन में तब्दील हो जाता।''

''ज़रूर होगा। आज एक आनंदवन है, कल दूसरा भी बनेगा, फिर तीसरा, फिर चौथा...और एक दिन हर तरफ आनंद ही आनंद होगा। जिस देश में सरकारें हिंसक बनती जा रही हों, गो वध पर रोक की माँग करने वालों पर लाठी-गालियाँ बरसाती हों, तो उस देश में मानवता को बचाने के लिए एक रास्ता यह भी है कि लोग गो सेवा में भिड़ जाएँ और देश को आनंदवन-जैसा बनाने की कोशिश करें।''

''और जो गायें कट रही हैं, उन्हें कटने के लिए छोड़ दिया जाए? कभी पाकिस्तान चली जाती हैं, कभी बांग्लादेश। जो बचती हैं, अपने देश के कसाईघरों की भेंट चढ़ जाती हैं। पुराणों में गायों को अवध्य कहा है, अब कहना चाहिए वध्य, जिसका वध किया जा सके। जय हो इस जम्बूद्वीप की।''

श्वेता की बात सुन कर श्यामा कुछ बोली नहीं, बस फीकी हँसी हँसती रही।

तभी सेठ दयाशंकर कुछ लोगों के साथ श्वेता-श्यामा की ओर आता नज़र आया, तो उनकी चर्चा रुक गई।

सेठ गायों की तरफ इशारा करके कुछ बता रहा था। गायें समझ गईं कि आयोग वाले होंगे। सेठ उन्हें झाँसा दे रहा होगा।

सेठ की चालाकी पर गायें शरमा रही थीं।

इस शरमाहट में कुछ न कर पाने की पीड़ा भी अंतर्निहित थी।

पाँच

उस दिन श्वेता-श्यामा गौशाला के बाड़े में विचरण करने के बाद आम के पेड़ के नीचे जा बैठीं। दूसरी गायें भी तपती दोपहरी में शीतल छाँव के नीचे बची-खुची हरियाली की तलाश में भटक रही थीं। एक जगह छाँव के चंद टुकड़े नज़र आए, तो श्वेता-श्यामा वहाँ जा कर बैठ गईं।

दोनों गायें बहुत खुश थीं। खुले वातावरण और छायादार पेड़ों के कारण बहने वाली हवाएँ भी शीतल स्पर्श दे रही थीं। तभी एक आवाज़ ने उन्हें चौंका दिया-

''में...में''...

दोनों ने देखा, पास ही एक बकरा खड़ा है जो झाड़-झंखाड़ को चबा रहा है। वह इधर-उधर देखता जा रहा था। चेहरे से साफ़ नज़र आ रहा था कि वह घबराया हुआ है। मासूम चेहरे वाले बकरे की ''में-में'' में एक गहरी कसक-सी थी। पता नहीं, अचानक कहाँ से इधर आ गया। शायद रास्ता भटक गया हो।

श्यामा ने उसे अपने पास बुलाया। बकरा चला आया।

''कहो, कैसे हो? इधर कैसे आ गए तुम?''

''बस यूँ ही! भटकते हुए। मैं अपने ज़ालिम मालिक की नीयत ताड़ गया हूँ', बकरा काँपते हुए स्वर में बोला, ''वो कल ही कह रहा था कि इसको अच्छे से खिला-पिला कर तैयार करना है। मोटे-ताज़े बकरे में अच्छा मांस आ जाता है। कल को वह मुझे भी मार देगा। इसके पहले भी वह अनेक बकरे हलाल कर चुका है। कई बाँझ बकरियों की भी जान ले ली है उसने। मैं भी कल मरूँगा, यही सोच-सोचकर मैं आज एकदम विचलित हो गया और मौका देख कर भाग खड़ा हुआ, लेकिन... सच बात तो यह है कि भाग कर जाऊँगा कहाँ? एक कसाई से छूटा तो कोई दूसरा कसाई पकड़ लेगा।''

''ठीक कहते हो भैया,'' श्वेता बोली, ''हम निरीह जीवों के जीवन की यही नियति है। कब, कहाँ, किस आदमी की जीभ ललचाए और हम गए काम से। किसी शायर ने कहा है,

हम निर्बल हैं मूक जीव बस, ऐसे ही रह जाते हैं
सुबह सलामत दिखते हैं पर शाम हुई कट जाते हैं
कितने हैं इंसान लालची, गिरे हुए यह मत पूछो
मांस मिले गर खाने को तो मज़हब से हट जाते हैं।''

''अरे..तो क्या तुम लोग भी...मेरी तरह निरीह हो?'' बकरा चौंका, ''तुम लोग तो यहाँ सुख से रह रही हो। हम बकरे-बकरियों के लिए तो ऐसा कोई सुंदर बाड़ा ही नहीं बना आज तक। हम आज हैं, कल नहीं रहेंगे। हमें तो काटने पर ही आमादा रहते हैं सब। पूरे देश में रोज करोड़ों बकरे लोगों के पेटों में समा जाते हैं। कब, कहाँ, कौन हमारी गर्दन काट कर हमें उदरस्थ कर ले, पका कर खा जाए, कहा नहीं जा सकता। सुना है, तुम लोगों को तो सब 'माँ' कह कर भी बुलाते हैं! ठीक कह रहा हूँ न?''

''दूर से देखने पर तो यही लगता है कि हम बहुत सुखी हैं।'' श्यामा फींकी हँसी के साथ बोली, ''लेकिन हमारी आत्मा ही जानती है कि हम कितना भयग्रस्त रहती हैं। अपने मन की व्यथा, अपना तनाव आखिर किसे बताएँ? अब तक हमारे करोड़ों भाई-बहनों को मार डाला गया है। तुमको पता नहीं होगा, कि हमारा मांस विदेश भेजा जाता है। हमारा दूध दुहकर लोग कमाई करते हैं और हमारे बछड़े भूखे रह जाते हैं। आज हम यहाँ रह रही हैं, लेकिन कल अगर बीमार पड़ेंगी, तो यही पापी गौ सेवक हमें किसी कसाई के हाथों बेच देगा। बकरा भाई, हम भी हर वक्त दहशत में रहती हैं।''

''भैया, तुम इधर आ तो गए हो, लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हें कोई न कोई देख ही लेगा। मैं तुम्हारे लिए अब बहुत चिंतित हो रही हूँ।'' श्वेता बोली।

''तुम लोग मेरी फिक्र छोड़ो, मुझे तो पता ही है कि मुझको तो मरना ही है एक दिन।'' बकरा बोला, ''पिछले दिन की बात बताता हूँ। एक कसाई मालिक की क्रूर हरकत को देखकर मेरी एक साथिन बेमौत ही मर गई। यह कोई कहानी नहीं, बिल्कुल सच्ची बात बता रहा हूँ। किसी ने उसका गला भी नहीं रेता,फिर भी बकरी मर गई बेचारी।''

''बड़ी अजीब बात कर रहे हो? मतलब यह कि बकरी अपने आप ही मर गई?''

''हाँ-हाँ, वह अपने आप मर गई' बकरा बोला, 'वह मेरे साथ ही रहती थी। 'सलमा' नाम था उसका। वह बकरी बड़ी सुंदर थी। हमारे साथ रहने वाले एक बकरे 'गबरू' के साथ वह बहुत हिल-मिल गई थी। यूँ कह लो कि उससे बहुत प्यार करती थी। गबरू के साथ मिल कर सलमा ने कई बच्चे भी जने थे। सब लोगों को गबरू और सलमा की जोड़ी अच्छी लगती थी। वे हर घड़ी एक साथ ही रहते थे। लोग मज़ाक में कहने लगे थे, कि कहीं ये लोग पिछले जन्म में लैला-मजनूँ तो नहीं थे। दोनों एक-दूसरे के प्यार में डूबे रहते थे। कभी एक-दूसरे से अलग ही नहीं होते थे। लेकिन एक दिन हमारे मालिक को पता नहीं, क्या सनक सूझी कि उसने दावत देने के नाम पर गबरू का गला काट दिया। यह कत्ल बकरी सलमा के सामने ही हुआ था। चारों तरफ लहू पसर गया। मरते वक्त बकरा जोर-जोर से चिल्ला रहा था। कह रहा था, 'मुझे छोड़ दो..मुझे मत काटो... मुझे मेरी सलमा से अलग मत करो...सलमा...।' उधर सलमा भी 'में..में..में' करके गुहार लगा रही थी कि 'मेरे गबरू को छोड़ दो...छोड़ दो', हम सब ने 'में..में..' करके आवाज़ लगाई, लेकिन मालिक ने किसी की आवाज नहीं सुनी और उसकी गर्दन अलग कर दी। बेचारा गबरू...हमेशा-हमेशा के लिए मौन हो गया। उसके बाद

से तो गजब हो गया। बकरी ने कुछ भी नहीं खाया। बकरे के मर जाने के बाद बकरी ने 'में..में..' की आवाज़ भी नहीं निकाली। शाम को उसके थन से दूध भी नहीं उतरा। दूसरे दिन सुबह वह मरी पड़ी मिली। क्या पता, उसने रात को ही प्राण त्याग दिए हों। बकरी की लाश को देख कर मालिक छाती पीटने लगा। उसे बड़ा दुख हुआ, कि उसकी कमाऊ बकरी मर गई। कल को उससे और बकरे पैदा होते तो कुछ को बेचकर कमाई करता और कुछ खाने के काम आते। बड़ा दुखी था मालिक। उस पापी को इस बात का दुख नहीं था कि उसने बकरे की हत्या की और उसी के ग़म में बकरी चली गई। ऐसे होते हैं ये इनसान। अब क्या कहें हम।''

बकरे की आँखों से आँसू बह रहे थे। वह मौन हो गया। थोड़ी देर के लिए वहाँ सन्नाटा खिंच गया।

बकरे ने ही मौन तोड़ा, ''हम पशु भी समझ लेते हैं कि हमारा मालिक क्या कर रहा है और क्या करेगा। जब हमारे पुट्ठे को पकड़ कर कोई उठाता है और हमारे वज़न का अंदाजा लगता है, तभी से हम दहशत में आ जाते हैं और हमारा वज़न घटने लगता है। बीस किलो वाला बकरा एक हफ्ते में ही दस किलो का रह जाता है। जब कसाई बकरे-बकरियों के सामने ही किसी बकरे को काटता है तो बाकी लोग भी समझ जाते हैं कि कल उसकी भी बारी आ सकती है। बस, बेचारे का वज़न गिरने लगता है।''

बातचीत चल रही थी, तभी वहाँ पंख फड़फड़ाते हुए एक मुर्गा आ गया। श्वेता-श्यामा और बकरा जहाँ खड़े होकर बतिया रहे थे, वहीं आ कर मुर्गा भी कुकडू कूँ... करने लगा।

''अरे, तुम? वाह, क्या बात है। पहली बार किसी मुर्गे को इस तरह उड़ता हुआ देख रही हूँ।'' श्यामा प्रफुल्लित होते हुए बोली, ''क्या तुम भी जान बचाकर नहीं भाग रहे हो?''

मुर्गा उदास हो कर बोला - ''तुमने ठीक पहचाना। कल तक मेरे अनेक साथियों को मार डाला गया। अभी दड़बे में हम दो-चार ही बचे थे। आज वहाँ से न भागता तो कल मैं भी गया था काम से। मैं अंडे दे नहीं सकता इसलिए हम मुर्गों को जल्दी मरना पड़ता है। क्या करूँ। वहाँ रहता तो बस, मार कर खा जाते मुझे। छि:-छि:, यह घटिया आदमी...हमें खाने के बहाने खोजता रहता है। मुर्गियाँ और उनके अंडे खाने के लिए अब उसने पॉल्ट्री फार्म ही खोल रखे हैं।''

मुर्गे की बात श्वेता-श्यामा और बकरे की आँखें भर आईं। अजब संयोग था कि ये सब के सब हत्यारों से बचकर भागते हुए एक जगह एकत्र हो गए थे।

बहुत देर तक कोई किसी से कुछ नहीं बोला। फिर मुर्गे ने ही बात शुरू की -

''समझ में नहीं आता कि आदमी नामक इस खतरनाक जीव की जीभ कितनी चटोरी है। मैं देखता-सुनता रहता हूँ। कभी कोई तरह-तरह की छोटी-बड़ी मछलियाँ खाता है, कोई गाय खाता है, कभी भैंस, कभी सूअर, कभी बकरी, कभी कुत्ता। तीतर-बटेर, साँप,अजगर, छिपकली, केकड़ा, बिच्छू, चींटी, जो भी जीव-जंतु मिल जाए, सब खा लेता है।...

..क्या इस धरती पर अचानक अनाज की कमी हो गई है?

..क्या फलों का अकाल पड़ गया है?

..क्या मनुष्य अभी भी वही कंदराओं में रहने वाला प्राणी है?''

मुर्गे की बात सुन कर बकरा बोला, 'उस वक्त जब आदमी गुफाओं में रहता था, तब तो वह जीव-जंतुओं को खाता ही था, क्योंकि उसे अपना पेट भरना था। उसे इस बात का ज्ञान ही नहीं था कि अनाज कैसे उगाया जाए, फल-सब्जियाँ भी उगाने की कला उसे नहीं आती थी। तब जीव-जंतु थे ही उसके सहज आहार थे। वह इन सबको पकड़ कर भूँज लेता था और खा जाता था। लेकिन अब तो कहते हैं कि वह बड़ा सभ्य हो गया है। खान-पान की अनके चीजें उसने खोज ली हैं, फिर भी वह निरीह जीव-जंतुओं को मार कर खाने में रुचि क्यों लेता है? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता।''

बकरा बोला - ''अभी-अभी तुमने ही कहा न कि जीभ बड़ी चटोरी है। तो यह जो आदमी है न, सचमुच अनाज या फल से इसका दिल ही नहीं भरता इसीलिए वह स्वाद बदलता रहता है। कभी पिज़्ज़ा-बर्गर तो कभी चाउमीन, तो कभी कुछ न कुछ खाता रहता है। अरे, हमारे यहाँ का भगवाधारी साधु भी बड़ा स्वादू है। बात करेगा दया-धर्म की, मगर मौका लगने पर मांसाहार करने से बाज नहीं आएगा। वह गाय-बकरी भले न खाए लेकिन मछली-वछली जरूर खाएगा और जीव-दया का उपदेश भी देगा। यह आदमी आदिमानव का ही वंशज है न। जब तक हिंसा न करे, खून न देखे, इसे चैन ही नहीं पड़ता। यह अपने सामने खड़े होकर जब जानवरों को कटवाता है, तब उसके चेहरे की चमक देखो। जीभ देखो, कैसे लार टपकती रहती है उसकी। कभी देखा है आदमी को मांस खरीदते हुए? मैंने देखा है। कैसी व्यग्रता दिखती है उसके चेहरे पर। आदमी मन ही मन सोचता है कि कितनी जल्दी मांस खरीदूँ....घर पहुँच कर उसे पकवाऊँ और फिर मज़े ले-ले कर खाऊँ।''..

बकरा थोड़ा रुका, बेबस हँसी के साथ फिर बोलने लगा,

''एक दिन की बात है: मांस खरीदते वक्त एक तिलकधारी कह रहा था, ''हाँ, कलेजी काटो...अब थोड़ा यह निकाल दो...हाँ, भेजा चलेगा।...अरे भाई, हड्डी ही हड्डी मत डालो, मांस भी डालो। थोड़ा-थोड़ा सब डाल दो। ओझड़ी(आंत) कम डालना, भेजा, पाया भी डाल दो। खून ठीक से साफ कर दो भाई, नहीं तो ले जाते हुए टपकेगा। कुत्ते पीछे लग जाएँगे। क्यों भई, मांस बिल्कुल ताजा है न, क्योंकि हम लोग बासी नहीं खाते।''

...मांस बेचने वाले ने प्रसन्नता के साथ हाथ लहराते हुए कहा, ''अरे साब, ऊपर वाले की कसम, हम लोग बेईमानी करने वाले नहीं है। हमें दोज़ख में नहीं जाना। एकदम अभी-अभी झटका दिया है। खाकर देखिए। मज़ा आ जाएगा। पंडितजी, आप शायद पहली दफा आए हैं। मेरा दावा है दुबारा भी आएँगे। अच्छे से पकाइएगा।' क्रूर लोग...इस तरह की बातें करते हैं गोया सब्जी-भाजी खरीदी-बेची जा रही है।''

''गज़ब बात बता रहे हो। मुझे तो यकीन ही नहीं हो रहा है।''

''और गज़ब बात यह है कि तिलकधारी मांस खरीद रहा था, तो उसी के ठीक बगल से एक मुसलमान सब्जी-भाजी खरीद रहा था।' बकरे ने कहा, 'तिलकधारी के जाने के बाद

मांस बेचनेवाले ने मुसलमान भाई से मुसकराते हुए कहा-'देख रहो न भाईजान , ये क्या हो रिया है? तुम सब्जी खरीद रहे हो, और पंडिज्जी मीट।' इतना बोल कर मांस बेचने वाले ने ठहाका लगाया, हा...हा....हा... । इस पर सामने वाला मुसकराते हुए बोला- 'दुनिया का चक्र ऐसे ही चलता है। हम शाकाहारी हो रहे हैं और ये मांसाहारी। खैर, धीरे-धीरे ये भी समझेंगे'। ..तो यह हाल है। क्या करें?''

श्वेता रो पड़ी। श्यामा के नैनों से भी अश्रुधार बहने लगी। बकरा भी सुबक रहा था। आखिर बकरे के दुख को कम कैसे किया जाए। मुर्गा भी खामोश था। तभी पेड़ पर बैठे तीतर-बटेर भी नीचे आ गए। दूर बैठी नन्ही-सी गौरैया भी आकर बैठ गई।

ये सारे पक्षी ऊपर पेड़ की डाल पर बैठे-बैठे गाय-बकरे और मुर्गे का संवाद सुन रहे थे।

तीतर बोला - ''हमारे साथ भी यही होता है। आदमी हमें बड़े चाव से खाता है।''

बटेर बोली - ''हम लोग मनुष्यों से जान बचाकर उड़ते रहते हैं, लेकिन मनुष्य है कि हमें पकड़ ही लेता है। कभी जाल फैला कर, कभी गुलेल मारकर और कभी बंदूक चलाकर।''

नन्ही गौरैया भी चहकी - ''मुझे भी नहीं छोड़ते ये नीच लोग। कहते हैं कि यार, गौरैया खाने में बड़ा मज़ा आता है। इंसानों के इस मज़े में हमारी सज़ा हो जाती है। बैठे-बिठाए हमारी जान चली जाती है। पता नहीं रोज़ कितनी चिड़ियाएँ पकाई जाती हैं। हमारा रत्ती भर का मांस ही इन्हें भाता है। इन लोगों को पेड़ों पर हमारा बैठकर चहचहाना पसंद ही नहीं। हमारा शिकार कर के लोग अपने निशाने का आजमाते हैं और धनपति-फकीरपति सभी लोग हमें खाकर कुछ इस तरह तृप्त होते हैं, मानो बरसों से इन भुक्खड़ों को खाना ही नसीब न हुआ हो।''

गौरैया की बात सुनकर बटेर बोली- ''सच कहा तुमने। क्या धनपति, क्या गरीब, हमें मार कर खाने में सब आगे हैं। गरीब हमें पकड़ कर खाता है तो पैसे वाले लोग होटल या ढाबे जा कर ऑर्डर दते हैं। बस्स, हमारा मांस उनके सामने हाजिर हो जाता है। आदमी जब तक शाकाहारी नहीं बनेगा, हम पक्षियों की भी जानें इसी तरह जाती रहेंगी।''

श्वेता इधर-उधर देख कर बोली - ''अरे, आज तो हम पशु-पक्षियों की एक सभा ही हो गई यहाँ।''

''हाँ, बिल्कुल ठीक बात।' बकरा बोला, 'आदमी सभा करता है और जुलूस निकालकर अपनी माँगें मनवा लेता है। हम लोग तो जुलूस भी नहीं निकाल सकते। निकालें भी तो कोई हमारी बात समझने से रहा। उल्टे सब गद्‌गद हो जाएँगे कि आज इतने सारे पशु-पक्षी एक साथ मिल गए। पकड़ो सबको और एक-एक कर पकाओ फिर खाओ।''

''तो हम क्या करें?'' मुर्गा बोला, ''हम अपने को भगवान भरोसे छोड़ दें?''

''सचमुच...हमारे सामने तो और कोई चारा भी नहीं है! हम अपनी किस्मत पर अफ़सोस कर सकते हैं कि ईश्वर ने हमें पशु-पक्षी क्यों बनाया।'' बकरा बोला, ''मरना ही हमारा अंतिम सत्य है। आज नहीं तो कल, जब मनुष्य की जीभ में पानी आएगा, वह हममें से ही किसी एक जीव को खाकर तृप्त होगा। इसलिए रोने-धोने से कोई फायदा नहीं। बस...अभी

तो इस शीतल छाँव का आनंद लिया जाए। कल यह भी मिले या न मिले। पता चला कि आदमी ने पेड़ों को काट कर दुकानें निकाल दीं। खैर...एक दिन तो सबको मरना है। यह आदमी..जो हमें मारकर खा जाता है, खुद भी कितना असुरक्षित रहता है। कब सड़क दुर्घटना में मर जाए, कब किसी की हत्या हो जाए, कब कोई आतंकवादी या नक्सली उड़ा दे, कब अचानक 'हार्टफेल' हो जाए, वह खुद नहीं जानता। जैसे मनुष्य हमको मारकर खाता है, उसी तरह वह भी एक दिन अचानक काल के गाल में समा जाता है। तो हम सारे जीव मरने के लिए ही पैदा हुए हैं। हम कुछ दिनों के मेहमान होते हैं। आदमी कुछ सालों का।''

बात चल रही थी कि तभी अचानक कुछ हलचल हुई। श्वेता-श्यामा ने देखा कि कुछ गो-भक्त उनकी ओर चले आ रहे हैं। वे नारे लगा रहे थे -

बोलो -गौ माता की... जै...

विश्व की माता... गौ माता-गौ माता...

विश्व का कल्याण कौन करेगा.?

गाय करेगी... गाय करेगी...

मनुष्यों के समूह को आता देख बकरा दूर जाकर छिप गया। मुर्गा भी उड़ कर पेड़ पर जा बैठा। तीतर-बटेर और गौरैया भी फुर्र से उड़ गई।

गौ भक्त आए। उन्होंने अपने साथ रखे झोले से गुड़-चना निकाला और श्वेता-श्यामा और दूसरी गायों को खिलाने लगे। गुड़ खाकर गायों को अच्छा लगा। वे प्रफुल्लित हो गईं। उनका शरीर कंपित होने लगा।

श्वेता ने श्यामा से कहा - ''काश! यह आदमी हमारे साथ हमेशा ऐसा ही व्यवहार करता।''

श्यामा ने सिर हिलाया, तो गले की घंटी बज उठी। एक गौ सेवक ने श्यामा को फिर से गुड़ खिला दिया।

गायों को गुड़ खिलाते-खिलाते गो भक्त सुरेश यादो ने कहा - ''यार, वह देख, पेड़ पर मुर्गी नज़र आ रही है।''

''तुम तो वैसे भी मुर्गी फँसाने में माहिर हो।'' महेश हँसते हुए बोला, ''सारे शहर के लोग तुमको मुर्गीबाज़ कहते हैं। अरे हाँ यार, मुर्गी! यहाँ कैसे आ गई!''

''लेकिन, यह तो मुर्गा है बे! बहुत दिन हो गए चिकन-बिरयानी खाए। कब ले चल रहे हो ढाबा?''

''अरे, धीरे-धीरे बोल यार, यहाँ किसी ने सुन लिया तो मुझे जैन समाज से बाहर कर देंगे।'' महेश बोला।

''हाँ बॉस, मुझे भी सावधान रहना है। मैं भी तो ब्राह्मण-सुत हूँ। बाप ने सुन लिया तो घर से बाहर कर देगा।'' परिमल ने मुसकराते हुए कहा।

''अरे, कोई भरोसा नहीं कि तेरे पिताजी भी छिप-छिप कर चिकन खाते हों मेरे फादर की तरह?'' सुरेश मुसकराया।

''हाँ यार, आजकल तो बहुत-से लोग खाते हैं। पहले हम सोचते थे कि केवल कुछ जाति-धर्म के लोग ही मांस खाते हैं, लेकिन अब तो हिंदू भी शुरू हो गए हैं। जैन, बनिया, कायस्थ या ब्राह्मण..इनमें भी आजकल अनेक मांसाहार के चटोरे मिल जाएँगे, जबकि दूसरे धर्म के लोग मांसाहार से दूर होते जा रहे हैं। उल्टा हो रहा है। कितने ही मुसलमान और सरदार हैं, जो नॉनवेज छूते तक नहीं। खैर, गौशाला में ऐसी चर्चा न की जाए तो बेहतर।''

''लेकिन इतना होने के बावजूद हम लोगों ने अपने कुछ सिद्धांत नहीं छोड़े हैं।''

''जैसे?''

''देखो, हमारे यहाँ मांस खाना तो दूर, लहसुन-प्याज भी नहीं चलता, इसलिए मैं क्या करता हूँ कि जब मांस का आर्डर देता हूँ, तो वेटर का सख्त निर्देश रहता है कि उसमें प्याज-लहसुन बिल्कुल न डाले। भाई, कुछ तो नियम का पालन हो।''

सुरेश की मनोरंजक बात सुन कर सारे दोस्त हँस पड़े।

गायों को गुड़-चना खिलाने के बाद गो भक्तों ने गायों को प्रणाम किया। गायों के शरीर पर बारी-बारी से हाथ फिराया और बाहर निकल गए। उनके जाते ही पक्षी डाल से उतरकर नीचे आ गए।

गोष्ठी फिर शुरू हो गई।

इस बार एक तोता भी आ गया और एक कुत्ता भी कहीं से चला आया। कुत्ते को देखकर गाय ने पूछा -

''क्यों भाई, क्या तुम्हारी जान को भी खतरा है?''

कुत्ता बोला- ''हाँ, हमारी जान को खतरा ही खतरा है। लोग तो रोज़ ही कहते हैं कि 'साले, कुत्ते की मौत मरेगा', और हम लोग इसी तरह मरते भी हैं। वैसे तो कई बार आदमी भी कुत्ते की मौत मर जाता है। पैदल जा रहा होता है या फुटपाथ पर सो रहा होता है कि किसी मदहोश अमीरज़ादे की गाड़ी कुचल कर चली जाती है। बड़े-बड़े पैसे वाले भी इसी तरह की मौत मर चुके हैं। खैर.. दुःख और तब बढ़ जाता है, जब हम सुनते हैं कि हमारे कुछ साथियों को भी कुछ लोग पका कर खा जाते हैं। कहते हैं कि जब बस्तर में एक बटालियन तैनात थी, तो वहाँ के अधिकांश कुत्ते उनके भोजन बन गए थे। पूरे इलाके में कुत्ते कहीं नज़र ही नहीं आते थे। या तो वे उदरस्थ हो गए था या फिर जान बचाने के लिए भाग खड़े हुए थे। पता नहीं, हमारे अंदर के मांस में ऐसी क्या विशेषता है। इसलिए खतरा तो हम पर भी है।''

तोते ने टें-टें करते हुए कहा- ''हमारा मामला थोड़ा-सा अलग है। लोग मेरी सुंदरता के कारण मुझे पालते हैं। पिंजरे में बंद कर देते हैं। मेरी आज़ादी छीन ली जाती है, लेकिन जो 'अनादमी' टाइप के होते हैं, मुझे पका कर खाते भी हैं। आदमी का कोई भरोसा नहीं। इसके बारे

में हम सुनते हैं कि यह बड़ा विवेकवान है, दयावान है। इसके पास बुद्धि है। लेकिन मैंने देखा है कि इसके जैसा कठोर-हिंसक जीव कोई दूसरा नहीं। सबसे मज़े की बात यह है कि आदमी क्रूरता तो करता है, लेकिन इसका अहसास ही नहीं करता कि वह क्रूरता कर रहा है। मुझे हँसी तो तब आती है, जब मनुष्य ऊपरवाले को बाकायदा प्रणाम करके आएगा और अपने सामने ही मनचाहे जानवर या पक्षी की जान लेकर उसे पकाकर खा जाएगा। बलि भी देता है तो ऊपर वाले को हाथ जोड़ कर, गोया भगवान उसे आदेश देते हैं कि 'ले-ले.. ले-ले, इस जीव की जान ले ले'। छिः। इस आदमी के बारे में कितना कहें, क्या कहें? जो कहेंगे कम होगा।''

तोते की बात से सभी सहमत थे। सभी ने अपनी-अपनी आँखों से मनुष्यों की हिंसक हरकतें देखी थीं। लेकिन ये सब इतने बेबस थे कि कुछ कर नहीं सकते थे सिवाय चर्चा के।

तोते ने टें-टें करते हुए कहा-''अरे, बेबस तो यह मनुष्य भी होता है। मनुष्यों में भी ऐसे निरीह लोग होते हैं, जो कभी कुछ नहीं कर पाते। जीवन भर शोषण सहते रहते हैं। हाँ, चर्चा कर के अपना समय ज़रूर बिता देते हैं, क्योंकि चर्चा में क्या खर्चा?''

तोते ने कहा-लोग बड़े शौक से हमें पिंजरे में बंद कर घरों में रख लेते हैं। हमारे पंख काट देते हैं। धीरे-धीरे तोता उड़ना ही भूल जाता है। पिंजरा उसे रास आ जाता है। अभी मैं एक शायर के घर में कैद था। मुझे देख कर उसने एक शेर कह दिया। सुनो,

पिंजरे में रह-रह कर तोता उड़ना भूल गया
उसको भी उड़ने का हक है कहना भूल गया।
सुविधाओं की बैसाखी कुछ ऐसी मन भायी,
पैर सलामत थे लेकिन वह चलना भूल गया
बार-बार दुःख ने आ कर के इतना रुला दिया
दिन बहुरे तो बेचारा फिर हँसना भूल गया

..लेकिन उस शायर को पता नहीं था कि मैं भी उड़ सकता हूँ। मैं तो तलाश में ही था कि कब मौका मिले और कब नील गगन की छाँव तले आ जाऊँ। और एक दिन भूल से पिंजरा खुला रह गया तो बस, मैं फुर्र...हो गया। मेरे पर कट चुके थे, लेकिन धीरे-धीरे नये पर उगने लगे थे। आज़ाद होना चाहता था, सो मैं उड़ गया।''

तोते की शायराना बातें सुन कर सब खुश हो गए। माहौल में सरसता आ गई।

श्यामा बोली - ''एक दिन मैं एक संत का प्रवचन सुन रही थी। वे बता रहे थे कि कुछ ज़ालिम लोग सूअर के बाल उखाड़ कर उससे ब्रश बनाते हैं। कुछ भेड़ों की खालों से टोपियाँ बनती हैं। कहते हैं कि मेमने के पैदा होने से पहले भेड़ की जोरदार पिटाई होती है। लोहे के कोड़े से मारा जाता है उसको, ताकि उसके बाल ढीले हो जाएँ। अनेक कोड़े पड़ने के बाद मेमना पैदा होता है और उसी ज़िंदा मेमने की तब खाल उतारी जाती है। उई माँ... हाय-हाय, मैं सिहर उठती हूँ सोचकर। फिर उसी खाल से टोपी और दूसरी चीज़ें बनाते हैं और आदमी शान के साथ उस टोपी को पहनता है और मुँह में पान दबा कर शेखी मारता है।''

श्वेता बोली- ''मुझे भी कुछ बातें याद आ रही हैं। सुना है कि कुछ 'फेस पाउडर' ऐसे होते हैं, जो किसी खास जानवर की आँख और दिल को पीसकर बनाए जाते हैं। और लिपस्टिक? यह भी तो ज्यादातर पशु-पक्षियों के खून से ही बनती है। इनके खून से बनी लिपस्टिक लगाकर औरतें सोचती हैं कि हमारी सुंदरता बढ़ गई है, लेकिन वे इतनी गहराई से सोचती ही नहीं कि हमारे होंठ किसी निरीह पशु-पक्षी के खून से रंगे हुए हैं... और वे डायन हो गई हैं, ड्रैकुला बन गई हैं। फैशन के चक्कर में आदमी के पास इतना वक्त ही नहीं है कि वह सोच सके कि जिस चीज़ का इस्तेमाल कर रहा हूँ, वह किसी के खून से सींची गयी है। किसी की जान की कीमत पर तो मेरा चेहरा नहीं चमक रहा? लेकिन ऐसा सोचने वाले हैं ही कितने?''

''अगर ऐसा सोचते तो जीव-हत्याएँ ही क्यों होती।'' बकरा बोला।

''आदमी शैम्पू लगाता है बाल चमकाने के लिए। इनमें से कुछ शैम्पू भी घनघोर हिंसा के बाद तैयार होते हैं।' श्वेता बोली, ''खरगोश को मारकर भी शैम्पू तैयार किया जाता है। पहले उसकी प्यारी आँखों को अंधा करने के लिए उसमें कुछ ज़हरीली बूँद डाली जाती हैं, इससे वह अंधा हो जाता है। उसे यातना दी जाती है तो नन्हीं-सी जान मर जाती है। फिर उससे शैम्पू बनाते हैं। उसका मांस भी खाते हैं। अरे मूर्खो,जड़मतियो, जड़ी-बूटियों से तैयार किए गए शैम्पू भी तो बाज़ार में मिल रहे हैं। उनका पता करो, उनका ही उपयोग करो न, लेकिन समाज का एक ऐसा क्रूर वर्ग है, जो केवल जानवरों को मार कर बनाई गई चीज़ें ही पसंद करता है और उस पर तुर्रा यह कि वह 'मॉडर्न' है। काहे का मॉडर्न है, ये तो पूरी तरह से बैकवर्ड है। गँवार..असभ्य..अरे, मॉडर्न होने का क्या मतलब? क्या करुणा-अहिंसा-प्यार आदि जुमलों से जिनका कोई नाता नहीं होता उन्हें ही आधुनिक कहा जाता है? नहीं। मुझे तो लगता है, जो जीव जितना दयालु है, जितना अहिंसक है, वह उतना आधुनिक है।''

''बिल्कुल सही बात है, हम तो समझ रहे हैं, लेकिन मनुष्य तो समझे आधुनिकता की इस परिभाषा को।''

तभी म्याऊँ-म्याऊँ की आवाज़ आई। सबने देखा कि एक बिल्ली कहीं से आ गई है।

बिल्ली मुसकराते हुए बोली ''मैं भी वहाँ किनारे बैठे आप सब लोगों की चर्चाएँ सुन रही थी।''

''तो छिपकर क्यों बैठी थी? हम लोगों से कैसा डर?'' श्यामा ने पूछा।

''बस यूँ ही। इंतज़ार कर रही थी कि ग्वाला आए और दूध दुहे। कुछ दूध नीचे गिर जाता है, तो उसे मैं पी जाती हूँ।''

''हाँ, तुमको दूध की क्या कमी?'' श्यामा मुस्कराते हुए बोली, ''क्यों शेर की छुटकी मौसी, तुम तो किसी न किसी घर में घुसकर दूध पीने में सफल हो जाती हो।''

बिल्ली मुसकराई। बात ठीक थी। फिर बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ करती हुई बोली-

''मैं भी कुछ कहना चाहती हूँ। आप लोगों की बातें सुन रही थी। आप लोग आदमी की क्रूरताओं की जो कहानियाँ बता रही हैं, उसे सुनकर मुझे भी कुछ याद आ रहा है। अपनी

बिरादरी पर जो अत्याचार हो रहा है, उसके बारे में मुझे भी कुछ पता है। आप लोगों की इज़ाज़त हो तो मैं भी कुछ बोलूँ?''

''नेकी और पूछ-पूछ?' श्यामा बोली, ''यहाँ कोई सरकार थोड़े न बैठी है, जो कटु-सत्य को बर्दाश्त नहीं कर पाती? जो कहना है, खुल कर कहो।''

बिल्ली बोली-''अफ्रीका में एक खास किस्म की बिल्ली को पिंजड़े में बंद करके उसे खूब पीटा जाता है। इससे बिल्ली पागल हो जाती है। वह जब गुस्से में आ जाती है, तो उसके शरीर में कुछ खास किस्म का रस बनने लगता है। तब दो-तीन लोग बिल्ली की टाँगें और पूँछ पकड़ कर उसका पेट चीरते हैं और वह सुगंधित ग्रंथि निकाल लेते हैं। क्रम तब तक चलता है जब तक बिल्ली मर नहीं जाती। अब बताओ..सुगंध पाने के लिए बिल्ली को किस बुरी तरह मारा जाता है।''....

...''इसी तरह नेवले जैसे दिखने वाले गोह की कमर तोड़कर उसे उबाला जाता है। सिर्फ उसका तेल निकालने के लिए। कई बार फुटपाथ के किनारे बैठ कर ये लोग धंधा करते हैं और कोई कुछ नहीं बोलता।''

तोते ने बीच में ही टें-टें किया, ''यह मैंने अपनी आँखों से देखा है। कुछ लोग तो साँपों को भी मारकर खा जाते हैं और उनकी खालों से बटुए और जूते आदि सामान बनाते हैं।''

''पता नहीं, यह आदमी कितना विचित्र जीव है कि हर जानवर को मार कर खा लेता है।'' बिल्ली बोली, 'हर देश में ऐसे अजीबोगरीब मनुष्य मिलते हैं। कोई केकड़ा खाता है, कोई मगरमच्छ, अजगर साँप, उल्लू, बिल्ली, कुत्ता, सुअर, गिलहरी, बंदर, चूहा, छुछंदर, चींटी जो भी पशु-पक्षी या कीड़े-मकोड़े याद आ जाएँ, उन सबका नाम ले लो, आदमी सबको मारकर खा जाता है। वह अकसर इन बातों को बड़े गर्व से बताता भी है, जैसे बड़ी बहादुरी का काम कर दिया हो।''

''मेरी भी सुन लो', श्वेता बोली, ''हम गायों की आँतों के चमड़े में चाँदी रख कर उसे हथौड़े से कूट-कूट कर वरक बनाया जाता है और फिर यही वरक मिठाई के ऊपर सजा दी जाती है। तुमने देखा होगा, त्योहारों के समय मिठाइयों को सजाने के लिए उस पर वरक लगाया जाता है। कहते हैं कि शक्कर को साफ करने के लिए हमारी हड्डियों का इस्तेमाल होता है। मैंने तो यह भी सुना है कि साबुनों में भी पशुओं की चर्बी मिलाई जाती है।''

''तुमने जो कुछ भी सुना है, गलत नहीं सुना।'' श्यामा बोली।

तभी अचानक एक बंदर उनके बीच टपक पड़ा। उसे देख कर बाकी जानवर डर गए। बंदर मुसकराया और बोला-

''मैं भी ऊपर डाल में बैठ कर आप लोगों की बातें सुन रहा था, तो मुझसे न रहा गया, इसलिए नीचे आ गया। मैं भी अपनी बिरादरी का कुछ दर्द आप लोगों का बताना चाहता हूँ।''

''हाँ-हाँ, क्यों नहीं, आज हम लोग मनुष्यों के विरुद्ध अपना गुस्सा निकालने के लिए ही तो जमा हुए हैं। बोलो, तुम क्या बता रहे हो?''

''आप सब लोगों की तरह हमारे साथ भी इंसान हिंसा करता है। टेल्कम पाउडर और लिपस्टिक बनाने में भी हमारे कुछ अंगों का इस्तेमाल किया जाता है।' बंदर बोला, ''हमें मार के खाने का काम तो कुछ लोग करते ही है। हमें पकड़ कर चौराहे पर नचाया भी जाता है। यहाँ तक तो चलो ठीक है कि हम मदारी की कमाई का जरिया बन गए हैं, हमारा जीवन किसी के काम आए तो इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है, लेकिन आदमी अपना स्वाद बदलने के लिए हमारी जान ले लेता है या जब सौंदर्य-प्रसाधन बनाने के लिए हमारी हत्या करता है, तब दु:ख होता है, रोना आता है।''

''मनुष्य अपने पेट को भयावह दुर्गंधयुक्त कब्रिस्तान में तब्दील कर रहा है और उसे इस बात का अहसास भी नहीं होता'', श्वेता बोली, ''जबकि आदमी की जन्मजात प्रकृति शाकाहारी है, लेकिन लगता है कि आदमी सोचता है कि वह अपने जंगली संस्कार क्यों छोड़े। बस, वह भी जंगली बनकर पशु-पक्षियों के मांस खाने लगता है। वाह रे इंसान। इसको मनुष्य बनाने के लिए न जाने कितने महापुरुषों ने कविताएँ रचीं, ग्रंथ लिखे, उपदेश दिए, लेकिन इस पर किसी का असर नहीं हुआ। उपदेश की चीज़ें केवल किताबों में रहीं या प्रवचनों तक सीमित रह गईं। आदमी सुधरने से रहा। हर चीज़ का तर्क है उसके पास। मांस खाने का भी सॉलिड तर्क रहता है उसके पास। अब क्या करें।''

''इसे तर्क नहीं, कुतर्क कहो', श्यामा बोली, ''सुनो, मनुष्य के कुतर्क की इंतहा। वह कहता है, कि 'अरे भाई, दुनिया में अनाज का संकट बढ़ गया है तो क्या करें? जानवरों की संख्या भी इफरात हो गई है। अगर हम लोग न खाएँ तो चारों ओर जानवर ही जानवर नज़र आने लगेंगे, इसलिए हम लोग प्राकृतिक संतुलन बनाने के लिए मांस खाते हैं तो गलत नहीं करते। हम जीव-जंतुओं को उनकी देह से मुक्त कर रहे हैं...हम लोग धरती की सेवा कर रहे हैं।' और सुन लो...कहते हैं कि 'जब गाय-बैल सब बेकार हो गए तो उनको रखने से क्या फायदा। न गाय दूध देती है और न बछड़े, या बैल भी किसी काम के नहीं रह जाते। फिर इनको पालने से फायदा क्या? अब मूर्खों को कौन समझाए कि अरे, गो मूत्र और गोबर बेच कर भी वह पर्याप्त पैसे कमा सकता है। लेकिन बुनियादी तौर पर यह मनुष्य भयंकर लालची है। उसे अधिक से अधिक लाभ चाहिए, इसलिए वह भगवान की पूजा करेगा और हमें कसाइयों के हाथों बेच आएगा।''

''आखिर जीव-दया को लेकर मनुष्य का विवेक कब जाग्रत होगा?''

यह थी गौरैया। इस नन्हीं-सी जान ने बड़ा-सा प्रश्न उछाला।

गौरैया के सवाल का जवाब किसी को सूझ नहीं रहा था। तभी श्यामा कुछ सोचते-सोचते बोली, ''जीव दया के लिए जीने-मरने वाले अनेक सज्जन, संत-मुनि और सामाजिक कार्यों में लगे कुछ लोग इस दिशा में कोशिश तो कर रहे हैं। कुछ लोगों का विवेक जाग्रत है, इसी कारण तो दुनिया में अहिंसा की प्रतिष्ठा बनी हुई है। करुणा, दया, प्यार, स्नेह, क्षमा जैसे शब्दों का अर्थ भी साकार होता रहता है। लेकिन आज के इस भागमभाग वाले और निपट

बाज़ारू युग में सबका विवेक जाग ही नहीं पाता। मुझे लगता है कि जब तक मनुष्य अपने मनुष्य होने की सच्ची परिभाषा समझ नहीं पाएगा, तब तक उसका विवेक जाग ही नहीं सकता। वैसे कुछ सज्जन लोग हैं। काम चल रहा है, लेकिन आदमी इतना ढीठ है कि हम सब बेबस हैं। कोई जीव-दया-करुणा की बात करे तो लोग उसका उपहास उड़ाते हैं। हँसते हैं उस पर। हिंसा को इतनी जबर्दस्त सामाजिक स्वीकृति मिल चुकी है कि अब हिंसा हिंसा ही नहीं लगती। अनाज-फल की तरह मांसाहार भी आदमी की दिनचर्या का सहज अंग बन गया है। लोग रोज़ जानवरों का लहू बहाते हैं, लेकिन उन्हें रत्ती भर अपराधबोध नहीं होता। अगर ऐसा हो गया तो वह पका हुआ, भुना हुआ, तला हुआ, नमक-मिर्च, मसाला डालकर बनाया गया माँस कैसे खाएगा? मांसाहारी घरों में छोटे-छाटे बच्चों के सामने जानवर कटते रहते हैं। ये बच्चे आए दिन हिंसा देखते हैं, खून देखते हैं। यही देखते-देखते बड़े होते हैं। स्वाभाविक है कि हिंसा उनके लिए चौंकाने वाली या दहशत फैलाने वाली चीज़ नहीं होगी। एक सहज प्रक्रिया है वह। आजकल अधिकांश लोग यही कहते पाए जाते हैं कि अनाज भी कोई खाने की चीज़ है भला? फिर भी मुझे मनुष्यों पर भरोसा है। मुझे लगता है कभी न कभी उसके अंदर की करुणा जागेगी। जरूर जागेगी।''

लेकिन यह बकरा..क्या करे? कहाँ जाए? लौटेगा तो गर्दन तो कटनी ही कटनी है।

श्यामा बोली - ''मेरी मानो, तुम तो यहीं कहीं छिप कर रहो।''

श्वेता बोली-''किसी ने इसे देख लिया तो?''

''हाँ, तब तो गड़बड़ हो जाएगी। लेकिन मैं यहाँ रहूँ कैसे? मैं कहीं छिप भी तो नहीं सकता।''

बात चल ही रही थी कि ग्वाला यादो आ गया। उसकी नज़र बकरे पर पड़ी, तो वह उछल गया, 'अर...रे वाह, गौशाला में बकरा?' इधर-उधर देख कर उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई -

''अरे भाई, ये बकरा किसका है?''

लेकिन कहीं से कोई जवाब नहीं आया। वह इधर-उधर देखने लगा। कोई नहीं दिखा तो खुश होकर बोला- ''चलो, अब यह तो अपना हो गया। इसे बेच दूँगा। लगता है कि दो-एक हजार तो मिल ही जाएंगे।''

इतना बोल कर वह तेजी के साथ बकरे की ओर दौड़ा। बकरा उससे बचकर भागने लगा। लेकिन कहावत है न कि बकरी का बच्चा कब तक खैर मनाएगा, कब तक? आखिरकार दो-चार लोगों की मदद से बकरा पकड़ लिया गया। अनुभवी यादो ने पहले बकरे को पुट्ठे से उठाया और अंदाज लगाने लगा कि इसमें कितना मांस निकलेगा। फिर उसने बकरे को एक मोटी रस्सी के सहारे बाँध दिया और गायों को चारा-पानी देने लगा।

बकरा मिमिया रहा था। वह अपनी आवाज़ में कह रहा था - 'छोड़ दो भाई....मुझे म..म..मुझे छोड़ दो। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?'

श्वेता-श्यामा भी रँभा कर यही कह रही थी कि 'इस मासूम को जाने दो', लेकिन उनकी बात कोई समझे तो।

दोनों गायों की आँखों से आँसू बहने लगे। उधर बकरा भी घबरा गया था। आकाश से गिरे, तो खजूर में अटक गए। एक कसाई से बच कर भागे तो दूसरे के हाथों में पड़ गए।

बकरा रो रहा था। इन आँसुओं को देखने और महसूस करने वाला कोई मनुष्य वहाँ नहीं था... कोई भी नहीं।

शाम हो चुकी थी। पंछी अपने-अपने बसेरों की ओर उड़ गए।

श्यामा-श्वेता को बकरे और मुर्गे के पकड़े जाने का दु:ख था। लेकिन कुछ कर नहीं सकती थी, सिवाय रँभाने के।

यादो घर लौटते वक्त सावधानी के साथ निकला। ऐसा न हो कि बकरे का मालिक रास्ते में ही मिल जाए। बहुत संभव है कि बकरा आसपास से ही आया होगा इसलिए यादो दूसरे रास्ते से घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में फन्ने खाँ का घर देख कर यादो रुक गया।

''फन्नेभाई, ये बकरा खरीदेंगे?''

''कहाँ से पा गए भाई?''

''अरे, पाया नहीं, मेरा ही है। वैसे तो मैं केवल गाय ही पालता हूँ। बीच में कुछ बकरे-बकरियों को पालने का भी शौक चर्राने लगा, सो खरीद लिया था। लेकिन मैंने देखा, कि इतना सब कुछ मुझसे न होगा, इसलिए अब एक-एक करके सबको निकाल रहा हूँ। यह आखिरी बकरा बचा है, ले लीजिए।''

फन्ने खाँ ने बकरे को गौर से देखा। वे समझ गए थे, कि यादव झूठ बोल रहा है, लेकिन कैसे कह देते कि तुम झूठे हो, इसलिए टालने की गरज से वे मुसकराते हुए बोले-''ऐसा है भाई, मैं इसके एक हजार रुपए से ज्यादा नहीं दूँगा।''

''बस, एक हजार?' यादव ने कहा,''यह तो तीन हजार का है।''

''होगा, लेकिन मेरे पास तो एक हजार ही है।''

यादो ने सोचा लालच ठीक नहीं। लक्ष्मी आ रही है तो आने दो। फोकट में बकरी के एक हजार मिल रहे हैं। उसने कहा, ''ठीक है जी, दे दीजिए। पैसों की ज़रूरत है इसलिए सस्ते में बेच रहा हूँ।''

फन्ने खाँ गद्‌गद। तीन-चार हजार का तंदरुस्त बकरा एक हजार में मिल गया। वे भीतर गए और एक हजार रुपए ले कर आए और यादव को देते हुए कहा, ''कुछ और बकरे हों तो ले आना।''

''नहीं, यही आखिरी था।'' इतना बोल कर साइकल पर सवार हुआ और यह गया कि वह गया।

फन्ने खाँ फायदे में रहे और यादव भी। घाटे में तो केवल बकरा ही रहा।

आज वह कटने से बच गया था, लेकिन कल....? कटेगा ही कटेगा।

छह

श्यामा आज सुबह से ही हँस रही है। वह रह-रह कर मुसकराए और फिर हँस पड़े।

श्वेता को कारण समझ नहीं आ रहा था कि श्यामा ऐसे क्यों हँस रही है? कई बार जीव जब गहनतम दुख में होता है, तो उसे भूलने के लिए भी हँस पड़ता है। श्वेता ने अनुमान लगाया कि श्यामा भी अपनी दुर्दशा पर रोते-रोते हँस पड़ी होगी। श्वेता को किसी के कहे शेर याद आ गए-

रोते-रोते हँस पड़ते हैं
लोग हमें पागल कहते हैं
दर्द हमारा क्या बतलाएँ
अब तो दर्द हमें सहते हैं
जहाँ दर्द की फुलवारी है
हम उस अँगने में रहते हैं
कब तक दर्द सहेंगे इतना
लो दुनिया से हम चलते हैं

''बहन, तुम किस बात पर आज इतना हँस रही हो?'' श्वेता ने धीरे से पूछ ही लिया

श्वेता के सवाल पर श्यामा गंभीर हो गई। फिर थोड़ी देर बाद हँसी की दुग्धधार-सी फूट पड़ी। बड़ी मुश्किल से वह खामोश हुई और बोली, ''अरी बहन, हँस कर ही तो इस जीवन के दुख का भार कम किया जा सकता है। मैं जब सोचती हूँ कि इस मनुष्य ने हमको माँ कहा, वेद-पुराण हमारी स्तुतियों से भरे पड़े हैं, असंख्य श्लोक हमारी महिमा का बखान करते हैं, तो फिर क्यों हमें दर-दर भटकना पड़ता है? क्यों गायों के हिस्से में कचरा है? पॉलीथिन है? पिटाई है? और...हत्या है? बस, यही सब सोचकर स्वयं पर हँसी आ रही थी कि मैं गाय की योनि में क्यों आ गई। यह मनुष्य हमें माँ कहता है और हमें मार कर खाने से परहेज भी नहीं करता। इतना दोगलापन तो मैंने और कहीं नहीं देखा, न सुना।''

श्यामा की बात सुनकर श्वेता कुछ बोल न पाई। बात कड़वी थी, पर सच्ची थी।

श्यामा ने फिर कहना शुरू किया, ''तुमको शायद याद न हो पर मुझे याद है। मैंने किसी महात्मा का प्रवचन सुना था । वे बता रहे थे कि एक बार महर्षि वशिष्ठ इक्ष्वाकु वंश के सौदास राजा के पास गए और उनसे कहा था कि हे राजन, जिस तरह तमाम नदियाँ समुद्र में मिल जाती हैं, उसी तरह सोने के सींगोंवाली और दूध देने वाली गायें मुझे प्रदान करें। मैं प्रतिदिन ऐसी गायों को देखूँ और गौएँ मुझको निहारें। गौएँ हमारी हैं और हम गौओं के हैं। गौएँ हैं, इसी से हम लोग हैं। यतो गावस्ततो वयम्।''

''भगवान राम के बारे में कहते हैं कि उन्होंने सहस्र करोड़ गायों का दान किया था। वाल्मीकि रामायण में भी लिखा है, 'गवां शतसहस्राणि दश तभ्यों ददौ नृप:' यानी महराज

दशरथ ने यज्ञ के अवसर पर दस लाख गायें दान कीं। तुलसीदास जी 'रामचरित मानस' में भी कहते हैं 'विप्र, धेनु, सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार।' एक और जगह तुलसीदास जी कहते हैं, 'सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई, जौ हरि कृपा हृदय बस आई'। दशरथ और राम की तरह माता जानकी के पिता राजा जनक भी गो भक्त थे। उन्होंने याज्ञवल्क्य ऋषि को एक हजार गायें दान में दी थी। इन गायों की सींगे सोने मढ़ीं थीं।''

''बहन, उस वक्त भी गाय के प्रति अनुराग देखते ही बनता है। पता नहीं वह भारत देश कहाँ बिला गया। वैसे गाय तो उस वक्त भी खतरे में थी और आज भी खतरे में है, इसलिए भगवान को अब तो अवतार लेना चाहिए न?''

''हाँ, लेना तो चाहिए, लेकिन भगवान नहीं आते, तो इंसानों को ही भगवान की तरह काम करना होगा।''

श्वेता की बातें सुनकर श्यामा बोली, ''तूने यह बड़ी सुंदर बात कही। तेरी बात सुन कर अब मुझे भी महाराजा दिलीप का स्मरण आ रहा है। वे गायों के लिए भगवान से कम नहीं थे। उन्होंने हम गायों की जो सेवा की है न, वैसी सेवा अन्यत्र दुर्लभ है। उनके जैसे राजा-शासक आज हो जाएँ तो यह दुनिया धन्य हो जाए। चारों तरफ दूध-घी की नदियाँ प्रवाहित होने लगें।''

''राजा दिलीप के बारे में जल्दी कुछ बताओ बहन, ताकि मन को कुछ तसल्ली हो।''

श्वेता के आग्रह पर श्यामा ने कहना शुरू किया, ''तो सुनो, मैं आज तुम्हें उस महान राजा की कथा सुनाती हूँ, जिसे सुनकर तुमको भी लगेगा कि आज ऐसे महामानव केवल कथाओं तक ही सीमित रह गए हैं।.....

....'कथा कुछ इस तरह है कि महाराजा दिलीप प्रौढ़ हो चुके थे। उनके कोई संतान नहीं थी। संतान के बगैर महल काटने को दौड़ता था। किसी तरह एक पुत्र हो जाए, बस। राजा इसी चिंता में घुलते रहते थे। रानी सुदक्षिणा भी राजा का दुख देख-देख कर व्यथित रहती थी। खूब उपाय किए, लेकिन हर बार निराशा हाथ लगती थी।

एक दिन राजा दिलीप गुरु वशिष्ठ के पास गए और उन्हें अपने मन की पीड़ा बता दी। मुनि तो त्रिकालदर्शी थे। वे फौरन ध्यानस्थ हुए और फिर बोले-

''हे राजन्, तुम नि:संतान हो, इसका एक बहुत बड़ा कारण है।' राजा दिलीप ने हाथ जोड़कर कहा- ''गुरुवर, आप कारण बताएँ। संभव हुआ तो मैं उसे दूर करने का प्रयास करूँगा।''

..गुरु वशिष्ठ ने कहा - ''राजन्, एक समय की बात है। तुमने कामधेनु जैसी महान गाय का अनादर कर दिया था। तब गाय ने दुखी होकर तुम्हें शाप दे दिया था। उसी शाप के कारण तुम इस बार संतान-सुख से वंचित हो।''

''गुरुवर, इस शाप से मुक्ति का कोई उपाय तो होगा। आप मुझे बताएँ।'' राजा दिलीप ने व्यग्र हो कर पूछा

महाराजा की आँखों में आँसू थे। वे यह सोच-सोच कर दुखी थे कि उन्होंने अनजाने में कामधेनु का अपमान किया। महाराजा की दयनीय हालत देखकर गुरु वशिष्ठ ने कहा, ''हे राजन्,

आप बिल्कुल फिक्र न करें। रात के बाद प्रभात का आना तय है। एक दिन आपका दुख भी सुख में तब्दील हो जाएगा। आपके ये आँसू बता रहे हैं कि बहुत जल्द ही आपका दुख दूर हो जाएगा। आपको बस इतना करना है कि कामधेनु की पुत्री नंदिनी और उसके बछड़े की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दें। तब देखिए, बहुत जल्द ही आप मनवांछित फल प्राप्त कर लेंगे।''

...महाराजा दिलीप ने गुरु वशिष्ठ को प्रणाम किया और बोले - 'गुरुवर, मैं आपको वचन देता हूँ कि अब मेरा पूरा जीवन नंदिनी की सेवा में ही बीतेगा।''

...'गुरु को वचन देकर महाराजा दिलीप लौट जाते हैं और नंदिनी गाय और बछड़े की सेवा में संलग्न हो जाते हैं। महल का त्याग करके वे पत्नी सुदक्षिणा के साथ वनवासी हो जाते हैं और नंदिनी की सेवा में दिन-रात एक कर देते हैं। महाकवि कालिदास के महाकाव्य 'रघुवंश' में राजा दिलीप की गो सेवा का बड़ा सुंदर वर्णन हुआ है। महाराजा दिलीप नंदिनी को प्रेम से घास खिलाते हैं। उसके शरीर पर हाथ फिराते हैं। वह जहाँ जाती है, उसे जाने देते हैं। वे उसके साथ-साथ चलते हैं। एकदम छाया के समान। 'छायेव तां भूपतिरन्वयगच्छत्'। जहाँ-जहाँ नंदिनी, वहाँ-वहाँ राजा। वे नंदिनी की आराधना करते। नहलाते-धुलाते। राजा की गो सेवा देखकर वनप्रांतर में विचरण करने वाले दूसरे पशु प्रसन्न हो उठे क्योंकि राजा के वनवास का लाभ शेष पशुओं को भी मिलने लगा।

वन के बलशाली जीवों ने बलहीन जीवों को सताना छोड़ दिया था।

महाराजा सुबह उठते और चरवाहे की तरह नंदिनी को चराने जंगल ले जाते। रानी सुदक्षिणा उन्हें दूर तक छोड़ने जाती और लौट कर बछड़े की देखभाल करती और उसके साथ खेल कर प्रसन्न रहती। जब राजा दिलीप संध्या लौटते, तो रानी उन्हें लेने भी जाती। इस दृश्य को कालिदास ने बड़ी सुंदर उपमाओं के साथ वर्णित किया है। वे कहते हैं ''राजा के आगे चलती हुई गाय, उसके सामने मिलने आई राजा की धर्मपत्नी और राजा के बीच गाय कुछ इस तरह शोभायमान हो रही थी जैसे दिन और रात के बीच संध्या आ गई हो।''

...राजा दिलीप ने गाय की सेवा करते-करते इक्कीस दिन वन में व्यतीत कर दिए।

...'एक दिन नंदिनी गाय के मन में आया कि राजा दिलीप की परीक्षा लेकर देखें कि आखिर इसके मन में गाय के प्रति भक्ति-भावना कितनी है। यह विचार कर गाय टहलते-टहलते एक गुफा में चली गई। इधर राजा यह सोचकर निश्चिंत थे कि गाय को यहाँ वन्य पशुओं से कोई खतरा तो नहीं है। वे भी इधर-उधर विचरते रहे। अचानक कहीं से एक शेर आ गया और वह गाय पर टूट पड़ा। गाय की चीखने की आवाज़ सुनकर राजा उस ओर दौड़े। देखते क्या हैं कि शेर गाय के ऊपर खड़ा है। राजा ने फौरन तीर चला कर शेर को मारने की कोशिश की लेकिन पता नहीं क्या हुआ कि राजा तीर नहीं चला पाए। राजा आश्चर्यचकित हो गए कि ऐसा तो कभी नहीं हुआ कि उनके हाथों में इतनी भी ताकत न रहे कि तीर भी चला सकें? वे स्वयं को बेहद कमजोर महसूस कर रहे थे, इसलिए बेचैन हो गए।

राजा की यह अवस्था देख कर शेर हँस पड़ा। शेर को हँसता देख कर राजा दिलीप

चकराए। इसके पहले कि राजा कुछ पूछते, शेर ही बोल पड़ा -

''राजन्, मैं कोई सामान्य शेर नहीं हूँ। मैं भगवान शिव का सेवक हूँ, इसलिए तुम्हारा कोई भी अस्त्र मेरा अहित नहीं कर सकता। इसलिए अब तुम इस गाय की चिंता छोड़ो और वापस लौट जाओ।''

''मैं यह नहीं देख पाऊँगा कि मेरे सामने यह गाय नष्ट हो', शेर की बात सुनकर राजा ने करुण स्वर में कहा-'तुम इसके बदले मेरी जान ले लो और अपनी क्षुधा शांत करो। यह महर्षि की गाय है। इसे छोड़ दो। शाम होगी तो इसका बछड़ा इसकी राह देख रहा होगा।''

राजा की बात सुनकर शेर दहाड़ते हुए बोला - ''देखो राजन्, अपनी जान देकर तुमको केवल एक गाय की रक्षा कर सकते हो लेकिन अगर तुम बच गए तो भविष्य में अनेक गायों की प्राण-रक्षा कर सकते हो, इसलिए मेरी मानो, तो मुझे इस गाय का भक्षण करने दो।''

राजा दृढ़ शब्दों में कहते हैं - ''नहीं-नहीं, मेरे जीते जी तो ऐसा कदापि नहीं होगा।''

इतना बोलकर राजा तेजी के साथ आगे बढ़ते हैं और शेर के सामने पहुँचकर लेट जाते हैं और फिर वही बात दुहराते हैं कि 'लो, तुम मुझे खा जाओ। इस गाय को छोड़ दो। तुमको अगर अपनी भूख ही शांत करनी है तो लो...मैं तुम्हारे सामने प्रस्तुत हूँ।'

...राजा के इस समर्पण के तत्काल बाद मधुर आकाशवाणी होती है कि ''हे राजन्, उठो।''

...राजा सिर उठाकर देखते हैं तो हतप्रभ रह जाते हैं। सामने वही गौमाता खड़ी है। उसके थन से पावन दूध की धारा निःसृत हो रही है और शेर का कहीं अता-पता नहीं।

...राजा दिलीप समझ नहीं पाते कि यह सब क्या हो रहा है। गाय के प्रति राजा की करुणा के चरम की परीक्षा पूर्ण हो चुकी थी। नंदिनी मुसकाराते हुए कहती है -

''राजन्, मैं तो तेरी परीक्षा ले रही थी। यह सिंह भी मेरी माया से जन्मा था। मुझ पर ऋषि की ऐसी कृपा है कि मुझ पर किसी के प्रहार का कोई असर नहीं हो सकता। हे राजन्, मैं तुझसे प्रसन्न हूँ। मनचाहा वर माँग ले। मुझे तू साधारण गाय मत समझ। मैं कामधेनु हूँ। माँग, क्या माँगता है!''..

...राजा नंदिनी को प्रणाम करते हैं और कहते हैं-''माँ, मेरे पास संसार का हर सुख है, लेकिन संतान-सुख के बिना जीवन अधूरा है। मैं एक संतान के लिए व्यथित हूँ। अनेक जतन किए, पर पुत्र-कामना अधूरी है। इसे पूरा करने का आशीर्वाद दें, ताकि मेरा वंश चलता रहे।''

नंदिनी मुसकराई और बोली-''तथास्तु।''

उसके बाद राजा को पुत्र-रत्न की प्राप्ति होती है। उसका नाम रखा जाता है रघु। वही रघु, जिसके बारे में कहा जाता है, 'रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाहि पर वचन न जाई'। इसी रघु-कुल में जन्मे थे श्रीराम। राजा रघु के बेटे दशरथ और उनके पुत्र थे श्रीराम।''

परम गो-भक्त राजा दिलीप की कथा सुनाते-सुनाते श्यामा की आँखें भर आई थीं। श्वेता की आँखों से भी अश्रुधार बह रहे थे। वह बोली - ''क्या ऐसे महापुरुष भी हो गए हैं जो गाय की जान बचाने के लिए अपना बलिदान करने से पीछे नहीं हटे? क्या इस देश में अब

कोई राजा दिलीप न होगा? आज जगह-जगह कसाईखाने खुल रहे हैं। गायों की हत्याएँ हो रही हैं। क्या कोई ऐसी सरकार नहीं आएगी, जो इस भारत देश में, जहाँ राजा दिलीप जैसे गो प्रेमी हुए, गो वध पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दे?''

श्यामा बोली - ''अब मनुष्य बड़ा समझदार हो गया है। बातें तो बड़ी-बड़ी करेगा, लेकिन जैसे ही स्वार्थसिद्धि का प्रश्न खड़ा होगा, वह करुणा-दया की बातें भूल जाएगा। अगर ऐसा न होता तो क्या भगवान महावीर को मानने वाला कोई शख्स कसाईखाना संचालित कर सकता था? कभी नहीं। पूरी दुनिया में भारत बुद्ध-महावीर, विवेकानंद और गांधी-विनोबा जैसे महापुरुषों का देश कहलाता है। और इसी देश में ही सर्वाधिक पशु कटते हैं। गाय, बकरी, बैल, मुर्गी और न जाने क्या-क्या? इस देश में क्या कभी गो वध पर रोक नहीं लग सकती।''

''रोक लग सकती है, क्यों नहीं लग सकती, लेकिन अब वैसे लोग भी तो हों। न गांधी हैं, न विनोबा हैं। आज भी गौ वध के खिलाफ प्रदर्शन होते हैं, सभाएँ होती हैं, लेकिन ऐसा कोई देशव्यापी आंदोलन नहीं होता कि सरकार हिल जाए। उस तरह के महाप्राण लोग ही नहीं रहे, जिनका कहना मानकर पूरा देश गो हत्या के खिलाफ सड़कों पर उतर आए। जिस दिन देश की जनता यह शर्त रख देगी कि वोट तभी मिलेगा, जब गो वध प्रतिबंधित होगा, तब देखना, क्या होता है। सरकार को झुकना पड़ेगा और गौ वध बंद हो जाएगा।''

श्वेता की बातें सुनकर श्यामा बोली, ''तुमने विनोबा भावे का नाम लिया। वे गांधी के सच्चे चेले थे। उन्होंने भूदान आंदोलन चलाया था। डाकुओं को आत्मसमर्पण करने पर बाध्य कर दिया था। विनोबा भावे भी गौ वध से बहुत दुखी थे। अपने जीवन के अंतिम दौर में वे पूरे देश में गो वध रोकने की माँग को लेकर आमरण अनशन पर बैठ गए।..

...विनोबाजी का एक-सूत्री नारा था, 'गौ वध पर रोक लगाओ, वरना मैं अपनी जान दे दूँगा।'

..तो, वे बहुत दिनों तक अनशन पर बैठे रहे। दिनोंदिन उनकी हालत बिगड़ती गई, तो देश भर में उनके चाहने वाले भी अनशन पर बैठने लगे। यह देख सरकार ने बड़ी चालाकी से काम लिया। सरकार विनोबा भावे के पास गई और गौ वध पर रोक लगाने की घोषणा कर दी गई। निर्वैर और निर्भय रहने का मंत्र देने वाले और 'जय-जगत' की व्यापक सोच देने वाले सीधे-साधे संत विनोबा भावे ने अनशन तोड़ दिया। दुर्भाग्यवश कुछ दिन के बाद विनोबा भावे की मृत्यु हो गई और सरकार ने अपने वादे को भी कचरे में फेंक दिया।

हिमालय में तप करने वाले मौनी बाबा ने भी गो हत्या पर रोक लगाने के लिए पिचहत्तर दिन तक अनशन किया था, लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकला। सरकार ने गोवध पर रोक लगाने का वादा किया और बड़ी चालाकी से राज्यों पर टाल दिया। सरकार ने राज्यों से अपील की कि गोवध रोको, लेकिन इतना कह देने से क्या गो वध रुक जाएगा? सरकार के पास हिम्मत नहीं है। किसी भी सरकार के पास नैतिक साहस नहीं है। मामला वोट पर आकर दम तोड़ देता है। जो सत्ता में होता है, वह अपनी कुरसी बचाने में लगा रहता है, और जो सत्ता से बाहर रहता है, वह इसी जुगाड़ में रहता है कि कैसे सत्ता तक पहुँचे। इस चक्कर में गाय

किसी को नज़र नहीं आती। अब तो कोई ऐसा महापुरुष भी नज़र नहीं आता, जो इस राष्ट्र की चेतना को झंकृत कर दे। भविष्य में ऐसा कुछ हो सकेगा, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। जिसे देखो अपनी चिंता में है। राग-रंग में डूबा है। गो स्वामी अपने गायों को खाना नहीं खिलाता। उसे लावारिस की तरह छोड़ देता है सड़कों पर, जहाँ न चारा है, न छाँव है। गाय के साथ पूरी निर्ममता बरतने के बावजूद उसका दूध निकालेगा और उसमें भी पानी मिलाकर कमाई करेगा। गोबर-गोमूत्र बेचकर लाभ कमाएगा। लेकिन गाय जब बेकार हो जाएगी, उसे कसाई के हाथों बेचने में भी संकोच नहीं करेगा। ऐसे देश में अब गो वध पर प्रतिबंध की कोई संभावना नहीं है। अरे, मुंबई, हैदराबाद और कोलकाता वगैरह में जो कसाईखाने चल रहे है, उन्हें ही सरकार बंद कर दे तो लगेगा कि गाय की बड़ी सेवा कर ली। लेकिन हम मर जाएँगे, कसाईखाने आबाद रहेंगे।''

''बहन, राजा दिलीप की जो कथा तुमने सुनाई, उस से मन प्रफुल्लित हो गया। भगवान कृष्ण का एक नाम गोपाल भी है। उनके बारे में कुछ बातें पता हो तो बताओ न। कहते हैं, वे गैया चराने जाते थे। बाँसुरी बजाते थे, तो गायों के साथ-साथ गोपियाँ भी झूम उठती थीं।''

श्वेता की बात सुनकर श्यामा मुसकरा पड़ी और बोली - ''भगवान कृष्ण की लीला अपरम्पार रही है। वे तो असुरों के संहार के लिए ही जन्मे थे। जब कंस को पता चला कि कृष्ण नामक बालक का जन्म हुआ है और वही उसकी मृत्यु का कारण बनेगा, तो कंस ने कृष्ण की हत्या कराने के लिए अनेक राक्षस भेजे। सब भेष बदलकर कृष्ण के पास पहुँचते और खुद ही नष्ट होते जाते। कृष्ण की लीला देख कर उनकी माँ यशोदा भी हैरान हो जाती थीं। कृष्ण भगवान और बलदाऊ बचपन में किसी ग्वालिन के घर घुस जाते थे और गाय के बछड़ों की रस्सियाँ खोल दिया करते थे। बछड़े तेजी से दौड़कर अपनी-अपनी माँओं का दूध पीने लगते थे। गोपियाँ परेशान हो जाती थीं लेकिन वे कृष्ण से प्यार भी बहुत करती थीं, इसलिए कुछ बोल नहीं पाती थीं।...

..बालकृष्ण जब पैंया-पैंया चलते थे, तब भी वह सुबह-शाम गाय के बछड़ों से खेलते रहते। कभी उनकी पूँछ पकड़ लेते, तो कभी दूध दुहने की कोशिश करते।..

..''एक बार बड़ी रोचक घटना घटित हो गई।' श्यामा हँसते हुए बोली, 'हुआ यूँ कि बालकृष्ण और बलदाऊ आँगन में आराम से बैठे बछड़ों के पास दबे पाँव गए और उनकी पूछों को गौर से देखने लगे। खेल-खेल में दोनों भाइयों ने दो बछड़ों की पूँछें पकड़ लीं। इस पर बछड़े हड़बड़ा कर उठ खड़े हुए और इधर-उधर भागने लगे। यह देख दोनों भाई घबरा गए। घबराहट में उन्होंने पूँछ ही नहीं छोड़ी और वे भी बछड़ों के साथ इधर-उधर चक्कर लगने लगे। वे समझ ही नहीं पाए कि यह क्या हो रहा है। लगे रोने-चिल्लाने। पूँछ पकड़े-पकड़े आवाज़ लगा रहे हैं, 'मैया, बाबा...बचाओ, हमें बचाओ'।

यशोदा मैया दौड़ी-दौड़ी बाहर आई और दोनों बच्चों की हालत देखकर हँसने लगी। फिर बोली, 'अरे बच्चो, बछड़े की पूँछ छोड़ दो।'

दोनों ने पूँछ छोड़ दी। तब मैया ने पास आकर दोनों बच्चों को गले से लगाया और मजाक करते हुए बोली, 'अगर तुम लोग पूँछ पकड़ कर बाहर निकल गए होते तो कितना अच्छा होता। तुम लागों को आज पूरे ब्रज के ही दर्शन हो गए होते।'..

..तो ऐसे गो प्रेमी थे कृष्ण भगवान । गायें उनकी दिनचर्या का हिस्सा थीं। गाय, गोपियाँ और ग्वाल-बाल। इनके साथ ही बीता उनका बचपन। इन्हीं के साथ बड़े हुए कृष्ण-कन्हैया।...

...''श्रीमद्भागवत के दसवें अध्याय में एक कथा है कि जब कृष्ण भगवान कुछ बड़े हो गए, तो उन्होंने अपनी माँ से एक दिन कहा, 'मैया, अब मैं धेनु चराने जाना चाहता हूँ' तो मैया यशोदा शांडिल्य ऋषि के पास गईं और उनसे मुहूर्त निकलवाया।

ऋषि ने कहा, 'इस पुनीत कार्य के लिए तो गोपाष्टमी का दिन उपयुक्त रहेगा।'

माँ खुशी-खुशी लौट आई और उस दिन की प्रतीक्षा करने लगी।

...और जैसे ही गोपाष्टमी का दिन आया, कृष्ण और बलदाऊ फूले नहीं समाए। आज तो वे ब्रह्ममुहूर्त में ही जाग गए थे। उनके मन में इस बात की प्रसन्नता थी कि आज से गाय चराने जंगल जाएँगे। ग्वाल-बाल सब साथ रहेंगे। जंगल में आनंद का वातावरण रहेगा।

कृष्ण और बलदाऊ फौरन तैयार हो गए। रोज की तरह आज माँ को इनके पीछे भागना नहीं पड़ा। माता यशोदा के संग-संग कृष्ण और बलदाऊ ने गायों की पूजा की। आरती उतारी। उन्हें पकवान खिलाए। उनकी परिक्रमा की। उन्हें प्रणाम किया। इतना सब होने के बाद यशोदा को जैसे कुछ याद आया। वह पास ही खड़े एक ब्रजवासी से बोली-

''भैया, जाओ, दो चरणपादुकाएँ तो ले आओ। रास्ते में कंकर-पत्थर मिलेंगे, धूप में कितने गर्म हो जाते हैं। यहाँ-वहाँ काँटे भी पड़े रहते हैं। चरणपादुका से मेरे लालों के कोमल पैर सुरक्षित रहेंगे।''

माँ की बात सुन कर कृष्ण ने हँसते हुए कहा, ''मेरी प्यारी मैया, हमें इसकी जरूरत नहीं है।''

''बेटे, पैरों में काँटा चुभ जाएगा। तुम लोगों के कोमल चरण जल जाएँगे। मेरा कहा मान लो, चरणपादुकाएँ पहन लो।''

माँ की बात सुन कर कृष्ण मुसकरा कर बोले, ''मैया, इन गायों के पैरों में भी तो चरणपादुकाएँ नहीं हैं, फिर मैं क्यों पहनूँ?''

कृष्ण की बात सुन कर माता यशोदा मुसकरा कर बोली, ''अरे, मेरे लाल, गाय तो पशु है न। उनसे अपनी तुलना क्यों करते हो?''

माता की यह बात सुन कर कृष्ण नाराज हो गए और बोले, ''मैया, जाओ, मैं तुमसे बात नहीं करूँगा। तुमने गाय को पशु क्यों कहा? आज कहा तो कहा, इसके बाद कभी मत कहना। अरे, यह पशु नहीं, हम सबकी माँ है। प्यारी माँ। समझी? तू तो केवल हमारी माँ है मगर ये तो विश्व की माँ है। सब की माता है। गाय को पशु कहने वाला मुझे बिल्कुल ही अच्छा नहीं लगता, इसलिए अब से ऐसा मत कहना।''

कृष्ण की बात सुन कर बलदाऊ मुसकरा रहे थे और सहमति में सिर भी हिला रहे थे। माँ हँस पड़ी, फिर कृष्ण को गले से लगा लिया और बोली, ''तू सच्चा गोपाल है रे। गाय के बारे में तू कितनी गहराई के साथ सोचता है। अब मैं आज से तुझे कन्हैया नहीं, गोपाल कह कर ही बुलाया करूँगी। नहीं..कन्हैया और गोपाल....दोनों नाम से बुलाया करूँगी। तू बिल्कुल ठीक कहता है मेरे लाल। ये हम सब की मैया है। जा, बिना चरणपादुका के ही जा। मुझे पता है, तू अपनी और गऊ माताओं की रक्षा कर लेगा।''

...श्यामा बोली, 'तो...गोपाष्टमी के दिन से ही कृष्ण प्रतिदिन गाय चराने जाने लगे इसीलिए गोपाष्टमी के दिन हम गायों की बन आती है। हमारी कितनी खातिरदारी होती है। सूरदास जी का एक पद याद आ रहा है, सुनो-

वत्स चरावन जात कन्हैया
उबटि अंग अन्हवाय लाल कों फूली फिरत मगन मन मैया
निज कर करि सिंगार बिबिध बिधि, काजल-रेख भाल पर दीन्हीं
दीठि लागिबे के डर जसुमति इष्टदेव सौं बिनती कीन्हीं
बिप्र बुलाय दान करि सुबरन सबकी सुखद असीसे लीन्हीं
कर पकराइ नयन भरि अँसुअन सकल सँभार दाउए दीन्हीं..

जब कृष्ण पहली बार गाय चराने के लिए निकले, तो घर पर जैसे उत्सव का माहौल बन गया था। देखो, महाकवि सूरदास जी ने कितना सुंदर पद लिखा है...

आज ब्रज छायो अति आनंद
वत्स चरावन जात प्रथम दिन नंद सुवन सुखकंद।

....माँ ने माथे पर मोर मुकुट सजा दिया। हाथ में एक छड़ी दे दी। बछड़ों का भी समुचित शृंगार किया गया था। यशोदा ने कृष्ण की आरती उतारी। उसे जी भर प्यार किया। ब्रजबालाएँ फूलों की वर्षा करने लगीं। कृष्ण-बलदाऊ गैया चराने क्या निकले, पूरे ब्रज में उत्सव मन गया। महाकवि सूरदास जी कहते हैं-

चले हरि वत्स चरावन आज
मुदित जसोमति करत आरती, साजे सब सुभ साज।
मंगलगान करत ब्रज बनिता मोतिय पूरे थाल
हँसत हँसावत बत्स-बाल संग चले जात गोपाल।...

''तो सखि, कृष्ण भगवान गायों के दीवाने थे। गाय उनको गोपिकाओं से ज्यादा प्रिय थी। जंगल में ग्वाल बाल सब इधर-उधर से दूब तोड़ कर लाते और कृष्ण के हाथों में दे देते। कृष्ण प्रसन्न भाव से बछड़ों को खिलाते। जब कृष्ण पहली बार वत्स चराने गए तो दूब खिलाने के बाद बछड़ों को पानी पिलाने की बारी थी। लेकिन वे समझ नहीं पाए कि पानी कैसे पिलाया जाए। बछड़ों को नदी तक ले जाएँगे, तो पता नहीं, वे पानी पीएँगे या नहीं। यह सोचकर बालकृष्ण नदी तट पर गए और अँजुरी में जल भरकर ले आए, लेकिन बछड़ों तक आते-आते

अंजुरी खाली हो जाती थी। उन्होंने कई बार ऐसा किया, लेकिन वे सफल नहीं हुए। अचानक उनको एक उपाय सूझा। उन्होंने अपने पीतांबर को नदी के जल में डूबो दिया। फिर बलदाऊ ने पीतांबर निचोड़ा और कृष्ण ने अंजलि बनाकर बछड़े को पानी पिलाया।''

''कितनी प्यारी है यह घटना, दीदी। मुझे भी कन्हैया की एक कहानी याद आ रही है। पता नहीं, कहाँ सुनी थी। तुम भी सुन लो।'' श्वेता बोली, ''आप को तो पता ही है कि कृष्ण भगवान की जान लेने के लिए मामा कंस ने राक्षस लगा कर रखे थे। लेकिन कृष्ण की चालाकी के आगे राक्षसों की एक न चलती थी। सब आते थे और मारे जाते थे। फिर चाहे पूतना हो या बकासुर या कोई और। फिर भी राक्षस कोशिश करते ही रहते थे।

एक दिन कंस ने एक दैत्य को बुलाया और उसे कृष्ण की जान लेने का आदेश दिया, 'जाओ, इस बार वह बचने ना पाए। वरना तुम्हारी खैर नहीं'।

दैत्य जानता था कि कृष्ण गैया चराने जंगल जाते हैं, तो क्यों न गाय बन कर ही इस गोपाल को मारा जाय।

मायावी दैत्य ने फौरन एक वत्स का रूप धारण कर लिया। बछड़ा बन कर वह चुपके से गायों के झुंड में जा घुसा।

कृष्ण भगवान समझ गए वत्सासुर की चालाकी। वे मंद-मंद मुसकाए और बलदाऊ से धीरे-से बोले- 'भैया, सावधान रहना। वत्सासुर गायों के झुंड में घुस गया है। हम खेल-खेल में उसके पास पहुँच कर उसको सबक सिखाएँगे।'

बलदाऊ ने कहा-'ठीक है कन्हैया, बहुत दिनों से किसी राक्षस की मुक्ति भी नहीं हुई है। चलो, आज अवसर हाथ लगा है।'

...और दोनों भाई भी गायों के साथ खेलते-खेलते भोले-भाले बनते हुए वत्सासुर के पास पहुँच गए। उधर वत्सासुर अपनी चालाकी पर मगन था। सोच रहा था कि इन लोगों को मेरी माया का पता नहीं चल सका है। वह योजना बनाने लगा कि 'जैसे ही यह बालक मेरे पास आएगा, मैं उस पर झपट पड़ूँगा। इसने न जाने कितने ही राक्षस भाइयों का संहार किया है, आज मैं इसका अंत कर दूँगा'। वत्सासुर हमले के लिए तैयार हो गया। इधर कृष्ण भगवान भी पूरी तरह से सावधान थे। कृष्ण भगवान वत्सासुर के बिल्कुल पास पहुँच गए तो वत्सासुर उन पर टूट पड़ा। लेकिन कृष्ण भगवान उससे भी ज्यादा फुर्तीले निकले। उन्होंने पलक झपकते ही बछड़ा बने असुर की दोनों टाँगें पकड़ीं और उसे दो-तीन बार हवा में तेजी से घुमाया फिर सामने के पेड़ पर दन्न से पटक दिया। बस..हो गया वत्सासुर का काम तमाम..। पेड़ से टकरा कर वत्सासुर कराहता हुआ अपने असली रूप में आ गया और वहीं मर गया।

यह घटना इतनी तेजी के साथ हुई कि आसपास खड़े ग्वाल-बाल पहले समझ ही नहीं पाए कि अचानक कन्हैया बछड़े को उठा कर ऐसे घुमा क्यों रहे हैं। लेकिन जब सामने एक विशालकाय दैत्य की लाश देखी, तब उन्हें सारी बात समझ में आ गई। ग्वाल-बाल दहशत के मारे रोने लगे। कृष्ण और बलदाऊ ने सबको पास बुलाया और मुसकराते हुए कहा- 'चिंता की

कोई बात नहीं। आओ, हम लोग खेल खेलें।'

मनसुखा काफी डर गया था। कृष्ण उसे गले से लगा कर बोले- 'अरे, तुम तो सबसे बहादुर हो और तुम डर रहे हो? असुर तो मर गया है। चलो, हम लोग खुशी मनाएँ और नाचे-गाएँ'। मनसुखा के चेहरे पर मुसकान लौटी और जंगल में मंगल हो गया। नंद बाबा और यशोदा मैया को जब इस घटना की जानकारी मिली, तो उन्होंने कन्हैया को सीने से लगाया और गाल पर काला टीका लगाया, फिर बोली, 'गौ माता की कृपा से एक बड़ी बला टल गई। इसके बाद यशोदा मैया ने सैकड़ों गायों का दान किया।''

श्यामा भाव-विभोर हो कर बोली, ''श्वेता तूने बड़ी सुंदर कथा सुनाई। मैं सोच रही थी कि अगर वत्सासुर सफल हो जाता, तो क्या होता?''

श्यामा की बात सुन कर श्वेता हँस पड़ी- ''ऐसा हो ही नहीं सकता था। अरे, वे भगवान हैं। लीला कर रहे थे। उनका बाल बाँका नहीं हो सकता था। ''

''हाँ, यह बात तो है।''

''दीदी, एक और अलौकिक-सी घटना सुन लो।' श्वेता को एक और कथा याद आ गई। वह बोली, 'कन्हैया और गायों के बीच कितना गहरा रिश्ता था। कन्हैया गायों के बगैर नहीं रह सकते थे। गायें भी कन्हैया को देखने लालायित रहती थीं। कभी-कभी कन्हैया बछड़ा-बछड़ी की तरह घुटने टेक कर किसी-किसी गाय का थोड़ा-सा दूध पी लिया करते थे। कन्हैया भी लालायित रहते थे, तो गायें भी इंतज़ार करती थीं।...

....एक समय की बात है। कन्हैया जब गौशाला पहुँचे, तो उन्हें देखते ही एक गाय के थन से दूध चूने लगा।

कृष्ण ने फौरन अपना मुँह लगा दिया। उधर मैया आवाज़ दे रही है, 'कान्हा..कान्हा, कहाँ है रे?' लेकिन कन्हैया माँ की पुकार सुनें तो कैसे सुनें। वे तो गौ माता का अमृत-पान कर रहे थे।..

..कन्हैया को खोजते-खोजते यशोदा गौशाला तक आ गई, तो देख कर चकित हो गयीं कि कन्हैया गैया का दूध पी रहे हैं और गैया बड़े प्रेम से उनके लाल का माथा चाट रही है। यह दृश्य देखकर यशोदा के नैन गीले हो गए।

वह बोली-'तू धन्य है गौ माता। मैं इधर अपने लाल को कलेवा खिलाने के लिए आतुर हूँ, और तू इधर इसे अमृतपान करवा रही है।'

माँ को देखकर कृष्ण शरमा गए और बोले-'मैया....मैं तो...बस ऐसे ही...'

यशोदा ने बनावटी गुस्सा दिखाते हुए कहा, 'ठीक है, ठीक है। चलो अब कुछ कलेवा कर लो।'

यह सुन कर कन्हैया हँसे और बोले- 'अब कहाँ का कलेवा? मेरा तो पेट भर गया है माँ। बाहर जाता हूँ। मित्रों के साथ खेलकूद कर आता हूँ। तभी कुछ भूख लगेगी शायद।'

इतना बोल कर कृष्ण नंद-भवन से बाहर निकल गए। माता यशोदा उन्हें देखती रह गयी।''

''धन्य है द्वापर काल की गायें कि उनको कन्हैया का इतना प्यार मिला।' श्यामा बोली, 'तभी तो कवि रसखान भी कितनी श्रदधा के साथ कहते हैं कि..

..मानुष हौं तो वही रसखान बसौं कुल गोकुल गाँव के ग्वारन।

जो पशु हौं तो कहा बसु मेरो चरौं नित नंद की धेनु मझारन।....

....कृष्ण भगवान बचपन से लेकर अपने युवा-काल तक गायों के लिए समर्पित रहे। सचमुच गो-पालक थे वे। आज मैं कृष्ण को याद करती हूँ और प्रार्थना करती हूँ कि हे कृष्ण, तेरे जैसा भाव आज हर गो सेवक के मन में पले। तेरे भक्त तेरी गो भक्ति को याद करें और निर्मल मन के साथ गायों की सेवा करें, तो यह देश धन्य हो जाए।''

श्यामा की सुंदर बात सुनकर श्वेता को बहुत अच्छा लग रहा था। उसे आज न जाने कैसे कन्हैया की कहानियाँ याद आ गईं। कभी-कभी जीव किसी खास उमंग में रहता है, तो अतीत के दिन की स्मृतियों के नंदनवन में विचरण करने लगता है। आज राजा दिलीप का गो प्रेम, फिर कृष्ण भगवान की गो सेवा और गौ प्रेम की कथाएँ एक-दूसरे को सुना कर श्वेता-श्यामा फूली नहीं समा रही थीं।

श्यामा बोली-''बहन, गाय से जुड़ी ऐसी हजारों कथाएँ हैं। ये सब आज लोगों तक पहुँचनी ही चाहिए। गाय के बारे में बच्चों को पाठ पढ़ाए जाने चाहिए। गाय से जुड़े सवालों के उत्तर देना ज़रूरी कर देना चाहिए। गाय पर कविता, कहानी, निबंध और गाय से होने वाले फायदों के बारे में भी पढ़ाया जाना चाहिए। मैं तो कहती हूँ कि हर कक्षा में गाय का एक पाठ अनिवार्य कर दो। पहली कक्षा से लेकर कॉलेज़ की पढ़ाई तक गाय कोर्स में रहनी चाहिए।''

''तुम्हारी बातें बड़ी अच्छी हैं बहन, लेकिन हमारे देश में कुछ पागल किस्म के या कहें कि नकली बुद्धिजीवियों की कमी नहीं है। इन्होंने गाय को धर्म-कर्म से जोड़ दिया है न। गाय के पाठ पढ़ाए जाएँगे तो कहा जाएगा कि साम्प्रदायिकता हो रही है। हिंदुत्व का प्रचार हो रहा है..देश को पीछे धकेला जा रहा है..आदि-आदि। इसलिए सरकार चाह कर भी ऐसा नहीं कर पाती।' श्यामा उदास स्वर में बोली, ''गाय की बात करने पर लोग समझते हैं यह हिंदूवादी है। इसी कारण कुछ बेचारे चाह कर भी नहीं लिखते। डरते हैं, कहीं उन्हें कोई हिंदूवादी न समझ ले। लेकिन जो हिम्मती होते हैं, वे इन सब बातों की परवाह नहीं करते और गाय का गुणगान करते हैं। उन पर कहानियाँ लिखते हैं, उपन्यास लिखते हैं : क्योंकि वे मानते हैं कि गाय का सवाल राष्ट्रवादी सवाल है, हिंदूवादी नहीं। यह हमारे अर्थशास्त्र और स्वास्थ्य से जुड़ा मुद्दा है। गाय का दूध तो सब पीते हैं। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई। वह तो सबकी माँ है। फिर हिंदू-मुसलमान की बात कहाँ से आ गई?'' ...

श्यामा एक साँस में यह सब कह गई। थोड़ी देर रुकने के बाद फिर बोली...

''गाय केवल हिंदुओं की नहीं है। यह ठीक है कि गाय के प्रति हिंदू कुछ ज्यादा भावुक हो गया और उसकी पूजा करने लगा, लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं हुआ कि दूसरे धर्म के लोगों के लिए वह अछूत हो गई? अरे, जब मोहम्मद साहब गाय को मानते हैं तो इसे बड़ी

बात और क्या हो सकती है। उन्होंने तो गायों को काटने वाले कसाइयों को अपने समाज से ही बाहर कर दिया था। कुरान शरीफ में गाय के दूध का महत्व बताया गया है। गाय की हिंसा की बात कहीं नहीं की गई है। लगभग हर मुगल बादशाह ने गौ-हत्याओं पर रोक लगा दी थीं। इसका मतलब यही हुआ न कि वे लोग भी गाय को पूजते थे? पूजने का मतलब माथे पर तिलक लगाना ही नहीं होता। गाय सबकी है। गाय भी ऐसा ही सोचती है। वह तो सबको दूध देती है। सबके काम आती है। वह सबकी माता है। इसलिए गाय के बारे में सबको पढ़ाया जाना चाहिए। अगर ऐसा हो जाए तो लोगों के मन में गाय के प्रति करुणा जागेगी, प्यार उमड़ेगा। आज जिस तरह गायों को मार दिया जाता है, उसकी दुर्दशा की जाती है, तब वह बिल्कुल नहीं की जाएगी।''

श्यामा की बातों में कसक थी। दर्द था। लेकिन उसके दर्द का अनुवाद कौन करे। फिर भी ये मूक प्राणी अपनी-अपनी भाषा में अपने दुख को, अपने अनुभवों को एक-दूसरे से बाँट रहे थे और मगन हो रहे थे। तभी एक ग्वाला आया। नाँद में चारा-पानी डाल गया। उसने रास्ते में बैठी एक गाय को लात जमाई और दूसरी को हथेली से ठोंका और 'हुर्र-हुर्र' करते हुए आगे बढ़ गया।

श्यामा बोली - ''देखा,यह है कलजुगी गौ सेवक। गाय को लात मारने वाला महान गो सेवक। राम-राम, कितनी दुर्दशा होगी हम लोगों की। वाह रे हम गौ माताएँ! अपने बेटों के द्वारा ही लतियाई जा रही हैं।''

''दीदी, तुमने अभी राम को पुकारा।'' श्वेता बोली, ''मैंने सुना है कि भगवान श्रीराम भी कृष्ण भगवान की तरह गायों से प्यार करते थे। वे साधु-संतों को गोदान किया करते थे।''

''तुमने ठीक सुना है श्वेता।'' श्यामा बोली, 'पिछली बार जब मैं अपनी क्षुधा शांत करने के लिए एक मंदिर के पास भटक रही थी, तो वहाँ मैं एक साधु का प्रवचन चल रहा था। मैं उसे ध्यान से सुन रही थी। मैं तो दंग रह गई। रघुकुल रीत सदा चली आई, प्रान जाहिं पर वचन न जाई, वाला उदाहरण है यह। राम जी वचन के कितने पक्के थे, इस कथा से भी पता चलता है।''

''कथा तो सुनाओ।'' श्वेता ने व्यग्र हो कर कहा।

''हाँ-हाँ, सुना रही हूँ।'' श्यामा बोली, ''कथा यह है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम माता-पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए जब वनवास पर जाने लगे तभी त्रिजट नामक एक गरीब ब्राह्मण उनके पास आया। पहले ब्राह्मण गरीब ही हुआ करते थे। तो त्रिजट ब्राह्मण भगवान श्रीराम से बोला- हे राजा राम, आप तो चौदह वर्षों के लिए वनवास पर जा रहे हैं। आप के बिना मेरा जीवन निर्धनता में ही कट जाएगा। मेरे जीवकोपार्जन का कुछ प्रबंध कर के जाएँ तो बड़ी कृपा होगी।''

प्रभु राम मुसकराए और बोले- ''कहो, तुम्हें क्या चाहिए?''

त्रिजट बोला- ''हे राम, मुझे कुछ गायें प्रदान कर दें। उनके सहारे मैं अपने जीवन की नौका पार कर लूँगा और अंतिम घड़ी में गोदान करके भवसागर को भी पार कर लूँगा।''

ब्राह्मण की बात सुन कर श्रीराम को अचानक विनोद सूझा और उन्होंने बस यूँ ही कह दिया कि, 'हे ब्राह्मण श्रेष्ठ, आपके हाथ में जो दंड है, उसे आप जोर से फेंकिए। जहाँ तक यह डंडा जाएगा, वहाँ तक की समस्त गायों के आप स्वामी हो जाएँगे।'...

....भगवान राम की बात सुन कर ब्राह्मण की आँखों में एकाएक चमक आ गई। अधिकाधिक गाय पाने के लालच में उसने पूरी ताकत लगाकर डंडा फेंका। डंडा सरयू नदी के उस पार गायों के एक गोष्ठ में जाकर गिरा। वहाँ हजारों गायें पल रही थीं। भगवान ने अपने वचन के अनुरूप त्रिजट को वे हजारों गायें समर्पित कर दीं। वाल्मीकीय रामायण में नारद जी कहते हैं कि श्रीराम भगवान ने दस सहस्र करोड़ (एक खरब) गायें विद्वानों को दान में दी थीं। एक खरब....? आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि ऐसा हुआ होगा। लेकिन पुराकथा तो यही कहती है। सोचो, त्रेता युग में कितनी गायें रही होंगी और कितनी उदारता के साथ राजा राम गायों का दान किया करते थे।''

''अब कोई राम, अब कोई कृष्ण नहीं,केवल उनकी कथाएँ और हम गायों की व्यथाएँ रह गई हैं।'' श्वेता ने आह भरी, ''दीदी, हमारे धर्म-ग्रंथ गौ-महिमा से जुड़ी असंख्य कथा-सुमनों की नाना सुरभियों से ऐसी सुवासित हैं कि शताब्दियाँ महकती चली आ रही हैं। मैंने भी अनेक कथाएँ सुनी हैं। एक-दो और कथाएँ कौंध रही हैं। आप कहें, तो सुनाऊँ?''

श्यामा बोली- ''हम मूक गायों के पास स्वर्णिम कथाओं के अलावा है ही क्या? ये कथाएँ ही तो हमारे दु:खों को कम करती रहती हैं। कुछ तुम कहो, कुछ मैं कहूँ। तुम भी आज कथा सुना कर अपना जी हल्का कर लो।''

श्वेता बोली, ''ठीक बात है। दीदी, ये कथाएँ न होतीं तो कैसे पता चलता कि हमारा गौरवशाली अतीत कैसा था। 'स्कंदपुराण' की कथा है कि एक बार भगवान शंकर से अनजाने में कुछ महान ऋषियों का अपमान हो गया। ऋषियों ने क्रोधित होकर शंकरजी को शाप दे दिया। इससे शंकर विचलित हो गए, तब उन्होंने गौ माता की आराधना की। बहन, इस आराधना के बहाने गाय की अलौकिक, अद्वितीय, अद्‌भुत महिमा का जो वर्णन भगवान शंकर के श्रीमुख से किया गया है, वह पठनीय है, मननीय है। इसके बारे में सबको बताना चाहिए। दीदी, देखो, भगवान शंकर सुरभि माता की वंदना करते हुए कहते हैं कि 'माते, तू सृष्टि को बनाने और उसका विनाश करने वाली है। तू अपने सम्पूर्ण भावों से पृथ्वी, देवता और पितरों को तृप्त करती है। हे देवि, रुद्रों की माँ, वसुओं की पुत्री हो। तुम्हीं धृति, पुष्टि, सिद्धि, लक्ष्मी, कीर्ति, लज्जा, महामाया, श्रद्धा और सर्वार्थसाधिनी हो।'

...शंकर भगवान आगे कहते हैं कि 'हे माते, तुम्हारे सिवा इस त्रिभुवन में कुछ भी नहीं है। तुम अग्नि और देवताओं को तृप्त करने वाली हो। चारों वेद तुम्हारे चार पैर हैं। समुद्र स्तंभ है। चंद्र-सूर्य लोचन हैं। तुम्हारे रोम-रोम में देवताओं का निवास है। हे देवि, तुम्हारे, दोनों सींगों में सारे पर्वत, कानों में वायु, नाभि में अमृत है, खुरों में सारे पाताल, स्कंधों में ब्रह्मा, मस्तक में सदाशिव और हृदय में विष्णु जी, पूँछ में पन्नग, गोबर में वसु, गोमूत्र में साधन,

अस्थियों में समस्त यज्ञ, सामने के भाग में पितृगण, भाल में यज्ञ और दोनों कपोलों में किन्नरों का निवास है। हे देवि, तुम सर्वलोक हितैषिणी हो। अत: मेरा भी हित करो। हे अमृतसंभव, ब्राह्मणों के शाप से मेरा शरीर जल रहा है। इसे शीतलता प्रदान करो।''

...''इतनी वंदना करके भगवान शंकर सीधे गौ माता के शरीर में प्रवेश कर गए। सुरभि माँ ने उन्हें अपने गर्भ में धारण कर लिया। उधर अचानक शिवजी के अदृश्य होने पर सृष्टि में हाहाकार मच गया। ब्राह्मणों के शाप की जानकारी मिलने पर देवताओं ने ब्राह्मणों को प्रसन्न किया और शंकर गोलोक पहुँच गए। वहाँ उन्होंने सुरभि-सुत को देखा। यह भगवान शंकर ही थे जो 'नील' नामक ऋषभ (बैल) के रूप में अवतरित हुए थे। वहाँ अनेक सुंदर-सुंदर गायें विचरण कर रही थीं। इनके नाम सुनोगी तो अभिभूत हो जाओगी।''

इतना बोलकर श्वेता कुछ देर के लिए रुकी, फिर मुसकराते हुए बोली - ''सुनो, इन गायों के नाम: मनोरमा, गौरा, नंदा, गोपिका, कृष्णा, नंदिनी,गौरमुखी, नीला, वनिता, सुपुत्रिका, स्वरूपा, शंखिनी, सुदती, सुशीलका, अमिनता, मित्रवर्णा और भी न जाने कितने नामों वाली सुंदर और उन्नत गायें। इन्हें देखकर सारे देवता मंत्रमुग्ध हो गए। इन नामों के बीच एक हृष्ट-पुष्ट ऋषभ की शोभा देखते ही बनती थी। उसका चेहरा व पूँछ का रंग पीला तथा खुर और सींग सफेद थे। तब देवताओं ने उन्हें प्रणाम किया और स्तुति-गान करते हुए कहा- 'हे देवाधिदेव तुम ही वृषरूपी भगवान हो। जो मनुष्य तुम्हारे साथ पाप का व्यवहार करता है, वह निश्चय ही पापी होता है और उसे रौरव नरक भोगना पड़ता है। जो मनुष्य तुम्हें पैरों से छूता है, वह भी नरक भोगता है। जो तुम्हें किसी न किसी रूप में पीड़ा पहुँचाता है, वह कभी मुक्ति नहीं पा सकता'।''

''शंकर भगवान से जुड़ी एक और कथा मुझे याद आ रही है', श्यामा बोली, 'जब शंकर भगवान ने क्रोधित हो कर बाल गणेश का सिर धड़ से अलग कर दिया था तो माता पार्वती ने अपने बच्चे को पुनर्जीवित करने की ज़िद ठान ली। आखिरकार शिव जी ने उस समय के चिकित्सक अश्विनीकुमारों को बुलाया और उन्होंने हाथी का सिर गणेश के धड़ से जोड़ कर गणेश जी को जीवित कर दिया। पुत्र का रूप भले ही नया था, मगर माँ को उसका पुत्र मिल चुका था। पार्वती भावविभोर हो गईं और अश्विनीकुमारों का आभार प्रकट करते हुए बोली- 'हे कुमारद्व्य, मैं आप लोगों से बहुत प्रसन्न हूँ। जो चाहें माँग लें।'

अश्विनीकुमारों को जाने क्या सूझी, उन्होंने कहा, 'हमें शंकर चाहिए' और इतना कह कर वे शंकर भगवान को साथ जाने लगे।

माता पार्वती विचलित हो गईं। उन्होंने अश्विनीकुमारों से कहा- 'कृपा करके आप शंकर जी से भी मूल्यवान कोई और चीज़ माँग लें।'

अश्विनीकुमार सोचते रहे फिर बोले- 'ठीक है, आप हमें अपनी गाय प्रदान कर दें।'

माता पार्वती ने प्रसन्न हो कर अपनी गाय सुरभि अश्विनीकुमारों को सौंप दी।...

सुरभि को पाकर अश्विनीकुमार इतने प्रसन्न हुए मानो उन्हें कोई ख़जाना ही मिल गया

हो। बाद में इन कुमारों ने सुरभि के दूध और गो मय आदि से अनेक तरह की औषधियों का निर्माण किया।''

इतनी कथा सुनाने के बाद श्यामा को प्यास लगी, उसने नाँद को देखा, उसमें जल तो नहीं था। वह रँभाने लगी। ग्वाले की नींद नहीं टूटी। तब श्वेता और श्यामा दोनों जोर-जोर से रँभाने लगीं। श्यामा अपनी गर्दन हिलाने लगी, तो गले में बँधी घंटी बजने लगी।

घंटी और रंभाने की आवाज़ सुनकर ग्वाले की नींद टूटी तो वह दौड़कर आया।

''अरी मैया, काहे चिल्ला कर मेरी नींद खराब कर रही हो?'' ग्वाले ने पास आकर नाँद को देखा, तो समझ गया। उसने नाँद के उपर लगे नल को चालू कर दिया। कुछ ही देर बाद नाँद भर गयी तो प्यास से आकुल श्वेता और श्यामा तेजी के साथ पानी पीने लगीं।

ग्वाला अपनी जगह लौटकर फिर सो गया।

वह गरमी का समय था।

सूरज धरती पर आग सींच रहा था। गौशाला की टिन की छत धूप में जल रही थी। गायों को लग रहा था उन्हें किसी तपती भट्टी में झोंक दिया गया है। दूर एक बिजली से चलने वाला पंखा खड़ा कर दिया गया था। लेकिन वह इतनी गायों के लिए नाकाफी था। कायदे से तो छत पर पंखे लगाए जाने चाहिए थे ताकि हर गाय को हवा मिले, लेकिन गौशाला का मालिक बनिया था, इसलिए उसने पंखों का खर्चा बचा कर लोगों को दिखाने के लिए दो 'पैडस्टल' इधर-उधर लगा रखे थे। श्वेता-श्यामा बीच में बँधी थीं। वहाँ तक हवा पहुँच नहीं पा रही थी। पंखे जिन गायों के सामने रखे घूम रहे थे, उनके सामने की गायें विचलित नज़र आ रही थीं। पंखा बाबाआदम के ज़माने का था। धीमी गति से चल रहा था। जितना घूमता नहीं था, उससे ज्यादा तो आवाज़ कर रहा था। घर्र..घर्र..घर्र...। कुल मिलाकर सभी गायें बेहाल थीं। बोल न सकने के कारण उनकी परेशानी को समझने वाला कोई नहीं था। न गौशाला चलाने वाला, न ग्वाला।

पानी पीकर श्वेता-श्यामा की जान में जान आई।

''पानी बिन तो ज़िंदगी अधूरी है। लेकिन आजकल तो हम लोगों को साफ पानी भी नहीं मिलता।'' श्यामा बोली, ''जब चरवाहा हमें बाहर कहीं चराने ले जाता है, तो एक तो कहीं तालाब नज़र नहीं आते और अगर कहीं दिख भी गए , तो उसका पानी पीने लायक नहीं रहता।''

श्यामा की बात सुनकर श्वेता बोली, ''अब तो आदमी भी पानी के लिए इधर-उधर भटकता मिल जाता है। पेड़ कटते जा रहे हैं, जंगल साफ हो रहे हैं। तालाबों को पाटकर मकान-दुकान बनाए जा रहे हैं। पहले इसी शहर में हमें कितने तालाब मिल जाते थे। प्रिंस तालाब, लेडीज़ तालाब, रजबंधा तालाब और न जाने कितने ही तालाबों को तो भू माफिया ही पी गए। आसपास की नदियों में पूरे शहर की गंदगी डाली जा रही है। पता नहीं, इस मनुष्य को क्या हो गया है। अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है।''

''मैं तो कहती हूँ, न जाने इस पूरे संसार को ही क्या हो गया है। कल की सोचती हूँ, कि इस दुनिया का क्या होगा।'' श्यामा उदास स्वर में बोली, ''हम लोग तो आज हैं कल नहीं रहेंगे। लेकिन भविष्य की कल्पना करके सिहर उठती हूँ कि आने वाली दुनिया कितनी भयावह होगी। मुझे तो लगता है कि भविष्य में गो हत्या बिल्कुल आम हो जाएगी। कहीं कोई विरोध नहीं होगा। जैसे अभी बकरे कटते हैं, मुर्गियाँ कटती हैं, वैसे ही कल को गायें कटेंगी। यही रफ्तार रही, तो एक दिन लोग खुले आम गाय तो क्या, इंसानों को भी काटने से परहेज नहीं करेंगे। तुम्हें क्या लगता है, मैं गलत कह रही हूँ?''

''आप ठीक कह रही हैं।'' श्वेता बोली, ''इस बर्बाद होती दुनिया को देखने के लिए हम लोग नहीं रहेंगे। जैसे आज हमारे हिस्से केवल सुंदर-सुंदर कथाएँ बची हैं, ठीक उसी तरह कल भी कुछ स्वर्णिम कथाएँ रहेंगी, बस। इनमें ये दुनिया अपना कुरूप चेहरा देखेगी और अतीतजीवी हो कर सुंदर चेहरे और निर्मल मन वाले व्यतीत को याद करेगी। तयशुदा है कि आने वाला कल आज से भी भयावह होने वाला है। अभी गायों के लिए जो गौशालाएँ हैं, वे कल केवल डेयरियाँ रह जाएँगी। हो सकता है, इनका कोई नया नाम भी हो जाए-'स्लाटोडेयरी'। यानी जहाँ कसाईखाना भी है और डेयरी भी। जिसे दूध लेना है दूध ले जाए और जिसे मांस चाहिए, वो मांस ले जाए। जैसे अनेक चौराहों पर बकरे और मुर्गे लटके मिलते हैं, उसी तरह कल को गायें लटकी मिलेंगी। 'स्लाटोडेयरी' जैसी जगहों में जहाँ एक तरफ गायों को यंत्रों से दुहा जाएगा, तो दूसरी ओर गायें कटेंगी और उनका मांस अच्छे से पैक करके देश-विदेश भेजा जाएगा। इस भयानक बाज़ार में संवेदनाओं का क्षरण तेजी के साथ हो रहा है। पैसा...पैसा और सिर्फ पैसा ही अब मनुष्य का लक्ष्य है। उसके लिए जब अपनी ही माता का कोई खास अर्थ नहीं रह गया है,तो हम गऊ माता तो बहुत दूर की चीज़ हैं।''

''आज तो तूने बड़ी ऊँची बातें कह दीं।''

श्वेता हँस पड़ी- ''दीदी, यह सब तुम्हारे साथ रहने का असर है। तुम भी ज्ञान की कितनी ही बातें बताती रहती हो। उसी का असर है। बाबा तुलसीदास जी भी कहते हैं न कि 'बिन सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिलु सुलभ न सोई'। तुम्हारा सत्संग पा कर मुझमें भी थोड़ा-सा विवेक आ गया है शायद।''

''लेकिन आदमी का विवेक कब जाग्रत होगा?'' श्यामा ने वही पुराना सवाल दुहराया।

''आदमी का विवेक तो जागा हुआ है, लेकिन विवेक पर स्वार्थ की काली छाया पड़ गई है', श्वेता बोली, 'यह काली छाया हटेगी तो विवेक का सूर्य चमकने लगेगा।''

इतना बोलकर श्वेता हँस पड़ी। श्यामा को भी हँसी आ गई। वह बोली,

''हम लोग आजकल आपस में ही प्रवचन करने लगे हैं। कोई सुने या न सुने। बोल कर जी हल्का हो जाता है।''

''बिल्कुल, मन तो बहल जाता है। हमारा जो होना है, सो तो होगा ही। हमारी नियति है मरना-कटना। पुण्यात्मा के हाथों में लगे तो बच गए, किसी पाखंडी हिंदू के हत्थे चढ़े होते

तो गए थे काम से।''

इतना बोलने के बाद श्वेता ने मुँह फाड़ दिया। उसे नींद आ रही थी। श्यामा की पलकें भी बोझिल हो रही थीं।

''ठीक है, हम लोग थोड़ा विश्राम कर लें।'' श्वेता बोली

''हाँ, यह ठीक रहेगा।'

श्यामा ने आँखें मूँद लीं। श्वेता भी सोने की कोशिश करने लगी।

सात

देवपुर के जंगल से कुछ दूर ही था- सरायपुर। कसाईखाना खुलने के कारण यहाँ के कुछ गौ पालकों की तो निकल पड़ी थी। गौ पालकों के कारण सरायपुर के खालबाड़ा में रहने वाले कसाई भी मालामाल होने लगे थे। जैसे ही किसी गौ पालक की गाय बेकार होती, वो एक कसाई के पास जाता और अपनी गायों का सौदा कर लेता। आम के आम गुठलियों के दाम। जीवन भर गाय का दूध पीया। गो मूत्र-गोबर को भी बेचा और गायें बीमार पड़ गईं, तो उन्हें बेचकर फायदा कमा लिया। बीमार गायों को ये गौपालक बड़े भरे मन से बेचते थे और बेचने के बाद जो पैसा मिलता था, उसे जेब के हवाले करते थे, फिर गो चरण को प्रणाम कर लेते थे। ऐसा करके वे गाय बेचने के पाप को दूर करने की पूरी कोशिश करते थे।

कसाई का काम करने वाले और खालबाड़ा में रहने वाले मोचियों की हालत यह थी कि वे अब मोटरसाइकलों में घूमने लगे थे और अपने पास मोबाइल भी रखते थे। जिन घरों में गायें ज्यादा नज़र आती थीं, ये लोग वहाँ जाते थे और अपना मोबाइल नंबर देकर आ जाते। जब किसी गो पालक को गाय बेचनी होती, तो वे मोबाइल करके मोची को बुला लेते। इस तरह गो पालकों को बीमार गायों को बेचने के लिए इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता था। खालाबाड़ा के कसाई अपने धंधे में बड़े माहिर थे। वे शहर में इधर-उधर भटकती गायों को चुपचाप जहरीला इंजेक्शन दे देते थे, जिससे गायें मर जाती थीं। बस, इन गायों को ये कसाई ले जाते और फौरन उनका मांस निकाल कर होटलों या ढाबों में बेच आते।

इसी शहर में मुजफ्फर भाई भी रहते थे। मुजफ्फर भाई गायों को जहरीले इंजेक्शन देने वाले कुछ कसाइयों को पुलिस के हवाले कर चुके थे। हिंदुओं द्वारा गोवंश की उपेक्षा देखकर मुजफ्फर दुखी थे। गो वध में आई तेजी देख कर मुजफ्फर भाई हैरत में थे। वे पक्के मुसलमान थे। कुरान शरीफ की बातों को जीवन में उतारने वाले। एक दिन उन्होंने ठान लिया कि अब गायों को बचाने का बीड़ा मुझे ही उठाना ही पड़ेगा। बस, उन्होंने 'मुस्लिम गोरक्षा समिति' बना डाली। अख़बारों में जब यह समाचार छपा तो उनके मुहल्ले में हड़कम्प मच गया कि अरे, यह क्या सूझी इस नामुराद को। पास में रहने वाले कुछ मुसलमान मुजफ्फरभाई के पास पहुँच गए।

''अरे मियाँ, ये क्या माज़रा है? हिंदुओं का ठेका आप ले रहे हैं। आप मुसलमान होकर गो रक्षा समिति बना रहे हैं। लाहौलविलाकूवत।'' फितरत अली ने बात शुरू की।

''क्यों ज़नाब, कहाँ लिखा है कि मुसलमान को गाय बचाने का काम नहीं करना चाहिए?'' मुजफ्फर भाई थोड़ा उत्तेजित होकर बोले, 'अरे, यह तो बड़ा ही मुकद्दस (पवित्र) काम है। लगता है आप लोगों ने कुरानपाक को ठीक से पढ़ा नहीं है। पहले पढ़ो फिर बात करो।''

''अब भाईजान, तुम हमको तो मती बताओ कि कुरान पाक में क्या लिखा है और क्या नहीं।'' रहमत मियाँ बोले, ''दाढ़ी के बाल धूप में सफेद नहीं हुए हैं। हम सब जानते हैं कि पाककुरान में क्या लिखा है।''

''अच्छा, आप जानते हैं ?'' मुजफ्फरभाई भड़क गए, ''तो बताइए, कुछ बातों का खुलासा कीजिए। आप बता दें तो मैं गो रक्षा समिति को अभी...इसी वक्त बर्खास्त कर दूँगा।''

मुजफ्फर भाई की बातें सुनकर रहमत मियाँ सकपका गए। बोलती बंद। दूसरे लोग भी खामोश। किसी को कुछ पता हो तो बोले।

रहमत मियाँ धीरे से बोले – ''अच्छा, आप ही कुछ बताओ कि गाय के बारे में क्या लिखा है कुरान में? चलो भाई, मान लेते हैं, कि हमने तो कुछ पढ़ा ही नहीं है!''

''अरे दिल से पढ़ोगे तो पता चलेगा न।'' मुजफ्फर भाई मुसकराते हुए बोले, ''आपको यह तो पता होगा ही कि कुरान के पहले अध्याय को क्या कहते हैं ?''

रहमत मियाँ इधर-उधर देखने लगे। याद करते हुए बोले – ''हाँ, हाँ, क्यों नहीं! सू... सू... सुर...'' झेंपते हुए बोले – ''एकदम से याद नहीं आता न भाई।''

''ठीक है, समय दिया। सोचकर बताओ।'' मुजफ्फर भाई मुसकराते रहे। रहमत भाई ने अपने साथी से पूछा तो उसने कान में कुछ कहा, तो रहमत भाई चहकते हुए बोले – ''हाँ, याद आ गया। पहला अध्याय है – 'सूर-ए-फातिहा'। अब बोलो, पता है कि नहीं।''

मुजफ्फर भाई हँस पड़े – ''खुशी की बात है कि आपको पता है। अच्छा, दूसरे अध्याय का भी नाम याद होगा।''

''हाँ, हाँ, क्यों नहीं, लेकिन मैं बताऊँगा नहीं। आप तो मेरा इंटरव्यू लेने लगे।'' रहमत मियाँ गुस्से में बोले, ''अच्छा हम चलते हैं। हम लोग कुछ मज़हबी बातें करने के लिए आए थे, लेकिन लगता है आप हम लोगों को ही गुमराह करने पर तुल गए हैं।''

''मैं गुमराह नहीं कर रहा, सबको सही राह पर लाने की कोशिश कर रहा हूँ। गाय के सवाल पर आप जबरन भड़क रहे हैं।'' मुजफ्फर भाई बोले, 'मैंने एक समिति क्या बना ली, आप लोग तो परेशान हो गए। मैं पूछ रहा था कि कुरान पाक के दूसरे अध्याय का नाम क्या है। आप बता नहीं पाए। चलिए मैं ही बताए देता हूँ। उसका नाम है – 'सूर-ए-बक़र'। इसे हिंदी में कहेंगे 'गायों का अध्याय', समझे न! इसमें गाय के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। कुरान में कहा गया है कि 'बैल के सींग पर पृथ्वी विराजमान है। जब बैल पृथ्वी को एक सींग से दूसरी सींग पर लेता है तो पृथ्वी हिलती है और भूकंप आता है। गाय के जूठे पानी को भी पाक माना गया है। कितनी

बड़ी बात है यह। खुदाबंद कहते हैं – 'जो बैल को मारता है वह उस आदमी की मानिंद है जो मनुष्य को मारता है। मैं तो घर का बैल न लूँगा और न तेरे बाड़े का बकरा, क्योंकि जंगल के सारे जानवर मेरे हैं। क्या मैं बैल का गोश्त खाता हूँ या बकरे का लहू पीता हूँ? अल्लाह के पास गोश्त और खून हरगिज नहीं पहुँचते। हाँ, तुम्हारी परहेज़गारी ज़रूर पहुँचती है'। फिर भी बकरीद के दिन कलकत्ता और दूसरे शहरों में हजारों गायें काट दी जाती हैं।''

मुजफ्फर भाई इतना बोलकर चुप हो गए। रहमत मियाँ परेशान। उनको कुछ सूझ नहीं रहा था कि अब क्या बोलें।

''ठीक है जनाब, अब हम चलें, आप तो तक़रीर ही करने लगे।'' रहमत मियाँ उठ खड़े हुए। उनके साथी भी खड़े हो गए। इस पर मुजफ्फर भाई बोले, ''अरे,भाईजान, ऐसे कैसे चले जाएँगे सूखे-सूखे? अरी आबेदा बेगम, चाय-वाय तो पिलाओ। देसी गाय के शुद्ध दूध की चाय पीयोगे तो बुद्धि भी शुद्ध हो जाएगी। जैसे चाय पिलाकर कवि-शायर अपने कलाम सुनते हैं, मैं भी आपको आज कुछ और अच्छी बातें बताना चाहता हूँ। देखो मियाँ, कुरानपाक में साफ-साफ लिखा है कि हरा-भरा पेड़ काटने वाले, मनुष्यों को खरीदने वाले, जानवरों को मारने वाले और दूसरों की स्त्री से कुकर्म करने वाले को खुदा कभी मुआफ़ नहीं करता। खुदा उन पर ही दया करता है, जो उनके बनाए जानवरों पर दया करता है। कुरान में क़ुर्बानी के लिए किसी जानवर का नाम ही नहीं लिखा है और न उसके वध का हुक्म है। हाँ, उस पर दया करने की अपील ज़रूर की गई है। जाहिर है कि गाय को खुदा ने ही बनाया है। दुख इसी बात का है कि हम लोग न तो कुरान-पाक को ईमानदारी से पढ़ते हैं और न इस्लाम को समझने की कोशिश करते हैं। 'इस्लाम' शब्द का मतलब जानते हो ? क्यों हाजी साहब, आपको तो ज़रूर पता ही होगा।''

हाजी साहब की ज़ुबान लड़खड़ा गई। वे बोले – ''हाँ... हाँ... पता है। जो धर्म की राह पर चले, वह इसलाम है।''

मुजफ्फर भाई जोर से हँस पड़े और बोले – ''मान गए आपको। तुसी 'ग्रेट' हो जी। मैं आपको झुक कर सलाम करता हूँ। अरे हाजी साहब, कुछ भी गलत-सलत जानकारी मत दो। इस्लाम का मतलब है 'किसी को दुख न देना'। 'इसलाम' अरबी के 'सलम' धातु से निकला है। 'किसी को दुख न देने' की भावना के कारण ही मुहम्मद साहब जीवन भर खुद दुख-तकलीफें सहते रहे, मगर दया का काम करते रहे। हुजूर यह भी कहते हैं कि उन लोगों की कभी निजात नहीं होती, जो हरा-भरा पेड़ काटते हैं, जो गाय की हत्या करते हैं, जो शराब पीते हैं, और जो लोग यह मनाते हैं कि वर्षा न हो। कुरान-पाक कहता है – 'दया धर्म का मूल है'। कुरान में एक रोचक प्रसंग है। आप लोगों को शायद पता हो। एक बार एक औरत ने एक बच्चे को जन्म दिया और जन्म देने के बाद बेचारी का इंतकाल हो गया। अब क्या किया जाए। बच्चे को तो दूध चाहिए। तब उस घर में एक गाय लाई गई। इस गाय का दूध पिलाकर बच्चे की जान बचाई गई। ट्रेजेडी तो देखिए कि कुर्बानी के लिए एक बार उसी गाय को लाया गया तो हुक्म हुआ कि 'उसकी कुर्बानी

नहीं हो सकती। तुम्हारे लिए अल्लाह ने जानवर के पेट में वह चीज (दूध) पैदा कर दी है, वही तुम्हारे लिए मुफ़ीद है। तुम उसे पीयो।' इस तरह की सलाह अनके धर्म उपदेशकों ने दी है। सबका एक ही मिलता-जुलता कथन है कि गाय का दूध दवा और उसका गोश्त सरासर मर्ज़ है। तो भाई जान, कुरान में गाय को लेकर या जानवरों की हत्या के विरोध में अनेक घटनाओं का वर्णन है। लेकिन हम लोग कुर्बानी के नाम पर जानवरों को काटते रहते हैं। कुरबानी देनी है, तो सिम्बॉलिक दे दो। प्रतीकात्मक। जानवर काटना क्या ज़रूरी है?''

तभी चाय आ गई। सबने चाय पी। रहमत मियाँ खामोश बैठे रहे।

मुजफ्फर भाई मंद-मंद मुसकरा रहे थे।

चाय पीने के बाद रहमत मियाँ बोले - ''आपकी बातें सुनकर मैं सोच में पड़ गया हूँ और कबूल करने से छोटा नहीं हो जाऊँगा कि मुझे पवित्र कुरान और इसलाम के बारे में पहली बार कुछ नई बातें पता चलीं। हम लोग कभी गहराई में नहीं उतरते। इसीलिए नासमझी के कारण कई बार दंगे-फ़साद की नौबत भी आ जाती है। अब लग रहा है कि आपने 'मुसलिम गो रक्षा समिति' बना कर बड़ा नेक काम किया है। आप भिड़ कर काम करें, हम आपके साथ हैं। आप ठीक कहते हैं। गाय केवल हिंदुओं की नहीं, वह सबकी है। हम सबने भी तो गाय का दूध पीया है। गाय हमारी माता है। आज से हम लोग भी गो रक्षा समिति के सदस्य बन गए। हमारे आसपास कुछ लोग हैं जो चोरी-छिपे गौ मांस खाते हैं, हम उन्हें समझाएँगे। कुरान-पाक का वास्ता देंगे। पैगंबर साहब की बातें बताएँगे। हमें यक़ीन है कि सच्चा मुसलमान गो-मांस खाने से तौबा कर लेगा।''

''ये हुई न कौमी यकजहती की बात। आप लोग शिकार करने आए थे और खुद शिकार हो कर चले?' मुजफ्फरभाई मुसकराते हुए बोले, 'समिति को बंद करवाने आए थे और आप लोग ही समिति के सदस्य बन गए। वाह, यह बड़ी बात है। यह सब खुदा ने ही करवाया है। यह है गाय की महिमा। कुछ और याद आ रहा है, उसे भी सुन लो। मोहम्मद साहब ने तो यह भी कहा है कि 'पाले हुए को मार डालना कोई बहादुरी नहीं है।....अरे, कबाब खाना है तो दाँत से अपना ही कलेजा चबा जा।....खुदा ज़िबह किए जानवरों का मांस नहीं चाहता, वह केवल तुम्हारी श्रद्धा चाहता है।..चींटी को भी नहीं सताना चाहिए क्योंकि वह भी जान रखती है। यूँ मुर्गे-मछली को मत सता। वर्ना ख़ुदा के सामने तुझे लज्जित होना पड़ेगा।...तू धीरे-धीरे चल क्योंकि पैरों तले चींटी आदि हजार जानें हैं'। वाह, क्या बात है। इसी तरह का चिंतन जैन धर्म में भी मिलता है। मुहम्मद साहब की ये सारी बातें मैं अपने मन से नहीं कह रहा हूँ। 'इजहारेहम' में ये सब बातें लिखी हुई हैं। पहले हम इनको पढ़ें फिर बात करें। देखिए, मैं आपको बादशाह अकबर के दौर की कुछ बातें बताता हूँ, जिससे आप लोगों को समझ में आ जाएगा कि बादशाह ने गायों के लिए क्या किया। आखिर हम लोग उनके ही वंशज हैं। जब उन लोगों ने गाय के लिए कुछ किया तो क्या हम लोग नहीं कर सकते?''

''लेकिन बादशाह ने क्या किया था, यह तो बताओ!'' रहमत मियाँ के साथ आए एक

किशोर ताहिर ने पूछा ''हम लोग तो बस हीरो-हीरोइनों के बारे में जानते हैं। हमें अपनी ही तारीख (इतिहास) ठीक से पता नहीं। आप कुछ बताएँगे तो मेहरबानी होगी।''

मुजफ्फर भाई को तो जैसे खज़ाना मिल गया। उनका विरोध करने के लिए आने वाले लोग देखते ही देखते उनके साथ हो गए। यही है इसलाम की ताकत। सबके अंदर इसलाम समा गया था। सबके दिल में दया की भावना हिलोरें मारने लगी थी।

मुजफ्फर भाई बोले - ''खुशी की बात है कि नए लड़के अपने अतीत को जानना-समझना चाहते हैं। जानते हो, मुगलकाल में अधिकतर बादशाह अद्भुत गो प्रेमी थे। सब के सब गो मांस के विरोधी थे। उन्होंने गो हत्या पर रोक लगा दी थी। हुमायूँ की एक सच्ची घटना बताता हूँ। हुमायूँ के पिता बाबर ने एक बार उसे पत्र लिखा था। वह पत्र 'मॉडर्न रिव्यू' में छपा था। उसका एक अंश सुनाता हूँ। देखो।''

इतना बोलकर मुजफ्फर भाई अपने झोले में रखी कोई पत्रिका निकाली और उसे पलटाने लगे। फिर एक जगह रुककर बोले - ''मिल गया। देखो। हुमायूँ को बाबर ने जो पत्र लिखा था उसमें कहा था कि 'ऐ मेरे बेटे, भारतवर्ष में भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। खुदा को धन्यवाद है कि उसने तुम्हारे हाथों में इस देश का शासन-सूत्र सौंपा है। तुम्हें अपने मन से धार्मिक पक्षपात को अलग कर देना चाहिए। प्रत्येक धर्म के नियम के अनुसार उनके साथ न्याय करना और विशेषकर गो-हत्या से परहेज रखना क्योंकि ऐसा करने से ही तुम भारतवासियों के हृदय पर विजय प्राप्त कर सकोगे और देश की प्रजा तुम्हारी कृतज्ञता के पाश में बंधकर तुम्हारी कृपा-पात्र बन सकेगी। तुम्हारे राज्य के भीतर किसी भी जाति के मंदिर या पूजा के स्थान हैं, उन्हें भ्रष्ट मत करना और इस तरह न्याय करना कि प्रजा बादशाह से और बादशाह प्रजा से प्रसन्न रहे। इस्लाम की भलाई जितनी कृतज्ञता की तलवार से हो सकती है, उतनी अन्याय की तलवार से नहीं। सुन्नी और शिया के झगड़ों से आँख बंद कर लेना, अन्यथा ये इस्लाम को कमजोर कर देंगे।''

इतना पढ़कर मुजफ्फर भाई बोले, ''देखा, कितनी बड़ी नसीहत दी थी बाबर ने। पत्र में इसी तरह की और भी कुछ बातें कही गई हैं। मैं यह बताना चाहता हूँ कि देखो, बाबर ने भी गो रक्षा की बात कही है। हुमायूँ जब तक जिंदा रहा, उसने पिता के वचनों को निभाया। गायों की रक्षा की और लोगों पर अत्याचार नहीं होने दिया। आप सबको तो पता ही है कि एक हिंदू रानी ने उसे रक्षाबंधन भेजा था तो उस रानी की रक्षा के लिए हुमायूँ दौड़ पड़ा था। तो भाइयो, यह है अपना इस्लाम। इसलिए गाय का सवाल केवल हिंदुओं का सवाल नहीं है। वह समूची इंसानियत का सवाल है। 'आईनेअकबरी' का नाम तो आप लोगों ने सुना ही होगा। इसको अकबर के खास सलाहकार अबुल फज़ल ने लिखा था। मैं यह देख कर हैरत में पड़ गया कि इस पुस्तक में एक हिस्सा तो केवल गो रक्षा को ही समर्पित है। इसमें एक जगह लिखा है कि 'सुंदर धरती भारत में गाय मांगलिक समझी जाती थी। उसकी भक्ति भाव से पूजा होती है। इस उपकारी जीव की बदौलत भारत की खेती होती है और उसके द्वारा उत्पन्न अन्न, दूध, मक्खन

आदि आदि से गुजर-बसर चलता है। इसके बैल गाड़ी खींचते, बोझा ढोते और पानी निकालते हैं। इस जीव से राज्य का बड़ा काम चलता है। आगे लिखा गया है कि गो मांस निषिद्ध है और इसे छूना भी पाप समझा जाता है। बैल चौबीस घंटे में अस्सी कोस चलते हैं। घोड़े से तेज दौड़ते हैं। उस समय गुजरात में गाय की जोड़ी का दाम सौ रुपए तक था। एक गाय बीस सेर तक दूध देती थी। झुंड के झुंड गाय एकत्र कर गोपालों को दी जाती, ताकि उनकी रक्षा हो सके। गो शाला का संचालन करने के लिए कानून बना था। अकबर की भी अपनी एक गो शाला थी। अकबर के पास एक जोड़ी गाय थी, जिसका मूल्य पाँच हजार मुहर था। अकबर पूरी तरह वैष्णव था। खाने में वह शुद्ध घी लेता था और अंत में दही खाता था।''

मुजफ्फर भाई की बातों को रहमत भाई बड़े ध्यान से सुन ही रहे थे कि तभी उनका मोबाइल बज उठा। वे झल्ला उठे - ''ओफ्फो, इस कमबख़्त को भी अभीच्चै बजना था। माफ करना भाई, अब इसे बंद ही कर देता हूँ। यह मोबाइल भी खतरनाक चीज है। जहाँ ज़रूरी गुफ्तगू होती है, वहाँ बेज़रूरत बजने लगता है। खैर... हाँ मुजफ्फर भाई। आप जारी रहें।''

मुजफ्फर भाई रहमत मियाँ की अदा देखकर मुसकरा दिए और अपनी बात जारी रखते हुए बताने लगे - ''अकबर ने गोस्वामी विट्ठलनाथ को कुछ गायें और जमीनें दान में दी थीं, ताकि गोस्वामी गो पालन कर सकें। गोस्वामी जी की गायें कहीं भी घास चर सकती थीं। जहाँ गो पालन होता था, वहाँ शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया जाता था। बादशाह ने कुछ ऐसे फरमान भी जारी किए थे, जिससे उनकी उच्च मानसिकता का पता चलता है। ऐसे ही एक फरमान का अंश सुनो।''

मुजफ्फर भाई ने टेबुल पर रखी एक किताब को पलटाया और पढ़ने लगे- 'तर्जुमा फरमान अतिये जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर बादशाह गाज़ी - करोड़ी व जागीरदारान परगने मथुरा, सहरा, मंगोध व ओड जो हर तरह पुश्त पनाही में है, व उम्मेदवार रहते हैं, जानें कि जहान की तामील करने काबिल हुक्म जारी किया गया कि इसके बाद ऊपर लिखे परगनों के इर्द-गिर्द मोर ज़िबह न करें, और शिकार न करें। और आदमियों की गायों को चरने से न रोकें। इसके लिए जागीरदार व करोड़ी ऊपर लिखे हुए को ठैराव जानकर हुक्म मज़कूर में पूरा बंदोबस्त रखें कि कोई शक्स इसके खिलाफ करने की हिम्मत न कर सके। इस बात को अपना फर्ज़ जानें। तहरीर बतारीख रोज दी महर 11 खुरदाद माह इलाही सन् 38 जलूसी (5 जून सन् 1593 ईसवी) दार उल सल्तनत लाहोर।''

मुजफ्फर भाई ने इतना पढ़कर सुनाया तो रहमत भाई उछल पड़े - ''गज़ब का बादशाह था अकबर।''

''इसीलिए तो उसे अकबर दि ग्रेट कहते हैं। अकबर महान।''

मुजफ्फर भाई बोले, ''चलो, लगे हाथ एक-दो बातें और बता दूँ ? बोर तो नहीं हो रहे हो भाई?''

''नहीं-नहीं, आप बताएँ। हमको अच्छा लग रहा है।''

रहमत भाई की बात से वहाँ मौजूद हर शख्स सहमत था। मुजफ्फर भाई शुरू हो गए, ''अकबर के नवरत्नों में एक थे नरहरि कवि। प्रकांड विद्वान। उन्होंने देखा कि कुछ लोग चोरी-छिपे गो हत्या के काम में लगे हुए हैं। एक दिन उन्होंने एक कसाई से बड़ी मुश्किल से गाय छुड़ाई। अकबर के राज में कुछ लोग गो हत्या का काम करें, यह अकबर का भी अपमान था। नरहरि कवि को, एक दिन पता नहीं, क्या सूझी, वे एक छप्पय (कविता का एक छंद) लिखकर ले गए। मजे की बात यह है कि वे दरबार में गए तो अपने साथ एक गाय को भी ले गए। गाय के गले में उन्होंने छप्पय बाँधकर रखा था। दरबार में गाय के साथ नरहरि को देखकर बादशाह समझ गए कि आज ये कवि महोदय कोई नई बात कहने वाले हैं।...

..बादशाह सलामत मुसकराते हुए बोले - 'कविवर, यह सब क्या है? आज आप गाय को साथ लेकर आए हैं? कहीं गाय पर कोई कविता सुनाने का तो इरादा नहीं है?''

नरहरि मुसकरा पड़े और बादशाह को सलाम करते हुए बोले - ''जहाँपनाह, आपकी पारखी नज़र के हम लोग कायल हैं। आपकी दरियादिली को हम लोग बखूबी जानते हैं। आपने सबको अभयदान दिया है। आप गुनग्राहक हैं, इसीलिए आज मैं आपके सामने इस गाय की पीड़ा पेश करना चाहता हूँ।'' ...

..बादशाह ने कहा, 'इज़ाजत है। हमेशा की तरह आप अपनी कविता पेश करें। पूरा दरबार आपको सुनना चाहता है।'

..नरहरि ने पूरा छप्पय सुना दिया। आप लोग भी सुनिए। 'कल्याण' के सन् 1945 में निकले 'गौ अंक ' में यह छप्पय प्रकाशित हुआ है। सुनिए -

अरिहु दंत तृन धरइ ताहि भारत न सबल कोइ।
हम संतत तृन चरहि वचन उच्चरहिं दीन होइ।
हिंदुहि मधुर न देहिं कटुक तुरकहिं न पियावहिं।
पय विशुद्ध अति स्रवहिं बच्छ महि थंमन जावहिं।
सुन शाह अकब्बर! अरज यह करत गउ जोरे करन।
सो कौन चूक मोहि मारियतु मुयेहु चाम सेवत चरन।।

बादशाह समझ गए कि कवि ने गाय के बहाने कितनी बड़ी बात कह दी।

...कविता सुनकर बादशाह मुसकरा पड़े और बोले - 'हम इस गाय का दर्द समझ चुके हैं। आप चिंता न करें। मैं बहुत जल्द ही फरमान जारी करता हूँ। मेरे राज में गायों को अभय मिलेगा। गो हत्या को मैं दंडनीय अपराध घोषित कर दूँगा।'

...बादशाह की बात सुनकर नरहरि ने हाथ जोड़कर सिर झुका लिया। दरबार को बादशाह सलामत पर भरोसा था। वे जैसा कहते थे, वैसा करते भी थे। वे आज के नेताओं की तरह नहीं थे कि ताली पिटवाने के लिए बड़ी-बड़ी घोषणाएँ कर दीं और बाद में भूल गए। आज भी देश में कसाईखाने आबाद हैं। खुलते जा रहे हैं। गो वध हो रहा है और तंत्र मूक

दर्शक बना हुआ है चंद गुमराह मुसलमानों के कारण पूरी मस्लिम बिरादरी को दोष देकर लोग सोचते हैं, उनका कर्तव्य पूरा हो गया। यह नहीं देखते कि गाय को माता कहने वाले हिंदू ही बीमार गायों को कसाई के हाथों में बेचने में शर्म महसूस नहीं करते। सरकार भी खामोश है। गौ मांस विदेश भेजा जा रहा है। शर्म आती है इस सिस्टम पर।''

मुजफ्फर भाई के चेहरे पर तनाव साफ झलक रहा था। रहमत भाई ने धीरे से कहा – ''भाई जान, 'सिस्टम' तो जैसा है, वह हम सभी लोग देख ही रहे हैं। यह तो सुधरने से से रहा। खैर, यह तो बताओ कि नरहरि कवि की कविता सुनने के बाद बादशाह ने जो फरमान जारी किया था, उसमें लिखा क्या था?''

''लिखा तो बहुत कुछ था। वह काफी बड़ा है। अब तो ज़माना शॉर्टकट का है न। आप कहें तो दो लाइन में ही खत्म कर देता हूँ।''

''नहीं-नहीं, आप पूरा फरमान बताएँ। देखें तो सही, कि बादशाह ने जारी क्या किया था।''

''ठीक है, तो सुनिए।'' मुजफ्फर भाई ने कहा, ''बादशाह ने कुछ मुल्लाओं को अपने पास बुलाया। उनसे चर्चा की। सबको गाय का महत्व बताया। हिंदुओं की आस्था का हवाला दिया और एक सुंदर फरमान जारी कर दिया। यह फरमान 13 जिलाहिज्ज सन् 31 शाही में जारी हुआ था। इसमें लिखा था – 'सल्तनत के प्रबंधक, कर्मचारी, अमीर-उमराव, परगनों के हाकिम और शाही मुल्कों के कारबर जिम्मेदार जान लें कि इस न्याय के युग में यह फरमान जारी किया गया है। इसका पालन सबके लिए परमावश्यक है। सबको मालूम रहे कि समस्त पशु ईश्वर के बनाए हुए हैं और सबसे एक न एक लाभ होता है। इनमें गाय की जाति, चाहे वह मादा हो या नर, अत्यंत लाभ देने वाली है; क्योंकि मनुष्य और पशु अन्न खाकर जीते हैं। अन्न खेती के बिना नहीं हो सकता। खेती हल चलाने से ही हो सकती है। और हलों का चलना बैलों पर निर्भर है। इससे स्पष्ट हुआ कि समस्त संसार और पशुओं तथा मनुष्यों के जीवन का आधार एक गाय जाति ही है। ऊपर लिखे कारणों से ही हमारी ऊँची हिम्मत और साफ नीयत का तकाज़ा है कि हमारे साम्राज्य में गो हत्या का रस्म बिल्कुल न रहे। इसलिए शाही फरमान को देखते हुए समस्त राज कर्मचारियों को इस विषय में विशेष रूप से प्रयत्न करना चाहिए जिससे अब से किसी भी गाँव और शहर में गो हत्या का नामोनिशान बाकी न रहे। यदि कोई आदमी इस आज्ञा का उल्लंघन करेगा और वर्जित काम को नहीं छोड़ेगा तो समझ ले कि उसकी सुलतानी अजब में, जो ईश्वरीय कोप का एक नमूना है, फँसना पड़ेगा और वह दंडनीय होगा।''

''क्या बात है भाईजान।'' रहमत मियाँ बीच में बोल पड़े, ''अकबर ने तो कमाल कर दिया। गाय को उसने इतना महत्व दिया। गो हत्या पर अकबर ने किस तरह का दंड रखा था?''

''यही तो बताने वाला था कि आप बीच में ही टपक पड़े। खैर, सुनिए।'' मुजफ्फर भाई ने मुसकराते हुए कहना शुरू किया, ''अकबर ने सख्त चेतावनी दी थी कि 'जो भी उनके

फरमान का उल्लंघन करेगा, उसके हाथ और पाँव की उँगलियाँ काट दी जाएँगी'। ज़ाहिर है, इस फरमान के बाद किसी ने गो वध की हिम्मत नहीं की।''

''धन्य हो अकबर दी ग्रेट।'' रहमत भाई बोले, ''तब तो नवरत्न कवि नरहरि ने अकबर को धन्यवाद तो ज़रूर दिया होगा। बादशाह ने कितना बड़ा काम कर दिया था।''

''हाँ, नरहरि ने फिर एक बार दरबार में उपस्थित होकर बादशाह को एक कविता सुनाई थी। इसके पहले कि आप बीच में ही टोक दें कि कौन-सी कविता सुनाई थी, इसलिए फौरन से पेश्तर वह कविता सुना देता हूँ। सुनिए।'' इतना बोलकर मुजफ्फर भाई ने 'कल्याण' के पृष्ठ पलटाए और नरहरि कवि की कविता सुनाने लगे –

''नरहरि कविते गउ की बिनती कौ सुनि
ह्वै गए अकब्बर सबीह जैसे नकसी।
दीन्हां है हुकम करवाय आम-खास बीच
बंद भयो गोबध खबरि फेरि बकसी।।
फैलि गयो सुजस दिलीप सो जहान बीच
हिंसक समाज बैठि बोले अकबक-सी।
आनँद कसाइनको, गाइन को दीन्हो, और
गाइन की मौत लै कसाइन को बकसी।।''

कविता सुनाकर मुजफ्फर भाई बोले – ''तो भैया, देखा, इसलाम के मानने वाले हमारे बादशाहों को? जहाँ हर प्राणी के लिए करुणा है, दया है, प्यार है। गो धन के लिए तो विशेष तौर पर, क्योंकि गाय हमारी माँ है। हमने उसका दूध पिया है। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या पारसी, कोई भी हो, सबने गाय का दूध पीया है। तो क्या इस गाय को मार कर इसका मांस खाकर हमें खुशी होगी? हदीसशरीफ में इन पर सख्त पाबंदी है :क़ाते उल-शज़र यानी हरे पेड़ को काटना, बाय-उल-बशर मनुष्य को बेचना, ज़ाबेह-उल-बक़र का अर्थ है गाय की हत्या। साफ-साफ कहा गया है कि जो भी व्यक्ति यह पाप करेगा, उसे छोड़ा नहीं जाएगा। यह फतवा है जिस पर तीन लोगों के दस्तखत भी है। महम्मदशाह गाजी शाह आलम बादशाह, सैयद अताउल्ला खां फिदवी और दस्तखत दारोगा आतिशखाना हुजूर पुरनूर दरबार, कुस्तंदानी। इसलिए भाई मेरे, मैं तो हदीसशरीफ की राह पर ही चल रहा हूँ।''

''भाईजान, आपने तो हमारी आँखें ही खोल दीं। सचमुच हम गहराई से गाय को समझ ही नहीं पा रहे थे', हैदरी ने कहा, 'हजारों पढ़े-लिखे मुसलमानों ने गोकुशी से परहेज करने की बात कही हैं। फिर भी कुछ नासमझ मानते ही नहीं।''

इसीलिए तो इन सबको समझाने की जरूरत है। कबीर ने छह सौ साल पहले ही कहा था-'दिन में रोज़ा रहत हैं, रात हनत हैं गाय। एक खून, एक बंदगी, कैसे खुशी खुदाय'। कबीर की ये पंक्ति भी काबिलेगौर है कि 'मांस-मांस सब एक है, जस खस्सी तस गाय'। और कविवर अकबर ने तो गो मांस खाने वाले अँगरेज़ों पर देखो कैसे तंज किया है, कि

'बेहतर यही है कि फेर लें आँखों को गाय से
क्या फायदा है रोज की इस हाय-हाय से।
कमजोरियों को रोक दें जोरों का क्या करें?
मुस्लिम हटे तो फौज़ की गोरों का क्या करें?
मुँह बंद हो सकेगा मुसलमां शरीफ का,
चस्का मगर न जायगा साहब से 'बीफ' का' ।

...तो मुसलमान तो धीरे-धीरे गो हत्या से दूर ही होते गए,मगर अँगरेज़ों ने गौ हत्या को हवा दी। खुद भी खाते थे, और चाहते थे कि मुल्क में गायें कटती रहें। और उन्हें गौ मांस मिलता रहे। मैंने लोकजागरण के लिए ही गौ रक्षा समिति बनाई है। मुझे तो लगता है कि ऐसा करके मैं इसलाम का ही काम कर रहा हूँ। मैं अपने तरीके से काम कर रहा हूँ। कोई मेरा साथ दे, चाहे न दे।''

रहमतमियाँ कुछ देर सोचते रहे, फिर बोले - ''मैं भी आपके साथ हूँ। एक से भले दो। मैं भी अब लोगों से अपील करूँगा कि वे गो हत्या से बाज आएँ। मुजफ्फर भाई, आप तो मुझे भी एक मेंबर बना लो। इन छोकरों को भी अपने साथ जोड़ लो। ये लोग दिन भर आवारागर्दी करते रहते हैं। किसी नेक काम में लगेंगे तो कुछ सवाब (पुण्य) कमाएँगे।''

ताहिर मुसकरा दिया और बोला - ''मैं भी बिजी होना चाहता हूँ। अभी तो सचमुच दिन भर ऐसे ही बर्बाद कर देता हूँ। जब तक कहीं कोई अच्छी नौकरी नहीं लग जाती, मैं फुल टाइम गो रक्षा समिति को दे सकता हूँ।''

''बस, नौकरी लगने तक साथ दोगे?''

''नही-नहीं, नौकरी लगने के बाद भी मैं वक्त निकाला करूँगा। गाय हमारी माँ है। उसके लिए टाइम निकालना मेरा फर्ज़ है।''

मुजफ्फर भाई मुसकरा कर बोले - ''आज तो बड़ा ही मुकद्दस दिन है। आज हम सब लोग एक अच्छे काम को करने का मन बना रहे हैं। अल्लाह हम पर करम करेगा।''

रहमत भाई बोले - ''आमीन!''

आठ

कपिला गौशाला आज सजाई गई है। गायों को नहलाया-धुलाया गया। उनको रोज की बनिस्बत आज चारा-सानी भी कुछ ज्यादा खिलाया गया। श्वेता-श्यामा को समझ में नहीं आया कि आज ऐसा खास क्या है।

''कहीं आज गोपाष्टमी तो नहीं है?'' श्यामा ने अनुमान लगाया

''अरे, हाँ दीदी, तुमने ठीक कहा: आज गोपाष्टमी ही है', श्वेता बोली,'एक-दो दिन पहले ही तो यादो कह रहा था कि गोपाष्टमी के दिन गौ शाला ठीक से साफ करनी है। मंत्री जी आने वाले हैं।''

''तभी मैं सोचूँ, आज बड़ी-साफ-सफाई हो रही है। गोपाष्टमी पर कृष्ण भगवान किस धूमधाम से मनाते थे यह त्योहार।''

श्यामा अतीत में खोने लगी। लगा वह द्वापर युग में पहुँच गई है और वह कृष्ण भगवान के सामने खड़ी है।

....गोपाष्टमी का दिन।..भगवान कृष्ण ने गायों को फूलों और रत्नों से लाद दिया।....उनकी पूजा की।....सबको तरह-तरह के पकवान खिलाए।...फिर गोपियों के समक्ष गौ का गुणगान करते हुए कहा, 'सुनो ध्यान से। गाय की पूजा भगवान की पूजा है। और गाय तो सर्वदेवमयी है। गाय की कृपा हमें मिल जाए तो और किसी की कृपा की जरूरत ही नहीं। जो गायों की सेवा करता है, वह सर्वसुखसंपन्न हो जाता है। अगर किसी के पास गाय है तो वह निर्धन नहीं हो सकता। गाय अपने सेवक को शून्य से शिखर तक पहुँचा देती है।'

...इतना बोल कर कृष्ण भगवान बलदाऊ भैया के साथ मिलकर गायों का शृंगार करने लगे। हर ग्वाला अपनी-अपनी गायों को सजाने लगा। तरह-तरह के फूलों से वातावरण सुवासित होने लगा। एक अघोषित-सी प्रतिस्पर्धा थी कि देखें, आज कौन अपनी गाय सबसे सुंदर ढंग से सजाता है। गेंदा, कमल, गुड़हल और भी अनके तरह के पुष्पों से सज्जित होने लगीं गायें। गायों के गले में घंटियाँ बाँधी गईं। उनकी ध्वनियों पर हर कोई झूम रहा था। फिर कन्हैया बाँसुरी भी बजाने लगे जिसे सुन कर गोपिकाएँ मगन हो उठीं। पूरे ब्रजवासी एक जगह एकत्र हो कर गोपाष्टमी का त्योहार मना रहे थे। हर घर से कुछ न कुछ पकवान लाया गया था। सबने उसे एकत्र किया और गायों को भोग लगाया। गाय जब खा कर तृप्त हो गईं, तो फिर उस प्रसाद को सबने आपस में बाँटा।

बलदाऊ ने आवाज लगाई- 'सब जन प्रेम से बोलो...गौ माता की' ...

सबने दोगुने उत्साह के साथ कहा....'जय'।''

कृष्णकाल की गोपाष्टमी की सैर करके श्यामा वर्तमान में लौटी, तो उसे कवि परमानंद का कवित्त याद आने लगा और वह मगन हो कर गाने लगी,

''श्याम खरिक के द्वार करावत गायन को सिंगार।
नाना भाँति सींग मंडित किये ग्रीवा मेले हार।।
घंटा कंठ मातिन की पटियाँ पीठन को आछे ओछार।
किंकिणि नूपुर चरण विराजत बाजत चलत सुढार।।
यह विध सब ब्रज गाय सिंगारी शोभा बढ़ी अपार।
परमानंद प्रभु धेनु खेलावत पहिरावत सब ग्वार।।''

''वाह, कितनी प्यारी कविता है। लगता है, कवि आँखों देखा हाल वर्णित कर रहा है।'' श्वेता बोली

''यही तो है सच्ची कविता की विशेषता। लगे कवि अपनी आत्मा उड़ेल रहा है।'' श्यामा ने कहा

अचानक बातचीत में रस-भंग हुआ। एक कर्कश आवाज़ उभरी। जैसी फटे बाँस से निकलती है। यह थी गौ शाला के संचालक दयाशंकर की।

सेठ जी चिल्ला रहे थे- ''यादो...! अरे कहाँ मर गया बे...?''

यादो दौड़ा-दौड़ा आया। यादो को देख कर सेठ आश्वस्त हुए और गुटखा फाँकते हुए बोले-

''क्यों, सब ठीक है न? सब तैयारी हो गई? कुछ कमी रह गई हो तो अभी ठीक कर लो। मंत्री जी के आने का टैम हो गया है।''

''पूरी तैयारी है मालक। हें... हें...। आप बोलें और काम न हो, ये कभी हुआ है का?''

''वो सब तो ठीक है, तुम ये बताओ, कि इधर दूध कुछ बढ़ा कि नहीं?''

''धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा सेठ जी।'' यादो इधर-उधर देखने के बाद धीरे से बोला- ''बछड़ों को आजकल थन से लगाकर हम फौरन हटा लेते हैं। गाय दूध देने लगती है। लेकिन सेठ जी, दुख होता है। गाय की बद्दुआ न लगे।''

सेठ जी हँस पड़े - ''तुम इसकी चिंता मत करो। बद्दुआओं से हम सेठ लोग निपटना जानते हैं। घर पर सत्यनारायन की कथा करवा लेंगे। या फिर गाय की ही पूजा कर लेंगे। गाय हमें माफ कर देगी। आज गौ माता की आरती होगी। उनको गुड़-चना भी खिलाया जाएगा। गौ माता खुश होकर हमें आशीर्वाद देगी तो हमारे सारे पुराने पाप धुल जाएँगे। इसलिए तुम इसकी चिंता मत करो। बस दूध पर ध्यान दो। अधिक से अधिक दूध निकलेगा तभी तो गौ शाला की कमाई होगी। कुछ मैं रखूँगा तो कुछ तुझे भी मिलेगा रे। समझा कि नहीं!''

''एक आइडिया और है सेठ जी! इससे दूध और बढ़ जाएगा।''

''वो क्या है जल्दी बता।''

''दूसरी गौ शालाओं की तरह हम लोग भी देसी गायों की जगह जर्सी गाएँ क्यों न खरीद लें। सुना है कि जर्सी गाएँ खूब दूध देती हैं।''

''लेकिन जर्सी गायों को तो गौ भक्त गाय ही नहीं मानते।''

''अरे, गौ भक्तों को मारिए गोली'' यादो हाथ लहरा कर बोला, ''आज हर कोई जर्सी गायें पालता है और देखते ही देखते लाल हो जाता है।''

''फिर इन देसी गायों का क्या होगा?''

''होगा क्या, यहीं पड़ी रहेंगी कोने में! ज्यादा परेशानी होगी तो खालबाड़ा वाले कल्लू को बुला लेंगे। हें.... हें...हें....। बहुत दिन से वो चक्कर भी लगा रहा है। कह रहा था बीमार गायों को बेच दो। मैंने ही उसे भगा दिया था। वैसे उसका मोबाइल नंबर मैंने ले लिया था।''

''ठीक किया, लेकिन एक बार मेरी बात करा देना। वो क्या बोलता है? एक गाय को कितने में खरीदेगा?''

''कह तो रहा था कि बाँझ गायों के भी दस हजार दे देगा।''

''ठीक है, उसे भेजना मेरे पास। सोचते हैं कुछ। देखो, आज मंत्रीजी आने वाले हैं।

उनके लिए ताज़ा दूध निकाल लेना। जिनको पीना है, वे और उनके चमचे पी लेंगे।''

इतना बोलकर दयाशंकर आगे बढ़ गए।

श्वेता-श्यामा सेठ की सारी बातें सुन रही थीं। मन ही मन हँस भी रही थीं। सेठ के जाते साथ ही श्यामा बोली-

''देखो बहन, यह है गो पालक सेठ। देसी गायों से मुक्ति पाना चाहता है यह। कहता है, जर्सी गाय लाऊँगा। मूर्ख... ढोंगी...पाखंडी। जर्सी गाय भी कोई गाय है? उसके बारे में तो कहते हैं कि उसे सुअर से विकसित किया गया है। ऐसे ही सेठों के कारण हम सब देसी गायों की दुर्दशा हो रही है। जिसे देखो, जर्सी गाय पालने की बात करता है। ''

''ठीक कहती हो।'' श्वेता बोली, ''इसीलिए अब मेरा मन यहाँ नहीं लगता। चलो, एकाध दिन मौका देखकर अपन यहाँ से भाग निकलते हैं। क्यों, कैसा रहेगा ?''

''लेकिन जाएँगे किधर? इधर कुआँ, उधर खाई!'' श्यामा बोली, ''हर कहीं नकली गो सेवक मिल जाएँगे, जो गायों को मारकर भी गो सेवक बने रहते हैं। इधर से भागेंगे तो दूसरे के चंगुल में फँस जाएँगे। बेहतर यही है कि इसी गौ शाला में बने रहें। जब लगेगा कि अब यहाँ भी जान जाने वाली है, तभी सोचेंगे कुछ।''

दोनों बातें कर ही रहे थे, तभी हूटर सायरन की आवाज गूँज उठी।

''लो, मंत्री जी आ गए।''

सेठ जी उस ओर भागे। मंत्री कामेश्वरप्रसाद के साथ पूरा काफिला चल रहा था। ज़िंदाबाद-ज़िंदाबाद के नारे लग रहे थे।

दयाशंकर हाथ में फूलों का हार लेकर खड़े थे। साथ में उनकी धर्मपत्नी रामकली भी थी। सेठानी काफी मोटी हो चुकी थी। सेठानी के शरीर का अग्र और पृष्ठभाग समान अनुपात में कुछ ज्यादा ही प्रगति कर रहा था। पूरा शरीर बहुत ही भद्दा लग रहा था। हर कोई उनके अतिविस्तारवादी शरीर को देखकर हैरत में पड़ जाता। कोई मुँह छिपाकर हँसता तो कोई इशारे कर-कर के मज़े लेता, लेकिन रामकली इन सब बातों को शायद समझ नहीं पाती थी और खाने-पीने में संयम बरतने की आदत से परहेज करती थी। खाना ज्यादा, मेहनत कम। कई बार सोचती भी थी कि वज़न कम किया जाए, लेकिन घी-मलाई, मिठाई देख कर जीभ को नियंत्रित नहीं कर पाती थीं। कुछ सेठानियों की जीभ इतनी चटोरी होती है कि वे जीभ के रास्ते स्वाद नहीं, मोटापे को उदरस्थ करती हैं। बाद में पछताती भी हैं, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी होती है।

रामकली आज सिल्क की साड़ी पहन कर आई थी। रामकली के पास कुछ कीमती साड़ियाँ रखी हैं। ऐसे ही किसी खास मौकों के लिए। और वह दिन आज आया। बेडौल शरीर और ऊपर से नाभि-दर्शना साड़ी में लिपटी रामकली...सेठानी की पूरी देह जैसे बाहर आने पर आमादा थी। उधर रामकली मन ही मन फूली नहीं समा रही थी। पचपन पार कर लेने और

घनघोर मोटापा अर्जित कर लेने के बाद भी वह अपने को किसी युवती से कम नहीं समझती थी। कोई मुग़ालते पाल ही लें तो कोई क्या कर सकता है। यह बात सेठजी भी समझते हैं, लेकिन बोले कौन कि 'भागवान जरा तन को देख और तन के मत चल। ठीक से रहो। देखो, सब दिख रहा है'।

लेकिन सेठ की हिम्मत हो तब न। सेठ लोग भगवान से, इंकम टेक्स या सेल्स टेक्स वालों से और घरवालियों से ही डरते हैं। और सब को तो वे मैनेज भी कर लेते हैं, मगर घरवाली के सामने बस नहीं चल पाता। मंत्री जी आए हैं। ऐसे ही वीवीआईपियों को दिखाने के लिए तो सिल्क-कोसे की साड़ियाँ रखी हैं स्टॉक में।

मंत्री कामेश्वरप्रसाद ने रामकली को तिरछी नज़रों से निहारा, फिर दयाशंकर को देखकर मुसकरा पड़े। दयाशंकर ने माला पहनाई। रामकली ने गुलदस्ता भेंट किया।

थोड़ी देर बाद कार्यक्रम शुरू हुआ।

दयाशंकर के मुँहलगे गौ सेवक बनवारी ने शुरुआत की। ऐसे कार्यक्रमों में संचालन के लिए बनवारी सक्रिय रहता है। हर शहर में संचालक किस्म के लोग सक्रिय रहते हैं। वे और कुछ नहीं करते, केवल संचालन करते हैं। न कविता लिखते हैं, न कहानी। केवल शेरोशायरी याद रखते हैं, या कुछ कविताएँ। फिर संचालन करते हुए बीच-बीच में कविताएँ फिट करते चलते हैं। बनवारी शहर के जाने-पहचाने संचालक थे। बनवारी शरू हो गए-

''आप आए घर हमारा एक मंदर हो गया
ओ अतिथि तेरी कृपा से खुशनुमा घर हो गया।
यूँ सदा आते रहो तो फूल मन का नित खिले,
आपके आने से ऊँचा अपना ये सर हो गया...

..'बड़ी खुशी और प्रसन्नता की बात है कि आज गोपाष्टमी के मौके पर मंत्री जी हमारी गौ शाला में पधारे हैं। यह हमारा सौभाग्य है..देश का सौभाग्य है।'' इतने से बनवारी का मन नहीं भरा तो और आगे बढ़ा और बोल पड़ा...''विश्व का सौभाग्य है। आज गौ शाला की गायें धन्य हुईं। गौ शाला धन्य हुई। हम लोग धन्य हुए ..सेठ जी धन्य हुए, सेठानी जी धन्य हुईं....गौपालन तो हमारा सनातन धर्म है। गौवंश की रक्षा वक्त की माँग है। बोलो गौ माता की... जै। प्रेम से बोलिये ..माँ।''

उपस्थित लोगों को जै-जै कार करना पड़ा और 'माँ' भी बोलना पड़ा।

दयाशंकर भी मौके की तलाश में रहते हैं, ताकि गौ सेवा पर रटा-रटाया भाषण सुना कर भड़ास निकले। वे बार-बार घड़ी देख कर बनवारी को अहसास कराने की कोशिश कर रहे थे कि बहुत ज्यादा समय ले रहे हो। सेठ ने भी इशारा किया तो बनवारी शांत हुआ और पहले सेठजी को भाषण के लिए बुला लिया। सेठजी ने कहना शुरू किया -

''माननीय मंत्रीजी और उपस्थित भाई-बहनो, आपको पता ही है कि हमारी गौ शाला

पुरानी है। मैं इसका दसवाँ अध्यक्ष हूँ। इसके पहले हमारे पिताजी, दादा, परदादा गौ शाला की देख-रेख किया करते थे। हम लोगों का अपना दूसरा व्यवसाय है। कुछ लोग हम पर तरह-तरह के आरोप लगाते हैं, हमने गौशाला पर कब्जा कर लिया है। लेकिन मैं इन आरोपों की परवाह नहीं करता। मैं पूरा जीवन गो सेवा को देना चाहता हूँ। हिंदुओं में गौ सेवा के संस्कार भरना चाहता हूँ। हर गाय को मैं कामधेनु बनाना चाहता हूँ। बड़ी खुशी की बात है कि गौ प्रेमी मंत्री महोदय हम लोगों के बीच पधारे हैं।... अब मैं मंत्रीजी से अनुरोध करता हूँ कि वे हम लोगों को संबोधित करें।''

मंत्री जी ने वहाँ बैठे लोगों पर मुसकान फेंकी। सेठानी पर भी नज़र डाल ली। फिर बोले - ''दयाशंकर जी और प्रिय भाभी जी, उपस्थित गो प्रेमियो, आज आप लोगों को एक रहस्य की बात बताता हूँ कि मेरे मंत्री बनने के पीछे गौ माता की ही कृपा है। मैं जब विधायक बना, तो मैंने अपने घर में बँधी गौ माता को प्रणाम करते हुए वरदान माँगा था कि माँ एक बार मुझे मंत्री बना दे। और देखिए, मैं मंत्री बन गया। इसलिए मेरा कर्तव्य है कि मैं गौ रक्षा के लिए कुछ करूँ।'' इसके बाद अपनी आदत के अनुसार मंत्री जी 'ये करूँगा-वो करूँगा..' की रट लगाने लगे।

''मैं इस गौ शाला के लिए कुछ करूँगा... मैं गायों का वध रोकने के लिए कुछ करूँगा... मैं प्रदेश की हर गौ शाला के लिए कुछ करूँगा...।''

ज़ाहिर है कि मंत्री जब बड़ी-बड़ी घोषणाएँ करें, तो तालियाँ बजती ही हैं। यहाँ भी पिटीं। तालियों की आवाज़ सुनकर नेतानुमा वक्ता के मन में कुछ-कुछ होने लगता है। वह अपने भाषण को और लम्बा कर देता है। मंत्री जी को भी जोश आ गया था। वे बोले- ''महात्मा गांधी ने कहा था कि गायों की रक्षा के लिए हम दूसरे की जान न लें, वरन् खुद मर मिटने के लिए तैयार रहें। गाय बीमार भी पड़ जाए, बाँझ हो जाए, दूध न दे, फिर भी उसको अपने से अलग न करें। उसकी सेवा करते रहें। हमें स्वर्ग मिलेगा। ये मेरा दावा है।''

कामेश्वरप्रसाद बहुत देर तक बोलते रहे। कभी गाय पर, कभी देश पर। कभी अमरीका पहुँच जाते थे, तो कभी ब्रिटेन। कभी दिल्ली, कभी पटना, तो कभी मुंबई। भाषण में कोई तरतीब नहीं था। असंगत बातें भी बहुत-सी थीं। गौ माता की समस्या से शुरू हुआ भाषण दहेज प्रथा पर आकर समाप्त हुआ। लेकिन सबने तालियाँ पीटीं। कार्यक्रम खत्म हुआ, तो मंत्रीजी ने गौ शाला का निरीक्षण किया। फिर गौ शाला में बैठ कर गाय का ताज़ा दूध पीया और तृप्त होकर चुटकी लेने के अंदाज़ में बोले -

''दयाशंकर जी, आपकी गौ शाला बड़ी अच्छी है। बड़ी साफ-सुथरी नज़र आ रही है। क्या आज ही साफ करवाई है?''

दयाशंकर बोले, ''नहीं-नहीं, हम लोग रोज साफ करवाते हैं। गाय हमारी माता है। उसकी सेवा हमारा फर्ज़ है।''

''वाह, कितने उच्च विचार हैं। मैं तो यूँ ही मज़ाक कर रहा था।''

इतना कह कर मंत्रीजी ने फिर तिरछी नज़रों से एक बार रामकली को ऊपर से लेकर

नीचे तक देखा और मन ही मन यह सोच कर मुसकराने लगे कि पता नहीं, इस महिला के शरीर में कितना किलो मांस होगा। उन्हें अपनी पत्नी पार्वती की याद आ गई। लेकिन वह गोलाई-मोटाई में रामकली से उन्नीस ही है।

मंत्री जी कुछ और बोलने वाले ही थे कि मुजफ्फर भाई आ गए। उन्होंने मंत्री जी को एक ज्ञापन सौंपते हुए कहा - ''आप अगर सच्चे गौ सेवक हैं तो गायों की खुशहाली के लिए एक काम करें। अपने शहर में न जाने कितनी गायें लावारिस हालत में घूमती रहती हैं। शहर में भली-चंगी गायों को ज़हर देकर मारने वाला गैंग सक्रिय हैं। इसे रोकना ज़रूरी है। इसके लिए आप 'गौ-मित्र' योजना शुरू करें। सरकार गौ प्रेमियों को गौ-मित्र वाला परिचय पत्र बना कर दे। ये 'गौ मित्र' गायों की तस्करी रोकेंगे। पुलिस को सूचित करेंगे।''

मंत्री ने ज्ञापन देखा फिर अपने सचिव को दे दिया और बोले ''मैं कुछ न कुछ तो ज़रूर करूँगा।''

मुजफ्फर भाई मंत्री के इस जवाब पर मुसकरा पड़े। मंत्रियों के कुछ जुमले बड़े हास्यास्पद होते हैं। इन्हें सुनकर बड़ी हँसी आती है। जैसे 'देखता हूँ' ...'कुछ करेंगे'..। इसके पहले भी मुजफ्फर भाई मंत्रियों को ज्ञापन देते रहे हैं। हर मंत्री यही कहता है कि देखता हूँ... लेकिन कोई देखता ही नहीं। काम कुछ होता नहीं। फिर भी मुजफ्फर भाई जैसे लोग लगे रहते हैं। यही सोचकर कि आज नहीं तो कल, सच्चे गौ सेवक सामने आएँगे और गायों को द्वापर युग जैसा सुख नसीब होगा।

मंत्री जी थोड़ी देर तक बैठे रहे। फिर सेठ जी को किनारे ले जाकर कुछ देर बतियाते रहे। कई मंत्री ऐसा जानबूझ कर भी करते हैं, जिससे आयोजक की इमेज़ बने।

थोड़ी देर बाद काफिला धूल उड़ाता चला गया।

दयाशंकर जी के चेहरे पर तृप्ति के भाव थे। उन्होंने रामकली की ओर कुछ इस अंदाज़ से निहारा मानो कोई बहुत बड़ा कारनामा कर लिया हो। फिर बनवारी के कंधे पर हाथ रख कर बोले - ''बनवारी, मज़ा आ गया, भाई। अब मीडिया में समाचार अच्छे से छप जाए। देख लेना। मैनेज कर लेना। बिना मैनेज किए आजकल तो मौत की खबरें भी ठीक से नहीं छपतीं। इस पत्रकारिता का तो भगवान ही मालिक है।''

पीछे मुजफ्फर भाई खड़े थे और मंद-मंद मुसकरा रहे थे। दयाशंकर की उन पर नज़र पड़ी, तो झेंपते हुए बोले- ''बिना प्रचार नहीं उद्धार। मीडिया से ले कर मंत्री-अफसर तक, सबको ही सेट करके चलना पड़ता है भाई। अब इससे बड़ी ट्रैजेडी क्या होगी कि दूध का धंधा करता हूँ, लेकिन पत्रकारों को दारू पिलानी पड़ती है। कभी-कभार फोकट में दूध भी भिजवाता रहता हूँ। विज्ञापन, गिफ्ट आदि भी। मीडिया में अपने काम को प्रचारित करने से लोग गौ शाला से जुड़ते हैं और गौ शाला 'रन' करने लगती है।''

''हूँ ...ये बात तो है। लेकिन सेठ जी, गौ शाला को तो दुरुस्त रखें।'' मुजफ्फर भाई बोले, ''आज साफ-सफाई दिख रही है, लेकिन पिछले दिनों मैं आया था, तब चारों तरफ

गंदगी ही गंदगी थी। बछड़े के हिस्से का दूध तक निकाला जा रहा था। समझाइए यादो को।''

सेठ जी चौंकते हुए बोले-''अच्छा! ऐसा होता है? अभी सबको टाइट करता हूँ। बनवारी, ये क्या सुन रहा हूँ। देखो भई, दुबारा शिकायत नहीं मिलनी चाहिए। कहे देता हूँ, हाँ। तुम लोगों की गलतियों के कारण लोग मुझे सुनाते हैं। और समझा दो यादो को, कि जरा ठीक से काम करे। गायों की देखभाल करे, वरना सत्रह सौ साठ ग्वाले मिल जाएँगे।''

मुजफ्फर भाई भी समझ रहे थे कि सेठ चालू है। चलता-पुर्जा है। खाली-पीली 'गेम' दे रहा है। सारा काम तो उसी के इशारे पर होता है और यहाँ अभी झूठ-मूठ का गुस्सा दिखा रहा है।

''अच्छा सेठ जी, चलूँ। फिर मिलेंगे।'' मुजफ्फर भाई नमस्ते करके चले गए। सेठ जी ने यादो को आवाज़ लगाई। यादो पास आया, तो वे मुसकरा उठे और यादो के कंधे पर हाथ रखा: फिर बनवारी के साथ गौ शाला के दफ़्तर की ओर बढ़ गए।

इधर धीरे-धीरे कुछ गौ प्रेमियों का आगमन शुरू हुआ। इनमें ज्यादातर सेठ-साहूकारों के घर की औरतें थीं। ये थाल सजाकर आई हुई थीं। जो भी गाय सामने दिख जाती, उसके पास जाकर उसको तिलक लगातीं। आरती उतारतीं। गुड़ खिलातीं। साथ में आए दूसरे सदस्य नाद में पानी डालते। कुछ देर बाद एक गायक मंडली भी आ गई। उसने गौ माता पर लिखी आरती को गाना शुरू कर दिया-

जै -जै गौ माता...मैया जय गौ माता,
जो तेरी भक्ति करता वो शक्ति पाता। जै-जै....
दूध तेरा है अमृत मैया, गोमय भी हितकर,
पंचगव्य से तेरे जीवन हो जाता बेहतर। जै-जै...
देह तुम्हारी दिव्य है मैया, इसमें सम्मोहन,
करके परस तुम्हारा, निर्मल होता है जीवन। जै- जै...
जो जन तुझको अर्पित वो सब हो जाएँ धनवान।
तेरी सेवा करके सृष्टि बनती है बलवान। जै-जै.....
भावपूर्ण हो तेरी पूजा, फल हो सुखकारी,
तुझसे ही है सबकी मुक्ति, तू जग-महतारी।
जो तेरा है सच्चा सेवक, जीवन धन्य करे।
सुख-समृद्धि पाए, अपना दुःख दारिद्य हरे। जै-जै.....
जो जन गौ की पूजा करते, पुन्य सदा पाते
गोभक्तों को प्रभुजी, आ कर सब कुछ दे जाते।
जै-जै गौ माता....

अपनी आरती सुनकर सारी गायें आज अभिभूत हो रही थीं। सबके मन में बड़े पवित्र भाव उमड़ रहे थे। वे सोच रही थीं कि ये गोवर्धन पूजा रोज़ क्यों नहीं होती। होने लगे तो हमारी किस्मत ही खुल जाए।

श्वेता बोली, ''लोग-बाग भले ही दिखावे की गौ सेवा करते हैं, लेकिन इससे दूसरों को प्रेरणा तो मिलती है, इसलिए कुछ कार्य अगर दिल से न किए जाएँ, तो भी कोई बात नहीं। आज बेमन से किए जा रहे हैं। शायद कल कुछ सच्चे लोग भी आएँ और गौ सेवा को स्वांग नहीं, अपने जीवन का व्रत ही बना लें।''

श्यामा बोली - ''हो सकता है, वह दिन भी आए। जब तक लोग गाय के साथ दिल से नहीं जुड़ेंगे, तब तक गाय का भला नहीं हो सकता। लोग तो शॉर्टकट वाले हो गए हैं न। सबको सस्ते में स्वर्ग चाहिए। इनके दिमाग में यह बात बैठ गई है कि गाय की सेवा करने से स्वर्ग मिलता है, इसलिए इधर चले आते हैं। यही गाय जब इनके घर अनाज खा ले, साग-सब्जी खाने लगे तो डंडे मार कर उसकी हालत खराब कर देते हैं। लेकिन जैसे ही याद आता है कि अरे, हम पापियों को तो स्वर्ग बुक करना है, तो हमारी आरती उतारने लगते हैं।''

''मनुष्य तू बड़ा महान है।'' श्वेता ने व्यंग्यात्मक मुसकान फेंकी।

''काहे का बड़ा महान है। आचरण से शैतान है।'' श्यामा भड़क गई। फिर वह विहँसने लगी, ''लेकिन चलो, इन पाखण्डियों के कारण कभी-कभार हम गायों का भला तो हो जाता है।''

गौ शाला में आज दिन भर गौ पूजन-आरती का सिलसिला जारी रहा। आज हर गाय ने रोज की अपेक्षा कुछ ज्यादा दूध दिया।

शाम को सब चले गए। ग्वाले जब अन्य गायों का दूध दुह कर लौट गए, तो श्वेता और श्यामा की गोष्ठी शुरू हुई।

आसपास की गायें भी बहुत प्रसन्न थीं। एक अरसे बाद ऐसा हुआ, जब गायों के बीच दो गायों का आगमन हुआ, जिनको देखकर लगता है, इन्हीं गायों का उल्लेख पुराणों में मिलता है।

पास खड़ी गाय खुरपिंगला ने कहा - ''बहनो, लगता है, तुम लोगों के पास कथाओं का कोश है। एक से एक कथाएँ कहती हो। हम लोग अभिभूत हो जाते हैं। आज कुछ और कहानियाँ सुनाओ न। हम तो बँधी हैं यहाँ। कभी हमारी पूजा हो जाती है तो खुश, कभी चारा-सानी ज्यादा मिल गया तो प्रसन्न। अब तुम लोगों के आने के बाद हम लोगों को अपने महत्व का भी पता चलने लगा है।''

श्यामा हँस पड़ी - ''यह जीवन भ्रमों में जीकर ही कट जाता है। मनुष्य भी इसी तरह जीता है। हम सब भी इसी तरह जीते हैं। हमारे बारे में हर पुराण में कुछ न कुछ सुंदर बातें कही गई हैं। कोई इन्हें पढ़े तो सही। कोई इन बातों को आम लोगों तक पहुँचाए तो सही। अगर ईमानदारी के साथ ऐसा किया गया होता, तो आज हमारी हत्याएँ नहीं होंती: हमारी पूजा होती।''

''दीदी, आज तुम हमें बताओ कि पुराणों में हमारे बारे में क्या कुछ कहा गया है।''

''बताना शुरू करूँगी, तो कई दिन लग जाएँगे।'' श्यामा बोली, ''फिर भी बहुत संक्षेप में बताना चाहूँगी। सुनो। पहले 'ब्रह्मपुराण' को ही लेती हूँ। इसमें कहा गया है कि गाय के शरीर के हर अंग में कोई न कोई देवता निवास करता है। नथुनों में अश्विनीकुमार, तो होठों में

भगवती चंडी बसती है और गाय के थनों में जल से भरे चारों समुद्र हैं। सबसे बड़ी बात जो 'ब्रह्मपुराण' में है, वह यह कि हर गाय विष्णु का ही रूप है, लेकिन देखो तो विष्णु का यानी हमारा जगह-जगह वध किया जाता है।''

इतना बोलकर श्यामा मौन हो गई। फिर कुछ सोचते हुए बोली, ''पद्मपुराण' की बात करूँ, तो यहाँ कहा गया है कि गौ के मुँह में चारों वेद रहते हैं। दोनों सींगों में शंकर और विष्णु विराजते हैं। सिर में ब्रह्मा, दोनों आँखों में सूर्य-चंद्रमा, जीभ में सरस्वती, चारों खुरों में अप्सराएँ, गो पूँछ में सर्वमंगला देवी, थनों में समुद्र विराजमान रहते हैं। जो व्यक्ति प्रतिदिन गाय का स्पर्श करता है, वह पापमुक्त हो जाता है और व्यक्ति गाय के खुर से उड़ने वाली धूल को माथे से लगाता है, वह भी पापमुक्त हो जाता है।''

''ओह,यह बात है।'' खुरपिंगला मुसकराते हुए बोली, ''इसीलिए, ये सेठ उनकी सेठानियाँ, उनके बच्चे-कच्चे सब हम लोगों के बीच आते हैं। हमारे शरीर पर बड़े प्यार से हाथ फेरते हैं। इसके पीछे करुणा कम, पाप से मुक्ति पाने की लालसा ज्यादा रहती है।''

''जो भी हो, इसी बहाने हम गायों की कुछ सेवा तो हो जाती है।'' श्वेता बोली, ''मुझे तो यही लगता है कि मनुष्य समाज को नैतिक-मूल्य सिखाने के लिए ही पुराणों में गो महिमा के इतने सारे वृत्तांत मिलते हैं। समाज में अच्छे लोगों की बातें कोई नहीं सुनता। जब उसे वेद-पुराणों का हवाला दो, तब उसे बात समझ में आती है। हाँ, तो श्यामा, तुम जारी रहो।''

खुरपिंगला लज्जित होकर बोली, ''हाँ, दीदी, मैंने आपको टोक दिया। अब खामोशी के साथ आपकी बातों को सुनूँगी। आप बोलिए।''

श्यामा मुसकराई और कहने लगी, ''आज तुम सब लोग मेरा भरपूर दोहन कर रही हो। जैसे ग्वाला थनों से दूध दुह लेता है, उसी तरह तुम लोग मेरे दिमाग को दुह रही हो। खैर, कोई बात नहीं। मेरे स्मृति-कोष में असंख्य कथाएँ हैं। दरअसल मैं एक मुनि के आश्रम में रहती थी। मुनि रोज प्रवचन करते थे। यूँ कहें कि वे गायों पर केंद्रित प्रवचन ही किया करते थे। उनकी बातें कानों में पड़ती थीं। एक दिन किसी नीच ने मेरा अपहरण कर लिया। पहले तो वह मुझे अपने घर ले गया। लेकिन जब मैंने दूध देना बंद कर दिया, तो मुझे कसाईखाने ले जाने वाला था। मौका देख कर एक दिन मैं वहाँ से बचकर निकल भागी। खैर, अब मैं तुम लोगों को 'स्कंदपुराण' की बात बताती हूँ। इसमें भी गाय के महत्व की अनेक बातें कही गई हैं। शरीर के विभिन्न हिस्सों में देवताओं के निवास का वर्णन है। इसके अलावा विशिष्ट बात यह है कि हमारे शरीर में पृथ्वी के समस्त तीर्थ वास करते हैं। गाय विष्णु के शरीर से उत्पन्न हुई है।''

''महाभारत में भी अन्य पुराणों की तरह ही मिलती-जुलती सुंदर उपमाएँ दी गई हैं। गौ के सींगों के शीर्ष पर भगवान विष्णु और इन्द्र हैं, तो सींगों के जड़ में चंद्रमा विराजमान है। सींगों के बीच में ब्रह्मा और शंकर बसते हैं। 'भविष्यपुराण' में कहा गया है कि गाय के पैरों में चारों पुरुषार्थ यानी धर्म, अर्थ,काम और मोक्ष रहते हैं। गाय के रंभाने में चारों वेद है। गाय पूर्णत: पवित्र है, क्योंकि यह विश्वरूपी देवी है।''

''दीदी, महाभारत में तो अनेक स्थानों पर गो महिमा का वर्णन है। उसके बारे में बताओ न!'' श्वेता की बातें सुनकर श्यामा हँस पड़ी, ''महत्व ही महत्व है लेकिन सिर्फ कागज़ों में। फिर भी मुझे भरोसा है कि एक न एक दिन हमारा समाज जागेगा और गाय के महत्व के अनुरूप गाय से व्यवहार करेगा। 'महाभारत' का 'अश्वेमध' प्रकरण गो महिमा की अनेक प्रेरक बातों से भरा पड़ा है। बहुत विस्तार में मैं नहीं जाने वाली। अतिसंक्षेप में ही बताना चाहूँगी। सुनो, अग्निहोत्र तथा ब्राह्मणों के लिए ब्रह्मा जी ने गाय उत्पन्न की। कपिला यानी गौ को सभी पवित्र वस्तुओं से ज्यादा पवित्र माना गया है। दुनिया की तमाम तेजोमय वस्तुओं का तेज निकाल कर ब्रह्मा जी ने गाय की रचना की। यह अमृतस्वरूपा है। महाभारत में गाय की उत्पत्ति की एक रोचक कथा है। ब्रह्मा जी ने प्रजापति से कहा कि तुम प्रजा उत्पन्न करो। प्रजापति ने उनकी आज्ञा का पालन किया, लेकिन ये मनुष्य जन्म लेने के साथ ही व्याकुल होकर चीखने लगे। सबके सब प्रजापति के पास पहुँचे, तो प्रजापति ने अमृत का पान किया। वे जब पान से तृप्त हो गए, तो उन्होंने डकार ली। उससे सुरभित खुशबू निकलने लगी। इस सुरभि ने अनेक गायों को जन्म दिया। ये गायें प्रजा की आजीविका का सुंदर-स्वस्थ साधन बन गईं।''

श्यामा बोले जा रही थी,... ''पुराणों के अनुसार गाय क्या है, वह नरकगामी मनुष्य का भी उद्धार कर देती हैं। यह अनेक रोगों का नाश करने वाली है। गाय दान करके मनुष्य अपने सारे पापों को निकाल बाहर करता है। यह सब महाभारत के अश्वमेध अध्याय में वर्णित है। ये मनगढ़ंत बातें नहीं हैं, लेकिन इस दौर में जब वेद, पुराणों को ही खारिज किए जाने की मानसिकता बन गई है, तब इन सब बातों का अर्थ ही क्या रहा? फिर भी सोचती हूँ कि महत्व तो है। पूरी दुनिया में आज अगर भारत विश्वगुरू है तो इसीलिए कि इसके पास वेद, पुराण, महाभारत, गीता, रामचरित मानस जैसे असंख्य ग्रंथ हैं। इन प्रवित्र ग्रंथों ने इस समाज को सभ्यता का, मानवता का पाठ पढ़ाया। आज का इंसान इन सबसे मुँह फेर ले तो कोई क्या कर सकता है? सूरज हमें प्रकाश दे रहा है और कोई अपनी आँखें बंद कर के चले, तो वह गिरेगा ही। सामने व्यंजनों से सजी थाल रखी हो और कोई मांस की प्रतीक्षा में उस थाल को ठुकरा दे, तो उससे बड़ा दुर्भागी और कौन होगा?''

इतना बोल कर श्यामा रुक गई और मुसकराते हुए बोली, ''अरे, मुझसे ही कितना बुलवाओगे तुम लोग? श्वेता के पास भी बहुत-सी कथाएँ हैं। यह भी किसी मुनि के आश्रम में रहती थी। चल श्वेता, एक-दो कथाएँ तू भी सुना, फिर हम लोग आराम करेंगे।''

श्वेता सोचने लगी, ''आपके जैसी स्मरण-शक्ति मेरे पास नहीं है। वैसे तो पुराण कहते ही हैं कि गाय की जीभ में सरस्वती विराजमान रहती है। सचमुच, सरस्वती तो आपकी जीभ में ही सुशोभित है। फिर भी मुझे अभी एक राजा की कथा का स्मरण हो रहा है। 'स्कंदपुराण' के प्रथम खंड में इसका जिक्र है। सुप्रभ नामक राजा एक दिन शिकार करने वन में गया। वहाँ उसने देखा कि एक खूबसूरत हिरणी अपने नन्हें बच्चे को दुग्धपान करा रही है। सुप्रभ के भीतर का शिकारी मचल उठा। उस ने यह भी न सोचा कि हिरणी अपने बच्चे को दूध पिला रही है,

तो कुछ देर तक रुका जाए। लेकिन शिकार एक ऐसा नशा है, जो दिमाग में घर कर जाए, तो आदमी सबसे खूंख्वार पशु बन जाता है। राजा सुप्रभ ने हिरणी पर तीर चला दिया। हिरणी कराह उठी। वहीं गिर पड़ी। उसका बच्चा भी गिर पड़ा। तभी हिरणी ने राजा को शाप दिया -

''अरे दुष्ट राजन्, तूने अधर्म किया है। तुझे शिकार का इतना ही शौक है न, तो तू शेर बन जा।''

...राजा को दुख हुआ। ग्लानि हुई कि उसने यह क्या कर दिया। वह कातर स्वर में बोला, ''हिरणी, मुझे माफ कर दो। अपना शाप वापस ले लो।''

''राजा के आँसू देखकर हिरणी को दया आ गई। वह बोली, ''कोई एक गाय ही तुम्हें शाप से मुक्त कर सकती है।''

इतना कहकर हिरणी ने अपने प्राण त्याग दिए। हिरणी का बच्चा भी मर गया और राजा सुप्रभ शेर बन कर लोगों का शिकार करने लगा। लोग उसे देखकर इधर-उधर भागने लगे। वह राजा जिसे कल तक प्रजा पूजा करती थी, आज उसीसे जान बचाकर भाग रही है। राजा अपने पर शोक करते हुए भटकता रहा। एक दिन की बात है। राजा को प्यास लगी। वह भटकते हुए गोकुल की तरफ आ गया। तभी उसके सामने एक कपिला आ खड़ी हुई। शेर को देखकर गाय डर गई। सोचने लगी कि अगर शेर उसे खा गया, तो वह घर लौटकर अपने बछड़े को दूध कैसे पिलाएगी। इतना सोचकर गाय रोने लगी।

शेर गाय के बिल्कुल करीब आ चुका था, यह देखकर गाय ने हिम्मत के साथ कहा, 'हे सिंह, तू मुझे छोड़ दे। मुझे जाने दे। मेरा बछड़ा मेरी राह देख रहा है। वह भूखा है। मैं उसे दूध पिलाकर तेरी सेवा में हाजिर हो जाऊँगी। मैं सौगंध खाकर कहती हूँ। तू मेरी बात मान ले।''

...''पहले तो सिंह ज़िद पर अड़ा रहा, लेकिन जब कपिला ने बार-बार कसम खाई, तो सिंह ने उसे जाने दिया।

'ठीक है , तू गाय है, इसलिए मैं तेरे कहे पर भरोसा कर रहा हूँ। जा और जल्दी आना। मुझे जोर की भूख लगी है।'

'मैं अभी गई और अभी आई।''

इतना बोल कर गाय तेज़ी के साथ घर की ओर भागी। उसे देख बछड़ा प्रसन्न हो गया और माँ का दूध पीने लगा।

माँ के चेहरे पर उदासी देखकर बछड़े ने पूछा - ''माँ, आज तू बहुत शांत है। गंभीर और उदास-सी दीख रही है। क्या बात है ?''

गाय ने सारी बात बता दी और बोली - ''मेरे लाल, मुझे अपना वचन निभाना होगा। मैं शेर के पास वापस जा रही हूँ। अब तू ईश्वर भरोसे इस संसार में किसी तरह जीवित रहना।''

इतना कह कर गाय जाने लगी तो बछड़ा भी उसके पीछे चलने लगा, ''माँ, तुम्हारे बिना मेरा जीवन व्यर्थ है। इससे अच्छा तो यही होगा कि मैं भी शेर के मुँह में समा जाऊँ।''

बछड़े की मातृ-भक्ति देखकर गाय रोने लगी। फिर बेटे को समझाते हुए बोली,

''हे पुत्र, तू मेरे लिए शोक मत करना। देख, एक दिन तो सबको मरना ही है। इस दुनिया में प्राणियों का समागम बिल्कुल वैसा ही है, जैसे छाया चाहने वाले पथिकों का होता है। वे छाया की तलाश में किसी पेड़ के नीचे एकत्र हो जाते हैं। मैं जा रही हूँ, मगर एक बात कह ही हूँ। उसे गाँठ बाँध लो। कभी भी अकेले जंगल मत जाना। हमेशा समूह में रहना। तभी तुम्हारी जान की रक्षा हो सकेगी।''

इतना बोलकर कपिला दूसरे गाय-सखियों से मिली और अपने बछड़े को उनके हवाले करके बोली - ''बहनो, अब मुझे जाना चाहिए। शेर भूखा होगा। वह मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।''

...सखियों ने समझाया-'शेर तुम्हारी प्रतीक्षा में अब तक बैठा नहीं होगा। चला गया होगा। तू फिक्र मत कर'। इस पर कपिला ने जो उत्तर दिया, वह अद्‌भुत है और यह बताता है कि गाय की करुणा, गाय की प्रवृत्ति दूसरे जीवों से किस तरह अलग है।.. गाय ने कहा - ''मैं किसी दूसरे जीव की प्राण-रक्षा के लिए झूठ बोल सकती हूँ, लेकिन अपनी जान बचाने के लिए बिल्कुल ही झूठ नहीं बोल सकती। सत्य ही मेरा पिता है। अगर मैं अपने वचन से डिगूँ, तो ईश्वर मुझे तत्काल नष्ट कर दे।''

इतना बोल कर कपिला जंगल लौट गई। कुछ ही देर बाद वह शेर के सामने थी।

गाय को अपने सामने देख कर शेर आश्चर्यचकित हो कर ग्लानि से भर कर बोला ''हे सत्यभाषिणी गो माता, तुम वापस आ गई? मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा। मेरी मानो तो अपने बछड़े के पास लौट जाओ। तू मेरी बहन-सी है। मैं पापी हूँ। अब मेरा जीवन व्यर्थ है, व्यर्थ है।'

...इतना कह राजा सुप्रभ पर्वत से कूद कर जान दे देते हैं और शेर की देह से मुक्त हो जाते हैं, फिर राजा अपने शाप की कथा बताते हुए कहते हैं, ''माते, तुम्हारे कारण ही मैं शाप से मुक्त हुआ हूँ। बोलो, मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकता हूँ?''

राजा की बात सुनकर कपिला बोली, ''हे राजन्, मुझे प्यास लगी है। अगर संभव हो, तो कहीं से जल ले आओ।''

पराक्रमी राजा ने इधर-उधर देखा । कहीं पानी नज़र आया, तो उसने धरती की ओर अपना बाण चला दिया। धरती की छाती फूट पड़ी और वहाँ से जलधार निकलने लगी। तभी वहाँ से धर्म प्रकट हुआ और बोला - ''तुम्हारी सत्यनिष्ठा से मैं प्रसन्न हूँ। मैं तुमको परमपद देना चाहता हूँ।''

राजा के बाण से जो जलाशय वहाँ बना, बाद में वह 'कपिला तीर्थ' बन गया।''

कथा सुनाने के बाद श्यामा बोली - ''कर्नाटक में यही कथा 'गोविना हाडु' के रूप में प्रचलित है। थोड़ा-बहुत अंतर है, लेकिन कहानी वही है, शेर और पुण्यकोटि गाय की। यह कहानी गाय के मूल स्वभाव को स्थापित करने वाली है। यह कथा कर्नाटक के घर-घर में सुनी जाती है। सच कहूँ तो मैं भी मानती हूँ कि ये सब केवल कथाएँ हैं। मिथक हैं। सत्य और धर्म को स्थापित करने के लिए ऋषि-मुनियों ने ऐसी अनेक महान एवं प्रेरक कथाएँ गढ़ी होंगी। कथाओं के माध्यम से मनुष्य ज्ञान की बातों को सहजता के साथ ग्रहण कर लेता है। जब कपिला गाय सत्य कहती है, अपनी जान की परवाह नहीं करती तो मनुष्य भी सत्य क्यों न बोले :बस यही

भाव है इस सुंदर-मार्मिक कथा में। मुझे खुशी होती है कि ऐसी असंख्य कथाएँ गायों को माध्यम बनाकर कही गई हैं। इसीलिए गाय को महान कहा गया, माँ कहा गया।''

कथा सुन कर श्यामा मुसकराते हुए बोली-''मुझे भी एक सुंदर कथा याद आ रही है, तुम लोग कहो, तो सुना दूँ?''

खुरपिंगला प्रसन्न हो कर बोली-''वाह, ज़रूर सुनाओ। ये कथाएँ हमें बड़ा सुकून देती हैं। हर कथा हमारी व्यथा को कम कर देती है। हमारा वर्तमान जैसा भी हो, अतीत तो सुखमय रहा है, जहाँ गाय को कितनी ऊँचा दर्जा दिया गया। बस, यही सोच-सोच कर ज़िंदगी काट लेंगे। सुनाओ बहन।''

''तो सुनो, बड़ी पुरानी बात है।' श्यामा ने कथा शुरू की, ''एक बार राजा विश्वमित्र शिकार खेलने वन गए।..''

''राजा विश्वमित्र?'' श्वेता से रहा न गया, तो उसने बीच में टोका, ''वे तो..एक ऋषि थे न?''

''हाँ, वे ऋषि थे। बहुत बड़े ऋषि। लेकिन बहुत कम लोगों को पता है कि वे पहले राजा थे। बाद में ऋषि बने। ऋषि कैसे बने, उसी कथा को बताना चाहती हूँ, क्योंकि ऋषि बनने के पीछे गाय का ही चमत्कार था। तो एक बार की बात है। राजा विश्वमित्र अपनी सेना के साथ शिकार करने वन गए। बहुत देर तक आखेट करने के कारण राजा थक गए। सबको भूख भी लग रही थी। राजा विश्वमित्र ने सोचा, कहीं विश्राम कर लिया जाए और भोजन आदि का प्रबंध किया जाए। थोड़ी देर बाद राजा को मुनि वशिष्ठ का आश्रम नज़र आया।

राजा मुनि के आश्रम पहुँच गए। मुनि को प्रणाम किया और आने का प्रयोजन बताया।

...मुनि ने कहा-''आप लोग आश्रम परिसर में आराम करें। आम्र, जामुन एवं नीम आदि तरुओं की शीतल छाँव तले विश्राम करें। अभी कुछ ही देर में मेरे शिष्य भोजनादि की व्यवस्था कर देंगे।''

''क्या, इतने सारे लोगों की व्यवस्था हो जाएगी?' राजा ने चौंकते हुए कहा, 'आप संकोच न करें। हमें केवल जल पिला दें।''

मुनि मुसकराए और बोले- ''राजन, आप पहली बार मेरे आश्रम में पधारे हैं। देखिए तो सही, मैं आप सबकी कैसी अभूतपूर्व सेवा करता हूँ।''

और थोड़ी देर बाद ही मुनि के शिष्यों ने राजा एवं उनके सैनिकों के लिए नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों से युक्त भोजन परोस दिया गया।

भोजन करके राजा बहुत तृप्त हुए, लेकिन उनको यह बात समझ में नहीं आ रही थी कि इस दुर्गम वन में मुनिवर के आश्रम में इतने लोगों के भोजन की व्यवस्था कैसे संभव हो पायी? आखिर उन्होंने पूछ ही लिया, 'हे मुनिवर, आप मेरी इस जिज्ञासा को शांत करें कि आखिर आपने इतने सारे लोगों को इतना स्वादिष्ट भोजन कैसे कराया? लगता है, यह किसी चमत्कार से ही संभव हो सका है।''

राजा विश्वमित्र की बात सुन कर मुनि मुसकराते हुए बोले-''आपका अनुमान बिल्कुल सही है। यह चमत्कार से ही संभव हुआ है। मेरे पास कामधेनु है। इससे जो माँगता हूँ, वह मिल जाता है।''

''अच्छा? मैं उस गाय के दर्शन करना चाहता हूँ।''

राजा के आग्रह पर मुनि ने गाय के दर्शन करा दिए। गाय के सम्मोहित कर देने वाले रूप को देख कर राजा ने उसे प्रणाम किया, लेकिन राजा के मन में लोभ जागा, ''उन्होंने कहा, मुनिवर, मुझे यह गाय चाहिए।''

मुनि वशिष्ठ ने कहा- ''हे राजन, यह संभव न हो सकेगा, क्योंकि यह गाय ही हम सबकी आधारशिला है। इसके कारण ही मैं और मेरे शिष्य बिना किसी परेशानी के ईश्वर आराधना में रत रहते हैं। मैं यह गाय आपको नहीं दे सकता।''

मुनि की बात सुन कर विश्वमित्र कुपित हो गए और बोले-''अगर आप प्रेम से नहीं देंगे, तो मैं आपकी गाय को बलपूर्वक ले जाऊँगा। लगता है, आपने मेरी सेना नहीं देखी।''

राजा की बात सुन कर मुनि हँस पड़े और बोले-''और राजन, आपने मेरी गाय नहीं देखी। यह मत सोचो कि हमारे पास कुछ ही शिष्य हैं ये आपकी सेना का सामना नहीं कर सकेंगे। आप कोशिश कर के देख लें, सफल नहीं हो सकेंगे।''

राजा मुनि के दो टूक कथन से आहत हो कर लौटे और अपनी सेना के साथ मुनि के आश्रम में धावा बोल दिया। मुनि ने फौरन कामधेनु को सारी बात बताई और राजा की सेना से मुकाबला करने के लिए सेना की माँग की। बस क्या था, कामधेनु के कान चौड़े होते गये और वहाँ से सशस्त्र सेनाएँ बाहर आने लगीं। राजा और मुनि की सेनाओं के बीच जमकर युद्ध हुआ। आखिरकार राजा की सेना भाग खड़ी हुई। राजा भी जान बचाकर महल की ओर लौट गए। पहली बार किसी ने उन्हें पराजित किया था।

विश्वमित्र अपने मंत्री सत्यवीर्य से कहा- ''हम एक बार फिर मुनि वशिष्ठ के आश्रम पर धावा बोलेंगे और कामधेनु को अपने कब्जे में लेकर रहेंगे।''

..राजा विश्वमित्र की बात सुन कर सत्यवीर्य ने विनम्रतापूर्वक कहा, ''हे भूपति, आप मुनि का सामना नहीं कर पाएँगे, क्योंकि उन्होंने तपस्या करके अनंत बल अर्जित कर लिया है और उनके पास कामधेनु भी है। उसके रहते आप मुनि का बाल भी बाँका नहीं कर सकते।''

..राजा विश्वमित्र सोच में पड़ गए। उन्हें लगा, मंत्री ठीक कह रहा है। वे कामधेनु का चमत्कार तो देख ही चुके थे। उन्होंने विचार किया कि क्यों न कामधेनु जैसी गाय पाने के लिए मैं भी तपस्या करूँ। बस, उन्होंने राजपाट त्याग दिया और तपस्या में लीन हो गए। बाद में यही राजा ब्रह्मर्षि विश्वमित्र बने, जिनके बारे में सब लोग जानते हैं। तो देखा, कैसे एक गाय ने एक राजा को ऋषि-तपस्वी बनने पर विवश कर दिया।''

''इसी से मिलती-जुलती एक और सुंदर कथा है, कहो तो उसे भी सुना दूँ' श्वेता भी उत्साहित हो उठी।

''बिल्कुल सुना दो', श्यामा बोली, 'मनुष्य इन कथाओं को भूल चुका है, कम से कम हम तो याद रखें और खुश होती रहें। सुनाओ बहन।''

श्वेता मुसकरा उठी। यह मुसकान दर्द में डूबी थी। उसने कथा शुरू की-

''एक राजा था- कार्तवीर्यार्जुन। हैहयवंशी राजा। वह महिष्मती में शासन करता था। गुरु दत्तात्रय जी ने प्रसन्न हो कर राजा को सहस्रबाहु होने का वरदान दे दिया था। यानी कि वक्त पड़ने पर राजा के हजार हाथ हो जाते थे। कुछ और दिव्य शक्तियाँ प्राप्त थीं। अपनी इस विशेषता के कारण,जैसा कि अकसर हो जाता है, यह राजा भी दंभी हो चुका था। एक बार तो उसने लंकाधीश रावण को भी बंदी बना लिया था। प्रत्येक राजा की भाँति इस राजा को भी आखेट का शौक था।

एक दिन वह निकल पड़ा वन की ओर। रास्ते में उसे प्यास लगी। चलते-चलते उसे एक आश्रम दिखा, तो उसने वहीं अपना कारवाँ रोक दिया। आश्रम था जमदग्नि ऋषि का। धर्मप्राण ऋषि अपनी धर्मपत्नी रेणुका और पुत्रों के साथ आश्रम में रहते थे। परशुराम इनके ही पुत्र थे। राजा जब आश्रम पहुँचे, तो ऋषि और उनकी पत्नी ने उनका आत्मीय स्वागत किया। राजा एव समस्त सैनिकों को दुग्धपान कराया। किसी ने खीर, तो किसी को मालपुआ का भोग लगाया। जिसने जो चाहा, वैसा स्वादिष्ट मिष्ठान्न एवं फलादि उपलब्ध हो गया। वन में इतनी सुंदर व्यवस्था को देख कर राजा कार्तवीर्यार्जुन चकित रह गया। जमदग्नि ने सहज हो कर कारण बता दिया-

''राजन,मेरे पास सुरभि नामक एक दिव्य गाय है। वह हर मनोकामना पूर्ण करने वाली है। उसके कारण ही आप सबकी सेवा संभव हो सकी।''

सुरभि के बारे में सुन कर राजा के मन में लोभ जाग्रत हो गया। उसने सोचा कि ऐसी गाय तो राजा के पास होनी चाहिए। उसने ऋषि से कहा-

''ऋषिवर, आप अपनी सुरभि मुझे दान कर दें। इसके बदले में मैं आपको एक हजार गायें और एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान करूँगा।''

राजा की बात सुन कर ऋषि मुसकरा कर बोले- ''राजन, यह गाय मेरी माँ है। माँ को भी कोई बेचता है भला? मैं इसे किसी भी सूरत में नहीं दे सकता।''

''तो फिर मुझे जबर्दस्ती करनी पड़ेगी।'' राजा ने कड़े स्वर में कहा।

''आप चाहे जो कर लें, मैं यह गाय नहीं दूँगा, तो नहीं दूँगा।''

''लेकिन मैं राजा हूँ। जो ठान लेता हूँ, तो ठान लेता हूँ। यह गाय मेरी है, तो मेरी है।''

इतना बोल कर राजा ने अपने सैनिकों को आदेश दिया-''जाओ, गाय को अपने कब्जे में कर लो।''

सैनिकों ने आदेश का पालन किया। जमदग्नि और उनकी पत्नी रेणुका राजा से अनुनय-विनय करते रहे, लेकिन राजा ने उनकी एक न सुनी और ठहाके लगाता हुआ आश्रम से चला गया।

शाम को परशुराम आश्रम पहुँचे और प्रतिदिन की भाँति सीधे गौ शाला पहुँच गए। वहाँ सुरभि को न देख कर पिता से पूछा। पिता परशुराम के क्रोध से परिचित थे, इसलिए उन्होंने बात को टालते हुए कहा, कि 'पता नहीं कहीं चली गई है, आ जाएगी'। लेकिन माँ से रहा न गया। उसने सारी बात बता दी। बस क्या था। परशुराम क्रोध से काँपने लगे और उग्र स्वर में हुँकारते हुए बोले-

''उस अहंकारी राजा की यह धृष्टता कि परशुराम के आश्रम से गाय ले जाए और वह गाय जो हमारी माँ है। हम पर स्नेह वृष्टि करने वाली है? राजा की हिम्मत कैसे हुई? पिताश्री, आप चिता न करें। मैं अभी घमंडी राजा के पास जाता हूँ और अपनी गौ माता को लेकर आता हूँ।''

ऋषि जमदग्नि और माँ रेणुका ने खूब समझाया । सहस्रबाहु राजा की ताकत के बारे में बताया, लेकिन परशुराम नहीं रुके और पहुँच गये महिष्मती।

राजमहल के प्रहरियों ने परशुराम को रोक दिया तो उन्होंने अपना फरसा लहराया। प्रहरी घबरा कर एक ओर हो गए। परशुराम राजा को पुकारते हुए उसके दरबार तक जा पहुँचे। राजा को देख कर परशुराम ने अपना परिचय दिए बगैर ऊँचे स्वर में कहा-

''राजन्, तुम मेरी गाय फौरन मेरे हवाले कर दो। मेरे पिता ने अतिथि समझ कर तुम्हारा भव्य स्वागत-सत्कार किया और तुमने कृतघ्नता दिखाई। हमारी गाय ही हमसे छीन ली? यह तो क्षत्रिय धर्म नहीं है। तुमने पाप किया है। तुम फौरन हमारी गाय वापस कर दो।''

''ओह, तो तुम जमदग्नि के पुत्र हो', राजा मुसकरा कर बोला, 'क्या नाम है तुम्हारा?'

''अरे मूर्ख, तू मेरा नाम भी नहीं जानता?' परशुराम ने भड़कते हुए कहा, 'तू परशुराम को नहीं जानता? मेरे इस फरसे को देखकर भी नहीं समझ सका कि मैं कौन हूँ?''

'ओह, तो आप ही हैं परशुराम?'' परशुराम का नाम सुनते ही राजा घबरा गया फिर भी संभलते हुए बोल, 'देखो, मैंने आपके पिताश्री से भी कहा था और आपसे भी कह रहा हूँ, कि मैं सुरभि के बदले एक हजार सुंदर गायें दूँगा। गायों के साथ अनके सवर्णाभूषण इत्यादि भी उपहार में दूँगा। ब्राहमणों को दान करना मेरा क्षत्रिय धर्म है। आपके पिता ने इतना आकर्षक प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया तो इसमें मेरी क्या गलती। आप समझदार लगते हैं। मेरा कहा मानें और मेरी गौ शाला से अपने पसंद की एक हजार गायें ले जाएँ।''

कार्तवीर्यार्जुन की बात सुन कर परशुराम की आँखें लाल हो गईं। वे गरजते हुए बोले- ''राजन, सावधान। कुछ होश में हो न कि क्या बोल रहे हो? लगता है, तुम्हारी मति मारी गई है। तुम अपना क्षत्रिय धर्म भूल कर निपट अहंकारी हो गए हो। तुम जैसे अहंकारी क्षत्रियों को सबक सिखाने के लिए हमारे जैसे ब्राह्मणों को ही सामने आना पड़ता है। इसके पहले भी मैंने अनेक दंभी क्षत्रियों का संहार किया है। लगता है, अब तुम्हारा अंत निकट है।''

परशुराम की बात सुन कर राजा जोर से हँस पड़ा- ''कंधे पर एक फरसा टाँग कर आए हो और मुझ वरदानी राजा को चुनौती दे रहे हो? लगता है तुमको इस बात की जानकारी नहीं कि मैं सहस्रबाहु हूँ। मुझे वरदान मिला है। समय आने पर मेरी एक हजार भुजाएँ हो जाती हैं।

हर भुजा में भाँति-भाँति के शस्त्रास्त्र होते हैं। मेरे सामने कोई शक्ति नहीं टिक पाती। महाप्रतापी कहा जानो वाला रावण तक टिक नहीं पाया।''

परशुराम हँसते हुए बोले- ''लेकिन मैं रावण नहीं, परशुराम हूँ। लगता है कि तू मुझे ठीक से नहीं जानता। मेरा यह एक फरसा तेरे हजार हाथों को काट कर रख देगा।''

परशुराम की बात सुन कर राजा भड़क गया। उसने आदेश दिया- ''सैनिको, गिरफ्तार कर लो इसे।''

सैनिक आगे बढ़े और परशुराम को पकड़ लिया।

परशुराम ने एक ही झटके में सैनिकों को अपने से दूर फेंक दिया। राजा को गुस्सा आ गया और देखते ही देखते उसके शरीर में हजार हाथ उग आए। हर हाथ में तरह-तरह से अस्त्र नज़र आ रहे थे। राजा का शरीर विशाल हो गया था और वह अट्टहास कर रहा था। राजा का रौद्र रूप देखकर परशुराम से रहा न गया। उन्होंने भी अपना विराट रूप दिखाना शुरू कर दिया। कंधे पर टँगे फरसे को हाथ में लिया और राजा की तरफ उछाल दिया। देखते ही देखते एक फरसे से हजारों फरसे निकलने लगे और राजा की बाहें कट-कट कर नीचे गिरने लगीं। पहले सारे हाथ कटे और अंत में राजा का धड़ भी कट कर नीचे गिर गया।

मरते वक्त राजा को वशिष्ठ मुनि का शाप याद आ गया, जब मुनि ने कुपित हो कर कहा था, तुम किसी ब्राह्मण के हाथों ही मरोगे।

राजा की मौत देख कर सारे सैनिक भाग खड़े हुए। बचे-खुचे सैनिक परशुराम के समक्ष आ कर शरणागत हो गए।

परशुराम ने सबको अभयदान देते हुए कहा-''मुझे तो केवल अपनी गाय चाहिए। तुम्हारे राजा ने अपना राज-धर्म भूल कर अधर्म किया, इसलिए मुझे उसके साथ ऐसा व्यवहार करना पड़ा। मैं शांति के साथ अपनी गाय माँग रहा था, जिसे राजा बलपूर्वक ले आया था। लेकिन राजा ने जब अपनी शक्ति से मुझे पराजित करने की कोशिश की, तो मुझे भी उत्तर देना पड़ा। खैर, अब आप सब निर्भय हो कर रहें। मैं इस राज्य पर अपना आधिपत्य स्थापित नहीं करना चाहता। मैं अपनी प्यारी सुरभि ले कर जा रहा हूँ।''

इतना बोल कर परशुराम राजमहल की गौशाला की ओर गए। परशुराम को देख कर सुरभि अपना गला हिलाने लगी। इस कारण गले में बँधी घंटी बजने लगी। दरअसल सुरभि भी अपनी खुशी प्रदर्शित कर रही थी।

परशुराम सुरभि के पास पहुँच कर उसे गले से लगा कर सहलाने लगे और बोले- ''माँ, चलो अपने आश्रम। तेरे बिना मेरे माता-पिता परेशान हो रहे हैं।''

सुरभि परशुराम को चाटने लगी। परशुराम भी गाय को गले से लगा कर उस पर हाथ फेरते रहे।

इस स्नेह-मिलन के बाद परशुराम सुरभि के साथ अपने आश्रम की ओर चल पड़े। उनके मन में विजयोत्साह था।

...आश्रम पहुँचते ही सुरभि गले की घंटी बजाते हुए रँभाने लगी। सुरभि की आवाज़ सुनकर जमदग्नि और रेणुका सोत्साह बाहर निकले और सामने सुरभि को देखकर भावुक हो गए। रेणुका की आँखों से अश्रु बह चले। वह बोली–

''पुत्र, सुरभि के बिना तो मानो मेरे प्राण ही चले गए थे। अब लग रहा है, प्राण अपनी जगह स्थापित हो गए हैं।''

जमदग्नि बोले– ''इस महान सुरभि के बिना मेरा जीवन सूखे वृक्ष की तरह हो गया था। बेटे, तुम्हारे कारण यह वृक्ष फिर से हरिया गया है।''

परशुराम ने कहा– ''पिताजी, मैं सुरभि ही क्यों, हर गाय के लिए इस संसार से हजार बार लड़ सकता हूँ। जो कोई गाय का अपहरण करेगा, जो गो हत्या करेगा, मैं उसकी हत्या कर दूँगा और इस हत्या को हत्या नहीं, पुण्य–कर्म समझूँगा।''

जमदग्नि ने पूछा–''बेटे, तो क्या.. तूने...राजा कार्तवीर्यार्जुन की हत्या कर दी?''

परशुराम बोले– ''पिताजी, मैं विवश हो गया था। आरंभ में मैंने राजा से विनम्र व्यवहार ही किया, लेकिन वह अपने मद में चूर हो कर मुझ पर ही आक्रमण करने लगा, तो मुझे भी उत्तर देना पड़ा। अगर राजा अपने कुकर्म पर पश्चाताप कर लेता, तो यह दु:खद स्थिति ही निर्मित नहीं होती।''

जमदग्नि को राजा की मृत्यु का दु:ख हुआ। उन्होंने पुत्र को समझाया– ''बेटे, क्षमा, सहनशीलता और शांति ये सब हम ब्राह्मणों के सहज गुण हैं। तुम बहुत जल्दी उग्र हो जाते हो। यह ठीक नहीं।''

परशुराम ने विनम्रता के साथ कहा– ''पिताजी, अगर कोई हमारी अस्मिता पर आक्रमण करेगा, तो मैं अपने सहजधर्म को भूल जाऊँगा। मैं साधारण प्रजा की भाँति व्यवहार नहीं कर सकता, जो दु:ख–परेशानी सहते हुए भी मौन बनी रहती है। फिर आप ही सोचिए, सुरभि जैसी महान गाय को बलात् ले जाना कहाँ का धर्म है? राजा को भी अपना धर्म याद रखना चाहिए था। राजा जब अपना धर्म भूल जाए तो प्रजा को भी अपना धर्म भूल जाना चाहिए। एक तरफा नहीं होता धर्म। जो मेरी माँ को काटेगा, मैं उसे काट डालूँगा। पिताश्री, समय पड़ने पर गाय के प्रश्न को मैं अपने फरसे से ही हल करूँगा। ''

पुत्र के उग्र विचार सुन कर जमदग्नि ने सोचा, यह समय परशुराम को पाठ पढ़ाने का नहीं है। बाद में उसे अहिंसा का पाठ पढ़ाऊँगा। अभी यह समय तो सुरभि की वापसी पर उत्सव मनाने का है। इसलिए वे सुरभि के पास पहुँच कर उसको प्यार करने लगे।''

कथा सुना कर श्वेता ने प्रसन्न भाव से सारी गायों को देखा। विश्वमित्र के राजा से महान ऋषि बनने और परशुराम द्वारा सुरभि के लिए एक राजा के संहार की कथा को समस्त गायों ने मनोयोग से सुना। सब एक–दूसरे को प्रसन्नभाव से देख रही थीं। तभी पास बैठी श्वेतकपिला ने धीरे से कहा– ''एक कथा मुझे भी याद आ रही है। तुम लोग कहो तो मैं सुना दूँ।'

श्यामा बोली– 'नेकी और पूछ–पूछ। सुना दो। हर कथा मन की व्यथा कम कर देती है।'

'तो ठीक है, सुनो', श्वेतकपिला ने कहना शुरू किया, 'कथा उस समय की है, जब च्यवन ऋषि जल में बैठ कर तपस्या कर रहे थे। छोटी–मोटी तपस्या नहीं, पूरे बारह साल तक उन्हें तप करना था।...

एक बार कुछ मल्लाहों ने मछली पकड़ने के लिए नदी में जाल फेंका तो उस जाल में ऋषि फँस गए। मल्लाहों ने जब जाल खींचा तो मछलियों के साथ च्यवन ऋषि भी बाहर आए। तब तक उनकी तपस्या भंग हो चुकी थी। वे बड़े कुपित हुए। लेकिन वे मल्लाहों को शाप देना नहीं चाहते थे। उन्होंने इतना जरूर कहा कि 'अगर ये मछलियाँ मरीं तो समझ लो मैं भी मर जाऊँगा। और ऐसा हुआ तो तुम सब को ब्रह्महत्या का पाप लगेगा। अगर तुम मेरा जान बचाना चाहते हो, तो इन मछलियों की जान बचाने का उपाय करो।'

मल्लाह घबरा गए। सोच में पड़ गए कि अब क्या करें। मल्लाहों ने राजा नहुष से संपर्क किया। राजा ऋषि के पास पहुँचे और बोले, 'मुनिवर, इन मल्लाहों को धर्मसंकट से उबारें। कोई उपाय बताएँ।'

च्यवन कुछ सोचते हुए बोले– 'तो ठीक है, तुम ऐसा करो, इन मल्लाहों को मेरे मूल्य के बराबर कुछ वस्तु प्रदान कर दो।'

राजा ने सहर्ष कहा– मैं एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान करता हूँ।'

राजा के कथन पर च्यवन ऋषि ने मुसकराते हुए कहा– 'राजन्, क्या मेरा मूल्य केवल एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ हैं?'

राजा नहुष शर्मिंदा हो गए। उन्होंने सोचा, ऋषिवर ठीक कह रहे हैं। उनका सही मूल्यांकन होना चाहिए। राजा ने एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ दान कर दीं। च्यवन ऋषि फिर बोले– 'बस, मेरी कीमत एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ?'

राजा नहुष सोच में पड़ गए। फिर उन्होंने हिम्मत के साथ कहा– 'ठीक है, मैं एक करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ देता हूँ।'

च्यवन ऋषि फिर भी खामोश रहे और मुसकराते रहे।

राजा ने कहा– 'मैं अपना आधा राज्य दान करता हूँ।'

ऋषि फिर भी प्रतिक्रियाशून्य बने रहे। यह देख राजा घबराए। क्या पूरा राज्य दान करना पड़ेगा। तभी पास खड़े राज पुरोहित ने राजा के कान में कुछ कहा। राजा नहुष बोले– 'ऋषिवर, मैं आपके बदले अपनी सबसे प्रिय गाय शिवप्रिया का दान करता हूँ।'

इतना सुनना था कि ऋषि मुसकरा उठे और बोले–'राजन, तुम ने मेरे मन की भावना पढ़ ली।' फिर ऋषिवर ने मल्लाहों के मुखिया से कहा– ''तुम लोग अब जीव हत्या का कार्य त्यागो और अब गौपालन के पावन कार्य में भिड़ जाओ।''

मल्लाहों ने कहा– 'जो आज्ञा ऋषिवर।'

मल्लाहों का संकल्प देख कर राजा नहुष ने समस्त मल्लाहों को एक–एक गाय दान में दी । इसके बाद ऋषि च्यवन फिर तपस्या में लीन हो गए। ''

कथा सुन कर श्यामा बेसुध-सी हो गई और बोलीं-'धन्य हैं च्यवन ऋषि, जिनके लिए एक गाय की कीमत एक करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ और आधे राज्य से भी बढ़ कर थीं।''

''यह है गाय का महत्व, अगर कोई समझे तो'। श्वेता बोली, 'आज तो लोग चंद रुपयों के लालच में गाय को कसाई के हाथों बेच देते हैं। दीदी, गाय को इतना पूजनीय बना देने वाली महान आत्माएँ सब कहाँ बिला गईं? क्या यह धरती अब वैसा स्वर्णकाल फिर दुबारा प्राप्त कर सकेगी?''

श्यामा बोली- ''चिंता मत करो। वह काल भी एक दिन ज़रूर आएगा। तब शायद हम लोग नहीं रहेंगे, मगर गाय एक बार फिर अपने उसी देवपद को पुनः प्राप्त करेगी।''

श्वेता कुछ नहीं बोली। शून्य की ओर निहारती रही।

रात गहरा चुकी थी। ग्वाले ने इक्का-दुक्का बत्तियों को छोड़कर बाकी बत्तियाँ बुझा दी थीं। गौ शाला में गहरा सन्नाटा पसर चुका था। गौ शाला में रहने वाला कुत्ता टॉमी भी नींद ले रहा था। झींगुरों की आवाज़ें नीरव सन्नाटे को बेधने की कोशिशें ज़रूर कर रही थीं, लेकिन वे यह भी संकेत दे रही थीं कि अब सोने का समय हो गया है।

धीरे-धीरे सभी गायें नींद की आगोश में समा गयीं।

नौ

गौशाला की कुछ गायों के थनों से अब दूध नहीं उतरता।

बस इसी कारण से सेठ दयाशंकर टेंशन में थे। आखिर एक दिन उन्होंने फैसला कर ही लिया कि जितनी भी देसी गायें हैं, उन्हें बेचकर जर्सी गायें खरीद लेंगे। गाय तो गाय है, क्या देसी और क्या जर्सी। लेकिन इन गायों को बेचें कहाँ? सहसा उन्हें खालबाड़ा के कल्लू कसाई की याद आई। उसने एक बार अपना मोबाइल नंबर दिया था। सेठ ने मोबाइल लगाया तो किसी स्त्री ने उठाया -

''हल्लू, कौन बोल रिया है?

''मैं सेठ दयाशंकर बोलता हूँ। ये कल्लू का नंबर है न? बात कराओ।''

''पन वो तो नहीं है सेठ।''

''कहाँ गया है ?''

''खालबाड़ा तरफ गएला है। आते साथ ही मैं बात करा देंगी। कोई खास काम हो तो मेरे को भी बोल सकता है तुम?''

''तुम...?'' सेठ को औरत का यह संबोधन हथौड़े-सा पड़ा। बड़ा अजीब तो लगा मगर कर भी क्या कर सकते थे। उन्होंने कहा, ''देखो, कल्लू को बोल देना कि सेठ का फोन

था। मुझ से घर आकर मिल ले। ज़रूरी काम है।''

''ओह हो, समझ गई।'' औरत के चेहरे पर चमक आ गई - ''आप गायों का बिक्री करेगा न? कल्लू कलीच्च बोल रिया था। थैंकू सेठ। मैं जल्दी बता दूँगी कल्लू को। आप जैसे पुन्यात्माओं के कारण हम लोगों का पेट भरता है।''

''ठीक है, ठीक है, बता देना।'' इतना बोल कर सेठ ने मोबाइल काट दिया।

सेठ जी अनजानी औरत से बात करते हुए असहज हो गए थे। फिर भी यह सोच कर निश्चिंत हो गए कि उनकी बीमार गायें निकल जाएँगी। वे जर्सी गायें खरीद लेंगे।

सेठ जी जर्सी गायों को खरीदने का काम चुपचाप करना चाहते थे। यादो और बनवारी को उन्होंने विश्वास में ले लिया था। सख्त निर्देश भी दे दिए थे कि बात कहीं लीक न हो, वरना गो भक्त पहुँच जाएँगे और दबाव डालेंगे कि जर्सी गाय मत खरीदो। बात तो गुप्त ही रहती, लेकिन यादो से रहा न गया। अंदर के पुराने संस्कार हिलोरें मारने लगे। उसे लगा कि सेठ अन्याय कर रहे हैं। बूढ़ी, बीमार गायें अगर कसाई के हाथों चली गईं तो अनर्थ हो जाएगा। कल्लू कसाई कोई गौ सेवा तो करेगा नहीं: कुछ गायों को कसाईखाने पहुँचा देगा और कुछ गायों को मार कर उनका मांस होटलों को बेच देगा। यही तो उसका पेशा है। इसलिए गायों को बचाने के लिए कुछ करना होगा। किसी भी हालत में।

यादो उसी दिन मुजफ्फर भाई से मिला। वयोवृद्ध गौ सेवक घावरीजी के पास भी गया। सारी बात बताई। धीरे-धीरे बात सारे गो भक्तों तक पहुँच गई। गौ रक्षण मंडल के अध्यक्ष कृष्णा भाई बनारसवाले को जब सेठ की मानसिकता पता चली, तो वे भी भड़क गए। सारे गौ सेवकों ने फौरन बैठक बुलाई और तय किया कि सेठ दयाशंकर के पास जाकर उसे समझाएँगे कि देसी गायों को न बेचे और जर्सी गायों का मोह छोड़े। अगर खरीदनी ही है तो गीर, साहीवाल जैसी उन्नत किस्म की ऐसी गायें ही खरीदे।

सारे गौ सेवकों ने तय किया और दूसरे दिन ही दयाशकर के घर जा धमके। घावरीजी, कृष्णाभाई, बेनीमाधव, प्रेमशंकर, गौटियाराम, मोहनसिंह, सैलानीप्रसाद और मुजफ्फर अली। इतने सारे गो सेवकों को देखकर वो समझ गया कि मामला गड़बड़ है। लगता है कि इन सबको पता चल गया है कि मैं क्या करने वाला हूँ। खैर, देखते हैं। दयाशंकर ने हमेशा की तरह नकली मुसकान का मुखौटा चिपकाते हुए कहा -

''गौ माता की जय। आज आप लोग इस गरीब के घर का रास्ता कैसे भूल गए?''

घावरी जी बोले - ''गौ माता की जय। अरे सेठ, तू अगर गरीब है तो इस देश का हर गरीब आदमी गरीब हो जाए। हा... हा... हा। और सुनाओ, क्या चल रहा है? गौ शाला कैसी चल रही है?''

''फस्क्लास! चलिए, एक चक्कर लगा लीजिए।'' सेठ ने हाथ लहरा कर जवाब दिया।

''लेकिन हम तो सुन रहे हैं कि आप की गौशाला घाटे में चल रही है। इसीलिए आप देसी गायों को निकाल कर जर्सी गायें खरीदने की योजना बना रहे हैं?''

कृष्णा भाई की बात सुनकर सेठ जी लड़खड़ाती ज़ुबान से बोले – ''न... न... नहीं तो। ऐसी कोई बात नहीं। हाँ, कुछ गायें ज़रूर खरीद रहा हूँ। लेकिन वे देसी हैं।''

''वाह, तब तो ठीक है।'' घावरीजी बोले, ''हमें पता चला था कि आप जर्सी गायें खरीदने वाले हैं। देखो भाई, जर्सी गाय को तो मैं गाय ही नहीं मानता। वे एक तरह की बड़ी सुअर हैं। सुअर के जींस को गाय के जींस में डाल कर इस जर्सी गाय को विकसित किया गया है। पूरी दुनिया इस बात को जानती है। हम भारत के लोग ही अपनी देसी गायों का तिरस्कार करें, यह बात ठीक नहीं।''

''लेकिन ऐसा क्यों? मैं तो सोचता हूँ कि जर्सी गाय भी तो गाय है न! जर्सी है तो क्या हुआ? गाय मतलब गाय।''

सेठ जी का प्रश्न सुनकर घावरी मुसकरा पड़े – ''अब तुम जानना ही चाहते हो तो सुनो। यह सच है कि जर्सी गायें ज्यादा दूध देती हैं। जर्सी नामक एक द्वीप है, जहाँ की गायें जर्सी कहलाईं। सुअर के जींस से इन गायों की नस्ल विकसित की गई है। ये हमारी देसी गायों से बड़ी दीखती हैं। दूध भी अधिक देती हैं। लेकिन इनके दूध में वह बात तो है ही नहीं, जो देसी गायों में होती है। हम लोग भी अपनी देसी गायों की नस्लें सुधारें। खैर, वैसे मेरा अपना मानना भी यही है कि गाय तो गाय है। यहाँ की हो या विदेश की। लेकिन विदेशी चीजों से लगाव का नतीजा क्या हुआ, इस पर भी विचार करना चाहिए। स्वदेशी आंदोलन खत्म हो गया। कुटीर उद्योग -धंधे चौपट हो गए। भारतीय बाज़ार विदेशी उत्पादों से भरा पड़ा है। हमारे लाखों लोग बेरोजगार हो गए। हम कुटीर उत्पादों को महत्व ही नहीं देते। गायों के मामले में भी यही हो रहा है। सबको ज्यादा दूध चाहिए इसलिए जर्सी गाय खरीदेंगे। लेकिन लोग यह समझ ही नहीं पाते कि जर्सी और देसी गायों में जमीन-आसमान का अंतर है। देसी गायों का दूध अमृत है, मगर जर्सी गाय का दूध केवल साधारण दूध है। इसमें वे अमृत-तत्व बिल्कुल नहीं हैं, जो देसी गाय में होते हैं। लेकिन यह बात लोगों के समझ में आए तब न। विदेश में जर्सी गायों को केवल दूध और मांस के लिए ही पाला जाता है। वे पचपन मन तक दूध देती हैं। स्वाभाविक है, ऐसी गाय के प्रति आकर्षण बढ़ेगा, लेकिन दिक्कत यह है कि जर्सी गायों के चक्कर में हम अपना बहुत कुछ नष्ट कर रहे हैं। हमारी देसी गायें जहाँ की तहाँ हैं।''

''वैसे गायों की अच्छी नस्लें कौन-कौन सी हैं। कुछ बताइए।''

घावरीजी को लगा कि आज अपना गौ-ज्ञान यहाँ उड़ेल देना चाहिए, क्योंकि यही ठीक समय है। उन्होंने कहा, ''तो सुनो, उत्तम नस्ल की गायों के बारे में बहुत संक्षेप में बताता हूँ। मान्यता तो यही है कि हरियाना नस्ल की गायें और बैल सर्वोत्तम कहे जाते हैं। लेकिन काठियावाड़ की 'गीर' जाति की गायों का जवाब नहीं है। वैसे मैसूर तरफ पाई जाने वाली 'अमृतमहाल', 'हल्लीकर', 'कंगायम', 'बरगूर', 'आलमदादी' और गुजरात में 'काँकरेज', मध्यभारत में 'मालवी' निमाड़ी, 'नगौरी', पंजाब की 'साहीवाल', 'हाँसी', महाराष्ट्र की 'कृष्णावेली', राजस्थान की 'राठ' नस्ल की गायों के बारे में मैंने सुना है कि वे ठीक-ठाक

होती हैं। इसके अलावा 'खिल्लारी', 'देवनी', 'डाँगी', 'मेवाती', 'नागौरी' आदि भी हैं।''

इतना बोलकर घावरीजी कुछ सोचने लगे तो कृष्णाभाई ने कहा, ''ये थक गए हैं। आगे मैं बताता हूँ। अभी तो बहुत-सी गायें, जिनको पाला जा सकता है। तुमने गीर गायों के बारे में सुना होगा। इस नस्ल की गाय हो या बैल, बहुत मजबूत कद-काठी के होते हैं। ये चौदह से सोलह महीने अंतर में बच्चा देती हैं। गायों की नस्लों का सिलसिला काफी लंबा है। हमारा आग्रह बस यही है कि स्वदेशी गायों को बढ़ावा दो। जर्सी के मुकाबले हमारी 'गीर' गायें कम नहीं हैं। इनको पालो। लेकिन एक बात का ध्यान रहे। इनको खिलाने-पिलाने में कोई कमी न करना।''

कृष्णाभाई चुप हो गए तो मुजफ्फर भाई शुरू हो गए – ''और सेठ जी,यह भी समझाना चाहते हैं कि एक भी गाय अगर आपने खालबाड़ा वालों को बेची, तो ठीक नहीं होगा।''

''अरे वाह भाई, गाय मेरी और दर्द तुमको हो रहा है?''

''हाँ, दर्द हो रहा है क्योंकि गाय हमारी माता है। हम उसको बेचने नहीं देंगे।'' मुजफ्फर भाई ने तैश में आकर कहा, ''यह मत समझो कि मैं मुसलमान हूँ। मैं आप लोगों से ज्यादा गो भक्त हूँ। मैं अपनी बिरादरी के लोगों को भी समझा रहा हूँ। हम लोग अपनी रहीम गौ शाला चलाते हैं। मुसलमानों को गाय का शत्रु मत समझो। असली शत्रु तो वे लोग हैं, जो पैसे कमाने के लिए गाय को खालबाड़ा के कसाइयों को बेच देते हैं।''

सेठजी सकपका गए। सँभलते हुए बोले – ''देखो भाई, यह बात तो सही है कि कुछ गायें मैं बेचना चाहता हूँ। अब आप लोग कहते हैं तो ठीक है, खालबाड़ा वालों को नहीं बेचेंगे। आप लोगों को ही बेच देते हैं। हमको तो रोकड़ा चाहिए।''

''ठीक है। हम खरीदेंगे तुम्हारी गाय। बोलो, कितनी गायें हैं?'' मुजफ्फर ने ज़ोरदार आवाज़ में कहा – ''हुँह, यह है आप लोगों का धर्म? गाय बीमार हो गई तो उसे पाल नहीं सकते? बेचना ज़रूरी है? किसी दूसरी गौ शाला को मुफ़्त में दान नहीं दे सकते?''

''देखो मियाँ, तुम हमें धर्म मत सिखाओ।'' सेठ भड़क गए, ''दो-चार गायों का लालन-पालन कर रहे हो तो कोई तीर नहीं मार रहे हो।''

बात बढ़ने लगी, बेनीमाधव जी ने मुसकराते हुए कहा – ''अरे सेठ जी, भड़कते क्यों हैं? एक मुसलमान भाई अगर गाय की सेवा के लिए आगे आता है, तो हमें खुश होना चाहिए और आप... खैर। तो बताइए, कितनी गायें हैं आपके पास बिक्री के लिए?''

सेठ जी खामोश हो गए। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहें और क्या न कहें। फिर भी मामला कमाई का था, तो धीरे से बोले, 'दस गायें हैं। पाँच-पाँच हजार लूँगा'।

मुजफ्फर भाई बोले – ''ठीक है, मैं चेक बुक साथ ले कर आया हूँ। सारी गायें मेरे हवाले कर दें। बाहर मेटाडोर भी खड़ी है। मैं अभी ले जाऊँगा।''

इतना बोलकर मुजफ्फर भाई ने चेकबुक निकाली और पचास हजार का चेक काट कर सेठ की ओर बढ़ा दिया। सेठ के चेहरे पर खीझ भरी हँसी देखते ही बन रही थी। बाहर से वे 'हें..हें...हें'...कर रहे थे, मगर भीतर ही भीतर शर्मसार हो रहे थे। कृष्णा भाई और घावरी जी

के सामने गज़ब का दृश्य था यह: शर्मनाक भी और महान भी। एक हिंदू गाय बेच रहा है, एक मुसलमान गाय की रक्षा करने के लिए उसे खरीद रहा है। सेठ की हालत पतली हो चुकी थी। सब सोच रहे थे कि शायद सेठ में आत्मग्लानि जागे और वह बोल पड़े कि 'नहीं, नहीं, मैं नहीं बेचूँगा। जैसे भी होगा, मैं बीमार गायों की सेवा करूँगा', लेकिन सेठ ने ऐसा कुछ नहीं कहा। पैसे का लालच दिमाग को विकलांग बना देता है। अच्छा-बुरा समझने की शक्ति लुप्त हो जाती है। केवल फायदा ही फायदा नज़र आता है। वैसे भी इस सेठ और ऐसे ही कुछ सेठों के बारे में पूरे सरायपुर और आसपास के इलाके में यह बात मशहूर है कि अगर कुछ ज्यादा पैसे मिलने की संभावना हो, तो ये लोग अपने माँ-बाप को भी कहीं बेच सकते हैं।

सेठ ने मुजफ्फर भाई से चेक ले लिया और खिसियानी हँसी के साथ बोला- ''ये सारी गायें मेरी माँ हैं। मैं इन्हें बेचना ही नहीं चाहता था पर वो क्या है कि पैसों की सख्त ज़रूरत आन पड़ी है। धंधे में घाटा हो गया है। बाजार का कुछ कर्जा पटाना है। देखो भाई, गाय ले जा रहे हो तो कोई बात नहीं, लेकिन उसकी ठीक से देखभाल करना। वरना मुझे नरक जाना पड़ेगा।''

मुजफ्फर भाई मुसकराते हुए बोले - ''क्यों नहीं, क्यों नहीं, मैं पूरी कोशिश करूँगा कि आपको स्वर्ग ही मिले। क्यों घावरी जी, सेठ की स्वर्ग ही मिलेगा न?''

घावरीजी समझ गए कि मुजफ्फर का आशय क्या है। वे मुसकराते हुए बोले - ''जो जैसा करता है, वैसा ही भरता है। सेठ जी स्वर्ग-नरक किसने देखा है? मैं तो इतना ही जानता हूँ कि लालच में ईमान से गिर जाना नरक है और अपना नुकसान उठाकर मानवता की सेवा करते हुए प्रसन्न रहना ही स्वर्ग है। मुजफ्फर भाई ने जो किया है, उसे देखकर मैं यही कह सकता हूँ कि स्वर्ग तो ये जाएँगे। शायद आप भी धुप्पल में चले जाएँ, क्योंकि आपने गायों को कसाई नहीं, धर्मात्मा के हाथों बेचा है।''

इतना बोल कर घावरी जी ने ठहाका लगाया। बाकी लोग भी हँस पड़े। सेठ को काटो तो खून नहीं। वह चेक पर नज़रें गड़ाए बैठा रहा। धीरे-धीरे सारे लोग खड़े हो गए और गौ शाला के बाहर निकल आए। सबके सब दुखी थे। अपराध-बोध से भरे थे। सबके भीतर एक आहत हिंदू जगा हुआ था जो सोच रहा था कि क्या दौर आ गया है । अब गाय मुसलमानों के हाथों सुरक्षित रहेंगी। और यह बहुत अच्छी और प्रेरक बात है।

मेटाडोर में जब गायों को लादा जा रहा था, तब श्वेता-श्यामा यह सोच कर संतुष्ट थीं कि मुजफ्फर भाई की गौ शाला में जाकर गायें शायद फिर से स्वस्थ हो जाएँगी। स्वस्थ न भी हों, तो कम से कम एक बात तो तय है कि ये गायें किसी कसाई के हाथों नहीं पड़ेंगी। बेमौत नहीं मरेंगी।

दसों गायें भी राहत की साँस ले रही थीं। कल तक सबकी सब दुखी थीं। यह सोच-सोच कर रोया करती थीं कि एक-दो दिन बाद उनका कत्ल हो जाएगा। लेकिन मुजफ्फर भाई एक फरिश्ते की तरह आए और गायों के जीवन में बहार-सी आ गई।

गायें जब तक जीएँगी, सुख से जीएँगी। मरेंगी तो बीमार होकर ही, कोई उनकी जान नहीं लेगा।

सुबह-सुबह श्वेता-श्यामा ने बगल में बैठी गाय गौरी के कराहने की आवाज़ सुनी तो श्यामा ने पूछा - ''क्या बात है गौरी। क्या तुमको कोई तकलीफ है ?''

''हाँ दीदी, बहुत तकलीफ हो रही है। यह यादो आकर दूध तो दुहता है लेकिन लगता है अभी पारंगत नहीं हुआ। ऐसी बेरहमी से दुहता है कि मेरे थन सूज जाते हैं। आज तो उसके बड़े-बड़े नाखूनों के कारण मेरे थन ही छिल गए हैं। लेकिन देखो उस बेदर्द ग्वाले को। देख रहा था कि थन छिल गए हैं, फिर भी उसने मुझे दुहा। बड़ा ही ज़ालिम है। वैसे बाद में आकर मलहम भी लगाया, लेकिन यह क्या बात हुई? ऐसा और भी गायों के साथ होता है। अरे, तुम गाय पाल रहे हो तो पहले गो पालने की तमीज तो सीख लो।''

''तुमने ठीक कहा गौरी।'' श्यामा बोली, ''गौ-पालकों को समझाना चाहिए कि गौपालन का तरीका क्या है। ये नहीं कि गाय ले आए और लगे दुहने। मैं जैसा सोचती हूँ, अगर वैसा दुहा जाए तो हमको परेशानी नहीं होगी और हम दूध भी अधिक देंगी।''

''तुम्हारे ख्याल से क्या तरीका होना चाहिए?'' श्वेता ने पूछा।

''तरीका तो सीधा-सादा है। और यह तो समझने वाली बात भी है न। सुनो, मैं बताती हूँ।' गौरी बोली, 'सबसे पहली बात तो यही है कि ग्वाला या दूध दुहने वाले की उँगलियों के नाखून कटे होने चाहिए। दुहने के पहले हाथ अच्छे से धो लेना चाहिए। दूध छानने के लिए जो कपड़ा लगाते हैं, वह भी साफ-सुथरा होना चाहिए। जिसमें दूध दुहा जाता है, उस बाल्टी को भी साफ रखना चाहिए। दूध आराम से दुहना चाहिए। यह नहीं कि तेजी से थनों को मसले जा रहे हैं। यह तो समझना चाहिए न कि थन नाजुक होते हैं। गाय को दर्द होगा। और हाँ, इस बात का तो बिल्कुल ही ध्यान रखना चाहिए कि बछड़े या बछिया का पेट पहले भर जाए। वे पी लें, फिर हमें दुहा जाए, लेकिन यहाँ तो उल्टा होता है। पहले ग्वाला पूरा दूध निकाल लेगा। तब तक तो वत्स या वत्सा के लिए कुछ बचता ही नहीं। बस, बेचारा थनों को चूस कर ही संतुष्ट हो लेता है। और हाँ, एक बात और, गाय के साथ हमेशा प्रेम से ही पेश आना चाहिए। उसे सहलाओ, पुचकारो, लेकिन अब ऐसे लोग कम हैं। अब तो गो शालाएँ गो शालाएँ नहीं, डेयरियाँ हो गई हैं। दूध बेच कर पैसे कमाने की जगह। गौ शाला और डेयरी में अंतर है। गौ शाला में गायों की सेवा होती है। डेयरी में दूध का धंधा होता है। लेकिन आजकल तो अनेक गो शालाओं में भी डेयरियों वाली मानसिकता ही ज्यादा नज़र आती है। लोग जर्सी गायें रखना पसंद करते हैं। हम गायों के दुख-कष्टों से किसी को कोई लेना-देना नहीं रहा।''

''सौ फीसदी सही बात है बहन।'' श्वेता बोली, ''अब तो यही सुन रहे हैं कि आजकल के इंसान का पूरा ध्यान बाज़ार पर है। उनके लिए संवेदना का कोई अर्थ नहीं। लोग अधिक से अधिक पैसे कमाना चाहते हैं इसीलिए तो हम गायों की ये दुर्दशा है।''

''बिल्कुल ठीक कहा!'' गौरी बोली, ''गाय वैसे भी शांत होती है। सीधी होती है। वही गाय थोड़ा-सा परेशान करती है, जिसके साथ किसी तरह का अत्याचार होता है। गाय के पैर बाँधकर दूध दुहना पाप है। कई लोग ऐसा निकृष्ट व्यवहार करते हैं। दुहने के पहले गाय

को चारा-सानी भी खिला देना चाहिए। दुह लेने के बाद भी यह ध्यान रखने की ज़रूरत है कि थनों में दूध न जमा रहे। थनों को धो देना चाहिए ताकि मक्खियाँ न भिनभिनाएँ, कीड़े न आएँ। कोई रोग न पैदा हो। और हाँ, दुहने से पहले दूध की कुछ बूँदें जमीन पर ही गिरा देनी चाहिए, ताकि थन के अग्रभाग में बैठे कीटाणु आदि साफ हो जाएँ। गाय को सूर्योदय से पहले दुहना चाहिए, फिर सूर्यास्त के समय। दोनों समय में बारह घंटे का अंतर तो रखना ही चाहिए।''

''वाह-वाह, सचमुच तुमने बड़ी सुंदर बातें बताईं।'' श्यामा बोली, ''लेकिन तुम्हारी बातें हम लोग इस जालिम ग्वाले तक कैसे पहुँचाएँ गौरी, जिसने तुम्हारे थनों को चोट पहुँचाई है? उसे इतनी अकल नहीं है कि हमारे थन कितने कोमल होते हैं। उसे नाखून काटकर आराम से दुहना चाहिए। थन को मुट्ठी में बंद कर धीरे-धीरे दबाना चाहिए। खींचना नहीं चाहिए। लेकिन सबको जल्दी पड़ी रहती है। बेदर्दी के साथ दुहते हैं। बस, चोट हम खाते हैं।''

''हमें तरीके से दुहा जाए, प्यार से दुहा जाए,'' गौरी ने कहा - ''चारों ओर संगीत की मधुर स्वर-लहरियाँ गूँजती रहें। कृष्ण बाँसुरी बजाते थे तो गायें मगन हो जाया करती थीं, उसी तरह आज भी अगर हमें संगीत के माहौल में रखा जाए, तो हम ज्यादा दूध दे सकती हैं। गौपालन कैसे होता है, यह सीखने के लिए लोगों को विदेश भेजना चाहिए। देखो, कितनी देख-रेख करते हैं गायों की। लेकिन अपने यहाँ तो भगवान ही मालिक है। उस दिन सेठ यादो को फटकार रहा था कि दूध कम हो रहा है। इंजेक्शन लगाओ। अरे सेठ, पहले कारण का तो पता कर लो। इंजेक्शन लगा कर अधिक दूध निकालने की कोशिश में सेठों की कमाई तो बढ़ जाती है, लेकिन हम गायों की हालत खराब हो जाती है। हम भीतर ही भीतर कमजोर पड़ जाती हैं। हमारी प्रजनन-शक्ति भी कमजोर हो जाती है। हमारे हारमोन पर बुरा असर पड़ता है। लगा दिया जाता है 'ऑक्सीटोसिन' इंजेक्शन। सुना है कि कभी-कभी यह गर्भवती माताओं को भी लगा दिया जाता था। अब तो सब्जी उत्पादन बढ़ाने के लिए भी इंजेक्शन का चलन बढ़ गया है। पतली-सी लौकी को लगा दो, वह फूल जाती है। लोग समझते हैं, लौकी कितनी बड़ी है। अरे, यह आठ आने के इंजेक्शन का कमाल है। लेकिन यह धीमा ज़हर है।''

''मैंने भी इस इंजेक्शन के बारे में सुना है। मैं तो इंजेक्शन का नाम सुनकर ही काँप उठती हूँ। मैंने भी ये इंजेक्शन झेले हैं।'' श्यामा ने कहा, ''इस इंजेक्शन के कारण गायें फौरन दूध देने की स्थिति में आ जाती हैं। पता नहीं पेट के भीतर कैसी बेचैनी होने लगती है और हम गायें अपने थनों में दूध पहुँचा देती हैं। ग्वाला फुरती से दुह लेता है। बछड़ा भूखा रह जाता है। स्वाभाविक है कि जब बछड़े को माँ का दूध नहीं मिलेगा तो वह कमजोर हो जाएगा। बस, जब देख लिया कि बछड़ा कमजोर है, तो कसाई को सौंप दिया। बछड़ा कमजोर क्यों हुआ, इसको तो समझो बस सौंप दिया किसी कसाई को। कई बार दूध के अभाव में बछड़े मर भी जाते हैं। यह कितना बड़ा पाप है कि बछड़े का हक छीन लिया जाए।''

''सचुमच यह इंजेक्शन बड़ा ही खतरनाक होता है। मैंने भी बार सुना है इसके बारे में।' गौरी बोली, 'इससे हमारे थनों के साथ-साथ बच्चादानी भी कमजोर हो जाती है। बार-बार

बच्चा टिक नहीं पाता। गर्भ गिर जाता है। ऐसे में एक दिन स्वस्थ गाय भी बेचारी बाँझ हो जाती है। तब वह भी किसी काम की नहीं रहती और धनपशु सेठ हमें कसाई के हवाले कर देते हैं। यह इंजेक्शन कितना खतरनाक है, इसको इसी बात से समझा जा सकता है कि जब मृत जानवरों को गिद्ध खाता है, तो उसकी प्रजनन-शक्ति भी घट जाती है। आज गिद्धों की संख्या भी कितनी कम हो गई है।''

''ऐसे में तो ये इंजेक्शन मनुष्यों के लिए भी कम खतरनाक नहीं रहे।'' श्यामा बोली, ''इंजेक्शन के कारण गाय का दूध ज़हरीला हो जाता है और इस दूध को जब आदमी पीएगा तो स्वाभाविक है कि उस पर भी बुरा असर होगा। कहते हैं कि अक्सर दिमाग पर असर पड़ता है। अनेक सब्जियों और फलों पर भी इस इंजेक्शन का प्रयोग होता है। इससे फलों का आकार तो बड़ा नज़र आता है, लेकिन उनकी गुणवत्ता कम हो जाती है। इंजेक्शन में समाए ज़हरीले तत्वों के कारण आदमी की प्रजनन शक्ति भी कम हो जाती है। आदमी नपुंसक तक हो सकता है। उसे लकवा हो सकता है, कैंसर हो सकता है।''

''यह इंजेक्शन अच्छी चीज़ नहीं है। फिर भी इसका उपयोग जारी है, जबकि इसके उपयोग पर कानूनन रोक है।'' गौरी बोली, 'पशु निर्दयता अधिनियम बना है, जिसमें साफ-साफ कहा गया है कि बिना किसी डॉक्टरी परामर्श के इंजेक्शन लगाने पर एक हजार रुपए जुर्माना देना होगा अथवा दो साल की जेल होगी। लेकिन आज तक ऐसा कोई उदाहरण सामने नहीं आया कि किसी को जेल हुई हो या किसी ने जुर्माना पटाया हो। बस, धड़ल्ले से लग रहे हैं इंजेक्शन। बाज़ार में जहाँ जाओ, मिल जाएगा। अनाड़ी गौ स्वामी भी इसका उपयोग कर लेता है। गाय को तकलीफ हो तो उसकी बला से। इंजेक्शन बनाओ और घोंप दो गाय के शरीर में घप्प से।''

गौरी की बात सुनकर श्यामा रोने लगी।

श्वेता भी रो रही थी। दोनों को रोता देखकर गौरी भी रो पड़ी। इन गायों की आँखों से बहने वाले आँसू धरती पर पड़े तो वह काँप उठी। लगा, जैसे भूकम्प आया हो। पूरी गौ शाला में भगदड़-सी मच गई कि अचानक ये क्या हुआ? इसके पहले भी भूकम्प के हल्के झटके लगते रहे हैं।

गौरी ने कहा, ''बहन, यह जो कंपन अभी हमने महसूस किया, उसका कुछ कारण समझ में आया?''

श्यामा बोली - ''नहीं, क्या बात है ?''

गौरी बोली - ''यह मैं नहीं कह रही बल्कि दिल्ली विश्वविद्यालय के खगोल-भौतिकी विभाग वालों का शोध कह रहा है कि यह धरती माँ अपने पुत्रों का संहार देखकर रोती है, चीख-पुकार करती है। जब वह व्याकुल होकर दहाड़ती है तब उसकी वह दहाड़ भूकंप में तब्दील हो जाती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि पिछले कुछ भूकंपों का असली कारण था बड़े-बड़े कसाईखानों में पशुओं की क्रूर हत्याएँ। जानती हो, शोधकर्ताओं ने बताया कि एक बड़े कसाईखाने से, जहाँ पशुओं की हत्याएँ होती है, वहाँ जो तरंगें उठती हैं, उनकी ऊर्जा एक हज़ार मेगावाट से

अधिक होती है। शोधकर्ताओं ने साफ-साफ कहा है कि अगर आप चाहते हैं कि भूकंप न आए तो कत्लखाने फौरन बंद कर दो। मासूम पशुओं की हत्याएँ रोको। भारत के वैज्ञानिक डॉ. मदनमोहन बजाज, डॉ. इब्राहिम और डॉ. विजयराज सिंह के शोध को पूरी दुनिया ने सराहा। उनको सम्मानित भी किया गया। इसे 'बिस थ्योरी' कहा गया। लेकिन हमने इनके शोध से कोई सबक नहीं लिया। आज अनेक शहरों में कसाईखाने चल रहे हैं। कहीं सरकारी संरक्षण में तो कहीं चोरी-छिपे। पशुओं को काटने की रफ्तार तेजी से बढ़ी है। मैं तो दावे के साथ कह सकती हूँ कि जब तक यह धरती गाय के लहू से तर-बतर होती रहेगी, तब तक भूकंप आते रहेंगे और इस देश के विकास का कोई भी यज्ञ सफल नहीं होगा।''

''हैरत होती है कि आदमी जानबूझकर आँखें बंद कर लेता है शुतुरमुर्ग की तरह।' श्यामा बोली, 'अगर मैं मनुष्य होती तो सबसे पहले कसाईखाने बंद करवाती। गाय ही क्यों, मैं तो सारे पशुओं के वध पर रोक लगा देती।''

''सबसे पहले तो इंजेक्शन पर रोक लगानी चाहिए।' श्वेता बोली, ''यह हम गायों के लिए ही नहीं, मानव समाज के लिए भी कितना घातक है।''

बातचीत चल ही रही थी कि गौशाला के दरवाजे पर गो माता की जय-जयकार सुनाई दी। गौरी मुसकरा कर बोली, ''यह लो, आ गए गौ भक्त। पुन्य कमाने। चलो, अब कुछ मीठा हो जाएगा।''

श्वेता-श्यामा हँस पड़ी।

गौ सेवक पास आ गए। सब एक-एक गाय के सामने खड़े हो गए और उन्हें गुड़ और चना खिलाने लगे। गुड़-चना खिलाने के बाद सबने गायों को प्रणाम किया, उनकी गर्दनें सहलाईं और वापस लौट गए।

श्यामा बोली - ''गाय के लिए बहुत-से लोगों में करुणा है, उदारता है। लेकिन इन सबके पीछे स्वार्थ है। गाय की पूँछ पकड़ स्वर्ग जाने के जुगाड़ की चिंता ज्यादा रहती है। आदमी जितना खर्च कर सकता है, वह करना नहीं चाहता। पुण्य कमाने में भी वह कोताही और चालाकी करता है। बस, गाय को थोड़ा-थोड़ा गुड़ खिला दो, प्रणाम कर लो, स्वर्ग की बुकिंग पक्की हो गयी। क्यों बहन, क्या सचमुच इतने से ही ये लोग स्वर्ग पा जाएँगे?''

''देखो बहन, कलजुग में कोई हम गायों के लिए इतना भी करे तो बहुत है।'' गौरी बोली, ''पूरे शहर के हजारों लोग रोज हमें थोड़ा-थोड़ा पौष्टिक भोज परोसते रहें तो हम स्वस्थ बनी रहें, फिर देखो, हम लोग सुबह-शाम सौ लीटर से कहीं ज्यादा दूध दे सकती हैं, लेकिन ऐसा होता कहाँ है? कभी-कभार ये गौ सेवक आते हैं और हम लोगों को अतृप्त छोड़ कर चले जाते हैं। फिर भी एकदम सूखी ज़िंदगी से तो अच्छा है कि कुछ हो रहा है। लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।''

''और क्या बाकी है बहन,'' श्वेता ने पूछा तो गौरी बोली, ''जो लोग गाय पालते हैं,

वे इतने कंजूस होते हैं कि मत पूछो। थोड़ा बहुत सानी खिलाया और गायों को भेज दिया कि जाओ, सड़कों पर घूमो और इधर-उधर जूठन पर मुँह मारते रहो। नतीजा क्या होता है? न जाने कितनी ही गायें इस चक्कर में बहुत जल्दी बीमार होकर मर जाती हैं। कभी-कभार तेज रफ्तार वाहनों के कारण भी मर जाती हैं। गो पालक अपनी मूर्खता के कारण बहुत जल्दी गायों को खो देता है और कहता है नुकसान हो गया भाई। गाय-भैंस इधर-उधर घूमती हैं तो यह उनके लिए अच्छी बात है, लेकिन वे चारागाह में घूमें, जंगल में भ्रमण करे, नदियों का नीर पीएँ लेकिन शहरों में अब क्या है? ये तो पत्थरों के शहर बन चुके हैं। हरियाली कहीं है नहीं। घास कहाँ से मिले? गायें सड़कों पर दिन-रात घूमती हैं। कभी नाली में गिर जाएँगी तो कभी किसी गड्ढे में। टूट जाएँगे उनके पैर। जीवन भर लँगड़ा कर चलती रहेंगी। लेकिन गौ पालकों को क्या फरक पड़ेगा? वे तो हमेशा की तरह दूध निकालते रहेंगे। गायों के नसीब में है घरों की जूठन, मुक्कड़ों की गंदगी। इन्हें खाकर गो वंश की जो फजीहत होती है कि पूछो मत।'

गौरी कुछ देर के लिए रुकी। नाँद में झाँका। उसमें थोड़ा-सा पानी था। उसे पीकर प्यास बुझाई और रँभाने के बाद बोली - ''आजकल शहर में घूमने वाली गायें 'बेचारी' होती हैं। बेचारी यानी बे-चारी। बिना चारे की। कहीं चारा नहीं मिलता, तो भूख मिटाने का एक ही चारा होता है कि कचरे में खाना खोजो। और कचरे में मिलती हैं- लोहे की कीलें, हेयर पिनें, तार के टुकड़े, बटन और पॉलीथिन की थैलियाँ। ये सब जूठन के साथ पेट में चली जाती हैं और हमारी आँतों में जाकर फँसने लगती हैं। नतीजतन गायों का पेट फूलने लगता है। जानलेवा दर्द होता है। समय पर डॉक्टर को न दिखाया गया तो गायें मर भी जाती हैं। आजकल शहर के डॉक्टर जब गायों का पेट चीरते हैं, तो उसमें बीस-तीस किलो तक की पॉलीथिन थैलियाँ निकलती हैं।''

''हे कृष्ण!'' गौरी की बात सुनकर श्वेता को भगवान याद आ गया। वह बोली, ''क्या हमारे समाज में लोग अभी भी समझदार नहीं हो सके हैं? लोगों की नादानी के कारण ही गो वंश मरता है। इसका उपचार क्या है ?''

''उपचार यही है कि लोग अपने स्वार्थ से ऊपर उठें और गाय को पशु नहीं, माँ की तरह पूजें।'' श्यामा ने तल्खी के साथ कहा।

श्यामा चुप हुई कि तभी गौ शाला में फिर कुछ हलचल हुई।

श्यामा मुसकराते हुए बोली-''अरे, श्वेता, आज तो अपने भाग ही खुल गए। देखो, फिर कुछ गो सेवक आ गए चना-गुड़ खिलाने।''

लेकिन ये लोग गौ सेवक नहीं थे। तीन-चार लोग तेजी के साथ आए और उनमें से एक व्यक्ति गौशाला की गायों की गिनती करने लगा।

ये लोग गौ सेवा आयोग के अधिकारी थे।

''एक...दो...तीन...चार.....'' आयोग के अधिकारी सत्यव्रत ने गिनती शुरू की।

सेठ दयाशंकर चेहरे पर मुसकान लाने की कोशिश कर रहा था और कुछ ज्यादा ही विनम्रता दिखा रहा था। चालाक सेठ अमूमन ऐसा ही करते हैं: इसे ही कहते हैं, मुख में राम बगल में छुरी। दयाशंकर भी यही कर रहा था। चेहरे पर दैन्य और आवाज़ में घुली हुई मिठास-

''हें...हें... अपने यहाँ कोई कमी नहीं हो सकती। पूरी सौ गायें हैं। गिन लीजिए। गौ सेवा आयोग ने जितनी भी गायें दी हैं, सब यहीं हैं।''

सत्यव्रत ने गंभीर मुद्रा बना कर सेठ को टोका-''प्लीज़, डोंट डिस्टर्व। हमें काउंट कर लेने दीजिए, फिर बात करते हैं।''

''ठीक है साहब, गिन लीजिए, गिन लीजिए। हम मौन रहते हैं जी।''

गौ सेवा आयोग का अधिकारी गायों को गिनने लगा तो सेठ ने फिर नाटक-नौटंकी शुरू कर दी। कभी किसी गाय को सहलाता, किसी से बतियाता, तो किसी को प्रणाम करता। श्वेता-श्यामा और दूसरी गायें एक-दूसरे को देख कर मुसकरा रही थी।

श्यामा बोली-''बहुत पहले हिंदी फिल्मों में एक खलनायक हुआ करता था, कन्हैया नाम का। अपना सेठ बिल्कुल वैसी हरकतें करता है, क्यों?''

''हाँ, मुझे तो लगता है, इसका चेहरा भी उससे मिलता-जुलता है।''

''बिल्कुल, खलनायकों के चरित्र और चेहरे मिलते-जुलते रहते हैं। इस सेठ को दायें से देखो, तो 'प्रेम चोपड़ा' (हिंदी फिल्मों का एक खलनायक) भी लगता है। बायें से देखो तो 'शक्तिकपूर' (हिंदी फिल्मों का एक खलनायक) नज़र आता है। देखो-देखो, अधिकारी आया है तो कैसा पाखंड कर रहा है। वैसे तो इधर कभी झाँकने ही नहीं आता और आज हमारे पास आकर हमें बार-बार प्रणाम कर रहा है।''

''लेकिन मामला क्या है? यह अधिकारी गिनती क्यों कर रहा है?''

''कुछ बात होगी। अभी पता चल जाएगा।''

गिनती पूरी करने के बाद सत्यव्रत ने कहा-''दो गायें कम है सेठ जी, कहाँ गईं?''

''अरे, दो कम हैं? ठीक से गिनिए। यहीं-कहीं होंगी। जाएँगी कहाँ? यादो, कहाँ हैं दो गायें?''

यादो चुप्प। वह इधर-उधर देखने लगा। फिर धीरे-धीरे बोला-''प..पता नहीं, शायद बाहर टहल रही होंगी। मैं अभी देखता हूँ।''

सत्यव्रत ने कड़क स्वर में कहा- ''फौरन देखो, और मेरे सामने ले कर आओ।''

''मामला क्या है साहब', दयाशंकर ने पूछा, 'आज अचानक गिनती की ज़रूरत क्यों पड़ गई?''

''बात ऐसी है, सेठ जी, हमें शिकायतें मिली हैं कि कुछ गौशालाओं के घटिया मालिकों ने हमारी गायें कसाइयों को बेच दी हैं। ये तो अपराध है न? हम गायों के लालन-पालन के लिए लाखों का अनुदान भी दें और लोग गायों को कसाइयों के यहाँ बेच दें? ऐसे सेठों

को तो फाँसी पर लटका देना चाहिए।''

''बिल्कुल ठीक कहा सर, आपने।' दयाशंकर बोले, 'घोर पाप है ये। मैं कभी ऐसा नहीं कर सकता। मुझे नरक नहीं जाना। राम-राम, ऐसा भी होता है क्या? घोर कलजुग आ गया है। यादो, देखो भाई, दो गायें कहाँ हैं, नहीं तो ये साहब हम पर भी शक करेंगे। हमारा पूरा जीवन गो माताओं की सेवा में ही समर्पित है। यहाँ से गायें कहीं जा ही नहीं सकतीं। देखो, खोजो...बाहर तो नहीं निकल गईं।''

''देखता हूँ सेठ जी।'' इतना बोल कर यादो चला गया।

दयाशंकर पसीना-पसीना हो रहे थे। उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि गायें कभी गिनी जाएँगी। हफ्ते भर पहले उन्होंने अपनी दो गायें खालबाड़ा के कल्लू को बेच दी थीं, तीन-तीन हजार रुपए में। अब तक तो लोग उन गायों का मांस भी हजम कर चुके होंगे। बुरे फँसे...अब क्या होगा?

थोड़ी देर में यादो आ गया और डरते-डरते बोला-''सेठ जी गायें कहीं नज़र नहीं आ रही हैं। दरवाजा खुला था, कहीं बाहर न निकल गयी हों। मैं बाहर देख कर आता हूँ।''

''मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया था कि दरवाजा बंद रखा करो। परसों भी दो-तीन गायें बाहर निकल गई थीं। लो, हो गया न तमाशा। मैं कुछ नहीं जानता: जाओ, गायों को खोज कर लाओ।''

यादो फिर चला गया। सेठ जी माथे पर हाथ पीटते हुए बोले- ''अब ऐसे-ऐसे लापरवाह गौ सेवक हैं साब कि क्या बताएँ। करे कोई, भरे कोई। गायों की देख-रेख यही करता है। आखिर मैं इसे पगार किस बात की देता हूँ? बताइए, ये कित्ती बड़ी लापरवाही है।''

सत्यव्रत गंभीर हो कर सारी बातें सुनते रहे, फिर बोले-''मुझे गायें चाहिए, वरना थाने में रिपोर्ट करनी होगी। ये गंभीर बात है। अपराध है।''

''अरे साब, गायें यहीं-कहीं होंगी, कहाँ जाएँगी?'' दयाशंकर बोले, 'कहीं ऐसा तो नहीं, कि आप यह सोच रहे हों कि मैंने गायें बेच दीं हैं? अरे, हम ऐसा पाप नहीं कर सकते। हम गौ भक्त लोग हैं, इसीलिए अपना काम-धाम छोड़ कर गौ शाला चला रहे हैं।''

''पता नहीं, इसीलिए चला रहे हैं कि किसलिए चला रहे हैं।''

''क्या मतलब?''

''मतलब साफ है। उसे समझाने की ज़रूरत नहीं है। मुझे दोनों गायें चाहिए। जब तक गायें नहीं आएँगी, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा। और यहाँ से गया तो सीधे थाने जा कर आपके खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराऊँगा।'' सत्यव्रत ने नाराजगी ज़ाहिर करते हुए कहा।

सेठजी की हालत पानी मिले दूध की तरह पतली हो गई। चेहरे का रंग गरीब के घर की दीवार की तरह उड़ चुका था। होठ किसी दुर्भागी नदी-तालाब की तरह सूख चुके थे। सेठ काँपने लगे। लगा, चक्कर आ जाएगा, इसलिए वहीं नीचे बैठ गए।

सत्यव्रत ने डाँटते हुए कहा-''यही है आपकी गौ सेवा? हमें उल्लू बना रहे हैं? गायें बेच खाईं और कह रहे हैं कि यहीं-कहीं होगी? कहाँ हैं, बताइए?'' इतना बोलकर सत्यव्रत

ने साथ खड़े अपने कर्मचारी से कहा, ''लगाओ कोतवाली फोन।''

''अरे साब, बात को क्यों बढ़ा रहे हैं? आप जो कहें, वो सेवा करने को तैयार हूँ। मामले को यहीं खत्म कर दें।''

''ओह, तो हमें रिश्वत देने की कोशिश कर रहे हैं आप? लेकिन माफ करना सेठजी, मेरा हाजमा ठीक नहीं रहता, इसलिए रिश्वत पचा नहीं पाऊँगा।' सत्यव्रत ने मुसकराते हुए कहा, ''इसका मतलब तो साफ़ है, कि आपने गायें बेच दीं है न? किसको बेचीं? कसाइयों को न..?''

''अरे, नहीं साहब, कसाइयों को क्यों बेचूँगा, वो क्या है कि कल ही एक ग़रीब गो भक्त आया था, उसको गायों की जरूरत थी। मैंने उसे मना भी किया, लेकिन वो ज़िद पर अड़ा रहा। उसकी गो सेवा की भावना देख कर मैं कुछ बोल नहीं पाया। मैंने तो उससे पैसे भी नहीं लिए।...गलती हो गई साहब, मैं उसका पता करता हूँ। गाँधीनगर तरफ कहीं रहता है। कल वापस ले आऊँगा।''

''वापस लाना ही होगा, वरना मैं पुलिस केस कर दूँगा।''

''बिल्कुल ले आऊँगा।''

''तो ठीक है, मैं चलता हूँ, कल हम फिर आएँगे।''

सत्यव्रत और उनके साथ आए कर्मचारी बाहर निकल गए। उनके जाते ही सेठ ने कल्लू को फोन किया-

''अरे कल्लू, तुमको जो दो गायें बेची थीं, उनको फौरन लौटा दो।''

सेठ की बात सुन कर कल्लू हँसा, ''किसके पेट से वापस लाऊँ सेठ जी? पता नहीं किस-किस ने खाया होगा। किन-किन के पेटों का ऑपरेशन करेंगे?''

''क्या बोले रहे हो? इतनी जल्दी कट गईं?''

''और नहीं तो क्या, यहाँ तो लोग तैयार बैठे रहते हैं सेठ जी? कुत्तों की तरह जीभें लपलपाए रखते हैं। मैं अभी आप को ही फोन लगाने वाला था कि बड़ी डिमांड आ रही है। कुछ और गायें चाहिए। मिलेंगी क्या? दो गायें और दे दें, मेहरबानी होगी कीमत, आप जो चाहें।''

सेठ जी ने रुआँसे स्वर में कहा- ''तुमने मुझे मरवा दिया कल्लू। जेल भिजवाओगे मुझे। आज आयोग का अधिकारी आया था। साला कल फिर ज़रूर आएगा। कहीं से दो गायें ले कर आओ भाई। इज़्ज़त बचाओ। चाहोगे तो मैं कुछ और पैसे दे दूँगा।''

''तो फिर ठीक है सेठ जी, कल मैं दो गायें ले कर आता हूँ। लेकिन बीस हजार रुपए लगेंगे।''

''बीस हजार...? बहुत है।''

''तो फिर ठीक है। किसी और को देख लीजिए। रखता हूँ।''

इतना बोल कर कल्लू ने फोन काट दिया। सेठ घबरा गया। उसकी नज़रों के सामने जेल घूमने लगी। बदनामी के भय से काँप उठा। उसकी खतरनाक आत्मा ने आवाज़ लगाई, 'सेठ, इस वक्त पैसों की परवाह मत करो। कल तक उसी तरह की बीमार-शीमार-सी दिखनी

वाली दो गायें ले कर आओ, पैसे मिल जाएँगे।'

''ठीक है, तो तुम कल गायें ले कर आओ और पैसे ले जाओ। लेकिन काम हो जाएगा न? मगर.. गाय तुम लाओगे कहाँ से?''

''अरे, कहीं से भी ले आएँगे। सरायपुर में लावारिस घूमने वाली गइयों की कौनो कमी है का? किसी को भी पकड़ कर इहाँ ले आवेंगे, आप देखो तो सही। कल्लू कौनो लल्लू नहीं है, हाँ।''

''ठीक है कल्लू, मैं इंतज़ार करूँगा।''

कल्लू से बात कर सेठ जी की जान में जान आई। उन्हें बीस हजार रुपए का चूना लगने वाला था, लेकिन उन्हें वह कहावत याद आ गई,'जान बची तो लाखों पाए, लौट के बुद्धू घर को आए'। इज्ज़त बची। वरना कहीं मुँह भी नहीं दिखा सकते थे।

दूसरे दिन ही कल्लू दो गायों के साथ हाज़िर था।

उसने गायें दीं और बीस हजार रुपए लेकर चलता बना। गायों को देखकर सेठ गद्गद हो गया। उसके चेहरे की मुसकान लौट आई। कल्लू के जाते ही उसने सत्यव्रत को फोन लगाया-

''हैलो सर, मैं दयाशंकर। मैं कह रहा था न आपसे कि गायें इधर-उधर कहीं चली गयी होंगी। हें-हें-हें, आज यादो उस आदमी को खोज लिया, जो गाय ले गया था। आप जब चाहें, आ कर देख सकते हैं।''

''ठीक है, कल आता हूँ। चलो गायें मिल गईं, तो ठीक हो गया वरना मुझे अपना फर्ज निभाने के लिए मजबूर होना पड़ता। चलिए, कल मिलते हैं।'' इतना बोल कर सत्यव्रत ने फोन काट दिया और मुसकराया। उसे पता था कि सेठ दो नई गायों का बंदोबस्त कर ही लेगा। लेकिन सत्यव्रत इस बात से दुखी था कि धनपिपासु सेठ के कारण दो गायों की हत्या हो गई।

ऐसे ही लालची हिंदुओं के कारण निरीह गायें कसाइयों तक पहुँच जाती हैं।

दस

मुजफ्फर भाई की गौ सेवा की जानकारी मीडिया और आपसी चर्चाओं के द्वारा जब लोगों तक पहुँचनी शुरू हुई, तो धंधेबाज़ किस्म के लोग भी सक्रिय होने लगे। घिरवानी, ओगरवाल, ठग्गरवाल, मसी और धोपड़े पुराने मित्र थे और सब के सब तिकड़मी विधा में पारंगत माने जाते थे।

एक दिन घिरवानी ने सारे मित्रों को मोबाइल कर के कॉफी हाउस में चार बजे बुला लिया। सबके सब समय पर पहुँच गए।

घिरवानी ने बात शुरू की - ''यार, हम लोगों को अब ठोस काम करना चाहिए, जिससे अपना नाम हो और दाम भी मिले।''

''कहीं तुम राजनीति में जाने की बात तो नहीं कर रहे हो? भइये, राजनीति अपने बस

की बात नहीं है। यहाँ भारी इन्वेस्ट करना पड़ता है। हम ठेकेदारी करके दाम तो कमा रहे हैं और कितना कमाएंगे बे?'' ओगरवाल ने धौल जमाते हुए कहा, ''अरे, वो दोहा नहीं सुना है क्या कि 'साईं उतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय। मैं भी भूखा न हूँ साधु न भूखा जाय'।''

''तुम लोगों को तो बस कमाना-खाना भर सूझता है। अबे, कुछ समाज सेवा भी करो साईं।'' घिरवानी मुसकराते हुए बोला, ''देखो, मुजफ्फर भाई को, गो सेवा करके नाम कमा रहा है। हम लोग भी कुछ करें।''

''हाँ यार, ये बंदा कौन है? अक्सर इसका नाम पढ़ता रहता हूँ। मुसलमान हो कर वो पट्ठा..गो सेवा में टाँग अड़ा रहा है। इसका फंडा क्या है ?''

''फंडा यही है साईं कि हम लोग निष्क्रिय हैं, इसीलिए अगला सक्रिय है। हमको फिकर ही नहीं। लगे रहो ठेकेदारी में। सड़कों पर गायें भटक रही हैं। इनको देखने वाला कोई नहीं। ऐसे समय में अगर कोई आगे आएगा, तो स्वाभाविक है कि उसको 'नेम एंड फेम' मिलेगा ही।''

''हाँ, यह बात तो है । लेकिन अपन क्या करें?'' मसी ने पूछा।

''मेरे दिमाग में एक आइडिया आया है बॉस्स। तुम लोग साथ दो, तो हम लोग नाम भी कमाएँगे और माल भी।'' घिरवानी बोला, ''हम लोग गौ माता की सेवा करेंगे और पैसे कमाएँगे।''

''संघ बनाकर पैसे कमाएँगे?'' ओगरवाल ने प्रश्न किया, ''मगर कैसे? कोई सॉलिड प्लानिंग भी तो हो!''

''अबे, हम लोग तो ठोस फैमिली-प्लानिंग के साथ ही पैदा होते हैं', घिरवानी हँसते हुए बोला, 'देखो, लालपुर में मेरे पुरखों की खाली ज़मीन पड़ी है। हम लोग वहाँ कुछ गायें पालेंगे हैं। कुछ लावारिस गायों को भी यहाँ ला कर रखेंगे। पचास-सौ गायें इधर उधर से एकत्र कर लेंगे। फिर अपना गौ सेवा आयोग ज़िंदाबाद। जिसके पास ऐसी गौ शालाओं के लिए लाखों रुपये का बज़ट होता है। उसके पास जाएँगे और पैसे एठेंगे। अपनी कुछ अच्छी गायें भी गौ सेवा आयोग के पैसों से पल जाएँगी। कुछ और लोगों को अपने साथ जोड़ लेते हैं। गौ पालन करेंगे। गाय का दूध तो बिकता ही है। गोबर-मूत्र भी बिकता है। आजकल दवाइयाँ बन रही हैं। समझ जाओ कि हम लोग गौ सेवा आयोग के पैसों से मौज करेंगे। यह काम शुरू करते हैं। इसके साथ ही शहर के लोगों से अपनी गौ शाला की देख-रेख के नाम पर चंदा भी लेंगे। गाय हमारे समाज की बड़ी कमजोरी है। गौशाला चला रहे हैं, यह जान कर लोग हमें चंदा दे देंगे। गौ सेवा आयोग लावारिस गायों के पालन लिए पैसे देता ही है। हम ऐसी गायें एकत्र करेंगे और लालपुर की गौशाला में रखेंगे। दो-चार नौकर-चाकर रख देंगे। फर्जी रिकॉर्ड मेंटेन करेंगे और मिल-बाँट कर खाएँगे। गौ सेवा के लिए अपना नाम भी होगा और कमाई की कमाई होगी। गौ सेवा आयोग का लाभ हमें उठाना चाहिए।''

इतना बोल कर घिरवानी हँसा और उसका साथ देने के लिए बाकी दोस्त भी हँस पड़े।

''वाह घिरवानी, गज़ब कर दिया तुमने। बिल्कुल हिट फार्मूला दिया है बॉस!'' ओगरवाल

तो उछल पड़ा। खुशी के मारे ठहाका लगाने लगा। ठहाका इतनी अभद्रता के साथ इधर-उधर छितराया कि आसपास के लोग उसे घूरने लगे, लेकिन ओगरवाल को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। उसे जब तक हँसना था, हँसा। हिरवानी ने इशारा किया, तो मुश्किल से शांत हुआ, फिर धीरे-धीरे बोला, ''इस काम को जल्द से जल्द शुरू करो। हमको भी अब गो भक्त बनना है।'' इतना बोलकर वह फिर हँसने को हुआ, मगर इस बार उसने मुँह पर हाथ रख लिया।

घिरवानी ने कहा - ''देखो हम लोग गाय पालेंगे, दूध बेचेंगे। गोबर-गोमूत्र बेचेंगे और शहर की आवारा भटकने वाली गायों को पकड़कर अपने यहाँ लाएँगे और जब गाय के मालिक हमारे पास आएँगे, तो उनसे फीस लेंगे। आखिर उसने अपनी गाय सड़क पर लावारिस क्यों छोड़ी। अपन प्रशासन से बाकायदा परमिशन लेंगे। देखो, किसी बड़े सेठ को गाय का वास्ता देकर एक मेटाडोर भी खरीद लेंगे। एक रसीद बुक छपा लेते हैं। गो सेवा के नाम पर चंदा एकत्र करेंगे। देखना काफी माल इकट्ठा हो जाएगा।''

ओगरवाल सुझाव सुनकर पगला गया। वह खयालों में खो गया। उसे लगा कि वह 'कामधेनु' नहीं 'दामधेनु' पालने वाला है। हींग लगे न फिटकरी और रंग चोखा। वह बोला, ''यार घिरवानी, ये काम जल्दी शुरू करो। समिति बनाकर प्रेस में दे दो। अपने नाम छप जाएँ ताकि लोगों को पता चले कि हम कुछ करने जा रहे हैं। अपन संगठन का नाम क्या रखेंगे?''

''वो भी मैंने सोच लिया है। नाम बड़ा ही सॉलिड है, 'राष्ट्रवादी गो भक्त संघ'। घिरवानी हँसते हुए बोला, ''हें..हें...काम भले ही घटिया करो, लेकिन नाम ऊँचा रखो। राष्ट्रवाद, नैतिक मूल्य, अस्मिता वगैरह शब्द आ जाएँ, तो बातों में वज़न आ जाता है। एक पत्रकार है। वह अपने का राष्ट्रवादी कहता है। उसकी आड़ में लाखों रुपए के विज्ञापन वसूलता है। दरअसल विज्ञापन ही उसका राष्ट्र है। तो अपन भी 'राष्ट्रवादी गौ भक्त संघ' बना लेते हैं। इसमें अपन सबको जोड़ेंगे। एकाध मंत्री को संरक्षक बना लेंगे। एक-दो मुसलमान रहें, ईसाई रहें। मतलब कि 'सर्वधर्म सद्भाव' वाला फॉर्मूला। इसी रास्ते पर चलकर कमाई होगी। लोगों को लगे कि हम लोग गाँधीजी के पक्के चेले हैं। भले ही हम अंदर ही अंदर गोडसे हों, बाहर गाँधीवादी नज़र आना चाहिए। खादी भी हमारी आड़ रहेगी।''

घिरवानी की बात सुन कर सब लोग हँस पड़े। उनके ठहाके प्रदूषण की तरह इधर-उधर फैल रहे थे। आसपास बैठे लोग इनको देखने लगे कि अचानक ये लोग बद्तमीज और पागलों की तरह क्यों हँस पड़े। लोगों की घूरती आँखों से आक्रांत हो कर वे लोग खामोश हो गए और धीरे-धीरे बतियाने लगे।

आखिर कॉफी हाउस में बैठ कर बन गया 'राष्ट्रवादी गौभक्त संघ' ।

कॉफी हाउस के एक टेबल पर बैठकर भविष्य की नई दुकानदारी की कार्य योजना बन गई। घिरवानी अध्यक्ष, ओगरवाल सचिव, मसी कोषाध्यक्ष बन गए। बाकी लोग सदस्य। कृषि मंत्री को संरक्षण बना दिया गया। इसी के सहारे 'गौ सेवा आयोग' से अनुदान मिलेगा। चार-पाँच और नाम जो याद आए, वे भी नोट कर लिए गए। उसी दिन कम्प्यूटर पर बहुरंगी 'लेटर

हेड' बन गया। समाचार भी बन गया और अख़बारों को चला गया। घिरवानी हिंदुस्तानी लोक पार्टी (हिलोपा)का नेता भी था। प्रेस वालों से उसके संपर्क थे। कभी ढाबे ले जाकर दारू पिलाना, कभी कोई छोटा-मोटा गिफ्ट देना, करता रहता था। उसने सबको फोन कर दिया और दूसरे दिन 'राष्ट्रवादी गौभक्त संघ' के गठन की खबर लोगों तक पहुँच गई।

मुजफ्फर भाई ने भी खबर पढ़ी तो खुश हो गए - ''चलो एक से दो भले। गायों का भला होना चाहिए। कोई भी करे। जितने लोग आगे आएँगे, उतना फायदा होगा।''

धंधेबाज लोग या नकली लोग जब समाज सेवा का माहौल बनाने की कोशिश करते हैं, तो वे जल्दी सफल हो जाते हैं। 'मीडिया' का सहारा लेकर घिरवानी और ओगरवाल बहुत जल्दी सुर्खियों में आ गए। लावारिस गायों को गौशाला पहुँचाने के साथ-साथ दूध बेचना। गोबर-गोमूत्र की सप्लाई करना रोज का काम। कुछ कर्मचारियों को रख लिया। वे लोग गो सेवा करते। दूध का हिसाब-किताब रखते।

देखते ही देखते 'गौभक्त संघ' एक चर्चित संस्था बन गई। उसका 'हिडन एजेंडा' क्या है, यह बहुत-ही कम लोग जान पाए।

'राष्ट्रवादी गौभक्त संघ' की एक से एक बड़ी योजनाएँ। शहर में कुछ जगह गौ माता की मूर्तियाँ लगेंगी, एक बड़ा-सा गौ मंदिर बनेगा, गौ सेवा के नाम पर पुरस्कार दिए जाएँगे, गौ माता पर केंद्रित पत्रिका का प्रकाशन कर के सरकार और सेठों के विज्ञापन लिए जाएँगे। बस, इस दिशा में काम शुरू हो गया।

घिरवानी ने अपने साथ सुक्कू यादो को जोड़ लिया। उसे गौ शाला का प्रभारी बना दिया। कृपाशंकर में पढ़ने-लिखने की रुचि थी, तो उसे 'गौ दर्पण' पत्रिका का संपादक बना दिया। खुद प्रधान संपादक बन गया। अपनी कार के आगे पीछे लिखवा लिया था - 'राष्ट्रवादी गौ भक्त संघ'।

एक रात 'गौ भक्त संघ' की बैठक काजू ढाबे में हुई। संघ के सारे लोग अपनी सफलता पर खुश थे। लेकिन घिरवानी और ओगरवाल ही ऐसे थे, जो 'संघ' के 'हिडन एजेंडे' को जानते थे। बाकी लोग तो गाय के लिए कुछ करना है... दो पैसे भी मिल जाएँ तो कोई बात नहीं। कुछ सात्विक भावनाओं के साथ जुड़ गए थे।

घिरवानी ने कहा - ''यार साईं धोपड़े, कुछ ऑर्डर तो दो। क्या खाओगे?''

''मैं तो वेज वाला हूँ। दाल-रोटी बस!''

''अरे, यह सब तो घर पर खाते ही रहते हो। तुम कहो तो चिकन बुलवा लेते हैं। चिकन-बिरयानी।''

धोपड़े चुप हो गया। कैसे कहें कि बुलवा लो, कैसे कहें कि मैं खाता हूँ। ब्राह्मण की पोल खुल जाएगी। तभी सुक्कू यादो बोला- ''बुलवा लो, ये जेनवंशी एक पीस ले लेगा। क्यों बॉस, ठीक है न ?''

''अब तुम लोग कहते हो तो ठीक है।'' जेनवंशी बोला, ''वैसे मैं नॉनवेज से परहेज

करता हूँ, लेकिन तुम लोगों का साथ देना है तो क्या करें... ठीक है यार। मैं बड़ा प्रोग्रेसिव हूँ।''

''ये हुई न मर्दों वाली बात।'' ओगरवाल चहका, ''अब चिकन बुलवा रहे हैं तो एक-एक पैग भी हो जाए।''

''वाह, क्या बात है! मज़ा आ गया।'' घिरवानी बोला, ''गौभक्त संघ की सफलता का जश्न मनाना हो, तो कुछ हटकर करना ही पड़ेगा।''

घिरवानी ने वेटर को आवाज़ दी। ऑर्डर दिया। सारे सदस्यों ने तृप्त होने तक चिकन बिरयानी का स्वाद लिया। दो-दो, चार-चार पैग दारू भी पी। पैसे घिरवानी ने दिए। घिरवानी ने खुशी-खुशी खर्च किए, क्योंकि वे पैसे घिरवानी के भी नहीं थे। वे पैसे गायों के थे। गौ सेवा के नाम पर एकत्र किए गए फंड से निकले थे। सबने सोचा, घिरवानी बड़ा दरियादिल है। लेकिन केवल ओगरवाल जानता था कि यह दरियादिली कहाँ से आई है।

सारे मित्र दो-चार मुर्गे हजम कर गए। बात करते-करते दारू कुछ ज्यादा हो गई, तो सब कुछ सुरूर में आ गए।

''यार, अपना 'गो भक्त संघ' तो खूब नाम कमा रहा है।'' धोपड़े ने कहा, ''लेकिन घिरवानी तुम सारा पैसा हजम कर रहे हो, यह ठीक बात नहीं है। कुछ हम लोगों को भी तो दो।''

''क्या बकवास कर रहे हो ?'' घिरवानी भड़क गया, ''सब कुछ तो तुम लोगों के सामने है। क्यों ओगरवाल ?''

''हाँ-हाँ, ठीक बात है।'' ओगरवाल बोला, ''यार धोपड़े , लगता है तुझे चढ़ गई है। अबे, गो सेवा के धंधे में कोई कमाई होती है भला! घर से देना पड़ता है। देखो, हिरवानी ने अपनी जमीन दे दी। बेचारा। मैंने कितना पैसा लगाया। और तुम कह रहे हो कमाई हो रही है।''

''मैं सब समझ रहा हूँ। मुझसे मत छिपाओ। तुम लोग चंदा-चकारी कर रहे हो। जहाँ देखो, दोनों साथ-साथ जाते हो। हम लोगों को पूछते नहीं। मैं सब समझता हूँ।''

''यार ओगरवाल, इसको चुप करा वरना ठीक नहीं होगा।'' घिरवानी ने तैश में आकर कहा, ''मैं इसीलिए बोलता था कि ठीक-ठाक लोगों को अपने साथ जोड़ो। अब भुगतो।''

घिरवानी की बात सुनकर धोपड़े का खोपड़ा घूम गया। उसने चीखते हुए कहा, ''तो इसका मतलब यह हुआ कि हम लोग ठीक-ठाक नहीं हैं? हम लोग चूतिये हैं। या मा...'' धोपड़े ने गाली बकना शुरू कर दिया।

गालियाँ सुन कर घिरवानी आपे से बाहर हो गया। वह उठा और उसने कृपाशंकर को धक्का दे दिया। धोपड़े नीचे गिर पड़ा। नशा दिमाग में चढ़ चुका था। शरीर बस में नहीं था। फिर भी वह लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ और घिरवानी को एक घूँसा जड़ दिया। दोनों एक-दूसरे को पटकने की कोशिश करने लगे। ढाबे में भगदड़ मच गई।

ढाबे का मालिक दौड़ा-दौड़ा आया। और एक-दो लोग सामने आए। बड़ी मुश्किल से घिरवानी और धोपड़े को अलग किया।

ढाबे के मालिक गुड्डा ने हड़काते हुए कहा - ''तुम लोग पेमेंट करो और यहाँ से

चलते बनो, वरना मुझे पुलिस बुलानी पड़ेगी।''

पुलिस का नाम सुनकर घिरवानी का नशा हिरन होने लगा। बोला, ''हाँ-हाँ, जा रहे हैं। चलो यार। लेकिन मैं... मैं धोपड़े के साथ नहीं जाऊँगा।''

''मैं भी तेरे साथ नहीं जाऊँगा। चल यार,'' धोपड़े ने सुक्कू यादो से कहा, ''मैं तेरे साथ चलूँगा।''

सुक्कू यादो होश में था। वह चाहता था कि मामला जितनी जल्दी शांत हो, उतना अच्छा। उसने अपनी बाइक चालू की और धोपड़े को बिठाया और 'टा-टा' करते चला गया। घिरवानी लड़खड़ाते कदमों के साथ बाइक की ओर बढ़ा तो ओगरवाल ने कहा ''रहने दे बे, तू पीछे बैठ मैं चलाऊँगा।''

घिरवानी हँसते हुए बोला - ''हें-हें, तू क्या समझता है कि मैं नशे में हूँ ? बिल्कुल नहीं। मैं चलाऊँगा।''

''ठीक है, तू ही चलाना, लेकिन अभी मुझे चलाने दे।'' ओगरवाल ज़िद करके गाड़ी चलाने लगा। घिरवानी पीछे बैठ गया। हिरवानी झूम-झूम कर 'गौ माता की जय' बोल रहा था और हँसे जा रहा था। ओगरवाल ने बाइक की गति धीमी कर दी। उसे डर था कि कहीं बीच रास्ते में हिरवानी गिर न जाए। किसी तरह घिरवानी का घर आया। उसे 'ड्रॉप' करके ओगरवाल घर की ओर चल पड़ा।

दूसरे दिन घिरवानी ने सिर पीट लिया। एक अखबार में छपी एक खबर पढ़कर वह घबरा गया।

खबर थी - ''चंदे को लेकर गो भक्त आपस में भिड़े। सरायपुर, विशेष संवाददाता। गो सेवा अब कमाई का एक ज़रिया बनता जा रहा है। कमाई इतनी ज्यादा होने लगी है कि इसे लेकर गो भक्त आपस में ही भिड़ने लगे हैं। कल रात काजू ढाबे में कुछ भक्त दारू पीकर होशो-हवास खो बैठे और चंदे के बँटवारे के सवाल पर एक-दूसरे से ही मारपीट करने लगे। लोगों ने बीच-बचाव कर के गो भक्तों को शांत किया। इसके पहले कि घटना स्थल पर पुलिस आती, गो भक्त फरार हो गए।''

घिरवानी ने ओगरवाल को फोन किया - ''क्यों आज का पेपर देखा ?''

''हाँ यार, देखा। लेकिन बच गए हम लोगों का नाम नहीं छपा है।''

''हाँ यार, बच गए। कुछ ज्यादा ही हो गई थी कल। अब ध्यान रखेंगे। अबे, तू अभी क्या कर रहा है?''

''कुछ नहीं।''

''ठीक है, मैं आता हूँ। आगे की कुछ प्लानिंग करते हैं।''

''आ जा, लेकिन अभी संघ की कुछ एक्टिविटी करना ठीक नहीं। जहाँ जाओगे, लोग पूछेंगे, तब क्या कहोगे?''

''लेकिन उसमें हमारा नाम तो कहीं नहीं है।''

''वो सब तो ठीक है, लेकिन लोग हम पर शक तो करेंगे ही।''

''हाँ, ये बात तो है। लेकिन मामला जमा लेंगे। डोंट वरी। अच्छा सुन, कृपाशंकर से बात कर लेना। उसके दम पर ही 'गौ-दर्पण' निकलेगा भाई।''

''फिक्र मत कर, मैंने उसे समझा दिया है। यह भी कहा है कि तुझे एडवांस में दो हजार रुपए देंगे। वह सेट हो गया है। इंटरनेट से इफरात मैटर मिल जाएगा। किसी लेखक से लिखवाने की ज़रूरत नहीं। घर बैठे मैटर मिल जाएगा। ''

''ओगरवाल, तेरे जैसा यार कहाँ, कहाँ ऐसा याराना। जल्दी आ।''

ओगरवाल दिनचर्या निपटाकर घिरवानी के घर की ओर चल पड़ा।

फिर शुरू हुआ 'गौ सेवा' का 'दौर'।

राष्ट्रवादी गौ भक्त संघ ने लावारिस और विकलांग गायों को एकत्र करना शुरू किया और देखते ही देखते दो सौ गायें जमा हो गईं। मंत्री चंपेश्वरप्रसाद को संरक्षक बना कर रखा था, सो गौ सेवा आयोग पर दबाव बना कर अनुदान भी हड़पने लगे। जब लोगों को पता चला कि ये लोग लावारिस गायों की सेवा कर रहे हैं, तो आम लोगों ने भी पैसे देने शुरू कर दिए। अनाज भी जमा होने लगा और यह सब आपस में बँटने लगा।

घिरवानी का फंडा काम आ रहा था। गायें नोट छापने की मशीनें बन चुकी थीं।

रसीदें छप चुकी थीं। घर-घर, दुकान-दुकान जा कर घिरवानी, मिलवानी, ओगरवाल, ठग्गरवाल, धोपड़े आदि चंदा एकत्र करने लगे। गाय के नाम पर इन लोगों को चंदा मिलने लगा। जहाँ भी जाते तो कुछ न कुछ वसूली हो जाती। कहीं पाँच सौ रुपये, कहीं सौ रुपया, तो कहीं पचास रुपए। किसी ने दस रुपए भी दिए तो चुपचाप रख लिया। एक डायलॉग मारते हुए कि 'गाय की सेवा में हर किसी को योगदान बराबर है भाई। क्या दस रुपये और क्या दस लाख'।

शहर भर से जितनी भी वसूली होती, उसको रात को बैठ कर चेक किया जाता और बेईमानी के सहारे एकत्र किया गया धन पूरी ईमानदारी से आपस में बँट जाता था। ये पापी किस्म के लोग जब गायों का नाटकीय स्पर्श करते, तो लावारिस, विकलांग और बीमार गायें समझ जाती थीं कि वे छली लोगों से घिरी हुई हैं। गायें आपस में चर्चा करतीं कि कैसे पापियों के हत्थे चढ़ गई हैं। वे बोल तो सकती नहीं थी, लिहाजा केवल आँसू बहाते हुए जी रही थीं। न उनको रोजाना चारा-सानी मिले और न पानी। उनकी हालत दिनोंदिन खराब होती जा रही थीं। हाँ, जब ये लोग गौ सेवा आयोग के अधिकारियों को गौशाला देखने के लिए बुलवाते थे, उस वक्त अपनी गौ शाला को चकाचक कर देते थे।

तो कुछ इस फर्जी तरीके से सरायपुर में 'राष्ट्रवादी गौभक्त संघ' अपने तरीके से 'गौसेवा' कर रहा था। गायों को भले ही कुछ नहीं मिल रहा था, इन गौभक्तों को गायें मालामाल कर रही थीं।

ऐसे नकली गौ सेवकों को देख कर बेबस गायों को महसूस हो रहा था कि वे

कसाईखाने में गए बगैर धीरे-धीरे कट रही हैं। हलाल हो रही हैं। खून भले ही नज़र नहीं आता था, लेकिन वे कराहती रहती थीं। उस कराह के कारण धरती में कंपन होती थी और लोग घबराते थे कि कहीं भूकंप तो नहीं आने वाला है।

ग्यारह

ईमानदारी के साथ गो सेवा में जुटे 'सर्वधर्म गौ रक्षा संघ' की बैठक का एकमात्र एजेंडा यही था कि गो-वध पर पूर्ण पाबंदी की माँग को लेकर अब आर-पार की लड़ाई लड़नी होगी। इसलिए यह बहुत ज़रूरी था कि एक ऐसा जत्था तैयार किया जाए, जो पूरे आंदोलन की अगुवाई करे। गौवध को प्रतिबंधित करने के लिए 'राजधानी कूच' की तैयारी करनी होगी। इसके लिए लोगों को जोड़ना होगा। इस काम की जिम्मेदारी गोपालभाई, दिनकर, केशव, फैज़ खान, मुजफ्फर भाई, दिलदार हुसैन, सरदार मोहनसिंह, सैलानीराम, प्रेमशंकर, गौटियाप्रसाद, मंगल मसीह को सौंप दी गई। इन सब ने देश भर में गो सेवा के लिए काम करने वालों से संपर्क साधा और सरायपुर में बैठक बुलाई।

बैठक में बहुत अधिक लोग तो नहीं आए, मुश्किल से दस लोग। फिर भी बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता वयोवृद्ध गो भक्त घावरीजी ने की।

मुजफ्फर भाई ने बैठक की शुरुआत करते हुए कहा - ''मित्रो, गाय का प्रश्न हमारी अस्मिता का प्रश्न है। हमारी राष्ट्रीयता का प्रश्न है। गाय को धर्म और जाति से ऊपर उठकर देखने की ज़रूरत है। मैं भी इस बात को मानता हूँ कि गाय हैं, तो हम सब हैं। हम हैं तो आने वाली पीढ़ी है। यह समाज है। गाय नहीं रहेगी, तो हम बलहीन हो जाएंगे, श्रीहीन हो जाएँगे। इसलिए मैं गाय को एक पुत्र की नज़र से देखता हूँ। वह हम सबकी माँ है। माँ खतरे में है। हमें उसे बचाना है। इसके लिए अगर हमें बलिदान भी करना पड़े, तो पीछे नहीं हटना चाहिए।''

''मैं आपकी बातों का समर्थन करता हूँ।'' सरदार मोहन सिंह बोले, ''गुरुनानक देव जी से लेकर गुरु गोविंद सिंघ जी तक सभी ने अन्याय के खिलाफ हमें लड़ना सिखाया। आज गाय के मसले पर मैं भी सोचता हूँ कि हमें एक शहीदी जत्था तैयार करना चाहिए। नामधारी सिखों ने गो माता को बचाने के लिए जान की बाजी लगा थी। शहीदी जत्था अपनी जान दे दे, लेकिन गो वध के लिए चलाए जा रहे आंदोलन से पीछे न हटे।''

''बिल्कुल ठीक बात।' मंगल मसीह ने कहा, 'गाय एक पशु नहीं है कि हम उसको काट-काट कर उसके मांस का 'एक्सपोर्ट' करें। वैसे मैं तो किसी भी पशु की हत्या का विरोधी हूँ। लेकिन सारी हत्याएँ तो हम रोक नहीं सकते, लेकिन किसी एक मोर्चे पर तो काम कर ही सकते हैं। अभी मुद्दा गाय का है। संस्कृति का है। मुझे यह कहने में हिचक नहीं है कि हमारी इस गौ माता ने ही हमको जीने लायक बनाया। गाय का दूध पीकर हम लोगों ने अपनी ताकत बढ़ाई। हमारे ईसाई धर्म में भी गाय-बैल या किसी भी पशु की हत्या को पाप

कहा गया है। रोम में त्यौहारों के समय पशुओं की बलि दी जाती थी, लेकिन हमारे धर्म शास्त्रों में ऐसा करने की अनुमति नहीं दी गई है। ईसा मसीह ने एक बार अपने भक्तों को संबोधित करते हुए कहा था, 'हमको तुम्हारे ऐसे यज्ञ नहीं चाहिए जो हिंसा करते हैं। यज्ञ की आग में पड़ी आहुतियों और स्वस्थ पशुओं की चरबी को देखकर मुझे दुख होता है। बकरी, मेमना या बैल का रक्तपान करने से मुझे संतोष नहीं हो सकता।' फिलहाल मैं यहाँ अपनी बात करता हूँ। गाय के लिए अपनी जान दे सकता हूँ। आप लोग जैसा आदेश देंगे, मैं वैसा ही करूँगा।''

मसीह के बाद अब बारी थी गोपालभाई की। उन्होंने कहा - ''मैं जन्मजात यादव हूँ। कृष्ण हमारे आराध्य देव हैं। कृष्ण का जीवन गायों के बीच ही बीता। वे आदर्श गो सेवक थे। गाय के बछड़े को उसका पूरा हक मिले, इस हेतु वे शरारतें भी करते थे। बछड़े को माँ के थन तक पहुँचा देते थे। आज बछड़े को गाय का दूध नहीं मिलता। दूध तो छोड़िए साब, खुद गाय को उसका हक नहीं मिल रहा। गाय हमें जितना देती है, उसके बदले में हम उसे कुछ भी नहीं देते। इसलिए अब समय आ गया है कि देशव्यापी आंदोलन चले। गो यात्रा निकले। मैं तो कहता हूँ कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करना चाहिए। हमें गो वर्ष मनाना चाहिए। जैसे गाँधी जी के जन्मदिन को पूरी दुनिया में 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया जाता है, उसी तरह कृष्ण जन्माष्टमी को पूरी दुनिया 'गौ दिवस' के रूप में मनाए। दुनिया न सही, कम से कम अपने भारत में तो 'गौ दिवस' मनाया ही जा सकता है। कोशिश यह की जाए कि एकाध बार हम लोग गो दिवस नहीं, गो वर्ष मनाएँ।''

''गौ वर्ष नहीं, गौ दशक।'' फैज़ खान ने बीच में टोका, ''गौ दशक मनाने से ही गाय के लिए हम कुछ ठोस कार्य योजना बना सकेंगे।''

''ठीक बात है।' गोपालभाई बोले, 'गाय को लेकर हम गोष्ठी-फोष्ठी की आदत खत्म करें। कई बार लगता है कि जो लोग जीवन में कुछ कर नहीं सकते या कुछ करना नहीं चाहते, वे लोग ही गोष्ठियाँ करते हैं। अब तो हमें 'करो या मरो' की नीति अपनानी चाहिए और गाँधी जी की तरह अहिंसक आंदोलन चलाकर सरकार को बाध्य कर देना चाहिए कि वह गो वध पर प्रतिबंध लगा दे।''

मोहन सिंह ने कहा - ''अब हमें कोई तारीख तय करनी चाहिए और राजधानी कूच का कार्यक्रम बना कर गो भक्तों से अपील करनी चाहिए कि सरकार पर दबाव डालने के लिए वे 'राजधानी चलो' मुहिम में शामिल हों। देश भर से हज़ारों गो सेवक राजधानी पहुँचें और विधानभवन का घेराव करें। हम राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री से भी मिलेंगे और गो वध बंदी कानून को लागू करने की माँग करेंगे। अरे भाई, जब 1960 में गौ हत्या विरोधी कानून बन चुका है, तो यह लागू क्यों नहीं हो रहा? आखिर दिक्कत क्या है?''

गोष्ठी में बैठे बाकी लोग भी सरदार मोहन सिंह की बातों से सहमत थे।

'सर्वधर्म गो रक्षा संघ' में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी धर्म के लोग शामिल हो गए और देखते ही देखते एक वातावरण बनने लगा। गुरु गोविंद सिंघ जी के 'पंज प्यारे' की तरह,

मुजफ्फर भाई, फैज़ खान, मोहन सिंह, गोपालभाई, कृष्णाभाई, प्रेमशंकर, गौटियाप्रसाद, रौशनलाल, मंगल मसीह भिड़ गए। उन्होंने देश भर का दौरा किया, वह भी अपने खर्चे पर। लोगों ने अपनी हैसियत के अनुसार मदद भी की। दिल्ली, भोपाल, जयपुर, मुंबई, कानपुर, नागपुर, रायपुर, राँची, इंदौर, पटना : कहाँ-कहाँ नहीं गए गौ सेवक। नॉर्थ-ईस्ट भी गए। दक्षिण भारत भी गए। इस काम में सबसे आगे निकला मोहम्मद फैज़। जो काम गाँधी जी ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किया था, वैसा ही काम गाय बचाने के लिए 'सर्वधर्म गौरक्षा संघ' ने किया। फैज़ और उसके साथी देश भर में यात्राएँ करके, पत्र लिखकर, फोन से बात कर-कर के संघ ने देश भर के लगभग पचास हज़ार से ज़्यादा गौ सेवकों को तैयार कर लिया। ये सबके सबके सब अपने खर्चे पर राजधानी पहुँचने के लिए राजी हो गए।

'सर्वधर्म गौरक्षा संघ' के संयोजक घावरीजी इस बात से प्रसन्न थे कि आज के इस व्यावसायिक दौर में भी इतने लोग गाय के प्रश्न पर करो या मरो अभियान से जुड़ने के लिए सहमत हो गए। उन्हें पक्का यकीन हो गया कि सरकार इतने लोगों के 'राजधानी कूच' से हिल जाएगी और गौवध पर प्रतिबंध लग जाएगा।

एक दिन की बात है। घावरीजीऔर मुजफ्फर भाई बैठे भावी रणनीति पर चर्चा कर रहे थे कि खुफिया विभाग का अधिकारी सुदीपकुमार मिलने आ गया। अचानक किसी अनजान व्यक्ति को सामने पाकर वे एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। सामने वाले व्यक्ति ने मुसकराते हुए अपना परिचय दिया -

''मैं सुदीपकुमार हूँ। आईबी में काम करता हूँ।''

''ओह, तो आप जासूसी करने आए हैं!'' घावरी मुसकराए, ''पूछो भाई, क्या पूछना चाहते हो ?''

सुदीपकुमार संकोच में पड़ गया और बोला, ''आप लोगों के आंदोलन से सरकार विचलित है। मुख्यालय से हमारे पास मैसेज आया है कि पता करो कितने लोग आने वाले हैं और क्या-क्या कार्यक्रम है। आप अगर बता देते तो मैं ऊपर भेज देता।''

''कार्यक्रम ही ऊपर भेजना है या हम लोगों को भी 'ऊपर' भेजने की तैयारी है?'' मुजफ्फर भाई हँसते हुए बोले। सुदीपकुमार की ज़ुबान लड़खड़ा गई, ''नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं। हमें तो बस आँकड़े ही चाहिए, ताकि दिल्ली में वैसी सुरक्षा व्यवस्था की जा सके। तो... कितने लोग पहुँचेंगे राजधानी ?''

''देखिए, हमारा लक्ष्य तो है कि एक लाख लोग आएँ।'' घावरीजी ने गंभीर होकर कहा, ''कोशिश यही है, लेकिन अगर इतने लोग न आ सके तो मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि कम से कम पचास हज़ार तो आएँगे ही आएँगे। अब हकीकत में कितने पहुँच पाते हैं, यह तो उसी दिन पता चलेगा।''

''कोई तारीख तय की है क्या ?''

''हाँ-हाँ भाई, नोट कर लो तारीख भी तय है - सात नवंबर। इसी दिन हम लोग राजधानी में मिलेंगे और सरकार पर दबाव डालेंगे कि वह गौहत्या पर पूरे देश में पूर्ण प्रतिबंध लगाए। यह बात भी नोट कर लो कि इस बार हम लोग पीछे नहीं हटेंगे। चाहे हमारी जान चली जाए। गाय बचेगी या हम बचेंगे। हमारा एक ही नारा है - गौ वध बंद हो... बंद हो।''

सुदीपकुमार घावरीजी की बातें नोट करता रहा। फिर बोला, ''बहुत-बहुत धन्यवाद। क्या करें नौकरी का सवाल है। जानकारी भेजनी है। इसी बात की तनख्वाह मिलती है हमको सर!''

''कोई बात नहीं, तुम अपना काम करो, हम अपना करेंगे, जिस तरह गुलामी के दौर में नमक के सिपाही और दरोगा हुआ करते थे। सरकार चलाने के लिए कुरसी में बैठे लोगों को यह सब करना ही पड़ता है। दुख इस बात का है कि सरकार अपने बचाव के लिए खुफिया जानकारी एकत्र करती है। वह यह नहीं सोचती कि जनता की जो माँग है उसे मान लिया जाए। सरकार खुफियागीरी करके सुरक्षा-बल जमा करती है, क्योंकि उसमें अपना आत्मबल नहीं होता। एक लाख लोग आएँगे, तो इतना बल लगाना पड़ेगा और पचास हजार आएंगे तो इतना बल। फिर जब भीड़ एकत्र हो जाती है, तो यही व्यवस्था कुछ ऐसी साजिश करती है कि भीड़ भड़क जाती है। पुलिस धक्का-मुक्की करती है। जब लोग पुलिस के दुर्व्यवहार से उत्तेजित हो जाते हैं, तो वह पुलिस को भला-बुरा कहने लगती है। धक्का-मुक्की होने लगती है। तब पुलिस ऊपर वालों को बताती है कि साहब, भीड़ अनियंत्रित हो रही है, क्या करें? हम पर पत्थर फेंक रही है, लगता है हमारी जान ले लेगी, आदेश करें! बस हो जाता है काम। भीड़ से निपटने का एक ही तरीका है लाठी-चार्ज और गोली। ऊपर से आदेश आता है फायर... और हमारी पुलिस के भीतर में जलियाँवाला बाग काँड वाले डायर की आत्मा प्रवेश कर जाती है। फिर देखते ही देखते लाशें बिछ जाती हैं।''

घावरीजी ने अपने मन की भड़ास निकाल ली और बोले, ''जाओ भाई, तुम तो अपना काम करो। अरे हाँ, ये तो बताओ, तुम गाय का दूध पीते हो न ?''

''जी हाँ, रोज पीता हूँ।'' सुदीपकुमार बोला।

''और मलाई भी खाते हो, रोटियों पर घी चुपड़ते होगे?''

''जी हाँ, जी हाँ।'' सुदीप कुछ-कुछ हकलाते हुए बोला।

''हूँ। भाई मेरे, तब तो तुमसे मेरा व्यक्तिगत आग्रह है कि तुम भी गाय को बचाने के इस अभियान में शामिल हो जाओ।''

सुदीपकुमार मौन हो गया। आँखें नीची करके बैठा रहा।

''देखो भाई, हम लोग तो गाय के लिए मर-मिटने की कसम खा चुके हैं। हम चाहते हैं कि तुम लोग जो गाय का दूध पीते हो, मलाई खाते हो, घी पीते हो, दवाई के रूप में गो मूत्र भी लेते हो। उसी गाय के बारे में सोचो और सरकार को लिखो कि इस देश के लोगों का दिल जीतना है, तो गो वध को रोक दो। बना दो कानून। खैर, तुम तो छोटे-से अफसर हो। तुम ऐसा कुछ लिख भी नहीं पाओगे। तुम तो अपना काम करो और दिल्ली को सूचित कर दो कि पचास हजार से

लेकर एक लाख लोग पहुँचेंगे। सबके सब आर या पार की लड़ाई लड़ने के लिए आ रहे हैं। इनमें से कोई भी मौत से डरकर पलायन नहीं करेगा। गो भक्त लाठी-गोली खाएँगे और आगे बढ़ते जाएँगे। अच्छा... तुम चलो। तुम्हारे काम की बस, इतनी ही सूचना है।''

सुदीपकुमार चला गया। जाते-जाते सोच रहा था कि ये लोग तो बड़े जुनूनी हैं। एक बार तो उसके मन में आया कि सूचना ही न भेजी जाए। कहीं ऐसा न हो कि प्रदर्शनकारियों का बड़े पैमाने पर दमन हो जाए। लेकिन सूचना तो देनी ही पड़ेगी, वरना नौकरी जाएगी।

सुदीपकुमार गो सेवकों के जुझारू तेवर देखकर भावुक हो गया था, लेकिन बहुत जल्द ही उसने भावुकता पर विजय प्राप्त कर ली और अपनी 'ड्यूटी' निभाते हुए सारी जानकारी दिल्ली भेज दी।

घावरीजी और मुजफ्फर भाई 'सर्वधर्म गौरक्षा संघ' के साथियों के साथ जनमत बनाने का काम करते रहे। संघ के लोग जहाँ भी जाते, उनको अच्छा समर्थन मिलता। तारीफों के पुल बाँधते रहे लोग -

''वाह, गौमाता के लिए कितना बड़ा काम हो रहा है...''

''हम लोग आपके साथ हैं..''

''गाय के लिए जान हाज़िर है...''

''गाय नहीं तो कुछ नहीं...''

''मुझसे जो बन पड़ेगा करूँगा...''

''जितना चाहे चंदा ले जाएँ...''

आदि-आदि। यह और बात है कि

जिसने कहा था, ''गाय के लिए जान हाज़िर है'' वह ऐन मौके पर कहीं लापता हो गया।...

जिस करोड़पति सेठ ने भरोसा दिलाया था कि ''जितना चाहे चंदा ले जाएँ'', उसने केवल सौ रुपए देकर अपनी जान छुड़ाई।...

जिसने वादा किया था कि ''गौ माता के लिए बड़ा काम हो रहा है'' वह अपने किसी छोटे काम के नाम पर ऐसा गायब हुआ कि 'सर्वधर्म गौरक्षा संघ' वाले उसे खोजते ही रह गए।...

'सर्वधर्म गौरक्षा संघ' ने मीडिया से संपर्क किया ।ज्यादा नहीं तो कुछ असर हुआ। छोटी-मोटी ख़बरें अखबारों में छपने लगीं। टीवी चैनलों पर भी कभी-कभार ख़बर आ जाती थीं। इस सबसे आम आम लोगों के मन में भी गाय के प्रति आकर्षण बढ़ने लगा। माताएँ घर के बाहर घूमने वाली गायों को घर का बचा-खुचा खाना खिलातीं और उसके शरीर पर हाथ फिरा कर 'पुण्य-लाभ' कमातीं। 'गौ रक्षा संघ' ने टी शर्ट भी तैयार कर ली। टी-शर्ट पर गाय का चित्र बना था और लिखा था, 'गाय विश्व की माता है' ...गौ वध बंद हो। 'काउ इज़ द ग्लोबल-मदर, सेव द काउ' दो तीन तरह की टी-शर्ट बनाई गई थी। उसमें तरह-तरह के नारे लिखे थे। किसी पर लिखा था 'काउ इज़ अवर नेशनल एनीमल' तो किसी पर 'आई लव काउ'।

टी-शर्ट बनाने का सुझाव 'संघ' के सदस्य धनराज का था। एक पंथ दो काज हो गया। टी शर्टों की कीमत ज्यादा नहीं थी। मात्र सौ रुपये में तैयार हो गई थी, इसलिए खूब बिकी। कुछ रिक्शा-ऑटो चालकों को निःशुल्क बाँटी गई। आलम यह था कि पूरे शहर में गाय वाली टी-शर्ट नज़र आने लगी। ये शर्टें देश के अनेक शहरों तक पहुँच गईं। धनराज गद्गद था।

लोगों ने कहा - ''इसे कहते हैं दिमाग़। इन सेठों से कोई सीखे कमाई। समाज सेवा भी हो गई और धंधा भी हो गया, बहुत खूब।''

'सर्वधर्म गौरक्षा संघ' का प्रतिनिधि मंडल मीडिया वालों से मिला।

अख़बार के संपादकों और रिपोर्टरों से 'सपोर्ट' का आग्रह किया। चैनल वालों के पास भी गए कि भाई एक स्टोरी कसाईखाने पर भी बनाओ, लेकिन बात बनी नहीं। 'संघ' वाले जहाँ भी गए, विज्ञापन की माँग हुई।

'क्रांतिदूत' अख़बार के दफ्तर में जब मुजफ्फर भाई और घावरीजी पहुँचे तो संपादक ज्ञानपति छूटते ही बोला- ''वह सब तो ठीक है साहब, लेकिन आप लोगों की ख़बरों से हमारे अखबार का जो 'स्पेस किल' होगा, उसकी भरपाई कौन करेगा?''

''मैं कुछ समझा नहीं,'' मुजफ्फर भाई बोले, ''हमारी न्यूज़ से 'स्पेस किल' होगा कि 'हिट' होगा?''

''स्पेस किल ही होगा भाईजी।'' संपादक ज्ञानपति ने मुसकराते हुए कहा - ''बुरा मत मानिएगा, आपको हम लोग जितना स्पेस देते हैं, उसकी जगह अगर मर्दानगी बढ़ाने वाले या विभिन्न फ्लेवर वाले कंडोमों का विज्ञापन छापते, तो ज्यादा कमाई हो जाती। आजकल हम लोग लिंगवर्द्धक यंत्रों के विज्ञापन भी छापते हैं। शारीरिक ताकत बढ़ाने वाले विज्ञापनों के बीच एक-दो बार जनहित ठीक है। बार-बार तो इट इज़ नॉट पॉसिबल। सो, हम लोग विज्ञापन पर कंसन्ट्रेट करेंगे।''

''लेकिन यह गाय का सवाल है।''

''यह हमारे सामने विज्ञापन और आय का सवाल है।''

''गाय का सवाल, देश का सवाल है।''

''लेकिन विज्ञापन का सवाल हमारे सेठ का सवाल है। इसलिए 'नो एड, नो न्यूज़'।''

''आप तो संपादक हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि संपादक 'ओपीनियन मेकर' होते हैं, 'थिंक टैंक' होते हैं, लेकिन आप तो 'विज्ञापन बैंक' लग रहे हैं। आप जैसे संपादक और आ गए तो समाज में सोशल मुद्दे सामने ही नहीं आएँगे। क्या आजकल पत्रकारिता का यही 'ट्रेंड' है ?'' घावरीजी भड़क गए, ''मैं आपके मालिक से बात करूँगा। देखता हूँ, हमारी खबरें कैसे नहीं छपतीं।''

''शौक से बात कीजिए।'' ज्ञानपति मुसकराते हुए बोला, ''मैं जो कुछ कह रहा हूँ, सेठ की ही जुबान कह रहा हूँ।''

घावरी जी चुप हो गए। मुजफ्फर भाई ने इशारा किया तो वे उठ गए और बाहर निकल आए।

''अपने जीवन के इतने वर्षों में मीडिया का इतना भयानक पतन मैंने कभी नहीं देखा था। ये लोग तो अब 'पैड न्यूज़' छापने लगे हैं।'' घावरीजी बोले, 'जर्नलिज़्म एक बड़ी चीज़ है। समाज सुधारने और जागरण का एक हथियार है। लेकिन जब पैसे लेकर खबरें छापी जाएँगी, तो क्या होगा? विभिन्न लोगों के बेहतर काम प्रकाश में नहीं आ सकेंगे और शातिर लोगों के आडंबरी कार्य छाए रहेंगे।''

''जब से राजनीतिक दलों ने चुनाव के समय मीडिया वालों से 'पैकेज डील' कर लिया, तभी से अब हर मामले में 'पैकेज' चल रहा है।'' मुजफ्फर भाई बोले, ''पिछले चुनाव में करोड़पति प्रत्याशी जीत गए और बेचारे निर्धन किस्म के प्रत्याशी पराजित हो गए। ये हाल है। मीडिया के मुँह में पैसे का खून लग गया है।''

''लेकिन पहले ऐसा नहीं था मुजफ्फर भाई, मैंने पं. माखनलाल चतुर्वेदी के बारे में पढ़ा है।' घावरीजी बोले, 'एक बार उनके दर्शन भी कर चुका हूँ। उनकी कविताएँ भी सुन चुका हूँ। उनको लोग 'एक भारतीय आत्मा' भी कहते थे। वे सचमुच भारतीय आत्मा थे। देश जब गुलाम था। उस समय की बात है। एक दिन उन्हें पता चला कि सागर शहर के पास रतौना नामक स्थान में एक 'कसाईखाना' खोलने का निर्णय हुआ है। बस, क्या था, दद्दा ने अपने समाचार पत्र 'कर्मवीर' में खबरों की सीरीज़ शुरू कर दी। हर अंक में अँगरेज़ सरकार के खिलाफ लिखने लगे। नतीजा यह हुआ कि धीरे-धीरे लोग एकजुट होने लगे और सड़कों पर उतर आए। जन-विरोध को देखते हुए अंगरेज़ सरकार को कसाईखाने की योजना रद्द करनी पड़ी। तो यह होती है कलम की ताकत। ऐसे होते थे संपादक। कहाँ हैं आज दद्दा माखनलालजी जैसे संपादक? क्यों नहीं देवनार जैसे कसाईखानों के विरुद्ध मीडिया में अभियान चलता?''

''माखनलालजी जैसे कवि-पत्रकार सदियों में एकाध बार ही होते हैं।' मुजफ्फर भाई ने कहा, 'मुझे भी उनकी कविता याद है, ''चाह नहीं मैं सुरबाला के गहने में गूँथा जाऊँ....मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पर जाएँ वीर अनेक।''

घावरीजी बोले, ''ऐसी अनके कविताएँ लिखी हैं दद्दा ने। पहले पत्रकार साहित्यकार भी होते थे। अब तो पत्रकार ठीक से पत्रकार भी नहीं हो पाते। दद्दा कहते थे कि अगर पत्रकार एक बार बिक गया तो वह दुबारा सिर नहीं उठा सकता। लेकिन अब तो पत्रकार रोज बिकते हैं और कहते हैं यह तो 'डील' है। पत्रकारिता अब 'मिशन' नहीं, 'प्रोफेशन' है। इसलिए इसमें सब जायज है।''

'क्रांतिदूत' के बाहर लगे ठेले पर चाय पीते-पीते बातचीत चल रही थी। दोनों की बातें सुनकर वहाँ बैठे तीसरे आदमी ने कहा, ''साहब, आप लोगों की बातें सुनकर मैं भी कुछ कहना चाहता हूँ। इफ यू डोंट माइंड!''

घावरीजी बोले- ''आप नि:संकोच अपनी बात कहें।''

''संपादक तो अब दलाल है, दलाल। मालिक का दल्ला है। वो नोटों का गल्ला है। अब तो जन-जन में इसी बात का हल्ला है। वह अपने दिमाग से नहीं चलता, बल्कि मालिक जैसा चाहता है, वैसा करता है। इसलिए अब संपादक नाम की संस्था की चर्चा छोड़ दीजिए। वह तो खत्म हो गई है।''

''उस आदमी की बात में सच्चाई थी।' घावरीजी बोले, ''ठीक कहते हो भाई, बताओ यह ससुरा-बेसुरा संपादक कहता है कि पैसे दो, तब न्यूज़ छापेंगे। अरे, क्या मैं अपनी बेटी की शादी का विज्ञापन छपवाने गया था, जो पैसे दे दूँ? हुँह!''

''तो...क्या अब वैसे संपादक नहीं होंगे?''

''उम्मीदें खत्म नहीं होनी चाहिए। यह वीरप्रसूता भूमि है।'' मुजफ्फरभाई के सवाल पर घावरीजी बोले, ''लेकिन अभी तो सन्नाटा है। दिमागी तौर पर दिवालिया संपादक गाय के सवाल से बढ़कर सेठ के फायदे के सवाल को समझता है, उससे क्या उम्मीद करोगे? अगर आज मीडिया एक हो जाए और रोज गो हत्या के खिलाफ खबरें चलाए, देवनार और अल-कबीर जैसे कसाईखानों में हो रही निर्ममताओं की जानकारी दे तो मेरा दावा है कि सरकार को गो वध कानून को लागू करना ही पड़ेगा। लेकिन अब इस मीडिया की प्राथमिकता ही दूसरी है। वह तो 'सर्कुलेशन/टीआरपी(टेलीविज़न रेटिंग प्वाइंट)' के चक्कर में रहता है। उसे हीरो-हीरोइनों के प्रेम-प्रसंगों में ज्यादा रुचि है, माफिया-डॉन क्या कर रहे हैं, यह बताने में मज़ा आता है या फिर नाग-नागिन के जोड़े के पुनर्जन्म की कहानी को बता कर अंधविश्वास फैलाने के काम में लगा रहता है। मीडिया के लिए गाय को बचाने का सवाल मज़ाक का विषय लगता है।''

''गाय ही क्यों? हर वह चीज़ अब मज़ाक का विषय है जो मनुष्य के निर्माण में सहायक है।'' मुजफ्फर ने कहा, ''अब देखिए समलैंगिकता को 'ग्लोरीफाई' किया जा रहा है। 'लिव इन रिलेशनशिप' को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसलिए घूमरलाल जी, मुझे तो लग रहा है कि हम मीडिया के चक्कर न लगाएँ और पर्चे पोस्टर छापकर प्रचार करें। जब देश में अखबारों की संख्या नहीं के बराबर थी, तब भी तो लोग एक-दूसरे तक अपनी बात पहुँचा ही देते थे।''

''हाँ, यह ठीक है। हम लोग पर्चे छापते हैं।'' घावरीजी बोले - ''गौ माता को केंद्रित करके बहुत से लोग कविता-कहानियाँ लिख रहे हैं। इनका प्रकाशन होना चाहिए। देखो, मुझे कोरियावाले जनकवि सतीश उपाध्याय की एक 'गो चालीसा' मिली है। इसे हम 'सर्वधर्म गो रक्षा संघ' की ओर से छपवा देंगे।''

इतना कह कर घूमरलाल जी ने अपनी जेबें टटोली, ''हाँ, मिल गई। ये रही। इसे छपवाना है।''

घावरीजी कागज को जेब में रखने लगे तो मुजफ्फर भाई ने कहा, ''इसे सुना दीजिए। देखिए, आसपास कितने लोग बैठे हैं। सबको आनंद मिलेगा।''

घावरीजी ने ठेले पर बैठे लोगों पर एक नज़र डाली और मुसकरा कर बोले – ''क्यों भाई, सुना डालूँ? बुरा तो नहीं मानोगे?''

सभी ने कहा –''नहीं-नहीं, सुनाइए। हम सुनना चाहते हैं।''

घावरीजी ने एक पेज पर छपी गो चालीसा का हनुमान चालीसा की तरह वाचन शुरू कर दिया – ''बोलो...गौ माता की जय! ध्यान और पूरी श्रद्धा के साथ सुनना भाई।''

सारे लोग घावरी जी की ओर एकटक निहारने लगे तो उन्होंने अपनी जेब से एक छोटी-सी पुस्तिका निकाली। वह बिल्कुल 'हनुमान चालीसा' के आकार की थी। घावरी जी ने उसे पढ़ना शुरू किया-

''दोहा : सब देवों का वास है, जहाँ मुक्ति का धाम।
कामधेनु माता तुझे, शत-शत मेरा प्रणाम।।
धेनू पूजन से मिले, धन औ तन बलवान।
कामधेनु धनदेवि है, समझें तो उत्थान।।
चौपाई : जो निशिवासर गऊ को ध्यावे, पितर-देवता खुश हो जावे।
तू है विश्व-मातृ कल्यानी, तुझसे पुष्ट बने हर प्रानी।
दुग्ध तेरा अमृत की धारा, जिसने हर मानव को तारा।
पंचगव्य का फल है पावन, हर दुखियन का दर्द नसावान।
जो गो वध कर लाभ कमाए, जीवन में सुख कभी न पाए।
गौ की सेवा ईश्वर पूजा, इससे सुंदर काम न दूजा।।
गो की रक्षा देश की रक्षा, समझो प्रभु गोपाल की इच्छा।।
दोहा : देव रहें जिस देह में, उसको मंदिर जान।
जो नर गौ सेवा करे, वो नर बड़ा महान।।
जहाँ नहीं है गाय तो, है वो गाँव मसान।
श्रीहीन हर नर रहे, रिक्त रहे खलिहान।।...''

बड़े ही मनोयोग से घावरी जी चालीसा सुनाते रहे। फिर अंत में बोले, ''बोलो सब जन, गौ माता की...

सबने कहा-'जय'।

गौ-चालीसा सुनकर सबने तालियाँ बजाई।

घावरीजी बोले – ''अच्छा भाई, हम अब चलते हैं। ध्यान रहे, गौवध को रोकना है। अगर कहीं गायों की तस्करी हो रही हो, तो उसे फौरन रोको। उसे पुलिस में दो। यह हमारा कर्तव्य है। कसम खाएँ कि गौ मांस नहीं खाएँगे। मैं तो कहता हूँ कि हम सब शाकाहारी बनें।''

इतना बोल कर घावरीजी और मुजफ्फर भाई चले गए, लेकिन ठेले पर बैठे दूसरे लोगों के लिए चर्चा का विषय बन गए।

एक बोला – ''इस बूढ़े में गज़ब का जोश है।''

दूसरे ने कहा – ''ये मन से जवान हैं। ऐसे बूढ़े लोग हर नेक काम में ज्यादा सक्रिय नज़र आते हैं। युवा पीढ़ी ऐसे बुजुर्गों से बहुत कुछ सीख सकती है। आजकल तो कुछ युवा नुमाइंदे मॉलों, पिज्ज़ा-बर्गरों या किसी ऐसे सिली पांइट पर ही नज़र आते हैं, जहाँ केवल रंगीनियाँ है, समय की बर्बादी है। जहाँ गाय की नहीं, 'गे' (समलैंगिक)की चर्चा होती है। या फिर इसी तरह की घटिया बातें। खैर, गाय हमारी माता है। इसे बचाना ही चाहिए।''

तीसरे ने कहा – ''गाय बचेगी तो हम बचेंगे। गाय है। बैल है। जितने भी उपयोगी जीव हैं, उनको बचाना है। बैल खेती के काम आते हैं लेकिन अब तो लोग ट्रैक्टरों के पीछे भाग रहे हैं। इसलिए बेचारे बैल बेकार होते जा रहे हैं। फिर एक दिन वे कसाईखाने भेज दिए जाते हैं। हमें ट्रेक्टर नहीं, बैलों पर ध्यान देना है। उनका इस्तेमाल करना है। ऐसा करने से हमें कर्जे से भी मुक्ति मिलेगी भाई।''

चौथा बोला – ''सच कह रहे हैं आप। बैल बेकार हो रहे हैं और गायें बीमार पड़ रही हैं। गायों को पॉलीथिन जूठन डालकर फेंकने की कुप्रथा बंद होनी चाहिए। इस देश की गायें अपने पेटों में दूध के साथ शहर भर का पॉलीथिन भी ले कर घूमती रहती है।''

पहला बोला – ''भाई, हम लोगों को भी गो सेवकों की मदद करनी चाहिए।''

दूसरे ने कहा-''तुमको क्या लगता है कि इस देश में गौ हत्या पर रोक लगेगी भी या नहीं?''

तीसरा बोला-''मुझे तो नहीं लगता कि लग सकेगी। अब हमारे समाज में ऐसे लोगों की संख्या कुछ ज़्यादा बढ़ गई है, जिनके लिए हिंसा अब चिंता और चर्चा की विषय ही नहीं है। उस समाज में जहाँ बहुसंख्यक लोगों की दिनचर्या हिंसा से शुरू होती है और शुभरात्रि के पहले भी हिंसा का भोग लगता है, वहाँ ऐसी चर्चाएँ बेमानी होती जा रही हैं। गाय या किसी भी जीव की हत्या पर बातें करना अब चंद सिरफिरे लोगों का शगल बन कर रहा गया है। ये लोग अहिंसा-फहिंसा, जीवदया, मानवता आदि को लेकर फालतू चिंताएँ करते रहते हैं।''

''जो भी हो।' पहले ने काव्यात्मक भाषा में कहा, 'दरअसल ऐसे लोग ही हर काल में कोयल की कूक की तरह कुहुकते हुए हरेपन को बचाए रखते हैं। खैर, देखें क्या होता है। लेकिन मैं आशा नहीं छोड़ता। देख लेना, एक दिन ये विचार के पीले पत्ते फिर हरे होंगे।''

तीसरे ने फिर कहा-''यही आशा हम सदियों से देखते चले आ रहे हैं। कितने आए और गए, मगर हिंसा और अहिंसा का द्वंद्व बरकरार रहा। हम और कुछ करें न करें, लेकिन जो लोग अहिंसा के पक्ष में खड़े हैं, अपना समय दे रहे हैं, उन लोगों को नैतिक समर्थन तो दे ही सकते हैं।''

सब लोग इस बात पर सहमत नज़र आए, फिर अपने-अपने रास्ते चल पड़े।

बारह

सर्वधर्म संघ के साथ-साथ 'मुस्लिम गौ रक्षा संघ' के सदस्य भी पूरे शहर में गौ माता के महत्व को बताने के लिए जगह-जगह नुक्कड़ सभाएँ लेने लगे। संघ की शाखाएँ दूसरे शहरों में भी बनने लगीं। मुस्लिमों के मन में गाय के प्रति भावनात्मक लगाव तो था ही। कुछ लोगों को छोड़ दिया जाए, तो ज्यादातर लोग गो-हत्या के खिलाफ थे। संघ के सदस्य जहाँ भी जाते, वहाँ पहले भाषण देते और सवाल-जवाब का दौर शुरू करते। जिसको जो पूछना हो, पूछे। मुजफ्फर भाई के साथ फैज़, दिलदार हुसैन, असगर, कासिम, हैदरी, रुसवा, जावेद, उस्मानी, अख़्तर की टीम चलती। कभी-कभी ये लोग एक साथ निकलते, तो कभी-कभी दो-दो का ग्रुप भी बना लेते थे।

मोमिनपुरा में मुजफ्फर भाई नुक्कड़ सभा लेने पहुँचे। उनके साथियों ने पहले ढपली, ढोल बजा कर गीत गाते हुए मोहल्ले का चक्कर लगाया। सारे लोग जनकवि पंडित सतीश उपाध्याय का लिखा गौ-गीत गाते, तो उसकी धुन सुनकर बच्चे-बूढ़े सब झूमने लगते थे-

मेरी तेरी सबकी ही यह माता है
मैया अपनी गैया भाग्य विधाता है
इसको मारें ना हम काटें, इसे करें हम प्यार
इसके दूध, मूत्र, गोबर से, स्वस्थ बने संसार
उसकी किस्मत खिल जाती है, पास जो इसके आता है
मेरी तेरी सबकी ही यह माता है
मैया अपनी गैया भाग्य विधाता है।

संगीत की स्वर-लहरियों ने माहौल बना दिया। बस, भीड़ पीछे-पीछे चली आई। बीस-पच्चीस लोग एकत्र हो गए, तो मुजफ्फर भाई ने कहना शुरू किया -

''दोस्तो, आप लोग हमारे बैनर को देख रहे हैं 'मुस्लिम गौ रक्षा संघ'। इसी से आपको एक बात समझ में आ गई होगी कि हमारा मक़सद क्या है। गाय को हम लोग हिंदुओं के नज़रिए से नहीं देखते। गाय जितनी हिंदू भाइयों की है, उतनी हमारी है। हम लोग भी रोज गाय का दूध पीते हैं। इसलिए वह हमारी भी माता है। गाय की रक्षा के लिए लोग निकले हैं, इसका मतलब नहीं कि हम हिदुओं के समर्थक हो गए। उनका अपना काम है, हमारा अपना। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि हम मुसलमान गाय की रक्षा और उसकी सेवा करके अपने ही पूर्वजों की परम्परा को निभाने की कोशिश कर रहे हैं। आपको शायद पता नहीं होगा कि मुगल शासन काल में पूरे देश में गौ हत्या पर रोक थी। पूरे दो सौ साल तक गौ वंश की हत्या पर प्रतिबंध था। अँगरेज़ों के आने के बाद ही गो हत्या का सिलसिला-सा चल पड़ा और दुर्भाग्य यह कि इस आज़ाद मुल्क में भी गौ हत्या का दौर जारी है। जबकि आज़ादी के बाद ही फौरन बंद हो जाना चाहिए था।''

मुजफ्फर भाई के साथ खड़े असगर ने कहा, ''बाबर ने इस देश के लोगों की भावनाएँ समझी थीं, इसीलिए हुमायूँ के लिए तैयार वसीयतनामे में उसने साफ-साफ कहा था कि बेटा, इस देश के हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं की इज्जत करना और गौ हत्याएँ मत होने देना। बाबर गौ मांस नहीं खाता था। पिता की सीख लेकर हुमायूँ ने भी कभी गौ मांस नहीं खाया। एक समय की बात है। हुमायूँ ईरान जा रहा था। रास्ते में ऐसा कुछ हुआ कि एक दिन खाना ही नसीब नहीं हुआ। रास्ते में पड़ाव डाला गया। हुमायूँ को भूख लगी थी। तभी उसे पता चला कि उसके सौतेले भाई ने अपने सेवकों को कामरान के पास भेज दिया। सेवक खाना लेकर लौटे। दस्तरखान सज गया।...

..हुमायूँ ने खाने को देखा तो उसे शक हुआ कि यह तो गौ मांस है। उसने सेवकों से पूछा तो एक ने कहा, 'जहाँपनाह, आपने ठीक समझा। यह गौ मांस ही है। आपके लिए खास तौर पर तैयार किया गया है'।...

...इतना सुनना था कि हुमायूँ विचलित हो गए और बोल उठे - 'हाय-हाय रे कामरान, क्या पेट भरने का बस, यही एक तरीका बचा है? तू मुझे अपनी मुकद्दस माँ का गोश्त खिला रहा है? तुझमें क्या इतनी भी कुव्वत नहीं कि तू बकरियाँ खरीदता?' इतना बोल कर हुमायूँ उठ खड़ा हुआ और भूखा ही सो गया।''

मुजफ्फर भाई ने एक नज़र इकट्ठी हुई भीड़ पर दौड़ाई और देखा कि लोग मंत्रमुग्ध उसे सुन रहे हैं। उसने कहना जारी रखा ''अकबर के शासन काल में भी गो वध पर रोक लगी हुई थी। आखिरी बादशाह बहादुरशाह ज़फर बहुत बड़े शायर थे। उन्होंने साफ-साफ हुक्म जारी किए थे कि जो मुसलमान बकरीद पर गाय की कुरबानी करेगा, उसे तोप उड़ा दिया जाएगा। तो मुगल बादशाहों ने गो वध रोका, उसकी कुर्बानी पर रोक लगाई। मोहम्मद साहब ने गाय-बैलों से मोहब्बत करने की बात की। इसलिए हम लोगों का कहना है कि आप लोग भी गाय की कुरबानी न होने दें। जो कोई ऐसा करता है, उसे रोकें।''

मुजफ्फर और असगर के विचार सुनकर वहाँ मौजूद बच्चे, बूढ़े और औरतें सबको सुखद आश्चर्य हुआ। तभी वहाँ मौलाना रऊफ आ गए। उन्होंने कहा- ''तुम लोगों की बातें सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि हमारे समाज में तुम-जैसे नौजवान हैं जो एक बड़ा ही नेक काम कर रहे हैं। मैं भी तुम लोगों को कुछ बताना चाहता हूँ। बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर से लेकर बहादुरशाह तक सबने ही गाय को बचाने वाले फरमान जारी किए थे लेकिन और दूसरे बादशाहों ने भी गो हत्या पर रोक लगाई थी। बहादुरशाह ज़फर ने तो यहाँ तक कह दिया था कि गाय की हत्या किसी इंसान की हत्या समझी जाएगी। फिरोजशाह तुगलक के फरमानों से लोग परेशान हो जाते थे। आज भी अगर कोई सरकार गलत निर्णय करती है तो हम लोग कहते हैं कि 'तुगलकी' फरमान मंजूर नहीं। उस सनकी किस्म के बादशाह तुगलक ने भी गो वध रोका था। काश्मीर के बादशाह जेनुल आबदीन ने पूरे इलाके में गो वध पर रोक लगाई थी। वह तो इतना बड़ा धार्मिक था कि मत पूछो। कुछ मुसलमानों ने मंदिर तोड़कर मसजिदें खड़ी

कर दी थीं। जेनुल आबदीन ने उनको तुड़वा कर वहाँ फिर से मंदिर बनवा दिया था। अरे, कई लोग हैं, जिन्होंने हिंदुओं की भावनाओं से खिलवाड़ नहीं किया। सुल्तान नसीरुद्दीन खुसरो, फारुख शेख, बादशाह आलम, बादशाह आदिल शाह जैसे सैकड़ों नाम हैं, जिन्होंने इस बात की पूरी कोशिश की थी कि गौ हत्या न होने पाए। यही है हमारी परम्परा। तो....चिंता मत करो। हम सब तुम्हारे साथ हैं।''

मौलाना रऊफ की बात सुनकर सबने खूब तालियाँ बजाईं। तालियाँ सुनकर वहाँ खड़े एक बुजुर्ग भी आगे आए। ये थे इकबाल अहमद। उन्होंने कहा – ''गाय का सवाल हिंदुओं का सवाल बिल्कुल नहीं है। ठीक है कि वे गाय की पूजा करते हैं, उसको माता मानते हैं। यह उनकी आस्था है, लेकिन गाय समूची दुनिया की है। आप लोगों को बहुत पुरानी बात बता दूँ कि लगभग नब्बे साल पहले रायपुर नगर पालिका में पार्षद पं. रविशंकर शुक्ल ने जब गो वध पर प्रतिबंध का प्रस्ताव रखा था, तो उसका समर्थन करने वाला कोई हिंदू नहीं, एक मुसलमान था। वे थे अजीजुद्दीन भाई थे। भाटापारा में रहने वाले शायर अमीर अली 'अमीर' ने तो गाय की तारीफ में एक गीत भी लिखा था। 'अमीर' गौ शाला में ही रहते थे और दिन-रात गो सेवा में ही लगे रहते थे। तो भैया, हम लोग इन लोगों के ही वंशज हैं। इसलिए गौ रक्षा के लिए हम लोग हमेशा सावधान रहते हैं।''

मौलाना रऊफ के भाषण के बाद नुक्कड़ सभा समाप्त हो गई।

मोमिनपुरा के लोगों ने 'मुस्लिम गौ रक्षा संघ' के पदाधिकारियों को फूलमालाएँ पहनाईं। लगभग सभी लोगों ने अपनी-अपनी हैसियत के मुताबिक चंदा भी दिया। पाँच रुपए से लेकर पाँच सौ रुपए तक, जिसकी जैसी हैसियत।

मुजफ्फर भाई मुसकरा कर बोले – ''मोमिनपुरा ने तो संघ में जान ही फूँक दी।''

रऊफ बोले – ''आप लोग काम ही ऐसा कर रहे हैं। गाय के लिए काम करने का मतलब है, देश के लिए काम करना। आप लोग देशभक्त हैं। और हम लोग देशभक्तों की बड़ी कद्र करते हैं।''

'मुस्लिम गो रक्षा संघ' के लोग रोज किसी न किसी मोहल्ले में जाते और सभाएँ करते। बैठक लेते। पर्चे, पोस्टर, बैनर। सभी में गो रक्षा की बातें होती। किसी में अकबर का फरमान, किसी में बाबर का वसीयतनामा, तो किसी में विभिन्न मुगल बादशाहों द्वारा गो वध को रोकने के आदेशों का जिक्र।

धीरे-धीरे 'मुस्लिम गौरक्षा संघ' इतना लोकप्रिय हो गया कि जो नकली गौ भक्त थे और जो गौ शाला की आड़ में चंदे का धंधा कर रहे थे, या गौ सेवा आयोग के अनुदान हजम कर रहे थे, वे विचलित हो गए। बस, उन्होंने ज़हर फैलाना शुरू कर दिया। साम्प्रदायिक ज़हर, जैसे :

'ये मुसलमान लोग क्या जानें कि गौ सेवा क्या होती है'...

'गौ सेवा तो केवल हिंदू ही कर सकता है'...

'यह सब दिखावा है... वोट की राजनीति है...

इसके पीछे कोई गहरी चाल है'.... आदि-आदि।

मुजफ्फर भाई को जब पता चला कि गौ सेवा के कुछ मठाधीश उनका विरोध कर रहे हैं, तो उसे बड़ी खुशी हुई। उन्हें लगा कि उनकी मुहिम रंग लाएगी। विरोध होगा तो स्वाभाविक है कि ये लोग गो सेवा में कुछ ईमानदारी लाएँगे। अभी तो गौ सेवा एक आड़ है। गौ पालन तो करते हैं, लेकिन मकसद है कमाई। बड़े-बड़े सेठ, जो गो सेवा की दुकानदारी करते रहते हैं, गो सेवा के बहाने अपना काला धन सफेद करते हैं। ये सेठ गौ शालाओं को चंदा देते हैं, रसीदें लेते हैं, और फिर वही पैसा वापस उन्हीं के पास आ जाता है।

मुजफ्फर भाई घर पर बैठे इन्हीं सब बातों पर विचार करते हुए कुछ तनाव में थे। तभी घावरीजी आ गए। गौ सेवा के लिए साठ साल से समर्पित सेनानी। उनको देखते ही मुजफ्फर भाई खुश हो गए।

''आज इधर कैसे रास्ता भूल गए आप ?''

''बस...ऐसे ही, तुमसे मिलने का मन हुआ। और क्या चल रहा है ?''

''कोई खास नहीं। फैक्ट्री चला रहा हूँ और गो सेवा में लगा हुआ हूँ। आपको तो पता ही है कि हम लोगों ने एक संगठन भी बना लिया है।''

''हाँ, मुझे पता चला है।'' घावरीजी बोले, ''मुसलमान लोग जब सेवा के लिए सामने आएँगे तो हमारी साम्प्रदायिक सद्भावना मजबूत होगी। यह वक्त की आवाज़ है।''

''जी हाँ, जी हाँ, इसीलिए तो किसी शायर का ये कलाम अक्सर दोहराता रहता हूँ, आप भी सुनिए कि

सुबह मोहब्बत शाम मोहब्बत
अपना तो है काम मोहब्बत
हम तो करते हैं दोनों से
अल्ला हो या राम मोहब्बत...

...तो मेरा तो काम ही है मोहब्बत का पैगाम दूर-दूर तक पहुँचाना। देखिए, मैंने गाय को ध्यान में रखकर भी कुछ शेर कहे हैं। सुनिए,अर्ज किया है कि

गऊ माता को जो काटेगा समझो वह इनसान नहीं
कौन भला यह कहता है कि वो हिंसक- शैतान नहीं
कहता हूँ मैं बड़ी बात यह सुन ले अपना पूरा देश,
बिना गाय के देश हमारा सचमुच हिंदुस्तान नहीं
चलो बचाओ गौ माता को सबकी बड़ी ज़रूरत है
बिन इसके अपने भारत की दुनिया में पहचान नहीं
गाय बचेगी, देश बचेगा, हम भी सेहतमंद रहें,

बिन गैया के मेरे भैया बिल्कुल ही उत्थान नहीं''

''वाह-वाह, कमाल कर दिया तुमने तो, बड़े ही सुंदर शेर कहे हैं। ये मुझे दे दो। अभी मैं 'सर्वधर्म गौ रक्षा संघ' की स्थापना करने वाला हूँ। उसका जो बैनर बनेगा, उस पर लिखवाऊँगा: और हाँ, मैं उसी सिलसिले में तुम्हारे पास आया था। इस संगठन में तुम्हें मंत्री बनाना चाहता हूँ।'' घावरीजी बोले, ''मैं यह जानता हूँ कि तुम्हारा अपना संगठन है। वह संगठन अपनी जगह ठीक है, लेकिन हम चाहते हैं कि गाय को लेकर हम पूरे समाज को जागरूक बनाएँ। हर धर्म के लोगों को अपने साथ जोड़ें, तभी बात बनेगी। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी को जोड़ना है। इसीलिए तुम्हारे पास आया हूँ। तुम तैयार हो न?''

''अब आपका जैसा आदेश।'' मुजफ्फर भाई बोले, ''देख लीजिए, मेरे नाम पर किसी को आपत्ति न हो जाए। आजकल कुछ लोग मेरी गतिविधियों से परेशान हैं। मेरा गो-सेवक होना हजम नहीं हो रहा है। लोगों के पेटों में दर्द होने लगा है।''

''मुझे भी पता है। लेकिन मेरे भाई, तुम आलोचनाओं की रत्ती भर परवाह मत करो।'' घावरीजी मुसकराते हुए बोले, ''तुम्हारे निंदक बढ़ रहे हैं, इसका पहला मतलब तो यही है कि तुम काम अच्छा कर रहे हो। आजकल यही हो रहा है। 'देख न सकहि पराई विभूति' । कोई भला काम करता है तो लोगों के पेट में मरोड़ होने लगती है। लोग रिश्वतखोरी करके अपना घर भर रहे हैं, शहर के तालाब पाट रहे हैं, पेड़ काटे जा रहे हैं, सट्टा खिला रहे हैं, अवैध कब्जे कर रहे हैं। साले आईएएस अफसर और बाबू लाल हो रहे हैं। हराम की दौलत जमा कर रहे हैं। सफेदपोश व्यापारी कैबरे करवा रहे हैं : यह सब चलेगा लेकिन अगर कोई बेचारा गाय की सेवा में अपना तन-मन-धन लगा रहा है, तो यह बर्दाश्त नहीं होगा साहब। सोचेंगे कि हमारा कोई स्वार्थ है। हाँ, स्वार्थ है। क्यों नहीं है। जरूर है। हम गाय की सेवा करके मुक्ति पाना चाहते हैं। यही है हमारा स्वार्थ। कर लो, जो करना है। ऐसे लोगों को गाली देने का मन होता है। तो भाई मेरे, तुम चिंता मत करो। हम सब तुम्हारे साथ हैं। तुम सचिव बन जाओगे, तो मुझे सुविधा होगी।''

''तो क्या... आप अध्यक्ष बनना चाहते हैं?''

''नहीं-नहीं, मैं अध्यक्ष नहीं बनना चाहता।'' घावरीजी बोले, ''मैं पहले ही कई संस्थाओं से जुड़ा हूँ। मैं तो संरक्षक रहूँगा। सैलानी सिंह अध्यक्ष रहेंगे। उत्साही सरदार हैं। उनसे बात हो गई है। वे अपने से जुड़ना चाहते हैं। अच्छा है, उनका लाभ मिलेगा। गौटियाजी कोषाध्यक्ष बन जाएँगे। जोशीजी और जॉन भाई उपाध्यक्ष रहेंगे। जैन, बौद्ध, पारसी और अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग के लोग भी रहेंगे। मैं चाहता हूँ कि ऐसा संगठन बने, जो सही अर्थों में इस देश का प्रतिनिधित्व करे, क्योंकि सवाल गाय का है। गाय सबकी है। पूरे देश की है।''

''बड़ी अच्छी बात है। मैं तैयार हूँ। आप जैसा कहेंगे, वैसा होगा।''

घावरीजी उठ खड़े हुए और बोले - ''बैठक की सूचना दूँगा। आ जाना। मित्रों को भी साथ लेकर आना।''

घावरीजी अचानक रुके और पलट कर बोले-''मुजफ्फर भाई, बहुत दिन से मैं एक

बात सोच रहा था और पूछना भी चाहता था। आज मौका मिला है। यह तो बताओ कि तुम्हारे मन में गो सेवा का ख़्याल कैसे आया। तुम्हारे यहाँ तो ऐसा कोई माहौल भी नहीं है, फिर?''

घावरीजी की बात सुन कर मुजफ्फर भाई हँस पड़े और बोले, 'इसकी भी एक रोचक कहानी है। मैंने जिस जगह अपनी दूकान खोली है, उस जगह बहुत पहले एक कसाईघर था। अँगरेज़ों के ज़माने में। मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं थी। एक दिन मैं बैठे-बैठे कुछ काम कर रहा था, तभी पीछे के कमरे से किसी गाय के रंभाने की आवाज़ सुनाई दी। मैं चकराया, यहाँ गाय कहाँ से आ गई। हो सकता है, पीछे आँगन का गेट खुला रह गया हो। वहीं से घुस गई होगी।

...मैंने अपने नौकर से कहा, 'देख तो अब्दुल, लगता है भीतर गाय घुस गई है। भगा दे।'

..अब्दुल भीतर गया। उसे कहीं कोई गाय नज़र नहीं आई। वह आकर बोला, 'वहाँ तो कोई गाय नहीं है'। मैंने कहा-'ठीक से देख। अभी-अभी मैंने उसकी आवाज़ सुनी है'। अब्दुल ने कहा-'वहाँ कोई भी नहीं है भाईजान, आपको भ्रम हुआ होगा। न हो तो आप ख़ुद जा कर देख लो।'

....मैं भी उठ कर कमरे में गया। इधर-उधर देखा। वहाँ कोई गाय नहीं थी। मुझे भी हँसी आ गई। सचमुच यह भ्रम था। दूसरे दिन फिर गाय की आवाज़ सुनाई दी, तो मैं फौरन पीछे दौड़ा, लेकिन वहाँ गाय नहीं थी। मैं आश्चर्यचकित कि गाय कहीं नज़र ही नहीं आती, मगर आवाज़ आती है। कहाँ से आती है यह आवाज़? एक दिन मुझे सपना आया कि 'मैं गाय बोल रही हूँ। तू मुझे मुक्ति दे...मुक्ति दे'। मैं सपने का मतलब समझ न पाया। आसपास के बुर्जुगों से इस स्थान के बारे में पता किया, तब यह बात सामने आई कि यहाँ पचास साल पहले कसाईघर था। यहाँ गायें काटी जाती थीं। ओह, तो इसका मतलब है कि यहाँ किसी गाय की आत्मा मँडरा रही है। हालाँकि मैं इन सब बातों पर यकीन नहीं करता, लेकिन दिल ने कहा कि क्यों न इस स्थान में एक गाय पाली जाए। बस, मैंने एक गाय खरीद ली। फिर मन हुआ कि क्यों न गौ संरक्षण के कार्य में भी जुट जाऊँ। वैसे यह भी खतरा था कि हिंदू-मुसलमान दोनों की नाराज़गी झेलनी पड़ेगी लेकिन मैंने इसकी परवाह नहीं की। गाय किसी धर्म की जागीर तो है नहीं। वह तो सबकी है। जितनी आपकी है, उतनी मेरी भी। बस, एक संगठन बना लिया और आप लोगों से जुड़ गया।''

''तुम्हारी बात सुन कर मुझे अचानक कसाई का काम करने वाले सेठ लाभप्रद की कहानी याद आ रही है।' घावरीजी बोले, ''सुनो, बहुत पहले की बात है। बिलासानगरी में लाभप्रद नाम का एक सेठ रहा करता था। कपड़ा बाज़ार में उसका बड़ा कारोबार था। वह सुखी जीवन जी रहा था। तनावमुक्त। एक रोज़ वह कोलकाता गया। पता नहीं वहाँ किससे मुलाकात हुई कि वह कपड़े के धंधे के साथ-साथ गायों की तस्करी भी करने लगा। इसमें उसकी ज्यादा कमाई होने लगी। वह बीमार गायों को स्वस्थ गाय बता कर कसाईघरों में बेच दिया करता था। कुछ लालची डॉक्टर फर्जी प्रमाणपत्र भी बना देते थे। सेठ गायों को कोलकाता,

हैदराबाद और मुंबई के कसाईखानों में बेच आता था। उसने पुलिस वालों को भी 'सेट' कर लिया था। धीरे-धीरे उसका कारोबार जम गया। वह और ज्यादा मालामाल हो गया।

....एक दिन वह सो रहा था कि उसे सपने में कुछ गायें नजर आईं। गायें कट रही हैं..चारों तरफ लहू बिखरा हुआ है...गायें रँभा रही हैं....बचाओ-बचाओ की आवाज़ें आ रही हैं ....

....हड़बड़ा कर उसकी नींद टूट गई। फिर वह रात भर सो न सका। नींद ही नहीं आई।

एक दिन लाभप्रद खाना खा रहा था, तो उसे लगा कि रोटी लाल हो गई है।

उसने पत्नी से कहा- ''रोटी लाल दिख रही है।''

पत्नी बोली- ''कहाँ लाल दिख रही है। ठीक तो है।''

''और दाल में मिर्च ज्यादा डाल दी है क्या, यह भी लाल दिख रही है।''

''लगता है, आपको कम दिखने लगा है, डॉक्टर को दिखा दीजिए।'' पत्नी ने परिहास किया।

लाभप्रद चुप हो गया। एक दिन वह कार चला रहा था कि अचानक कहीं से एक गाय आ कर टकरा गई। लाभप्रद के सिर पर चोट लगी। एक नहीं, अनेक बार वह किसी न किसी गाय से ही टकराया।

धीरे-धीरे लाभप्रद तनाव में रहने लगा। अकसर उसे रात को नींद ही नहीं आती थी। और कभी-कभार नींद आए, तो सपने में कटी हुई गायें और उनका लहू नज़र आता था। वह परेशान हो गया। उसने पत्नी को सारी बात बताई तो पत्नी ने कहा, मेरी मानिए, गाय का धंधा छोड़ दीजिए। इस धंधे ने आपको तनाव में डुबो दिया है। पहले आप कितना खुश रहते थे।

लाभप्रद ने ठंडे दिमाग से सोचा तो उसे लगा कि सचमुच तनाव का कारण गाय को कसाईघरों में बेचना ही है।

आखिर एक दिन उसने इस धंधे को बंद कर दिया। पत्नी के कहने पर लाभप्रद ने एक गौशाला शुरू कर दी। कल तक वह गायों को कसाईघर पहुँचाता था और अब वह उन गायों को कसाईखानों में जाने से रोकता है। अपनी गौशाला में रखता है और उनकी सेवा करता है। अब उसकी ज़िंदगी खुशहाल है। तो भाई मेरे, यह है गौ माता का चमत्कार।''

''सचमुच, गाय एक चमत्कार ही है। जब से मैं गाय से जुड़ा हूँ, मेरे धंधे में बरक्कत ही बरक्कत हो रही है। मैं गाय की पूजा भले नहीं करता, लेकिन मेरा दावा है कि मैं किसी हिंदू से ज्यादा गौ सेवा करता हूँ।''

''तुम्हारी यही बात तुमको हजारों लोगों से अलग कर रही है। आज तुम्हारी अपनी खास पहचान है। तुम्हारे जैसे लोग बढ़ने चाहिए। तब इस देश में साम्प्रदायिक दंगे अपने आप खत्म हो जाएँगे। आज तुम्हारे आलोचक बढ़ रहे हैं। इसकी चिंता भी नहीं करना। क्योंकि जो लोग अच्छा काम करते हैं, उसके दुश्मन भी पैदा हो जाते हैं। अच्छा, अब चलता हूँ। अपन फिर मिलेंगे और अपने काम को आगे बढ़ाएँगे।''

घावरीजी चले गए। मुजफ्फर को लगा कि अब उसे चिंता नहीं करनी चाहिए।

आलोचना से आदमी को मजबूत होना चाहिए, कमजोर नहीं।

तेरह

गो रक्षा के लिए अनेक शहरों में जुनून देखा जा रहा था।

अखबारों में सर्वधर्म गो रक्षा संघ की खबरें तो ज्यादा नहीं छपती थीं, लेकिन इंटरनेट और मोबाइल पर 'एसएमएस' के ज़रिए सैकड़ों लोगों को सूचना दे दी गई थी। ग्यारह अक्टूबर को एक विशाल आम सभा रखी गई है। इस दिन लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयंती मनाई जाती है। जेपी ने गाँधी, विनोबा, और लोहिया के विचारों को मथकर 'संपूर्ण क्रांति' का नारा दिया था। सत्तर के दशक में उन्होंने देश की सोई तरुणाई को जगा दिया था। देश में नवनिर्माण की लहर-सी चल पड़ी थी। तब सरकार हिल गई थी और देश में आपात्काल लागू कर दिया गया था। उन्नीस महीने बाद आपात्काल हटा दिया गया था और देश में जनता पार्टी की सरकार बन गई थी। यह सब जेपी के कारण ही हुआ था, इसलिए घावरीजी के कहने पर जेपी की जयंती के दिन आमसभा बुलाई गई।

सभा में सभी धर्मों के लोग शामिल हुए। गाँधी चौक में जोशीली सभा हुई।

सभा में शामिल भीड़ देखकर 'सर्वधर्म गारक्षौ संघ' के लोग गद्गद थे। किसी को उम्मीद नहीं थी कि इतने लोग आ जाएँगे। मतलब साफ था कि गाय के लिए सबके मन में आदर-भाव है। लोग अपना सारा काम छोड़कर यहाँ आ गए। भीड़ को सँभालने में लगे स्वयंसेवक प्रसन्नता के साथ सबको यथास्थान बिठा रहे थे। और लोग भी अनुशासित होकर अपना स्थान ग्रहण कर रहे थे। जिनको कुरसी नहीं मिली, वे किनारे खड़े हो गए।

सर्वधर्म सभा में आज देश भर से विभिन्न धर्मों के विद्वानों के विचार सुनने को मिलेंगे। स्थानीय नेता भी अपनी बात रखेंगे। लोगों के मन में गौ माता के प्रति अटूट आस्था है, लेकिन गाय के बारे में बहुत-सी जानकारियाँ नहीं हैं। इसलिए लोग यहाँ पहुँचे हैं, ताकि उनका कुछ ज्ञान बढ़े।

सभा का संचालन करते हुए नेमीचंदजी ने कहा - ''आज बड़े हर्ष की बात है कि हमारे बीच जगद्गुरु शरणानंदजी महराज पधारे हैं, सिख धर्म के संत भाई नानका, ईसाई धर्म के फादर स्टीफन, दलितों के जानेमाने नेता ओमप्रकाश जी, मुस्लिमों के धर्मगुरु जौहर मियाँ और गो सेवा के लिए सरकारी नौकरी छोड़ कर एक उदाहरण बन चुके मोहम्मद युनूस भाई भी मंच पर शोभायमान हैं। सतनामी समाज के महंत जनकराम भी है। ये लोग किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। हर धर्म और समाज के लोग इनका सम्मान करते हैं। आज ये सारे लोग गौ माता के सवाल पर यहाँ पधारे हैं। इसका अर्थ यही है कि इस देश को गाय ही एक सूत्र में जोड़ सकती है। धर्मस्थलों के नाम पर यहाँ दंगे-फसाद हो जाते हैं, लेकिन गाय तो सभी धर्मों के लोगों को अपना दूध पिलाती है। वह सबकी माँ है। वह जगत माता है। इसलिए इस गौ वंश की रक्षा करें और गाय को बचाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दें। मैं... मैं सबसे पहले सूफी संत जौहर मियाँ को आमंत्रित करता हूँ कि वे आएँ और अपने विचार प्रकट करें।''

जौहर मियाँ का नाम सुनकर लोगों ने तालियाँ पीटीं। जौहर मियाँ खड़े हुए, तो भीड़ में सुईपटक सन्नाटा छा गया। जौहर मियाँ ने भीड़ पर मुसकान भरी नज़र डाली और बोलना शुरू किया–

''दोस्तो, मैं महात्मा गाँधी जी के विचारों के साथ अपनी बात शुरू करूँगा। गांधीजी ने क्या कहा था? उन्होंने कहा था कि 'गाय लाखों-करोड़ों भारतवासियों का पालन-पोषण करती है। इस देश में गो वंश ही हमारा सच्चा साथी है। आर्थिक उन्नति का बड़ा आधार है। गाय केवल दूध नहीं देती, वह हमारी आर्थिक तरक्की की बुनियाद भी है।' गांधी ठीक कहते थे। मैं भी गाय को कामधेनु मानता हूँ। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि गाय की जान लेना इसलाम नहीं है। मैंने कुरान पाक पढ़ा है। वह मेरे जीवन का हिस्सा है। उसमें कहीं ऐसा नहीं लिखा है कि गाय की कुर्बानी की जाए। जो लोग ऐसा करते हैं, वे हदीस के खिलाफ काम करते हैं। आपको शायद पता न हो, इसलिए बता दूँ कि अफगानिस्तान के अमीर ने गौ हत्या को रोकने के लिए कानून बना दिया था। उनका कहना था कि गाय जानवरों की सरदार है। आपको पता ही होगा कि मक्का-शरीफ में आज तक कभी गाय की कुरबानी नहीं दी गई। शुरू-शुरू में अपने देश के कुछ मुस्लिम शासकों ने गो-हत्या पर कुछ 'टैक्स' लगाए थे। लेकिन बाद में उन्होंने गौ हत्या को ही 'बैन' कर दिया।''

तालियाँ... और नारे भी गूँजे...

गौ माता की... जय...

विश्व की माता... गो माता...

हिंदू-मुस्लिम, सिख-ईसाई

गाय हम सबकी माई...

जौहर मियाँ ने हाथ उठा कर सबको शांत किया और फिर बोलना शुरू किया – ''बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर से लेकर बहादुरशाह ज़फर तक सबने गो-हत्या पर रोक लगा दी थी। उसका असली कारण यही था कि गाय हिंदुओं की भावनाओं से जुड़ी हुई है। बादशाह हैदर अली के पास पचास-साठ हज़ार बैल थे। उसकी बहुत बड़ी गौ शाला थी, जिसे देखने दूर-दूर से लोग आया करते थे। इस गौ शाला की देखभाल उनका बहादुर बेटा टीपू सुल्तान किया करता था। हैदर अली गायों से कितना प्यार करते थे, उनको इसी बात से समझा जा सकता है कि उन्होंने फरमान जारी कर दिया था कि जो कोई गाय काटे, उसके दोनों हाथ काट दिए जाएँ।''

इस बात पर फिर तालियाँ पिटीं।

जौहर मियाँ रुके नहीं, बोलते गए, ''एक मुस्लिम फकीर का नाम ही था गौप्यारा शाह। वे कहते थे, गाय मेरी माँ है। अगर पूरे दिल के साथ गाय से मोहब्बत की जाए, तो हम दुनिया भर के ऐशोआराम से लबरेज़ हो जाएँगे। कुरआन शरीफ में कहा गया है 'हल् जनाउल इहसानि इल्लल् इहसानु' मतलब यह कि अहसान का बदला अहसान के सिवाय और क्या हो सकता है? इसलिए सच्चा मुसलमान गाय के अहसान को भूल नहीं सकता। हमने गाय का दूध

पीया है। गाय के हम पर अनेक अहसान हैं। गुमराह लोग कहाँ नहीं हैं ? हिंदू हों या मुसलमान, गुमराह होकर सभी गलत काम करने लगते हैं। इसलिए मैं सबसे गुज़ारिश करूँगा कि आज हम कसम खाएँ कि गाय के लिए जीएँगे, गाय के लिए मरेंगे। गाय हमारी माँ है। हमें उसकी हिफाज़त करनी है। दाउद अलक का एक ग्रंथ है 'जुहूर'। यह ग्रंथ भी कुरान की तरह आकाश से उतरा है। इसमें अल्लाताला हुक्म देते हैं कि 'जो इंसान गाय की हत्या करता है, वह आदमी की हत्या करता है।' इसीलिए गाँधीजी कहते थे कि जब कहीं कोई गाय काटी जाती है, तो मुझे लगता है कि मुझे ही काटा जा रहा है। तो दोस्तो, अंत में बस मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि आइए, मिल-जुल कर गो रक्षा की कसम खाएँ। आमीन।''

जौहर मियाँ की तकरीर खत्म होने के बाद बहुत देर तक तालियाँ बजती रहीं। गौ माता संबंधी नारे लगते रहे। भीड़ को शांत करने के लिए नेमीचंद जी खड़े हुए और बोले, ''जौहर मियाँ की बातें सुनकर यहाँ आए हज़ारों लोगों में जोश भर गया है। उन्होंने विस्तार के साथ बताया कि इस्लाम में कहीं भी गो हत्या का जिक्र नहीं है। अब मैं फादर स्टीफन से निवेदन करूँगा कि वे भी दो शब्द कहें।''

फादर स्टीफन खड़े हुए – ''डियर फ्रेंड्स, हमारे ब्रदर जौहर मियाँ की स्पीच के बाद कुछ बचा ही नहीं। उन्होंने दिल को 'टच' करने वाला भाषण दिया। मैं भी चाहता हूँ, कि गाय के सवाल को हम लोग अपनी 'कंट्री' का सवाल बनाएँ और 'गवर्नमेंट' पर 'प्रेशर' डालें कि देश में चल रहे 'स्लॉटर हाउस' बंद हों, गाय की हत्या रोकी जाए। आप लोगों को यह जानकर खुशी होगी कि प्रभु ईसा मसीह का जन्म एक गौ शाला में हुआ था। जिसका जन्म गौ शाला में हुआ हो, क्या वह गाय प्रेमी न होगा? वे कहते थे, 'तू किसी की जान मत ले। जंगल के किसी भी जीव का वध मत कर। तू मांस का भक्षण मत कर। हमारे रिलीजन में भी हिंसा को पाप कहा गया है।' 'ओल्ड टेस्टामेंट' में न जाने कितनी ही बार गाय के और उसके दूध के फायदे के बारे में महत्वपूर्ण बातें कही गई हैं। गाय के संबंध में ईसाई धर्म की कुछ सार बातें मैं आपके सामने रखूँ तो वह यह है कि गाय से बढ़ कर अन्य कोई पशु मनुष्य का 'फ्रेंड' नहीं है। गाय सीधी-सादी होती है। उसके स्वभाव में सरलता है। गाय ममता से भरी होती है। अमरीका के मालकम आर. बैटर्सन कहते हैं, 'गाय तो बिना ताज की महारानी है। पूरी पृथ्वी पर उसका शासन चलता है। वह जितना लेती है, उससे कई गुना हमें लौटाती है।' मिलो हैरिटॉस कहते हैं – 'हमारी सभ्यता गाय प्रधान सभ्यता है।' मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि ब्रिटिश काल में ही गो वंश को काफी नुकसान हुआ, लेकिन अब हमें गाय के बारे में 'सीरियसली' सोचना चाहिए। हम तो सेंट फ्रांसिस के कोटेशन को याद करते हैं और उसी पर चलते भी हैं कि हर जीव पर दया करना और इसी करुणा-स्नेह को दुनिया भर में फैलाना। बस, मेरी यही अंतिम इच्छा है। बिशप अल्लेघी के कथन को यहाँ रखते हुए मैं अपनी बात खत्म करूँगा। उन्होंने कहा था कि 'हमारी क्रिश्चियन चर्च को इंडिया में गो हत्या पर रोक लगाने के बारे में किसी तरह का ऐतराज नहीं है'।''

फादर स्टीफन की बातों को सुनकर भी खूब तालियाँ बजीं।

अब इसके बाद सिख धर्मगुरु भाई ननका की बारी थी। उनका गोरा-चिट्टा रंग, शुभ्र-श्वेत लम्बी दाढ़ी, छह फुट की कद-काठी, दुबला-पतला शरीर सम्मोहन पैदा कर रहा था। उन्होंने भाषण शुरू करते हुए कहा -

''बोले सो निहाल...''

भीड़ ने उत्तर दिया - ''सत्श्री अकाल!''

भाई ननका ने कहा ''हमारे दसवें गुरू गोविंद सिंघ जी के बारे में भला ऐसा कौन अभागा होगा, जो कुछ न जानता हो। उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना करते हुए कहा था कि यह पंथ आर्य धर्म, गौ-ब्राह्मण, साधु-संत और दीन-दुखीजन की रक्षा के लिए बना है। गुरू गोविंद सिंघ जी ने अपने 'दशम ग्रंथ' में एक जगह लिखा है, 'यही देहु आज्ञा तुर्क को खपाऊँ, गो घात का दु:ख जगत से हटाऊँ। यही आस पूरन करो तुम हमारी, मिटे कष्ट गौअन छुटे खेद भारी'। आप लोगों को मैं बताना चाहूँगा कि सन् 1871 में पंजाब के मलेरकोटला में नामधारी सिखों ने गो रक्षा के लिए अपनी कुरबानियाँ दी थीं। मुगलों के समय तो गायें सुरक्षित थीं, लेकिन अँगरेज़ों का शासन आने के साथ ही गायें कटने लगी थीं। यह देखकर पंजाब के नामधारी सिखों ने कसाईघरों पर हमले किए और जिन लोगों ने गायों की हत्या की, उन लोगों को मौत के घाट उतार दिया। अँगरेज़ों ने ऐसे पैंसठ लोगों को गिरफ्तार किया और उन्हें तोपों से उड़ा दिया। पकड़े गए लोगों में एक किशोर भी था। उसकी ऊँचाई कम थी। यह देख कर अँगरेज़ों ने उसे छोड़ दिया। लेकिन वह लड़का भी बड़ा जुनूनी थी। पक्का गो भक्त। उसने आस-पास से कुछ ईंटें एकत्र कीं और उसके ऊपर खड़े हो कर बोला- 'देखो, अब मैं तोप के बराबर आ गया हूँ। लो, चलाओ तोप और मुझे भी उड़ा दो।'...

लड़के की हिम्मत देख कर एक अँगरेज़ बोला- 'अरे, तुम सिख लोगों को मृत्यु से डर नहीं लगता?''

इस पर किशोर ने मुसकराते हुए कहा- 'बिल्कुल ठीक कहा तुमने। हम सिख हैं। मौत से नहीं डरते। जीवन-मृत्यु तो प्रभु के हाथों में है। तू हमें क्या मारेगा? मैं आज मरूँगा और नौ महीने बाद किसी गुर सिख माँ के पेट से फिर पैदा हो कर आऊँगा।'

अँगरेज़ों ने उस बच्चे को भी तोप से उड़ा दिया। तभी बारह साल के एक और बच्चे बिसन सिंह में उत्साह जगा और उसने पास खड़े एक अँगरेज़ कमिश्नर की दाढ़ी कपड़ ली। लोगों ने छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन लड़के ने दाढ़ी नहीं तो नहीं छोड़ी। तब उसके दोनों हाथ काट दिए गए। फिर भी उस लड़के की मुट्ठी नहीं खुली। लाख कोशिशों के बावजूद वह नहीं खुली, तो कमिश्नर की दाढ़ी ही काटनी पड़ी। ...यह है सिख कौम, जिसने गऊ और गरीब के लिए अपने को बलिदान कर दिया। इस हादसे के बाद सरदार इंदर सिंह ने हिम्मत के साथ ऐलान किया था कि गायों की रक्षा करने के लिए दस लाख सिख अपनी जान देने के लिए तैयार हैं।''

जोशीले भाषण को सुनकर भीड़ से फिर एक बुलंद स्वर उठा - ''बोले सो निहाल...''

बाकी लोगों ने दोगुने उत्साह के साथ कहा - ''सत्श्री अकाल।''

...''गुरु तेगबहादुर जी, गुरू अरजन देव जी सहित हमारे अधिकतर सिख गुरुओं ने गौ रक्षा के लिए ही बलिदान दिया था। महाराजा रणजीत सिंह ने जब सत्ता संभाली तो उन्होंने सबसे पहले गो हत्या पर ही रोक लगाई थी। भगवान कृष्ण की तरह गुरुनानक देव जी भी बाल्यकाल में गाय चराने जंगल जाते थे। तो हम सिखों का इतिहास गो रक्षा का इतिहास रहा है। इसलिए यह जो अभियान चल रहा है, मैं उसके साथ हूँ और वचन देता हूँ कि हम 'सवा लाख से एक लड़ाऊँ' वाली परम्परा वाले हैं। और अंत में एक बार फिर बोलिए 'वाहे गुरु का खालसा...''

भीड़ ने आवाज़ लगाई - ''वाहे गुरु की फतेह..''

सिख गुरू की बातें सुनकर बहुत देर तक तालियाँ बजती रहीं।

उसके बाद अब बारी थी सतनाम पंथ के जनक गुरु घासीदास के भक्त महंत जनकराम जी की। उन्होंने कहा-''सन् 18 दिसंबर 1756 को जब गुरु घासीदास जी जब अवतरित हुए, तो माता की छाती से दूध नहीं उतर रहा था। वे परेशान थीं कि क्या किया जाए। तब एक साधु-महात्मा ने बच्चे को देखा, तो कहा कि यह तो कोई महान आत्मा है। इसकी समाज को जरूरत है। मैं इसके लिए कुछ करता हूँ। महात्माजी ने फौरन एक गाय और एक बछिया भेंट की थी। गाय के दूध से हमारे गुरु का लालन-पालन हुआ। यही कारण है कि हमारे गुरु दिव्य आभा से विभूषित हुए। सन् 1820 में उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। उन्होंने समता, समानता और विश्वबंधुत्व का उपदेश दिया। लेकिन उन्होंने एक बड़ा महत्वपूर्ण निर्देश दिया कि गाय-बैलों को खेतों में दोपहर में न जोता जाए। सोचिए, यह कितनी बड़ी बात है। तपती दोपहरी में मनुष्य की हालत कितनी खराब हो जाती है। पशु भी जीव है। हमारे गुरु ने उनकी भी चिंता की। वे चाहते थे कि बैल को खेत में जोतें मगर जब छाँव रहे। यह करुणा की बात है। उन्होंने एक बात और कही। मुरही गाय का दूध भी नहीं पीना चाहिए। मुरही गाय मतलब जिसका बछड़ा मर गया हो। गाय का बछड़ा मर गया, तो गाय दु:खी है। ग़म में है। और हम उस बेचारी माँ का दूध निकाल रहे हैं? यह पशुता है। गुरू घासीदास जी ने लोगों के मन में करुणा जगाने का काम किया। उन्होंने मांसाहार न करने के लिए प्रेरित किया। यहाँ तक कि उन्होंने लाल भाजी खाने से भी मना किया, क्योंकि उसका रंग लाल है। खून -सा दिखता है। लाल रंग देखने से उग्रता आती है। गुरु घासीदास जी ने के भक्त राजमहंत नैनदास महिलांग ने अपने गुरु की भावना के अनुरूप छत्तीसगढ़ में गौ हत्या के विरुद्ध जनजागरण किया। यह सन् 1930 के आसपास की बात है। 'करमनडीह' और 'ढाबाडीह' में उस वक्त अँगरेज़ों के दो कसाईखाने चल रहे थे। नैनदास जी ने इनके खिलाफ आंदोलन शुरू किया। उनके साथ मदन ठेठवार आंदोलन को गति दे रहे थे। यादवों ने भी इस आंदोलन को पूरा समर्थन दिया। धीरे-धीरे आंदोलन फैलता गया। उसके बाद तो पंडित सुंदरलाल शर्मा और महंत लक्ष्मीनारायण दास-जैसे जाने-माने काँग्रेसी और स्वतंत्रता

सेनानी भी जुड़ते चले गए। जगह-जगह प्रदर्शन हुए। अँगरेज़ों का दमन-चक्र भी चला, लेकिन आंदोलन रुका नहीं। हार कर अँगरेज़ों को कसाईखाना बंद करना पड़ा। नैनदास जी की विजय हुई। सतनाम पंथ की जीत हुई। मानवता की जीत हुई। हमारा पूरा समाज गाय के मामले में बड़ा संवेदनशील है। हम लोग इस अभियान में आपके साथ हैं। बोलिए, जय सतनाम।''

भीड़ ने दुहराया- ''जय सतनाम''।

फिर आए गुरु मोहम्मद यूनुस भाई। उन्होंने बोलना शुरू किया- ''भाइयो और बहनो। मैंने सुना है कि श्रीकृष्ण के काल में लाखों गायें होती थीं। लेकिन अब क्या हो गया है इस देश को? मैं चाहता हूँ, कि इस देश में हर मनुष्य के लिए एक गाय का अनुपात हो। देश में एक सौ पचास करोड़ गायें भी हों, तो क्या हर्ज है? अधिक गायें होंगी, तो हमें ज्यादा पंचगव्य मिलेगा। नैसर्गिक खाद ज्यादा मिलेगी। आज का किसान बिना सरकारी बिजली के खेती का विचार ही नहीं कर सकता। जबकि वह चाहे तो बैलों की शक्ति के सहारे घर में बिजली बना सकता है और डेढ़ सौ फुट गहराई तक से पानी खींच कर सिंचाई कर सकता है। 'सीएनजी' की तरह हम भी 'केएनसीजी' बना सकते हैं: यानी 'कामधेनु नेचुरल कंप्रेस्ड गैस'। इससे लोग गाड़ियाँ चला कर दिखा रहे हैं। गैस सिलेंडर भरे जा रहे हैं। परमाणु रेडियशन से बचाव के लिए गोबर वाले डिस्टेंपर पर भी सफल शोध हो चुका है। आज पंचगव्य से न जाने कितनी ही दवाइयाँ बनाई जा रही हैं। एक गाय के गोबर से बनी खाद एक एकड़ के लिए पर्याप्त होती है। गाय हमारे लिए इतनी उपयोगी है कि उसके बारे में कितना बताया जाए। मैं तो आज इस मंच से माँग करूँगा कि सरकार गो हत्या पर फौरन रोक लगाए और गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करे। गो कल्याण मंत्रालय का गठन भी होना चाहिए। इस देश के विकास में गौ आधारित अर्थव्यवस्था सबसे ज्यादा कारगर हो सकती है। ...तो बोलिए गो माता की जय।

यूनुसभाई के ज्ञानवर्धक भाषण को सुन कर लोग अति उत्साहित हो गए। गो माता के जय-जयकारे से पूरी सभा गूँजने लगी। लोग आपस में चर्चा करने लगे।

एक ने कहा-''ऐसे मुसलमान भी होते हैं? वाह, क्या बात है।''

दूसरा बोला- ''अनेक मुसलमान हैं, जो गौ सेवा के लिए समर्पित हैं भाई।''

तीसरे ने कहा-''हाँ। खतरा कुछ विवेकहीन हिंदुओं से ही अधिक है।''

वक्ता बहुत थे। सबको समय देना संभव नहीं था, इसलिए बाकी वक्ताओं ने एक-एक, दो-दो मिनट बोलकर अपनी बात खत्म की। घावरीजी, मुजफ्फर भाई, और ओमप्रकाश भाई ने भी अपने-अपने भाषण जल्दी-जल्दी खत्म कर दिए। इसके बाद गोचारण भारतीबंधु पधारे। केवल गौ माता के लिए गीत गाने वाले इन बंधुओं का नाम सुनते ही सभा ने तालियाँ बजा दीं। मतलब सारे लोग गोचारण बंधु को जानते थे। गौ चारण बंधु ढोल-मँजीरे और ढपली के साथ पधारे और शुरू हो गए-

अगर बचाना है भारत को, गौ को आज बचाएँ हम।
गोवंश की रक्षा करके, निज कर्तव्य निभाएँ हम।
कौन जीव दुनिया में ऐसा, जो पवित्र कहलाता है।
पंचगव्य हर गऊ माता का, हमको स्वस्थ बनाता है।
दूध-मलाई, मिष्टान्नों का, कुछ तो मूल्य चुकाएँ हम...
जिस तन में सब देव विराजें, उस गैया को करो नमन,
भूले से यह कट न पाए, मिलजुल कर सब करो जतन।
वक्त पड़े तो माँ के हित में अपनी जान लुटाएँ हम।।
उठो-उठो सब भारतवासी, सुनो गाय की करुण पुकार,
कटता है गो वंश जहाँ भी , बढ़ कर रोकें अत्याचार।
स्वाद और धनलोभी जन को गौ महिमा बतलाएँ हम।
अगर बचाना है भारत को, गौ को आज बचाएँ हम।

सुमधुर गायन सुन कर बहुत देर तक तालियाँ बजती रहीं। वंस मोर...वंस मोर की आवाजें भी आती रहीं। लेकिन समय बहुत अधिक हो चुका था, इसलिए नेमीचंद जी ने कहा कि - ''गाय पर गीत सुनना अच्छा लगता है, लेकिन समय की कमी के कारण गोचारण बंधु को हम फिर कभी इत्मीनान से सुनेंगे।.....अब मैं आज की सभा के निष्कर्ष रूप में विचारों का नवनीत परोसने के लिए सभा की अध्यक्षता कर रहे जगद्गुरु शरणानंद जी महाराज से अनुरोध करूँगा कि वे आएँ और हमें अपना आशीर्वचन प्रदान करें।''

शरणानंद महाराज खड़े हुए और प्रवचन शुरू किया - ''बोलो, सब धर्मों की जय। गौ माता की... जय, भारत माता की जय... विश्व का... कल्याण हो... गो वध बंद हो... बंद हो। आदरणीय माताओ-बहनो और भाइयो, आज बड़ी सुंदर सभा सजाई गई है। प्रतीत हो रहा है कि हम दुबारा 'स्वर्णयुग' में प्रवेश कर रहे हैं। आसपास इतना प्यार, भाई-चारा देखकर अंतर्मन प्रफुल्लित है। हम ऐसे ही समाज की परिकल्पना करते हैं। हमने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का नारा दिया था। आज 'ग्लोबल विलेज' या 'विश्व ग्राम' की बातें हो रही हैं। लेकिन इन सबके बीच मनुष्य के अंतस् की करुणा का ह्रास हुआ है। मांसाहार अब फैशन बन चुका है। एक लत है। इस लत के शिकार लोग भूल जाते हैं कि जिन जीवों की वे हत्या करके उसे उदरस्थ कर रहे हैं, उन्हें भी जीने का हक है। पशु आपस में हिंसा करें, एक-दूसरे की जान लें, यह उनकी प्रवृत्ति और प्रकृति दोनों है लेकिन मनुष्य पशुवत् व्यवहार करे, यह उसकी प्रकृति नहीं है। उसकी संस्कृति भी नहीं। लेकिन अब हिंसा मनुष्य की (अप)संस्कृति बनती जा रही है। मुझे यह देखकर बड़ी पीड़ा होती है, कि गो हत्या में अब सभी लोग लगे हुए हैं। मेरा तो यही अनुभव रहा है कि हिंदू धर्म में कुछ मतिभ्रष्ट लोगों के कारण गो हत्यारों की संख्या तेजी के साथ बढ़ रही है। वे माँसाहार कर रहे हैं। 'अथर्ववेद' के गो सूक्त में एक जगह कहा गया है, 'आ गायो अग्मन्नुत भद्रमकुत्सीदन्तु गोष्ठे रण्यन्त्वस्मे' । गौओं ने हमारे यहाँ आकर हमारा

कल्याण किया है। वे हमारी गौ शालाओं में सुख से बैठें और उसे अपने सुंदर शब्दों से गुँजा दें। ये विविध रंगों की गौएँ अनेक प्रकार के बछड़े-बछियाँ जनें और इंद्र यानी परमात्मा के भजन के लिए उष:काल से पहले दूध देने वाली बनें। वेद-पुराणों में गौ माता को लेकर अनेक सुंदर कथाएँ हैं। गाय के अनेक मिथ प्रचलित हैं। गाय के शरीर में समस्त देवताओं का वास है। गाय कभी रही होगी हिंदू संस्कृति की प्रतीक। वह है भी, लेकिन मैं चाहता हूँ कि वह अब हमारी सर्वधर्म भारतीय संस्कृति की प्रतीक बने। मैं आज अपनी पीड़ा के साथ आपके सामने रखना चाहता हूँ। शहरों में जहाँ-तहाँ गायें सड़कों पर मारी-मारी फिरती हैं। मैं लिख कर दे सकता हूँ, किसी से भी शर्त लगा सकता हूँ कि दर-दर भटकती बेचारी ये गौ माताएँ किसी मुस्लिम की नहीं होंगी। शर्त लगा लें। तो मैं पूछता हूँ, कि ये कैसे हिंदू हैं, जो गाय का दूध तो चाहते हैं, गाय को नोट पैदा करने की मशीन तो बनाए रखना चाहते हैं, मगर गाय पर प्रेम से हाथ तक नहीं फिराते और उसे दुर्घटनाग्रस्त करने के लिए भेज देते हैं। गाय सबका लालन-पालन करती है। वह हम सबकी माँ है। यह किसी की बपौती नहीं है। इसलिए हम लोग मिलकर गाय की रक्षा का संकल्प करें। यही इस सभा का पावन उद्देश्य है।''

इतना बोल कर शरणानंद महाराज बैठ गए। नेमीचंद ने आभार मानते हुए कहा कि ''चलते-चलते मैं जैन समाज के बारे में बताना चाहता हूँ कि जैन धर्म को मानने वाले लोग कभी गो हत्या नहीं कर सकते। पता नहीं कैसे कुछ लोग गुमराह हो जाते हैं। जब जीवन में सबसे बड़ा धर्म पैसा हो जाए तो आदमी असली धर्म भूल ही जाता है। इससे बड़ा पाप और क्या हो सकता है। जैन धर्म किसी भी जीव के प्रति हिंसा के सख़्त खिलाफ है। हमारे यहाँ तो यह कहा गया है कि अगर हमारी बात से किसी का दिल भी दुखे तो वह हिंसा है। हम रास्ते में चलते हैं तो डर-डर कर चलते हैं कि कहीं कोई चीटीं न मर जाए। हमारे उठने-बैठने, चलने-फिरने में कहीं अनजाने में कोई जंतु न मर गया हो, इस हेतु हम लोग अक्सर 'प्रतिक्रमण' करते रहते हैं, यानी क्षमा याचना करते हैं। ऐसे धर्मावलंबियों के बीच अगर कोई कसाई निकल आए, कसाईखाना ही खोल ले, तो धर्म क्या कर सकता है। लेकिन हम एक काम तो कर ही सकते हैं कि ऐसे लोगों का सामाजिक बहिष्कार हो। लेकिन इस घोर व्यावसायिक युग में ऐसी भावुकता भरी बातों का कोई मतलब नहीं। फिर भी अच्छे लोग ज़िंदा हैं। आज यहाँ गौ माता के संबंध में विभिन्न धर्मावलंबियों ने जो ज्ञान की बातें बताई हैं, उसे हम याद रखें और संकल्प लें कि जब तक जीवित हैं... हम गौ रक्षा करेंगे और सात नवंबर को राजधानी में होने वाले प्रदर्शन में शामिल होंगे।''

अंत में मंच पर बैठे सभी धर्म-गुरू अपने स्थान पर खड़े हो गए। सबकी ओर से जगद्गुरु बोले - ''आज आपको यहाँ शपथ लेनी है। सब लोग अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाएँ।''

भीड़ खड़ी हो गई, तो जगद्गुरु ने कहा- ''अब आपको गौ हत्या रोकने संबंधी सौगंध खानी है। आप सब लोग हमारी बातों को दोहराएँगे। बोलिए तैयार हैं? तो बोलो...गौ माता की... जय''

उत्तर में सामूहिक स्वर गूँजा -''गौ माता की जै।''

उसके बाद जगदगुरु एक-एक पंक्ति बोलते गए और भीड़ उसे दुहराती गई -

''हम लोग आज संकल्प करते हैं कि कभी भी गो हत्या नहीं करेंगे'....

'किसी को गौ हत्या नहीं करने देंगे'..

'हम अपनी बूढ़ी-बीमार गाय को कभी नहीं बेचेंगे...उसे किसी गौ शाला को दान कर देंगे'...

'हम घर का जूठन या अन्य खाद्य पदार्थ पॉलीथिन बैग में डालकर घर के बाहर नहीं फेंकेंगे'...

'हम गाय-बछड़े का हक नहीं मारेंगे। गाय के दो थन हम उसके बछड़े के लिए छोड़ देंगे'...

'गौ रक्षा के लिए हम तन-मन-धन समर्पित करने से पीछे नहीं हटेंगे'...

जगदगुरु ने शपथ दिलाने के बाद कहा, ''तो, एक बार सारे भाई-बहन बड़े प्रेम से बोलिए, गौ माता की...''

भीड़ ने एक स्वर में कहा-''जै..।''

जगदगुरु ने कहा- ''बोलिए प्रेम से 'माँ''..

सबने स्वर बुलंद किया- ''माँ''....

'सर्वधर्म गो रक्षा संघ' की आम सभा के बाद संघ शहर और आसपास के इलाके में सक्रिय हो गया था। एक दिन संघ के प्रतिनिधि मंडल ने पुलिस के मुखिया रहमान से मुलाकात की और अपने 'मिशन' की जानकारी दी।

घावरीजी ने बात शुरू की -

''हम सब गौ सेवक हैं। हम लोगों ने गौ सेना बनाई है। हमारे लोग शहर भर में दौरा करेंगे और खासकर खालबाड़ा या ऐसे स्थानों में जाएँगे, जहाँ चोरी-छिपे गायों को काटने के लिए लाया जाता है। हम शहर से बाहर तस्करी करके ले जाने वाली गायों पर भी नज़र रखना चाहते हैं। हमें आपकी मदद चाहिए।''

''यह तो बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं आप लोग।'' रहमान उत्साहित होकर बोले,''मेरे लायक कोई काम बताइए।''

''काम छोटा-सा है।'' घावरीजी बोले, ''हम लोग गौ सैनिकों को एक परिचय-पत्र जारी करेंगे। ये लोग कानून अपने हाथ में नहीं लेंगे, लेकिन जो गौ तस्कर हैं, उन्हें जबरन पकड़ेंगे और आप तक पहुँचाएँगे। बस, हमारे गौ सैनिकों को कोई परेशानी न हो, हम इतना ही चाहते हैं।''

''अरे, इतनी-सी बात।'' रहमान मुसकराए और बोले - ''गौ सैनिक तो पुलिस का ही काम कर रहे हैं, इसलिए वे हमारे सहयोगी हैं। हम उनको पूरा संरक्षण देंगे। मैं तो कहता हूँ, आप जो परिचय-पत्र जारी करेंगे, उस पर हमारी मुहर भी लगवा लीजिए, ताकि घटनास्थल

पर सिपाही आप लोगों की फौरन मदद कर दें। मैं सभी थानों में परिपत्र भी जारी करवा दूँगा। मैं तो कहता हूँ, इस गो सैनिक अभियान को पूरे प्रदेश में चलाइए। गृहमंत्री से मिल लीजिए। मुझे लगता है गौ सैनिकों का यह कांसेप्ट धीरे-धीरे देश भर में फैलेगा। गौ सैनिकों के कारण मवेशियों की तस्करी रुक सकेगी।''

मुजफ्फर भाई ने कहा - ''आपने अच्छा सुझाव दिया। हम लोग बहुत जल्दी मंत्री जी से भी मिलेंगे। गौ सेवा आयोग की भी मदद लेंगे।''

''जी हाँ। जल्दी करें, क्योंकि गायों को बचाना है। गाय की हत्या करने वाले पापी हैं। उन्हें तो कठोर से कठोर दंड देना चाहिए।' रहमान ने कहा, 'मैं भी गाय को बहुत मानता हूँ। आपको तो पता ही होगा कि 'अथर्ववेद' में साफ कहा गया है कि 'यदि तू हमारी गौ, घोड़ों और पुरुषों की हत्या करता है, तो हम तुझे सीसे की गोली से बींध देंगे'। मैं भी यही कहता हूँ अगर कोई गो वध करता है, तो हम उसे सींखचों के पीछे डाल देंगे।''

''अरे वाह, तो आप इतनी गहराई से जानते हैं गौ माता के बारे में?'' घावरीजी खुश होकर बोले, ''तो आप भी हमारे संघ से जुड़ जाइए।''

''लो भाई, जुड़ गए। भविष्य में जब कभी बैठक हो, बुला लें, मैं आ जाऊँगा', रहमान ने कहा, ''देखिए, 'अथर्ववेद' में ही एक जगह यह बात कही गई है कि 'जो व्यक्ति गाय को लात मारता है और सूर्य के सामने पेशाब करता है, उस पुरुष को मैं जड़-मूल से काट गिराता हूँ'। और आपको यह भी पता होगा कि यक्ष ने युधिष्ठिर से कुछ प्रश्न किए थे। यक्ष ने एक प्रश्न यह भी किया था, 'किं अमृतम्', यानी अमृत क्या है, तब युधिष्ठिर ने उत्तर दिया था, 'गौ दुग्ध ही अमृत है', तो आदरणीय, हम भी थोड़ा-बहुत जानते हैं : लेकिन नौकरी के चक्कर में घनचक्कर बने हुए हैं।''

''आप जैसे भावुक लोग पुलिस की नौकरी में कैसे आ गए?'' घावरीजी ने मुसकरा कर पूछा, तो रहमान ने ठहाका लगाया और कहा, ''इसीलिए कि लोगों को पता चले कि यहाँ गलत लोग ही नहीं भरे पड़े हैं। कुछ अच्छे लोग भी हैं भाई।''

इतना बोलकर रहमान उठ खड़े हुए, ''अच्छा, अब मुझे इजाज़त दीजिए। मुझे एक मीटिंग में जाना है। आप लोग फिर आइए। लोकल लेबल पर आप 'गौ सैनिक' बनाने का काम शुरू कर दें। मेरा पूरा सपोर्ट रहेगा। ओके। फिर मिलते हैं।''

घावरीजी और मुजफ्फर भाई भी उठ खड़े हुए। दोनों एक-दूसरे को देख रहे थे और प्रसन्न थे कि उनकी 'गौ सैनिक' योजना रंग लाएगी।

'सर्वधर्म गौ रक्षा संघ' के सदस्य जहाँ भी जाते, एक ही बात करते - ''इस देश में शिव सेना, बजरंग सेना, या हुसैनी सेना से भी ज्यादा ज़रूरी है गौ सेना। धर्म कभी खतरे में नहीं पड़ सकता। हम अपने-अपने धर्मों की चिंता न करें। गाय की चिंता करें, क्योंकि गाय खतरे में है। हर साल देश के कसाईखानों में लाखों गायें काटी जाती हैं। वे तस्करी के ज़रिये कसाईखानों तक

पहुँचती हैं। इस तस्करी को रोकने के लिए अब जुझारू किस्म के गौ सैनिकों की ज़रूरत है।

...और ऐसा वातावरण बना कि देखते ही देखते हर शहर-गाँव में गो सैनिक तैयार होने लगे। घावरीजी और मुजफ्फर भाई के कहने पर ये गौ सैनिक देश भर में कसाईखाने के बाहर धरना-प्रदर्शन के लिए भी जाते और खुशी-खुशी अपनी गिरफ्तारियाँ देते। आसपास के इलाकों का दौरा करते। नाकों पर आने-जाने वाले वाहनों की तलाशी लेते कि कहीं मवेशियों की तस्करी तो नहीं हो रही है। इन सैनिकों ने कुछ ट्रकों को पकड़ा भी और गायों को मुक्त करा कर गौ शालाओं तक पहुँचाया।

देश के अनेक बड़े शहरों में 'सर्वधर्म गौ रक्षा संघ' की शाखाएँ खुल गई थीं। लोग उत्साह के साथ गौ रक्षा के लिए एकजुट हो रहे थे और गौ सैनिक बन रहे थे। अचानक देश में चलने वाली गौ-लहर को देखकर विपक्षी राजनीतिक दलों की जीभ लपलपाने लगी। हर दल के लोग इस मुद्दे को भुनाने की कोशिश में भिड़ गए। बयान आने लगे कि हमारी पार्टी की सरकार बनी, तो वह गो-वध निषेध कानून को लागू करवा कर रहेगी...वादा रहा। हर तरफ बयानबाज़ी होने लगी। पूरे देश में सात नवंबर...सात नवंबर की धूम मच गई। उधर राजधानी में बैठी सरकार चिंतित हुई कि पता नहीं क्या होगा। लेकिन वह निश्चिंत थी, क्योंकि निहत्थे लोगों से निपटने के लिए उसके पास हथियारलैस मजबूत और दमन करने के मामले में जुझारू पुलिस-तंत्र पहले से ही मौजूद था।

सरकार की अपनी तैयारी थी और गौ भक्तों की अपनी तैयारी।

सात नवंबर को राजधानी कूच की देशव्यापी तैयारी ने जोर पकड़ लिया। लोगों ने अपने खर्चे पर राजधानी का टिकट कटवाए।

सबके सब एक-एक दिन गिनते रहे कि कब वे पहले राजधानी कूच करें।

चौदह

सरायपुर में जब गो रक्षा के लिए आंदोलन चल रहा था, उसी दौर में रोजगार की तलाश में भटक रहे खेमराज की मुलाकात अपने काका के लड़के श्यामसुंदर से हो गई। खेमराज मनेंद्रगढ़ में रहता था। एक दिन वह अपने भाई श्यामसुंदर से मिलने सरायपुर आया। श्यामसुंदर पुरानी बस्ती में अपनी डेयरी चलाता था। उसकी डेयरी में बीस-पच्चीस गायें होंगी। इससे उसे काफी दूध हो जाता था। दूध, गोबर और गौ मूत्र बेचकर ही अच्छी-खासी कमाई कर रहा था। यही सुन कर खेमराज आया था कि शायद भाई से कुछ टिप्स मिले।

खेमराज श्यामसुंदर के पास पहुँचा और बोला ''भैया, तुम्हारा कारोबार तो अच्छा जम गया है। आजकल डेयरी ही चला रहे हो कि साथ में कोई और काम भी कर रहे हो ?''

''अरे, इस डेयरी को ही सँभाल लूँ, वही बहुत है।'' श्यामसुंदर ने प्रफुल्लित हो कर कहा, ''भला हो इन गउ माताओं का । जब से इनकी शरण में आया हूँ, मुझे किसी दूसरे धंधे का ख्याल भी नहीं आता। महीने में एक लाख रुपए की कमाई हो रही है।''

''एक लाख!'' खेमराज की आँखें फटी की फटी रह गईं, ''वह कैसे? गायों से इतनी कमाई हो जाती है?''

''अरे भैया, गाय को तुमने समझ क्या लिया है?', श्यामसुंदर बोला 'गाय यानी नोट छापने की मशीन। मेरे यहाँ कुल पच्चीस गायें हैं। इनमें अभी पंद्रह गायें दूध दे रही हैं, जिसे अपने ग्वालों के माध्यम से कुछ घरों में पहुँचाता हूँ। तीस रुपए लीटर बेचता हूँ। शुद्ध दूध। रोज पंद्रह सौ लीटर दूध होता है। यानी साढ़े चार हज़ार रुपए का दूध। महीने के हो गए एक लाख पैंतीस हज़ार रुपए। यह तो दूध की कमाई हुई। फिर गोबर है, गो मूत्र है। इससे भी आय हो जाती है। गोबर से कंडे बनते हैं। गोबर ले जाने वाले से भी पैसे लेता हूँ और गो मूत्र ले जाने वालों से भी। एक-एक लीटर गौ मूत्र पचास-पचास रुपए में बिक जाता है। तीस रुपए लीटर दूध और गो मूत्र पचास रुपए लीटर। है दुनिया में ऐसा कोई जीव, जिसका मूत्र भी इतना फायदेमंद हो?''

''भैया, मानना पड़ेगा आप को। पक्के बिजनेसमैन हो गए हैं।'' खेमराज बोला, ''मुझे लगता है कि अगर मैं भी गो पालन के धंधे में लग जाऊँ, तो रोज़गार के लिए इधर-उधर भटकने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।''

''तो अभी तक कर क्या रहे थे?' श्यामसुंदर हँस पड़ा और बोला, ''हद है, तुम इतने बड़े हो गए हो और अभी तक बेकार घूम रहे हो? क्या यार, पहले तो तुम्हारे यहाँ भी गायें पलती थीं। बचपन में मैंने देखा था। वहीं से तो मुझे प्रेरणा मिली और मैंने गौ पालन शुरू कर दिया और तुम लोगों ने बंद कर दिया, वाह!''

खेमराज का चेहरा लटक गया। थोड़ी देर तक खामोश रहने के बाद बोला, ''बचपन में तो गायों की सेवा करना अच्छा लगता था, लेकिन जैसे-जैसे बड़ा होता गया, गो पालन में दिलचस्पी नहीं रही। बहुत मेहनत का काम है भाई। गाय के लिए चारा-सानी बनाओ। पानी पिलाओ। गायों को नहलाओ-धुलाओ। यह करो..वह करो। मैं तो थक जाता था। पिताजी बूढ़े हो गए हैं। उनका शरीर अशक्त हो गया है। अकेले कितना करते, सो उन्होंने सारी गायें बेच दीं। बस, समझ लो, उसी दिन से घर की बदहाली शुरू हो गई। पहले दूध, दही, घी के लिए कहीं जाना ही नहीं पड़ता था, लेकिन अब तो बाज़ार का मिलावटी दूध, दही, और घी खा रहे हैं।''

''कितने दुख की बात है खेमराज, और यह सब तुम्हारी लापरवाही का ही नतीजा है।'' श्यामसुंदर ने खेमराज के कंधे पर हाथ रखकर कहा, ''अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है मेरे भाई। मेरी मानो, तो गाँव लौट जाओ और फिर से गो पालन शुरू कर दो। तुम्हारे पास इफरात जगह है। दस गायें तो आराम से पाली जा सकती हैं। गायें पालो और बगल में जो खाली ज़मीन पड़ी है, वहाँ खेती करो। देखो, मेहनत तो करनी ही पड़ेगी। इसके अलावा कोई रास्ता

नहीं। मेहनत करोगे तो तुम्हारी हेल्थ भी बन जाएगी। अभी काफी दुबले-पतले हो गए हो। गौ सेवा में सुबह-शाम भिड़ने से खासा व्यायाम हो जाएगा। और जब घर का शुद्ध दूध-घी होगा, तो शरीर में लगेगा भी। देखो मेरी बॉडी। गो सेवा के कारण ही फिट रहता हूँ।''

श्यामसुंदर की बातें सुनकर खेमराज की आँखें भर आईं। ये पश्चाताप के आँसू थे। अपनी कर्महीनता के कारण उसने खुद को और घर को बदहाली के कगार तक पहुँचा दिया था।

''आँसू बहाने की ज़रूरत नहीं है खेमू, आत्ममंथन की ज़रूरत है।' श्यामसुंदर ने आत्मीय स्वर के साथ अपने भाई को समझाते हुए कहा, ''काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। भिड़ जाओ इसी काम में। देखना, गो माता तुम्हारा कल्याण करेगी।''

''लेकिन.. गाय खरीदने के लिए पैसे कहाँ से आएँगे ?'' खेमराज संकोच करते हुए बोला

''अरे, उसकी चिंता मत करो, मैं हूँ न!' श्यामसुंदर बोला, ''चलो, मैं तुम्हें एक गाय और एक बछड़ा देता हूँ। गाय चालीस हज़ार रुपए की है।''

''लेकिन मेरे पास तो फूटी कौड़ी नहीं है।''

खेमराज की घबराहट देखकर श्यामसुंदर हँस पड़ा, ''अरे, अभी पैसे कौन माँग रहा है। तुम तो ले जाओ। जब कमाई होने लगे, तो धीरे-धीरे लौटाते रहना।''

''हाँ, यह ठीक रहेगा।'' खेमराज के चेहरे पर चमक आ गई। बोला, ''भैया, मैं कोशिश करूँगा कि साल भर के भीतर ही आपके पैसे लौटा दूँ।''

''लौटा ही देना, वरना आपस के संबंध खराब होंगे।'' श्यामसुंदर ने मज़ाकिया लहजे में कहा, 'मेरी उदारता का दुरुपयोग मत करना। तुम मेरे भाई हो। तुम्हें सहयोग करना मेरा कर्तव्य है। गौ माता की सेवा कर रहा हूँ, इसलिए मन में गाय-जैसी सरल भावना भी आ गई है लेकिन ध्यान रखना, अगर ईमानदारी से काम न किया, तो ठीक नहीं होगा। मैं साँड बनकर सींग मारूँगा और पूरे पैसे वसूल कर लूँगा।''

श्यामसुंदर की बात सुन कर खेमराज हँस पड़ा। फिर गंभीर होकर कुछ सोचने लगा। श्यामसुंदर ने परिहास में जो बातें कीं, उसके पीछे की चेतावनी को समझ रहा था। श्यामसुंदर ने अपना समझ कर मेरी मदद के लिए हाथ बढ़ाया है। अब मेरा दायित्व है कि इसके भरोसे पर खरा उतरूँ।

खेमराज बोला, ''भैया, कसम खाता हूँ कि आप जैसा बोल रहे हैं, मैं बिल्कुल वैसा ही करूँगा। आपने जो बातें बताई हैं, उस पर अमल करूँगा। एक साल बाद आ देखिएगा।''

''ठीक है, तो मैं एक साल तक बिल्कुल तगादा नहीं करूँगा।'' श्यामसुंदर ने मुसकराते हुए कहा, ''एक साल बाद मनेंद्रगढ़ आकर पूरे पैसे वसूल लूँगा, हाँ।''

''मंजूर है। आपने हौसला दिया है, तो गाँव की कुछ ज़मीन बेचकर बाद में मैं और दो गायें खरीद लूँगा। तीन गायों के सहारे काम शुरू करूँगा।''

''चलो, गौ माता तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करे।'' श्यामसुंदर बोला, ''लेकिन एक बात

का ध्यान रखना। गाय को पशु मत समझना। उसे अपनी माँ समझ कर ही व्यवहार करना। ठीक से खिलाना-पिलाना, नहलाना-धुलाना। बछड़े की सेवा भी करना। गाय के दो थन को बछड़े के लिए छोड़ देना क्योंकि बछड़े को भी दूध चाहिए।''

''आपकी बातों का ध्यान रखूँगा।'' इतना बोलकर खेमराज उठ खड़ा हुआ और जाने लगा। श्यामसुंदर ने कहा ''अरे, खाली हाथ कैसे जा रहे हो? गाय-बछड़े को तो साथ ले जाओ।''

खेमराज हँस पड़ा- ''अरे हाँ, मैं तो अपनी धुन में था कि अब मुझे नई शुरुआत करनी है। ठीक है, अब गौ माता को साथ ही ले जाता हूँ। मगर..कैसे ले जाऊँ ?''

''ट्रेन में बुक करना होगा। कोई दिक्कत नहीं आएगी। जाकर पता कर लो। नहीं तो ऐसा करो, मनेंद्रगढ़ तक के लिए एक मेटाडोर बुक करा लो। लेगा दो-तीन हज़ार लेकिन गाय तुम्हारे साथ सुरक्षित पहुँच जाएगी।''

''हाँ, यह ठीक रहेगा।''

खेमराज खुशी-खुशी निकला और एक मेटाडोर तय करके ले आया। श्यामसुंदर ने एक हृष्ट-पुष्ट दुधारू गाय और उसके बछड़े को मेटाडोर में लदवा लिया। खेमराज श्यामसुंदर के पैर छूने लगा, तो श्यामसुंदर ने उसे गले से लगा लिया और बोला, ''जाओ और इस गौ माता की कृपा से अपने पैरों पर खड़े हो जाओ।''

दूसरे दिन खेमराज के घर के सामने एक मेटाडोर रुकी तो पिताजी वंशराज बाहर आए। खेमराज को गाय-बछड़े के साथ देखकर वे खिल उठे। प्रसन्न होकर बोले -

''अरे बेटा, यह क्या है ? गाय-बछड़ा ? ये कहाँ से ले आए?''

''पिताजी, श्यामसुंदर भैया ने दिया है। अब मैं सोच रहा हूँ कि शहर में इधर-उधर धक्के खाने की बजाय गौ पालन ही करूँ।''

''वही तो, मैंने भी तुमको शुरू में समझाया था लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी, वरना आज अपने पास भी बीस-पच्चीस गायें होतीं। हमारे घर में दूध-घी की नदियाँ बहतीं। लेकिन तुमको तो यह छोटा काम लगता था न। खैर, चलो कोई बात नहीं। सुबह का भूला शाम को घर लौट आए तो वह भूला नहीं कहलाता।''

पिता ने खेमराज को आशीर्वाद दिया। माँ मंद-मंद मुसका रही थी। उसने भी कहा, ''यह तूने ठीक निर्णय किया बेटा। अब हमें दूध की कमी नहीं होगी। तेरे बच्चे को पानी मिला दूध पिला कर मुझे भी अच्छा नहीं लगता था। हमें शुद्ध दूध मिलेगा। तुम और बहू दोनों भिड़ जाना। मैं भी मदद करूँगी।''

पूरे परिवार ने आँगन साफ किया। और बहुत पहले जहाँ गायें बाँधी जाती थीं, उस पुराने गोष्ठ को भी ठीक-ठाक किया। खेमराज ने अनुमान लगाया कि वहाँ दस गायें तक तो आसानी से रखी जा सकती हैं। उस हिसाब से उसने दिन भर भिड़कर गोष्ठ को ठीक कर दिया। गाय के लिए चारे-सानी और पानी का बंदोबस्त भी कर दिया।

रात हो चुकी थी। खेमराज खाना खाने के बाद सो गया। दिन भर की थकान थी। बिस्तर पर जाते ही उसे नींद आ गई और वह सीधे स्वप्न-लोक में चला गया। देखता क्या है वह एक पेड़ पर बैठकर बाँसुरी बजा रहा है और उसके चारों ओर गायें खड़ी हैं। फिर उसने देखा, वह जंगल में गैया चरा रहा है।... उसके इर्द-गिर्द एक नहीं, सौ गायें हैं।.. वही उन सबका मालिक है। फिर दृश्य बदला।... उसका कच्चा मकान दो मंजिला पक्के भवन में तब्दील हो गया है।...बगल में बहुत बड़ा गोठान है, जिसमें गायें नज़र आ रही हैं।... घर के बाहर एक कार खड़ी है।....कार में उसके माता-पिता बैठे हैं।... पत्नी हाथ हिला रही है।... उसका बच्चा गोपीनाथ कार चला रहा है...।

सारी रात खेमराज सपने देखता रहा। सुबह वह जल्दी उठ गया और तेजी के साथ गोठान की ओर दौड़ा। उसने देखा, गाय अपने बछड़े के साथ खड़ी है। खेमराज मुसकरा पड़ा। ओह तो...उसने सपना देखा था।

'एक दिन मेरा यह सपना पूरा होकर रहेगा।' वह बड़बड़ाया और गौ माता को प्रणाम करने के बाद उसके शरीर पर हाथ फेरता रहा। उसने बाहर जाकर गाय के लिए चारा-सानी का बंदोबस्त किया। सीमेंट की पुरानी नाँद को साफ कर के उसमें पानी भर दिया। गाय ने जी भर कर सानी खाया और बछड़ा माँ का थन चूसने लगा।

गाय-बछड़े को व्यस्त देखकर खेमराज के पिताजी के पास गया और बोला - ''पिताजी, आप भी गाइड कीजिएगा कि और क्या करना है। अब मैं गौ पालन ही करना चाहता हूँ। इसमें काफी 'स्कोप' है। श्यामसुंदर भैया तो लाखों में खेल रहे हैं। पिताजी, मुझे दो गायें और चाहिए।''

''तू चिंता मत कर।'' पिताजी बोले, ''अपन अपनी कुछ ज़मीन बेच देते हैं। चैनपुर में अपनी पंद्रह हज़ार वर्गफुट ज़मीन पड़ी है। उसमें से दो-चार हज़ार वर्गफुट निकाल देते हैं। उससे अपने को एक-डेढ़ लाख रुपए मिल जाएँगे। इससे तुम दो-तीन गायें खरीद लेना और बाकी के पैसों से गायों के आहार की व्यवस्था करना।''

''पिताजी, गाय के आहार के बारे में बता दीजिएगा कि मुझे क्या करना है। बचपन में आपने खूब सेवा की है। आपको तो काफी 'आइडिया' है। बता दीजिए। मैं नोट ही कर लेता हूँ।''

बेटे की लगन देखकर पिता भावुक हो उठे। खुद को सँभालते हुए बोले, ''बेटा, यही भावना गौ सेवा की बुनियाद है। गाय तो कोई भी पाल लेगा लेकिन उसकी सही देख-रेख में ही लोग बेईमानी करते हैं। तुम यह मत करना। मैंने जैसा किया, वही बता रहा हूँ। यह बात ध्यान में रखना कि गाय को भी साफ-सुथरा जल मिले। उसे केवल सूखा चारा नहीं, हरा चारा भी चाहिए। गाय अगर चरने जाती है, और वहाँ जब वह चारा खाती है, तो तृप्त होकर अधिक दूध देती है। गेहूँ की दलिया, अरहर, चना, मूँग, मसूर आदि की भूसी, गुड़, दाल का पानी, चावल का माँड़, रोटी-दलिया यह सब गाय के लिए एकदम उपयुक्त आहार है। बरसात के समय गाय को हरे मक्के का चारा मिल जाए, तो अति उत्तम। जो गाय पाँच लीटर तक दूध देती है, उसे पाँच किलो सूखा चारा और बीस-तीस किलो हरा चारा मिलाकर खिलाना चाहिए।''

खेमराज पिता की बातें 'नोट' कर रहा था, ''पिताजी, गाय के चारे के बारे में बताइए और किस का चारा खिलाया जा सकता है।''

पिता बोले, ''हाँ, नोट कर लो। हरे मक्के की करबी, गेहूँ का हरा पौधा, जौ की चरी, मटर का पौधा, ज्वार और सरसों की चरी, चना, उड़द-मूँग और गेहूँ आदि के हरे पौधे, ये सब गाय के सही आहार हैं। लेकिन गाय को क्या नहीं खिलाना है,यह भी महत्वपूर्ण बात है। इसे भी ध्यान में रख लेना।''

''हाँ, पिताजी, उसके बारे में भी बता दीजिए।''

तभी खेमराज की पत्नी सुधा आ गई। वह ट्रे में दो गिलास दूध लेकर आई थी।

''वाह, अपनी गाय का है? बहुत अच्छा। दे दो। देखें, कैसा है।'' पिताजी ने लपक कर गिलास उठा लिया और पीकर बोले, ''अहा, कितना गाढ़ा है। मज़ा आ गया। अरसे बाद इतना स्वादिष्ट दूध पीने को मिला है।''

''आज सुबह ही दुह लिया था। रामदीन ग्वाले को बुलवाया था। उसने दुह लिया। मैंने भी अब सीख लिया है।''

''अच्छा है।'' पिताजी बोले, ''अब नोट कर लो कि गाय को चने की खली भूसी ज्यादा मत देना। इसमें फास्फोरस अधिक होता है, जिसके कारण गाय का दूध सूख जाता है। बाजरे के दाने भी मत देना। यह गर्म होता है। इससे भी दूध सूख जाता है। सूखी रोटी, उड़द की दाल, गन्ने की पत्तियाँ, सन की पत्तियाँ, मक्के, बाजरे की चरी भी नहीं खिलाना चाहिए। खली उड़द की दाल भी मत खिलाना, इससे गाय की नली में दबाव पड़ता है। गाय पर गलत असर हो सकता है। यह भी ध्यान रखने की बात है कि हम गाय को गंदा या सड़ चुका जूठन भी कभी न खिलाएँ। इसे खाकर गाय बीमार पड़ सकती है। दूध भी प्रदूषित हो सकता है।''

''पिताजी, मैंने सरायपुर में देखा था कि गायें सड़कों पर इधर-उधर भटक रही हैं और जूठन खा रही हैं। पॉलीथिन में रखे जूठनों को बेचारी थैली सहित खा रही थीं। बड़ा दुःख हुआ।''

''बेटा, शहरों में गायों की जितनी दुर्दशा हो रही है, उसे देख-सुनकर मुझे भी रोना आता है।' खेमराज की बात सुनकर पिताजी बोले, 'वहाँ की गायों के पेटों से पॉलीथिन की थैलियाँ निकलती हैं। इन थैलियों के कारण गायें बीमार हो जाती हैं। कभी-कभी मर भी जाती हैं बेचारी। गाय कम दूध दे रही है, इसका मतलब है कि उसे पूरा आहार नहीं मिल रहा है। वह भूखी है। सचमुच शहर में गो वंश बे-चारा होता जा रहा है। वैसे भी उसके लिए चारा है कहाँ? हर कहीं तो कॉलोनियाँ तन गई हैं।''

खेमराज पिता द्वारा बताई जानकारियों को पूरी गंभीरता के साथ डायरी में नोट कर रहा था। यह देख पिता मन ही मन बहुत खुश हुए। वे सोच रहे थे कि बेटे को सद्बुद्धि आ गई है। लगता है यह कमाल करेगा। फिर बोले, ''बेटे, तुम गौ पालन के मामले में बहुत गंभीर लग रहे हो, इसलिए मैं चाहता हूँ कि गाय के बारे में जितनी भी बातें पता चलती हैं, उसे नोट करते जाना। अपने यहाँ गो साहित्य बहुत अधिक तो नहीं है, फिर भी जितना उपलब्ध है, उसको

पढ़ कर भी तुम श्रेष्ठ गो पालक बन सकते हो। गीता प्रेस, गोरखपुर ने भी कुछ पुस्तकें छापी हैं। उन्हें ज़रूर देख लेना।''

''मैं भी यही सोच रहा हूँ।'' खेमराज बोला, ''एक-दो दिन बाद शहर जाकर कुछ गो साहित्य खरीद लाऊँगा।''

इतना बोलकर खेमराज उठ खड़ा हुआ। पिताजी आराम करने चले गए। खेमराज एक बार गोठान की ओर गया। गाय और बछड़े को देखकर प्रसन्न हो गया। खेमराज को देखकर गाय रँभाई। उसे लगा, गाय बोल रही है - 'आओ बेटा'।

खेमराज गाय के पास पहुँचा और गाय पर हाथ फेरने लगा। गाय ने अपनी गर्दन उठा दी, तो खेमराज गर्दन को सहलाने लगा। उसने बछड़े को गले लगाया। वह काफी चंचल था। इधर-उधर कुलाँचें मारता था। थोड़ी देर तक गोठान में रहने के बाद खेमराज गाँव की तरफ निकल गया।

गोठान में बँधी सुंदर-सी गाय को खेमराज की पत्नी भी देखती रहती थी। उसने गाय का नामकरण भी कर दिया था - 'सावित्री'। बछड़े को भी नाम दे दिया था - 'हीरो'।

जब खेमराज घर से बाहर चला जाता, तो सुधा सावित्री और हीरो को समय-समय पर चारा पानी दे आती थी।

कुछ दिन ऐसे ही खुशियों के साथ बीत गए। गाय सुबह-शाम पाँच-पाँच लीटर दूध दे रही थी। घर की ज़रूरत के हिसाब से दो लीटर पर्याप्त था। इसलिए खेमराज ने आसपास के दो-एक घरों में 'चंदी' बाँध दी। लोग आते और खेमराज के गोठान से ताज़ा दूध ले जाते। एक दिन में उसे दो सौ चालीस रुपए की कमाई हो रही थी। उसने हिसाब लगाया, महीने में सात हज़ार दो सौ रुपए। तीन गायें होतीं तो इक्कीस हज़ार रुपए कमाता। लेकिन इतनी जल्दी ज़मीन कैसे बिके। वह दिन भर इसी चक्कर में घूमता रहता। उसे लग रहा था, कितनी जल्दी वह गाय से अधिक से अधिक पैसे कमा ले।

एक दिन खेमराज की मुलाकात एक पुराने ग्वाले मनसुखलाल से हो गई। उसकी मिठाई की दुकान थी जो इसलिए नहीं चलती थी, कि वह शुद्ध नहीं रहती। गाँव के लोग मनसुख को देख कर ही कन्नी काट लेते थे। मनसुख को जब पता चला कि खेमराज ने एक गाय पाल ली है तो उसने कहा, ''बधाई हो भाई, आप भी गो सेवक बन गए। आजकल के लड़के तो गाय पालना, गाय की सेवा करना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। तुमने पढ़-लिखकर किसी की नौकरी करने की बजाय खुद का कारोबार शुरू करने की दिशा में कदम बढ़ाया है, यह बड़ी बात है। अभी एक गाय है। जल्दी से इसकी संख्या बढ़ाओ। जितनी गाय, उतनी आय। अभी जो गाय है, वह कितना दूध दे रही है? दस से ऊपर तो दे ही रही होगी ?''

''अरे कहाँ यार, ले दे कर पाँच लीटर ही दे रही है।''

''एक टाइम में ?''

''हाँ, एक टाइम में।''

''बहुत कम है..बहुत कम है । दस लीटर देना चाहिए। गाय तो स्वस्थ ही होगी। अच्छा

खिला-पिला भी रहे होगे। फिर भी दूध कम दे रही है। ध्यान दो। ऐसा तो नहीं कि ग्वाला जो दुहने आता है, वही कुछ पार कर देता हो।''

''नहीं-नहीं भाई, वह मेरे सामने ही दुहता है।''

''फिर तो ऐसा नहीं होना चाहिए। ओह, समझा, दो-तीन लीटर तो बछड़ा ही पी लेता होगा।''

''हाँ, वह तो पीता है। पिताजी ने कहा है कि पहले बछड़े को पीने देना। फिर दुहना।''

''बस, इसी भावुकता में तो हम लोग मर जाते हैं। गरीब रह जाते हैं।' मनसुख बोला- 'अरे भाई, बछड़े को थोड़ा बहुत पिला दो, काफी है। एक उपाय है। देखना, इससे दूध पाँच का सात लीटर तो हो ही जाएगा।''

इतना बोलकर मनसुख ने इधर-उधर देखा, फिर धीरे-धीरे बोलना शुरू किया, ''गाय का दूध बढ़ाने का एक और 'सॉलिड' उपाय है मेरे पास। लेकिन तुम किसी को बताओगे तो नहीं? तुम अपने हो, इसलिए बता रहा हूँ।''

''क्या उपाय है भाई और ऐसा क्या रहस्य है जो किसी को पता न चले?'' खेमराज को मनसुख की बातें समझ में नहीं आई। उसने मनसुख के चेहरे को पढ़ने की कोशिश की। उसे लगा, उसके चेहरे पर कुटिलता तैर रही है।

''अरे, ज़्यादा महंगा तरीका नहीं है। यह काम किया जा सकता है।'' मनसुख ने फिर इधर-उधर देखा और दबी आवाज़ में बोला, ''मैं भी यही करता हूँ। तुम भी करो। गाय को एक इंजेक्शन ठोंको। इससे उसका दूध बढ़ेगा। शर्तिया बढ़ेगा।''

''इंजेक्शन...! कैसा इंजेक्शन?'' खेमराज अवाक् रह गया।

''अरे, एक इंजेक्शन है। उसका नाम ही भूल जाता हूँ। बड़ा कठिन-सा नाम है: हाँ, 'ऑक्सीटोनिक' या ऐसा ही कुछ है। बाज़ार में मिल जाता है। देखो, क्या है कि कई बार गाय चालाकी से काम लेती है। जब तक बछड़े को उसके पास न लाओ, वह दूध नहीं देती। बछड़े को पास लाओगे तभी वह दूध अपने थनों में उतारती है। ऐसे में तो बछड़ा ही आधा से ज़्यादा दूध पी जाता है, इसलिए हम लोग बछड़े को पास ही नहीं लाते और इंजेक्शन पेल देते हैं। इंजेक्शन लगते ही गाय की मांस-पेशियों में हलचल होती है और उसके थनों में दूध उतर आता है।'' इतना बोल कर मनसुख हँसा, 'हें...हे...कैसी है तरक़ीब? है न ज़ोरदार..आइडिया?''

''बाप रे!'' भयानक इंजेक्शन है यह। इससे गाय को नुकसान नहीं होता?''

''अरे, तत्काल तो नहीं होता। इंजेक्शन लगने के बाद भी गायें ज़िंदा रहती हैं।'' मनसुख ने फिर इधर-उधर देखा और कहना शुरू किया - ''वैसे सच तो यह है कि इंजेक्शन खतरनाक है। इंजेक्शन लगाने के बाद गाय जो दूध देती है, उसको पीकर आदमी की सेहत पर बुरा असर पड़ता है। जानकर लोग कहते हैं कि आदमी के दिमाग पर उसका असर पड़ता है। लेकिन अपने को क्या? मेरी अपनी एक स्पेशल गाय है, उसे बिना इंजेक्शन लगाए अपनी ज़रूरत का दूध निकाल लेता हूँ।''

''मनसुख भाई, लेकिन गाय को इंजेक्शन लगाना गलत बात है', खेमराज बोला, 'अब मुझे भी याद आ रहा है इसके बारे में। लोग इसका विरोध करते हैं। मैं तो कभी न लगाऊँ।''

''मत लगाओ। बछड़े को पिला दो पूरा दूध और कम दूध का रोना रोते रहो' मनसुख ने मुँह बनाया, 'ठीक है, अब मैं चलूँ। बहुत से काम करने हैं।''

मनसुख जाने लगा तो खेमराज ने आवाज़ दी, ''अरे यार, तुम तो नाराज़ हो गए। अच्छा, एक बार ट्राई करके देखता हूँ। ले आऊँगा। लेकिन पहली बार तुम मुझे इंजेक्शन लगाना तो सिखा दो।''

''यह हुई न मर्दों वाली बात।'' मनसुख चहका और खेमराज का कंधा थपथपाते हुए बोला, ''शाम को तेरे घर आऊँगा इंजेक्शन लेकर। देखना फिर उसका असर।''

''ठीक है, मैं इंतज़ार करूँगा।''

शाम को मनसुख समय पर पहुँच गया। सामने खेमराज के पिता वंशराज को देखकर वह सकपका गया। हड़बड़ा कर बोला- ''हें....हें...चाचाजी, नमस्ते! खेमराज है घर पर ?''

''हाँ, है । पीछे गोठान में कुछ काम कर रहा है।''

''ठीक है, मैं वहीं मिल लेता हूँ।''

''ये तुम्हारे झोले में क्या है भाई? कहीं आन गाँव जा रहे हो क्या?'' वंशराजजी ने सहज भाव से पूछ लिया तो मनसुख ने हकलाते हुए जवाब दिया, ''न...नहीं तो। बस... ऐसे ही।''

इतना बोलकर मनसुख अंदर चला गया। वंशराजजी को समझ में नहीं आया कि आखिर मनसुख डरा-डरा सा क्यों है? वे रामचरित मानस पढ़ने लगे लेकिन उनके मन में पता नहीं क्यों कुछ शंका हो गई। मनसुख के बारे में उन्हें पता था कि वह चालू किस्म का आदमी है। ठीक है कि गौ पालन करता है, उसकी खेती-बाड़ी भी है लेकिन नंबर एक का तिकड़मी भी है। दूध में पानी मिलाना, खेतों में कीटनाशक डालना और लोगों से लड़ाई-झगड़ा करना भी उसकी आदत थी। पता नहीं, यहाँ किस लिए आया है?

वंशराज उठे और दबे पाँव आँगन तक पहुँच गए और दरवाजे की आड़ लेकर मनसुख का तमाशा देखने लगे। उन्होंने देखा, मनसुख झोले में से कुछ चीज़ निकाल रहा है। अरे... यह तो इंजेक्शन है। वे समझ गए कि यह तो गाय को लगाने वाला इंजेक्शन है!

'ओह...तो यह बात है। तभी मैं सोचूँ कि मनसुख घबरा क्यों गया था।' वंशराज बड़बड़ाए और तेजी के साथ बढ़े। इसके पहले कि मनसुख गाय को इंजेक्शन लगा पाता, वे पहुँच गए और कड़क शब्दों में बोले, ''ठहरो! यह क्या कर रहे हो मनसुख?''

''ब..ब....बाबूजी ये इंजेक्शन है।'' अचानक पिताजी के इस तेजी के साथ आने और आवाज़ लगाने से वह घबरा गया, मगर बात को संभालते हुए खेमराज बोला, ''कुछ दिनों से गाय कुछ कमजोर-सी लग रही थी। मैंने मनसुख भाई से चर्चा की तो वह इन्होंने कहा कि मेरे पास एक इंजेक्शन है। इसे लगा दूँगा तो ठीक हो जाएगी। यही है वह इंजेक्शन।''

खेमराज की बात सुनकर वंशराज हँस पड़े - ''अरे बेटे, अपने बाप को पाठ पढ़ाने की

कोशिश कर रहे हो? क्यों मनसुख, सच-सच बताना यह वही इंजेक्शन है, जिसके लगाने के बाद गाय प्रेशर में आकर दूध देने लगती है। क्या कहते हैं इसे, हाँ 'ऑक्सीटोसिन'। इतना सब मैं भी जानता हूँ।''

''जी... जी... वही है।'' मनसुख बोला, ''अच्छा रहता है। इससे गाय कुछ ज़्यादा ही दूध देती है।''

''गाय ज़्यादा दूध देती है, लेकिन इससे उसके गर्भाशय पर तो बुरा असर पड़ता है। दूध ज़हरीला हो जाता है। इसे पीकर आदमी की सेहत भी खराब हो जाती है। यह भी पता है न तुमको?''

वंशराजजी की गुस्से में भरी आवाज़ सुनकर मनसुख खामोश हो गया। उसे कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था। खेमराज भी सिर झुकाकर खड़ा था।

''अबे नालायक, तूने मुझसे चर्चा क्यों नहीं की कि गाय कम दूध दे रही है।'' वंशराजजी बोले, ''इस खतरनाक इंजेक्शन की जगह मैं तुझे कुछ होम्योपैथी दवाइयाँ बता देता। अरे, तू अभी से इतना लालची हो गया कि गाय की जान लेने पर तुल गया? बेटा, थोड़ा कम दूध भी हो तो क्या? बछड़ा पी लेता है, तो पी लेने दो। गाय के दूध पर तो असली उसका ही है। और बेटा मनसुख, तुम उल्टी पट्टी पढ़ाने में माहिर हो। हम सब तुझे जानते हैं। मेरे बेटे को काहे गलत रास्ता दिखा रहे हो?''

''ऐसी तो कोई बात नहीं चाचाजी।'' मनसुख हल्की-सी अकड़ के साथ बोला, ''मैं तो शुरू से ही यह इंजेक्शन लगा रहा हूँ।''

''अरे लगा रहे हो, तो कोई महान काम नहीं कर रहे हो का? गाय हमारी माँ है। माँ का दूध निकालने के लिए इंजेक्शन लगाया जाता है क्या? जाओ भाई, अपने घर जाओ। हम अपनी गाय को यह इंजेक्शन नहीं लगाएँगे : और मैं तो कहता हूँ कि तुम भी मत लगाओ। अगर गाय एकदम दूध नहीं दे रही है, तो तुम होम्योपैथी दवाई पिलाओ। देखना, गाय दूध देने लगेगी। लेकिन तुम लोगों की तो होम्योपैथी से कोई 'सिम्पैथी' ही नहीं है। लगाए जाओ इंजेक्शन और लोगों की सेहत से खिलवाड़ करते रहो।''

''ठीक है, अब से मैं होम्योपैथी दवाई ही दिया करूँगा।'' इतना बोलकर मनसुख ने अपने हाथ में रखे इंजेक्शन की सुई निकाल कर उसे डब्बे में डाला फिर झोले में रख लिया और तेजी के साथ बाहर निकल गया।

खेमराज बुरी तरह घबरा रहा था। सिर झुकाए खड़ा था। समझ गया कि अब उसकी और ज़्यादा खिंचाई होगी। वंशराज गुस्से में थे, कहीं झापड़ ही न जड़ दें। खेमराज मन ही मन 'जय हनुमान ज्ञान गुन सागर' का जाप करने लगा।

पिताजी ने शांत स्वर में कहा - ''देखो बेटा, तुम अब गौ पालन को अपना लक्ष्य बना रहे हो, तो मेरी मानो, ईमानदारी और धैर्य से काम करो। दो पैसे कम मिलें, लेकिन गलत रास्ता मत पकड़ो। इस तरह के इंजेक्शन लगाना गाय से दुराचार करना है। इसलिए कसम खाओ कि आज के बाद से ऐसा कोई गलत काम नहीं करोगे, जिससे गौ माता को नुकसान पहुँचे।''

खेमराज ने राहत की साँस ली कि पिता के थप्पड़ से बच गया। ज़्यादा डाँट भी नहीं खानी पड़ी, लेकिन पिता की स्नेहिल समझाइश के कारण वह आत्मग्लानि से भर उठा। उसे अपने किए पर शर्मिन्दगी होने लगी। यह सोचकर उसकी आँखें भर आईं। वह रोने लगा। यह देख पिता समझ गए कि लड़के को अपराधबोध हुआ है और यह अच्छी बात है। वे बोले, ''शाबाश बेटा, तेरे आँसू इस बात की गवाही दे रहे हैं कि तूने अपनी गलती स्वीकार ली और भविष्य के लिए सौगंध भी खा ली है। मुझे पूरा विश्वास है कि तू आज दुगुने उत्साह के साथ काम करेगा। गौ माता तेरा कल्याण करेगी।''

''पिताजी, बिना इंजेक्शन लगाए भी गाय का दूध बढ़ता है, यह तो मैंने भी सुना है। मगर कैसे? कुछ बातें आप को भी पता हों तो बता दें। उसी हिसाब से कोशिश करूँगा।''

खेमराज की बात सुन कर पिता मुसकरा पड़े। बोले-''अब तुम बन रहे हो सच्चे गोपालक। तो सुनो, अपने अनुभव की बात बता रहा हूँ। कुछ सुनी-सुनाई भी हैं। लेकिन लोगों ने कर के देखा है। सुनो, नहीं-नहीं। जाओ, कागज-कलम लेकर आओ और सब बातें लिख लो।''

''हाँ, यह ठीक रहेगा, पिताजी। अभी आया।''

बेटे को जाते ही उसकी माँ बोली- ''ए जी, अपना खेमराज तो बड़ा होशियार होता जा रहा है।''

''सब गौ माता की कृपा है। कोई भी व्यक्ति अगर मन लगा कर गौ सेवा करता है, तो न केवल उसकी बुद्धि बढ़ती है, वरन् आर्थिक समृद्धि भी दिन-दूनी और रात-चौगुनी बढ़ती जाती है।

खेमराज लौटकर आया तो उसके हाथ में पुरानी डायरी थी और कलम।

पिता बोले- ''कुछ बातें सुन कर दिमाग में बिठा और कुछ को लिखता चल। पहली बात तो यह है कि गाय को खाने के लिए हरी घास मिले। गोभी की पत्तियाँ खिला। पपीते का कच्चा फल, उसकी पत्ती, महुआ के फूल, घास को गुड़ के घोल में मिला कर भी खिलाना चाहिए। गन्ना भी खिलाओ। घी, मैदा और गुड़ मिला कर और उसे पका कर खिलाने से भी खूब दूध बढ़ता है। प्रसव के तीसरे दिन उड़द, नमक, हल्दी, पीपल का चूर्ण और उसमें गुड़ मिला कर खिलाना चाहिए। ऐसा करने से भी दूध बढ़ता है। और हाँ, बाँस की पत्ती उबाल कर उसमें अगर थोड़ी-सी अजवाइन और गुड़ मिला दें, तो भी दूध बढ़ता है। गाय को समय-समय पर गुड़ खिलाना चाहिए। बीज वाले केले को चावल के साथ मिला कर खिलाने से भी दूध बढता है। कई तरह के अनाज, खली, भूसा, शीरा, नमक आदि मिला कर जो आहार बनता है, उसे खा कर घाय अधिक से अधिक दूध देती है।''

पिता बोलते जा रहे थे और खेमराज उन बातों को लिखता जा रहा था। थोड़ी देर बाद पिता रुके और हँसते हुए बोले- ''अब बस बेटा। आज का पाठ यहीं खत्म। बाद में कुछ और याद आएगा, तो लिखा दूँगा।''

''जी, पिता जी।''

''गौ माता तेरा कल्याण करे, बेटा।''

इतना बोलकर पिता ने खेमराज के सिर पर हाथ रखा। उसके गाल को थपथपाया और बाहर निकल गए।

खेमराज भी प्रसन्न मन के साथ गाय और बछड़े पर हाथ फिराने लगा।

खेमराज को इस बात की बड़ी ग्लानि थी कि अपनी गाय को इंजेक्शन लगाने का पाप कर रहा था, लेकिन संतोष भी था कि पिता की सतर्कता से वह ऐसा नहीं कर पाया। इसके बाद से खेमराज ने मनसुख से मिलना छोड़ ही दिया। मनसुख ने कई बार कोशिश की, मगर खेमराज उसे देखकर मुँह फेर लेता था। खेमराज अब गौ पालन के क्षेत्र में ही आगे बढ़ना चाहता था, मगर एक गाय के सहारे तो व्यवसाय नहीं हो सकता। दो-तीन गायें और खरीदनी हैं, क्या किया जाए। गाँव की ज़मीन भी बिक नहीं रही थी।

एक दिन पिता ने खेमराज को पास बुलाया और कहा - ''बेटे, तेरी लगन देखकर मैं खुश हूँ। मैं तेरी समस्या हल कर देता हूँ। मेरे पास एक लाख की एफ. डी. पड़ी है। अगले महीने उसकी डेट भी खत्म होने वाली है। उन पैसों से तू दो अच्छी गायें खरीदना। बीस हज़ार बचेंगे, वे तेरी गायों के आहार के लिए काम आ जाएँगे।''

पिता की बात सुनकर खेमराज उछल पड़ा। उसने पिता के पैर छुए और बोला - ''आपने तो मुझमें प्राण ही फूँक दिए।''

''बेटा, मैं तेरा बाप हूँ। यह मेरा फर्ज़ है कि मैं तुझको और बेहतर अवसर दूँ। बच्चे तो पौधे होते हैं। माता-पिता के सहयोग रूपी जल से सिंचित होकर ही वे पनपते हैं। मैं तेरे साथ हूँ। अगले महीने तू दो गाय खरीद ले। सरायपुर जाकर श्यामसुंदर से भी मिल लेना। वह अपनी गायें दे देगा या कहीं से दिलवा देगा।''

''पिताजी, मैं सोचता हूँ कि हम लोग देसी गायों की बजाय अब संकर या जर्सी गायें पालें तो कैसा रहेगा? सुनते हैं, जर्सी गायें दूध ज्यादा देती हैं?''

खेमराज की बात सुन कर उसके पिता भड़क गए। बोले, ''शर्म नहीं आती ऐसी बात करते हुए। अचानक तेरी अकल घास चरने चली जाती है क्या रे? देसी गाय और विदेशी गाय की कोई तुलना ही नहीं हो सकती। दोनों में क्या अंतर है, यह जान जाओगे तो जर्सी गाय से तौबा कर लोगे।''

पिता का रौद्र रूप देख कर खेमराज सहम गया और बोला, ''ठीक है, देसी गाय ही पालेंगे। मैं तो बस...यूँ ही..।''

खेमराज आगे बोल नहीं पाया। उसके भय को भाँप कर पिता मुसकरा उठे और बोले- ''अब तुमने जिक्र छेड़ ही दिया है तो थोड़े में दोनों गायों के कुछ अंतर समझ लो। देसी गाय-बैलों के कंधे पर उठा हुआ भाग टाट या कुकुद कहलाता है। जर्सी गाय का कंधा सपाट रहता है। अपने कुकुद के सहारे तो बैल और साँड भार उठा कर चल सकते हैं। देसी गाय की गर्दन के नीचे लटकता हुआ गलकंबल उसे गरमी सहने की ताकत देता है, जबकि जर्सी गाय का गलकंबल नहीं के बराबर होता है। देसी गायें कम बीमार पड़ती हैं जबकि जर्सी गाय कुछ

ज्यादा ही बीमार पड़ती है। देसी गाय तो गरमी में भी रहने की आदी होती है, जबकि विदेशी गायें गरमी बर्दाश्त नहीं कर सकतीं। इनके रखरखाव पर काफी खर्च करना पड़ता है। इस कारण वह गरमी सहन नहीं कर पाती। देसी गाय के बछड़े चपल होते हैं। जर्सी गाय के बछड़े सुस्त। उनसे किसानी संभव नहीं हो पाती। जर्सी गायें दूध ज्यादा देती हैं, इसलिए उनको थनैला रोग भी अधिक होता है। सबसे काम की बात यह भी है बेटे कि देसी गाय थोड़ा-बहुत चारा-सानी खा कर ही दूध दे देती है, जबकि जर्सी गाय को तगड़ी खुराक देनी पड़ती है। देसी गाय अपनी साँस से भी आक्सीजन छोड़ती है, जबकि जर्सी गाय में यह खासियत नहीं होती। एक और सबसे बड़ी बात यह है कि हमारी देसी गायें मीथेन, कार्बनडाई ऑक्साइड, कार्बन मोनोक्साइड और अमोनिया जैसी गैस कम छोड़ती हैं जबकि विदेशी गायें ज्यादातर ऐसी गैसें छोड़ती हैं। इससे वातावरण को काफी नुकसान पहुँचता है। देसी गाय के पास सोने से स्वास्थ्य और बेहतर हो सकता है। लोगों ने आजमा कर देखा है जबकि जर्सी गाय के पास सोने से आदमी बुरी तरह बीमार पड़ जाता है। और आखिरी बात बता दूँ कि देसी गाय के गोबर और और मूत्र में औषधि के गुण भरे होते हैं, जबकि जर्सी गाय में ऐसी कोई खास विशेषता नहीं होती। जर्सी गायों के कारण ओजोन परत को भी नुकसान पहुँचता है।''

इतना बोल कर खेमराज के पिता मुसकराए और बोले- ''अब कहो बच्चू, क्या कहते हो?''

खमराज झेंपते हुए बोला- ''आप तो पुराने अनुभवी हैं। अब जर्सी गाय से पूरी तरह से तौबा।''

''ठीक है, अब तुम पूरे मन के साथ देसी गायों के पालन पर ध्यान दो। मैं तुम्हारे लिए पैसों का बंदोबस्त करता हूँ।''

खेमराज के पास जैसे ही एक लाख रुपया आया, वह सरायपुर जाकर श्यामसुंदर से मिला - ''भैया, मैं तुम्हारी पहली गाय के पैसे अभी नहीं दूँगा, लेकिन अभी मुझे और दो गायें खरीदनी हैं। उनका भुगतान ज़रूर कर दूँगा।''

श्यामसुंदर की खुशी का ठिकाना न रहा। उसके भाई ने एक लाइन तो पकड़ी। वह बोला- ''देखो, मैं अपनी गायें नहीं बेचूँगा क्योंकि मैंने बड़े मन से मैंने इन्हें पाला है। इनको बेचने का पाप कभी नहीं करूँगा। वह गाय तो मैंने तुमको अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए यूँ ही दे दी थी। मैं गायें नहीं बेचता। चलो, दिलवा देता हूँ।''

''ठीक है, चलो। मुझे तो गाय चाहिए।''

दोनों भाई सेजबहार गाँव चले गए। वहाँ घनश्याम राउत की गौरी गौ शाला से दो अच्छी दुधारू गायें मिल गईं।

श्यामसुंदर जिस तरीके से गायों को देख रहा था, उससे खेमराज को भी अच्छी नस्ल की गायों के बारे में कुछ आइडिया हो गया।

घनश्याम की गौशाला में बँधी अनेक गायों का निरीक्षण करते हुए श्यामसुंदर ने दो

गायों का चयन कर लिया। ये दुधारू गाएँ थीं। उसने गायों को चारों ओर से घूम-घूम कर देखा। सामने से, पीछे से, पेट के नीचे से। जिन दो गायों को श्यासुंदर ने पसंद किया, उनकी पूँछें लम्बी थीं। पेट का घेरा भी बड़ा था। शरीर में मांस भी ज़्यादा नहीं था। गाय की चर्बी मुलायम थी। रोएँ भी बहुत अधिक नहीं थे। पुट्ठे भी चौड़े थे। गलकंबल भी लटक रहा था। श्यामसुंदर ने देखा, गाय के कानों में चमक थी। थन भी बड़े थे। श्यामसुंदर ने कहा, ''ये दो गायें ठीक रहेंगी।''

सौदा पक्का हो गया। गौ शाला के मालिक को पैसे देकर दोनों भाई बाहर निकले। मेटाडोर में दोनों गायों को चढ़ाया और रवाना हो गए।

खेमराज दो गायों के साथ जब घर पहुँचा, तो माँ फूलकुँवर ने उसकी आरती उतारी। पिता वंशराज को लगने लगा कि अब इस घर के दिन बहुरेंगे। वे इस बात को भलीभाँति जानते हैं कि गाय गौ सेवक को कहाँ से कहाँ पहुँचा देती है।

कुछ दिन तक गाय की सेवा करने के बाद दोनों गायों को गर्भाधान केंद्र ले जाकर गीर प्रजाति के साँड से उनका संयोग करवा दिया। नौ महीने तक गाभिन गाय की सेवा करने के बाद दोनों गायों ने आगे-पीछे एक-एक बछिया जनी। खेमराज को यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि स्त्री और गाय दोनों का गर्भकाल दो सौ सत्तर दिन का ही रहता है।

देखते-ही-देखते खेमराज का गोवंश बढ़ता गया। तीन गायें, एक बछड़ा, दो बछिया।

सुबह-शाम लगभग तीस लीटर दूध होने लगा। पच्चीस लीटर दूध बिक जाता। महीने की आमदनी बढ़कर बाईस हज़ार रुपए हो गई। पाँच लीटर दूध घर के लिए बचा लिया जाता था, ताकि उससे मलाई निकालकर घी बनाया जा सके। दही, मठा, छाछ का सुख भी मिलने लगा। खेमराज ने अपने साथ अब कुछ अनुभवी आदमियों को भी रख लिया था। साल भर बाद उसने फिर चार दुधारू गायें खरीद लीं। गायें भी देख-भाल कर खरीदीं। गीर, साहिवाल, डाँगी, हरियाना, मालवी, देवनी, राठी, खिल्लारी, नागोरी, कृष्णा, जबरी, ओंगोल, थारपारकर, सिंधी जैसी अच्छी-अच्छी देसी प्रजातियों की गायें खरीद कर खेमराज कुछ ही वर्षों में कहाँ से कहाँ पहुँच गया।

खेमराज पूरे इलाके में एक जाने-माने गौ पालक के रूप में मशहूर हो गया था। उसने अपनी गौ शाला का नाम पहले से रख दिया था - 'श्रमिक गौशाला'। श्रम करके वह तीन सालों में ही लगभग बीस-पच्चीस गायों का मालिक बन गया था। सिर्फ गायों के गोबर और गो मूत्र से लगभग पचास हज़ार रुपए की कमाई होने लगी थी। उसकी गौ शाला के बहाने गाँव के अनेक अपढ़-बेरोजगार युवकों को काम भी मिल गया।

खेमराज में अब एक जुनून-सा सवार हो गया था। उसने देखा कि उसके कस्बे में और आसपास मिठाई की कोई ऐसी दुकान नहीं, जहाँ शुद्ध पकवान मिलते हों। उसने सोचा क्यों न एक होटल शुरू की जाए, जहाँ दूध से बनी मिठाइयाँ ही बिकें। पूरे इलाके में केवल बजारी सेठ की मिठाई दुकान थी। उसे टक्कर देने वाला अब तक सामने नहीं आया था। खेमराज ने

पिता से चर्चा की। अपने मन की बात रखी तो पिताजी फौरन राजी हो गए।

खेमराज ने 'कामधेनु मिष्ठान्न भंडार' शुरू कर दिया। कुछ अनुभवी हलवाइयों के सहारे उसका यह काम भी चलने नहीं, दौड़ने लगा। इस मिठाई की दुकान में पेड़े, रसगुल्ले, गुलाब जामुन, दही, छाछ,मठा आदि के साथ-साथ दूध से बनने वाले अनेक तरह के पकवान बिकने लगे। देखते ही देखते 'कामधेनु मिष्ठान्न भंडार' पूरे इलाके में लोकप्रिय हो गया। मिठाई की शुद्धता की गारंटी के कारण दूर-दूर से लोग आने लगे। नतीजा यह हुआ कि मनसुख को अपनी होटल बंद करनी पड़ गई। एक-दो हलवाइयों को भी अपनी क्वालिटी सुधारनी पड़ी। खेमराज के आने के कारण लगा कि 'श्वेत क्रांति' की शुरुआत हो रही है क्योंकि उसकी सफलता देखकर गाँव के दूसरे बेरोजगार युवक भी गौ पालन की दिशा में सक्रिय हो गए और वे इतनी कमाई तो करने ही लगे कि अपने परिवारों का भरण-पोषण कर सकें।

तीन साल के भीतर गायों ने खेमराज को लखपति बना दिया। उसका पैतृक घर अब दो मंजिला भवन में तब्दील हो चुका था। उसने एक कार खरीद ली थी। लोगों ने समझाया कि तुम ट्रैक्टर भी खरीद लो, लेकिन खेमराज ने कहा - ''कृषि कार्य के लिए मैं बैलों की मदद लूँगा।''

खेमराज ने जैविक खेती के सहारे अपनी आय का एक और रास्ता खोल लिया था। अब वह एक सफल गौ पालक और कृषक था। शहर के लोग खेमराज के पास आते और सफलता के गुर सीखते। टीवी वाले भी उससे मिल कर उसकी सफलता की कहानियाँ प्रसारित करने लगे।

तीन साल पहले हताश-निराश खेमराज जब अतीत को निहारता है, तो उसे खुद पर हैरत होती है। भरोसा नहीं होता। उसे अपने सपने भी याद आते हैं, जो उसे पहली बार देखे थे। वे सपने अब साकार हुए। वह श्रमिक गौशाला की अपनी तमाम गायों को बारम्बार प्रणाम करता है। गायों की सेवा का प्रतिफल उसे मिला, इसलिए वह किसी भी गाय की सेवा में कोताही नहीं बरतता। गायों की सेवा में लगे 'वर्कर' खेमराज की गौ भक्ति को जानते हैं, इसलिए ईमानदारी से काम करते हैं। लाखों में खेलने वाला खेमराज आज भी सुबह जल्दी उठता है और गौ शाला की खुद सफाई करता है। उसके वेतनभोगी श्रमिक तो बाद में आते हैं। खेमराज सुबह पाँच बजे उठ कर पहले तैयार होता और फिर गायों की सेवा में भिड़ जाता। गायों को नहलाता-धुलाता। ठंड पड़ने पर गायों को पीने के लिए कुनकुना पानी भी रख देता था। और ग्वालों के साथ गायों को खुद भी दुहता है।

एक दिन श्यामसुंदर मनेंद्रगढ़ आ धमका। उसे देखकर खेमराज खुशी से झूम उठा।

''भैया, आप! अचानक कैसे ? मोबाइल कर दिया होता, मैं स्टेशन आ जाता लेने। अब आपका अनुज बेकार नहीं, बा-कार है।''

''अरे, वह तो मैं देख ही रहा हूँ। अचानक इसलिए आया कि मैं देखना चाहता था कि मेरे भाई का साम्राज्य कितना फैल चुका है। तुम्हारे बारे में मुझे जानकारी मिलती रहती थी।

तुमसे भी फोन पर चर्चा होती रहती थी। आज मन नहीं माना तो सोचा, चुपचाप चलकर देख लूँ। यार, तुमने सचमुच श्वेत-क्रांति कर दी है।''

''यह सब आपके ही प्रोत्साहन का फल है।' खेमराज बोला, 'आपने ही मुझे पहली गाय दी। बछड़ा भी। वहाँ से मेरे मन में ऐसी लगन लगी कि क्या कहूँ। सब कुछ आपके सामने ही है। जनकवि सतीश उपाध्याय ने क्या खूब कहा है कि

मेरे पास हुनर है मिट्टी का आकार बना लूँगा..
मेहनतकश हाथों से जीवन का शृंगार बना लूँगा
तूफानों को आना है तो बेशक आएँ, डर कैसा
मैं अपने इन हाथों को अपनी पतवार बना लूँगा
मैं हूँ सीधासादा लेकिन इतना भी कह देता हूँ
वक्त पड़ा तो मौन को अपने मैं ललकार बना लूँगा
मैंने जो सपने देखे हैं, उनको लेकर दावा है
आज नहीं तो कल हर सपने को साकार बना लूँगा
तुम पत्थर तो फेंक रहे हो, लेकिन मुझमें जादू है
मैं मंतर पढ़ के नफरत को सुंदर प्यार बना लूँगा
हार गये तो रोना कैसा, जीत हमारी निश्चित है
इन हारों को हार नहीं, अपना उपहार बना लूँगा..''

''वाह, कमाल की कविता है। तुमने साबित कर दिया है कि अगर आदमी ईमानदारी से लग जाए, तो वह कहाँ से कहाँ पहुँच सकता है। तुम क्या थे...और क्या हो गए। मुझसे भी आगे निकल गए। यह देखकर मुझे और ज़्यादा खुशी होती है।''

''लेकिन...आपसे आगे नहीं निकल सकता।'' खेमराज की आँखें छलछला गईं, 'मैं आपका अनुज हूँ और अनुज ही रहूँगा। जो लोग थोड़ी-सी सफलता प्राप्त कर के दूसरों के अहसानों को भूल जाते हैं और हवा में उड़ने की काशिश करते हैं, वे बहुत जल्दी मुँह के बल गिरते भी हैं। हाँ, आपने जो राह बताई, उस पर ईमानदारी और निष्ठा से चलने की कोशिश कर रहा हूँ।''

श्यामसुंदर ने खेमराज को गले लगा लिया।

बरसों बाद मिल रहे दो भाइयों का मिलन देखकर पूरा परिवार खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

पंद्रह

सरायपुर के पास ही एक गाँव है लालपुर। इस गाँव में भी गौ क्रांति हो गई।

वहाँ का सरपंच रामखिलावन। उसने एक दिन ख़बर सुनी कि आसपास के कुछ ग्रामीणों ने अपनी-अपनी बूढ़ी गायें कसाइयों को बेच दी हैं और कुछ बेचने वाले हैं।

रामखिलावन के लिए यह ख़बर बेचैन करने वाली थी। रामखिलावन देवनार के कसाईखाने के खिलाफ चल रहे आंदोलन में भाग लेकर आ चुका था। उसने अपनी गिरफ्तारी भी दी थी। रामखिलावन सरायपुर के 'सर्वधर्म गौ रक्षा समिति' का सदस्य भी बन गया था। वह इस बात से आहत होता था कि हिंदू ही गायों को कटवाने का उपक्रम कर रहे हैं। किसी कसाई को गाय सौंपना मतलब यही है कि हम भी गौ हत्यारे हैं।

आखिर एक दिन रामखिलावन ने पंचायत की बैठक बुलाई।

लोगबाग एकत्र हो गए तो रामखिलावन ने कहना शुरू किया – ''भाइयो, बहुत दिन से मेरे मन में एक बात चल रही है। क्यों न हम पंचायत की ओर से एक गौ शाला चलाएँ। जिन-जिन लोगों के पास गायें हैं, उनसे हम एक-एक गाय ले लें। हम लोग सार्वजनिक रूप से उन गायों की देख-रेख करें। और दूध बेचकर जो कमाई हो, उससे अपने गाँव के विकास-कार्य करें।''

सुझाव सबको पसंद आया। पंच नरसिंहकुमार ने कहा, ''मेरे पास पाँच गायें हैं। मैं एक गाय देता हूँ।''

पंच सोहनलाल, बसंतकुमार, रोशनलाल, गिरधरभाई, गोविंदराम, सुरसतिया, रेणुका, बिसाहिन बाई सभी ने वादा किया कि एक-एक गाय देंगे।

बहुत जल्दी पंचायत के पास सौ दुधारू गायें जमा हो गईं। पंचायत भवन से लगी ज़मीन में गौ शाला बनायी गयी। उसे चारों ओर से घेर दिया गया। गौ शाला को ठीक-ठाक करने के लिए सरायपुर से माधोलाल को बुलाया गया। माधो ने गाँव में रहकर गौशाला को सुंदर-सुव्यवस्थित बना दिया। उसने गाँव के ग्वालों के साथ काम करना शुरू किया और सबको प्रशिक्षित भी कर दिया।

पंचायत भवन के बगल से लगी पचास एकड़ ज़मीन सौ गायों के हिसाब से बहुत ज़्यादा नहीं थी, फिर भी पर्याप्त थी। माधो ने गौशाला को इस हिसाब से बनाया कि पंचायत खुश हो गई। जहाँ गायें रखी जाएँगी, वहाँ बड़ी छायादार जगह बनाई गई। हर दो गायों के लिए एक बड़ी नाँद। चारों ओर पंखे लगाए गए। गौ शाला में गायें मुक्त होकर टहलें और अपना शरीर खुजलाए, इसके लिए जगह-जगह बहुत से खंभे खड़े किए गए। मच्छरों का आतंक न रहे, इसलिए वहाँ धुएँ की व्यवस्था भी की गई। जगह-जगह जलकुंड बनाए गए, जिनमें नल के द्वारा पानी भर दिया जाता था। गौशाला की नियमित सफाई के लिए कर्मचारी तैनात किए गए। उनका काम था कि सुबह से ही गौ शाला साफ की जाए। गाय के गोबर को उठाकर गौ शाला के कोने में बने गड्ढे में डाला जाता।

गोबर के सहारे गैस प्लांट संचालित किया जाने लगा। गौ शाला में बिजली की व्यवस्था भी हो गई। शाम होते ही बिजली जल जाती। माधोलाल ने एक और सुंदर व्यवस्था करवाई। सुबह से शाम तक गौ शाला में संगीत की स्वर लहरियाँ गूँजती रहती थीं। माधोलाल ने यह भी बताया कि हम गाय का सम्मान करना सीखें। गाय के पास जूते पहनकर न जाएँ। बछड़े को लाँघने की भी कोशिश न करें। इस बात का भी ध्यान रखें कि शिशिर, वसंत, और गर्मी के मौसम में गाय

को केवल एक बार ही दुहा जाए। बाकी मौसम में तो सुबह-शाम दुहा जा सकता है।

पंचायत ने गौ सेवा के संबंध में जानकारी देने के लिए पूरे गाँव की बैठक बुलाई।

माधोलाल ने गाँव वालों से मुखातिब हुए और बोले - ''आज हमें लालपुर जैसे गाँव चाहिए। जहाँ गाय को लेकर इतनी श्रद्धा देखी जा रही है। आप लोग गौ माता की सेवा कीजिए। मुझे पूरा विश्वास है कि यह गाँव अपने नाम के अनुसार ही लाल हो जाएगा, मालामाल हो जाएगा, खुशहाल हो जाएगा। और आप सब भी धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाएँगे।''

''गौ शाला निर्माण में ही लाखों खर्च हो गए हैं। अब इसे आगे चलाने में भी काफी खर्च आएगा। वह कहाँ से लाएँगे?''

पंच रोशनलाल ने सवाल उठाया। इस पर माधोलाल ने मुसकराते हुए जवाब दिया, ''अगर हमारा मन साफ है न, तो गौ शाला को किसी भी बात की कमी न होगी। पैसे अपने आप आएँगे। हम अपनी आय से हर महीने गौ शाला के लिए धन उपलब्ध करा सकते हैं।''

''आजकल गोचर भूमि भी कम होती जा रही है। उसके लिए क्या करें?''

''यह अच्छा सवाल है।' रामखिलावन के सवाल पर माधो ने कहा, 'हमें हरियाली बनानी है। गोचर भूमि में अधिकाधिक घास उगे, इसका पूरा जतन करना है। हम सब लोग मिलकर खेती करें मगर गोचर भूमि छोड़ दें। ऋग्वेद में कहा गया है - ''परा मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूतीरन, इच्छन्तीदन रुचसम्'। मतलब यह है कि जैसे गाय गोचर भूमि की तरफ जाती है, उसी तरह हमारी बुद्धि भी ईश्वर प्राप्ति के लिए उस दिशा में चलती रहे। तो, गोचर का बड़ा महत्व है। हमें गोचर विकसित करने होंगे। चारा उगाना होगा। विदेशों में लोग गायों के लिए बड़े-बड़े गोचर बनाते हैं। लेकिन हमारे देश में दु:खद स्थिति है। खेती योग्य ज़मीन को हमने नष्ट कर दिया। रासायनिक खाद डाल-डाल कर उसे बाँझ कर दिया, जबकि गाय के गोबर से उसे समृद्ध किया जा सकता था, लेकिन हमने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। आज अमरीका और ब्रिटेन के मुकाबले हमारे पास गोचर भूमि नहीं के बराबर है। आज भारत में पंद्रह-बीस करोड़ एकड़ ऐसी बेकार ज़मीन है, जिसे हम लोग गोचर भूमि में तब्दील कर सकते हैं, लेकिन इस दिशा में कोई काम ही नहीं करना चाहता। पुराणों में कहा गया है कि अगर हम गोचर भूमि बनाएँ, तो हमें सौ से ज़्यादा ब्राह्मणों को भोजन कराने का पुण्य मिलता है।''

''गौ शाला के लिए और क्या-क्या काम हो सकता है ?''

रामखिलावन की जिज्ञासा पर माधोलाल ने कहा - ''हमें खेती में ट्रैक्टर नहीं, बैलों का इस्तेमाल करना चाहिए। सरकारें मार रहीं हैं गायों को। ट्रैक्टर खरीदने के लिए कम ब्याज दरों पर कर्ज दिलवाती हैं। स्वाभाविक है कि लोग ट्रैक्टर ही खरीदेंगे। तब बैलों का क्या होगा? जाहिर है कि ये कसाईघरों तक जाएँगे और...''

इतना बोल कर मोधालाल कुछ देर के लिए रुक गया। मौन हो कर इधर-उधर देखने लगा। लोग बड़े ध्यान से सुन रहे थे। उसने आगे कहना शुरू किया, 'तो भाइयो, हम किसानों से कहें कि न तो ट्रैक्टरों की तरफ दौड़ें और न रासायनिक खादों के पीछे भागें । नपुंसक बना देने वाले विदेशी

बीजों का उपयोग करने से भी बचें। ये विदेशी बीज हमें शारीरिक रूप से कमजोर कर रहे हैं। शरीर को भी और देश की अर्थव्यवस्था को भी। गौ शाला में 'पंचगव्य' (गोबर, गो मूत्र, दूध, दही, और घी) का उपयोग करें। देखिए, हर कोई स्वस्थ रहेगा। विदेशी वैज्ञानिक प्रो. जीई बीगेड ने गोबर को लेकर अनेक प्रयोग किए और उन्होंने सिद्ध किया कि गाय के ताजा गोबर से तपेदिक और मलेरिया के रोगाणु मर जाते हैं। यह कितनी बड़ी बात है। हम लोग खेती की सिंचाई के लिए बैल लगा कर रहट चलाएँ। हमारे बैल कितने शक्तिशाली होते हैं। इनका अधिकाधिक प्रयोग करें। अनेक ग्रामीण उद्योगों में बैलों का उपयोग करें। गौ शाला में तेलघानी चलाएँ। इसमें बैल जोतें। खली निकले, तो इसे गायों को खिलाएँ। कुल मिलाकर कहना यही है कि हम बैलों से दूर न भागें। उनका इस्तेमाल करें। बैल है, तो खुशियों की गैल है।''

माधो की बातें सुनकर सभी प्रसन्न हो गए। सबने तालियाँ पीटीं।

सभा खत्म हुई सब अपने-अपने घरों की ओर चल पड़े। बाद में सरपंच और दूसरे लोग जब साथ बैठे, तो माधो ने गौशाला का अर्थशास्त्र बताया, तो सब चकरा गए।

माधो ने कहा - ''एक गाय एक बार में पाँच-सात लीटर दूध देती है। अभी एक लीटर दूध तीस रुपए में बिकता है। पाँच लीटर मान लें, तो रोज के हुए तीन सौ रुपए। पचास गायें भी दूध दे रही हैं, तो एक दिन में पंद्रह हज़ार रुपए होते हैं। महीने भर में हम साढ़े चार-पाँच लाख रुपए कमा सकते हैं। साल के हो गए साठ लाख रुपए।''

रामखिलावन की आँखें फटी की फटी रह गईं। माधो को हँसी आ गई, ''यह है गाय का अर्थशास्त्र। अभी तो मैं केवल दूध की कमाई बता रहा था। गोबर-गो मूत्र से तो इससे भी ज़्यादा कमाई होगी। गो मूत्र से अब दवाइयाँ बन रही हैं। दवाइयाँ बनाने वालों को गोमूत्र की जरूरत पड़ती है। हम उन लोगों को दूध के साथ-साथ गोमूत्र की सप्लाई कर सकते हैं। एक साल में हम पचास लाख अतिरिक्त कमा सकते हैं। गौ शाला की व्यवस्था में आधा खर्च करने के बाद भी हम पच्चीस-पचास लाख रुपए बचा सकते हैं। इस राशि से हम गाँव के कितने ही विकास कार्य कर सकते हैं। गाँव के बच्चों को 'स्कॉलरशिप' भी दे सकते हैं। गाँव में वाचनालय शुरू कर सकते हैं। सांस्कृतिक भवन बना सकते हैं। राजस्थान के पथमेड़ा की आनंदवन गौ शाला हमारा आदर्श बन सकती है। वहाँ विश्व की सबसे बड़ी गौ शाला है। मैं तो कहता हूँ कि एक बार हम सबको वहाँ जाना चाहिए। देखें तो सही कि अपने देश में ऐसी कौन-सी गौ शाला है जहाँ दो-तीन लाख गायें रहती हैं।''

''आपकी बातें तो हमें बड़ी असंभव-सी लग रही हैं।''

''ठीक कह रहे हैं आप। दरअसल भ्रष्टाचार इतना हावी हो गया है कि पैसा बचता ही नहीं। शहरों में जो गौ शालाएँ चलती हैं, उनकी कमाई भी लाखों में होती है, लेकिन गौ शाला चलाने वाले कुछ शातिर सेठ मिल बाँटकर खा लेते हैं। बेईमानी इस देश के विकास को अवरुद्ध कर रही है। खैर, हम देश की नहीं, इस गाँव की बात करें। तो मैंने जितना बताया है, उससे भी ज़्यादा कमाया जा सकता है, बशर्ते हमारी नीयत साफ रहे। हम गाय को माँ समझें।

उसे स्नेह के साथ दुहें पर उसका हिंसक दोहन न करें।''

माधो की बातें सुन कर रामखिलावन के चेहरे पर प्रसन्नता नज़र आ रही थी। वह बोला– ''आपकी बातों को हम सब गंभीरता से लेंगे और कोशिश करेंगे कि एक अच्छी गौ शाला चलाकर समृद्ध गाँव का निर्माण करें।''

लालपुर में आज पंचायत को लाखों की कमाई हो रही है सिर्फ गौ शाला से।

रामखिलावन ने एक नई योजना भी चलाई। उसने कहा कि लोग अपनी दुधारू गाय लाकर हमें दे दें। हम उस गाय से होने वाला लाभ उन्हें पहुँचा देंगे। लोगों को यह योजना आकर्षक लगी। गौ पालन मज़ाक नहीं। लहू-पसीना बहाना पड़ता है। तभी कमाई होगी।

लालपुर के श्रीकृष्ण गौ पालन केंद्र ने माधोलाल के कहने पर एक और काम शुरू किया और वह था औषधियों का निर्माण।

मनेंद्रगढ़ में खेमराज के 'कामधेनु मिष्ठान्न भंडार' की सफलता की कहानी रामखिलान ने सुन रखी थी। माधोलाल के कहने पर उसके दिमाग में आइडिया आया कि क्यों न गौ मूत्र से बनने वाली दवाइयों के निर्माण का काम भी शुरू किया जाए। इससे गाँव के बेरोजगारों को काम भी मिलेगा। गाँव का भी नाम होगा। उसने सुन रखा था, कि पथमेड़ा की आनंदवन गौशाला और नागपुर के देवलापाल में पंचगव्य की दवाएँ बनती हैं। देश भर से लोग वहाँ आते हैं और प्रशिक्षण भी प्राप्त करते हैं। बस, पंचायत ने प्रस्ताव पास किया और गाँव के कुछ पढ़े-लिखे बेरोजगार युवकों को प्रशिक्षण के लिए भेज दिया।

युवकों के लौटने के बाद 'कामधेनु पंचगव्य चिकित्सा केंद्र' का काम भी शुरू हो गया।

रामखिलावन ने पशु चिकित्सकों से संपर्क किया। पुराने वैद्यों से मुलाकात की। पथमेड़ा और देवलापाल में पंचगव्य से अनेक तरह की दवाइयाँ बन रही हैं। यहाँ गो मूत्र से बनने वाली दवाइयों का पेटेंट भी कराया गया है। गाँव के युवक आनंदवन, कानपुर, लखनऊ, और देवलापाल से प्रशिक्षण ले कर लौटे, तो 'कामधेनु पंचगव्य चिकित्सा केंद्र' में भी दवाइयाँ बनने लगीं। देखते ही देखते गाँव और आसपास के लोगों का जीवन ही बदल गया। अनेक शहरों में पंचगव्य चिकित्सा चल रही है। गुर्दा, रक्तचाप, एसिडिटी, पेट के रोग, मधुमेह, सफेद दाग, अस्थमा, दमा, दंतरोग, दाद-खाज, बवासीर आदि न जाने कितनी ही बीमारियों का इलाज 'पंचगव्य' के ज़रिए हो रहा है।

रामखिलावन के प्रयास से साल भर के भीतर ही केंद्र में मालिश तेल, मरहम, दर्द विनाशक वटी, उबटन, दंतमंजन, केश निखार, तेल, साबुन, घनवटी, घी, आसव, कामधेनु अर्क आदि दवाइयाँ बनने लगीं। धीरे-धीरे पंचगव्य केंद्र ने कमाल कर दिया। उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। देश भर से लोग लालपुर आने लगे। मोटापे के लिए 'मेदोहर अर्क', प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने के लिए 'गोमूत्र अर्क', मधुमेह के लिए 'गुड़मारादि अर्क', खाँसी, दमा, वात, भूख की कमी के लिए 'गोमूत्र आसव', अजीर्ण के लिए 'गोमूत्र हरितकी वटी', जोड़ों के दर्द के लिए 'वातनाशक तेल', पीलिया के लिए 'निशोत्तरादि अर्क', स्त्रियों के

विविध रोगों के लिए 'नारीजीवन कल्प', बच्चों के लिए 'अष्टमंगल घृत' आदि तीस से ज्यादा दवाइयाँ तैयार हो गईं, जिससे लोगों को फायदा भी हुआ और पूरे इलाके में एक तरह से पंचगव्य क्रांति हो गई। दुर्भाग्य यही है कि आज भी बहुत-से लोग देसी गाय को हल्के से लेते हैं और सोचते हैं, गाय का अर्थ केवल 'बीफ' होता है। जबकि गाय का अर्थ औषधालय भी है। वह एक जादू है। एक मंत्र है। एक वरदान है। गाय को छूने भर से जो अनुभूति होती है, वह वर्णनातीत है। 'पंचगव्य' तो अपनी जगह है। केवल गोबर से भी लोगों ने अपनी अनेक बीमारियाँ ठीक कर लीं। दशरथ प्रसाद के पूरे शरीर में खुजली होती थी। वैद्य हंसराज की सलाह पर दशरथ ने गाय के गोबर का पूरे शरीर पर मरहम की तरह लेप किया और धूप में बैठ गया। उसकी खुजली जड़ से मिट गई। किसी का गठिया दूर हो गया। किसी का दाँत दर्द दूर हो गया। गाय के ताजे गोबर की गंध से बुखार और मलेरिया के कीटाणु भी मर जाते हैं।

वैद्य हंसराज के पास अपनी छोटी-छोटी समस्याएँ लेकर आते और वैद्यजी की सलाह ले कर जाते और उसे आजमा कर देखते। जैसे, गाँव के लखनपाल को एड्स हो गया था। इधर-उधर भटकता रहा। फिर एक दिन पंचगव्य चिकित्सा केंद्र पहुँचा। वैद्य जी से मिला। उन्होंने कहा, ''पूरे एक साल स्वस्थ देसी गाय के मूत्र का सेवन करो। मैं दावा करता हूँ, तुम ठीक हो जाओगे। और सचमुच चमत्कार हो गया। एड्स जैसी लाइलाज कही जाने वाली बीमारी भी अगर गोमूत्र से ठीक हो जाए, तो इसकी ताकत को समझा जा सकता है।

रामदयाल को वर्षों से डायबिटीज की शिकायत थी। वह वैद्यजी से मिला।

वैद्य जी ने कहा–''रोज थोड़ा-थोड़ा गो मूत्र लो और ये कैप्सूल खाते रहो।''

उन्होंने कोई कैप्सूल भी लिखी। कैप्सूल बाज़ार में आसानी से मिल गई। और....सचमुच चमत्कार हो गया। एक माह तक सेवन करने के बाद रामदयाल पूरी तरह से फिट हो गया। पहले वह सरायपुर के किसी डॉक्टर से इलाज करवा रहा था। कोई फायदा नहीं हुआ, लेकिन गो मूत्र सेवन के कुछ महीने बाद ही सुबह-शाम लगने वाली इंसुलिन बिल्कुल ही बंद हो गई। इसी तरह किशनकुमार को सिरदर्द की शिकायत रहती थी। परेशान रहा करता था। पहले उसका चेहरा हमेशा हँसता-खिलखिलाता नज़र आता था, लेकिन माइग्रेन और सिरदर्द के कारण उसका चेहरा हर वक्त तनावग्रस्त रहने लगा। उसके लिए भी वैद्य जी ने सस्ता नुस्खा बता दिया। बोले-''तुम छह महीने तक गौ मूत्र और घी का सेवन करो।'' किशनकुमार ने ऐसा ही किया। छह महीने बाद उसके चेहरे की रंगत ही बदल गयी। वही पुराना हँसता हुआ नूरानी चेहरा फिर वापस हो गया था।

गाँव की सुरसतिया और रामभजो अस्थमा से पीड़ित थी। वे भी वैद्यजी से मिलीं। वैद्यजी ने गौ मूत्र-सेवन की सलाह दी। कुछ दिनों के बाद दोनों महिलाओं का अस्थमा जाता रहा।

पंचगव्य के साथ-साथ गो मूत्र-गोबर से शैम्पू, साबुन, कीटाणुनाशक फिनायल, मच्छर भागने वाला कॉइल, ऑफ्टर शेव लोशन, बाम, केंचुआ खाद, धूपबत्ती, अंगराग बट्टी, केश तेल, कागज, डिस्टैम्पर,टाइल्स तक बनने लगा था। कानपुर की गौ शाला ने तो कमाल

कर दिया। वहाँ गो मूत्र के सहारे चलने वाली 'गौ ज्योति' आविष्कार कर डाला। इस गौ ज्योति से घर रौशन हो जाता है। लालटेन और अगरबत्ती का विकल्प। इसे बिजली से चार्ज करने की जरूरत नहीं। गौ मूत्र से ही अपने आप चार्ज हो जाती है। दो सौ पचास ग्राम गो मूत्र को बैटरी में डालो और साठ घंटे तक गौ ज्योति को जलाए रखो। मोबाइल भी चार्ज कर लो। न करंट लगने का खतरा और न शार्ट सर्किट का डर। रामखिलावन को जब गौ ज्योति के बारे में पता चला तो वह गाँव के कुछ पढ़े-लिखे युवकों के साथ कानपुर गया। गौ शाला संचालकों से मिला तो उन्होंने 'गौ ज्योति' बनाने की विधि बता दी। उसके सहारे लालपुर और आसपास के अनके गाँव प्रकाशित हो गए। उन्हें रात की रौशनी के लिए सस्ता, सुंदर और टिकाऊ उपाय मिल गया था।

दो साल के भीतर एक छोटा-सा गाँव सुर्खियों में आ गया। गौ मूत्र से बनी औषधियों ने गाँव का कायाकल्प कर दिया। गाँव का स्वास्थ्य ठीक रहने लगा और गाँव की आय बढ़ी, तो गाँव का विकास भी होने लगा। पक्की सड़कें, वाचनालय, शाला भवन, और उनमें खेलकूद के सामान।

गौपालन के कारण लालपुर का नाम पूरे प्रदेश में फैल चुका था। लेकिन लालपुर को अभी और चमत्कार करने थे। सबसे बड़ा चमत्कार तब हुआ, जब गाँव के 'सेतु' नाम के युवक ने गोबर से कागज बनाने का कारखाना शुरू कर दिया। सरायपुर से इंजीनियरिंग की पढ़ाई करके निकलने वाले सेतु ने जब यह ख़बर पढ़ी कि होशंगाबाद में अनुराधा नामक वैज्ञानिक ने बहुत दिनों तक शोध कार्य करने के बाद गाय के गोबर से कागज बनाना शुरू कर दिया है, तो सेतु ने सोचा कि मैं भी कोशिश कर के देखता हूँ। और वह सफल हो गया। बहुत बड़ा कारखाना लगने से और ज्यादा कागज बनाया जा सकता था। लेकिन इसके लिए आर्थिक मदद की जरूरत थी।

सेतु ने महामायापुर के सेठ रामानंद जी से संपर्क किया। रामानंद जी ने सेतु की बातें बड़े गौर से सुनीं फिर उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, ''ठीक है नौजवान। हम कारखाना लगाएँगे।''

''लेकिन एक शर्त है।' सेतु ने कहा, 'कारखाने में मेरी भी आधी भागीदारी रहेगी।''

रामानंद हँस पड़े। कुछ देर सोचते रहे और मुसकरा कर बोले, ''ठीक है भाई। शर्त मंजूर है। दिमाग तुम्हारा और पैसा हमारा। कारखाने में तुम्हारी भी भागीदारी रहेगी। अब खुश!''

बस क्या था, बात बन गई। सेतु ने लिखित अनुबंध कर लिया। युवा इंजीनियर की किस्मत बदल गई। सेतु के पिता आत्मेश्वर पेशे से कुम्हार थे। धीरे-धीरे उन्होंने अपने काम को इतना आगे बढ़ाया कि बाद में घड़ों के साथ-साथ वे मिट्टी के खिलौने भी बनाने लगे। अपने गुज़र-बसर लायक अनाज भी वे उपजा लेते थे। घर पर पाँच गायें थीं। उसके कारण दूध-घी की कोई कमी भी नहीं थी। कुल मिला कर वे उद्यमी थे और चाहते थे कि उनका बेटा भी अपना कुछ काम करे। वे अपने बेटे को अक्सर समझाते रहते थे कि नौकरी करने वाले आदमी का स्वाभिमान कई बार मर जाता है। आखिरकार सेतु के पिता ही उसके नायक बने। सेतु ने भी तय किया कि नौकरी-फौकरी का चक्कर बेकार है। अपना कोई काम शुरू करना ठीक

रहेगा। गाय के कारण उसे एक सही दिशा मिल गई। उसके कारण गाँव के अनेक लोगों को रोजगार मिल गया। गोबर से बनने वाले कागज को 'लालपुर-कागज' के नाम से पुकारा जाने लगा। लालपुर को गायों ने इतना धनी कर दिया कि लोग-बाग लालपुर को गोपुर के नाम से भी पुकारने लगे। गाय के अर्थशास्त्र को समझ कर रामानंद जी ने गोपुर उर्फ लालपुर में गौशाला भी शुरू कर दी।

काश, पूरा देश गोपुर बन जाता, लेकिन मुझ मूक प्राणी की भावनाओं को समझने वाले लोग ही कितने हैं?

सोलह

और आखिर सात नवंबर भी आ गया।

देश भर से आए गो प्रेमी और हजारों साधु राजधानी में एकत्र हुए। लगभग एक लाख लोग।

रामलीला मैदान में सभा हुई। संत दयानंद जी, स्वामी ज्ञानदत्त महाराज, सत्यपीठ के मठाधीश तेजेश्वरानंद महाराज के साथ-साथ घावरीजी, चंदूलालजी, मुजफ्फर भाई, रहमानभाई, सरदार मोहन सिंह, गौटियाजी, दिनकर भाई, मुन्नू भाई, बबुआ, पप्पू, मंगल मसीह और गोपालकृष्ण आदि के साथ बहन अरुण, राधा, बहन चंपा, मंजुला, रेखा, कल्पना, अर्चना रेणुका आदि न जाने कितनी ही वीरांगनाएँ बिना बुलाए इस यज्ञ में शामिल हो गईं थीं। गाय के सवाल पर हर धर्म के लोग एकत्र हो गए थे। देश के कोने-कोने से लोग राजधानी में एकत्र हुए थे। हजारों ऐसे भी थे, जिनको किसी ने भी न तो फोन किया, न कोई पत्र भेजा। इनमें साधु-संतों की संख्या कुछ ज्यादा थी। हिंदू संत थे तो मुस्लिम समाज के लोग भी कम नहीं थे। सभी गो माता के लिए अपने खर्चे से राजधानी आए थे। सभी का मकसद था देश में गोवध बंद पर पूरी तरह से रोक लगे।

जुलूस में शरीक हर चेहरे पर उत्साह नज़र आ रहा था। रैली के नेताओं ने इस भावना की सराहना की। भाषण देने के बाद पाँच गायों की पूजा-अर्चना की गई और आरती भी उतारी गई।

जै -जै गौ माता...मैया जय गौ माता,

जो तेरी भक्ति करता वो शक्ति पाता। जै-जै....

आरती करने के बाद गौ सेवक और साधु कतारबद्ध होकर निकल पड़े विधानभवन की ओर।

कोई गीत गा रहा था...कोई नारे लगा रहा था...किसी ने गाय का हुलिया बना रखा था, तो किसी ने बैल का।....अनेक लोगों ने अपने गले में तख्तियाँ टाँग रखी थीं, जिस पर लिखा था-

'हमें मत काटो'....

'हमें कसाईखाना नहीं, गौशाला चाहिए'.....

'गाय की रक्षा कौन करेगा...हम करेंगे हम करेंगे'...

'मैं तो माँ से भी बढ़ कर हूँ'....

रैली में शामिल लोगों के मन में अद्‌भुत उत्साह था। ऐसा लग रहा था, आज वे देश की आज़ादी के लिए संघर्ष करने के लिए सड़क पर उतरे हैं। गांधी जी ने गाय के सवाल को स्वराज्य के सवाल से भी ज्यादा अहम बताया था। उत्साही लोगों के गले में तख्तियों के साथ-साथ ज़ुबानों पर नारे भी थे -

'विश्व की माता... गो माता'

'गौ वध... बंद हो'

'गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करो... घोषित करो...'

गाय हमारी.....सांस्कृतिक धरोहर....

'हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई,

गैया तो है सबकी माई...'

'कसाईखाने बंद करो... बंद करो, बंद करो।'

जुलूस नारे लगाता बढ़ा जा रहा था। राजधानी इतनी भीड़ देखकर थम-सी गई थी। दूर खड़े लोगों में आपस में चर्चाएँ होने लगीं। एक ने कहा-

''यह बड़ी अच्छी बात है भाई। गाय की चिंता में आज यहाँ लाखों लोग जमा हो गए हैं।...सचमुच, गाय को काटना पाप है... गाय हमारी माँ है... हम पर इसके बड़े अहसान हैं... गाय न होती, तो शायद हम लोग इतने स्वस्थ न रहते... गाय न होती, तो हम भी नहीं होते...।''

दूसरे ने कहा- ''अरे ये सब पागलपन है। किसी महापुरुष ने भी गाय को सामान्य पशु कहा था।''

तीसरे ने हस्तक्षेप किया- ''कहा होगा। वैसे कथन का कुछ संदर्भ होगा। और मान लो, कोई संदर्भ न भी हो, तो कोई बात नहीं। गाय एक सामान्य पशु ही सही, तो क्या सामान्य पशु काटने के लिए होते हैं?''

दूसरे ने कहा- ''और नहीं तो क्या, अगर पशु नहीं कटे, तो हमारा चलना मुश्किल हो जाएगा और ये सनकी लोग गो वध पर प्रतिबंध की मांग कर रहे हैं। ज़माना अंतरिक्ष तक जा रहा है और ये नालायक...मध्ययुग में जी रहे हैं.. गाय पर अटके हुए हैं। हुँह...रबिश्श...। बैकवर्ड !''

गो-विरोधी बात सुन कर आसपास खड़े लोग भड़क गए। पिल पड़े उस पर-

''अबे, गपड़गंजू, तू किस देश में रहता है?' भीड़ से एक आदमी आगे आया और गाय-विरोधी बात करने वाले की कॉलर पकड़ कर बोला, ''लगता है, तूने कभी गाय का दूध ही नहीं पीया है? अगर पीया होता, तो ऐसी बातें नहीं करता। क्यों?''

पहला मुसकराते हुए बोला- ''अरे-अरे, जाने दो भाई। ये कुछ ज्यादा ही पढ़ा-लिखा आदमी लगता है। अपने यहाँ ज्यादा पढ़े-लिखे लोगों की यही विशेषता होती है कि वे बेचारे संवेदना-फंवेदना के पीछे नहीं पड़ते। मारो-काटो, खाओ-पीओ, और ऐश करो ही इनका

टुच्चा दर्शन होता है। जा भाई, जा। निकल ले पतली गली से, वरना देखते ही देखते अभूतपूर्व घटना घट जाएगी और तू ख्वाहमख्वाह भूतपूर्व हो जाएगा।''

गाय-विरोधी आदमी ने वहाँ से खिसकना ही उचित समझा।

भीड़ में अधिकांश लोग गो भक्तों के साथ थे और वे जुलूस को देख कर अभिभूत हो रहे थे।

जुलूस बिल्कुल पारम्परिक जुलूस की तरह सोत्साह आगे बढ़ रहा था।

स्वाभाविक था कि यातायात भी बाधित होता। जो जहाँ था, वहीं थम-सा गया था। कुछ लोग नाराज़गी भी जाहिर कर रहे थे कि 'राजधानी की यह क्या सूरत बना दी गई है...जिसे देखो, चला आता है मुँह उठा के...अरे, परेशानी तो हमारी बढ़ जाती है'।

लेकिन ऐसे लोग भी कम नहीं थे, जो जुलूस के कारण परेशान तो हो रहे थे, लेकिन उसे बर्दाश्त कर रहे थे, क्योंकि सवाल गाय का था। एक महत्वपूर्ण माँग उठाई गई थी कि देश में गो वध प्रतिबंध कानून लागू किया जाए।...वोट की राजनीति से ऊपर उठ कर काम किया जाए।... गाय का सवाल हिंदुओं का नहीं, हिंदुस्तानियों का सवाल है।.... भारतीयों का सवाल है।...इसी मांग के लिए गो-सेवक विधान भवन तक जाकर ज्ञापन देने वाले थे। दर्शक-भीड़ सबके साथ थी। जोधपुर से पधारे झूमरलाल तथा दिल्ली के युवक सतीश और बहुत-से साधु जोशीले नारे एवं गीत गाते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे।

कुछ दूर चलने के बाद पुलिस ने सामने बेरीकेट्स लगा दिए। गौ भक्तों और साधुओं की भीड़ रुक गई।

झूमरलाल जी ने सामने खड़े एक पुलिस अधिकारी से पूछा-''क्या बात है कप्तान साहब, हमें जाने क्यों नहीं दिया जा रहा है?''

''सरकार ने आगे जाने से रोक दिया है। प्रतिबंधित धारा लागू है।''

''क्यों भाई, हम गौ सेवकों और साधुओं से भला क्या खतरा हो गया है सरकार को?''

''वह हम कुछ नहीं जानते, हमें जो आदेश दिया गया है, हम उसका पालन कर रहे हैं।''

''लेकिन हम तो आगे जाएँगे। हमें सरकार को ज्ञापन देना है। एक करोड़ लोगों के हस्ताक्षर हैं हमारे पास।''

''कितने भी करोड़ के हस्ताक्षर हों, माफ कीजिएगा। आप लोग इसके आगे नहीं जा सकते।''

''कैसे नहीं जा सकते भाई, इस देश में लोकतंत्र नाम की चीज खत्म हो गई है का?' झूमरलाल बोले, 'हम अपने ही नेताओं से ही नहीं मिल सकते? देश की जनता अपना दर्द नहीं बता सकती? चलो साथियो, इस बंधन की परवाह मत करो। आगे बढ़ो।''

भीड़ ने हर्ष-ध्वनि की -'गौ माता की....जै'...

...'वंदे....गौ मातरम्'...

'वंदे गौमातरम्'...

और बेरीकेट्स को तोड़ कर भीड़ आगे बढ़ने लगी। पुलिस फोर्स भीड़ को रोकने की कोशिश करने लगी। आगे फिर अवरोध था। भीड़ एक बार फिर रुक गई।

इस बीच पुलिस अधिकारी शैतान सिंह ने पुलिस मुखिया से बात की, ''सर, गौ भक्त लगातार आगे बढ़ते जा रहे हैं। हम उनको रोकने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन वे बेरीकेट्स तोड़ कर आगे बढ़ रहे हैं। आदेश दें, सर।''

पुलिस मुखिया ने पूछा- ''तुमको क्या लगता है, कोई खतरा हो सकता है?''

''हाँ सर, खतरा हो सकता है। मुझे लगता है कि ये लोग विधानभवन तक पहुँच गए, तो ईंट से ईंट बजा देंगे..डर है, कि पूरा भवन ही न गिरा दें...सर, भीड़ की ताकत तो आप जानते ही हैं...''

''तो क्या सचमुच भीड़ खतरनाक हो गई है?''

''यस सर, खतरनाक हो गई है। भयंकर मूड में है। कुछ भी हो सकता है।''

''तो क्या...कुछ लोग मर सकते हैं? क्या देश का भारी नुकसान हो सकता है?''

''यस सर, कुछ लोग मर सकते हैं और देश का भारी नुकसान हो सकता है।''

''मतलब यह कि अब देश का सवाल है....? कानून-व्यवस्था का सवाल है?''

''यस सर, आपने बिल्कुल ठीक समझा, कानून-व्यवस्था का ही सवाल है। फौरन आदेश दें।''

''सोच लो भाई, क्या स्थिति सचमुच नियंत्रण से बाहर हो गई है? अगर ऐसा है तो फिर....।''

''यस सर, ऐसा ही है...स्थिति कंट्रोल के बाहर होती जा रही है। फौरन आदेश दें...।''

''ऐसा है तो..'' पुलिस मुखिया ने सिगरेट सुलगाई, एक कश मारा, ''इट मींस, खतरनाक सिचुएशन हो गई है? अगर ऐसी बात है तो...''

''यस सर, ऐसा है तो.....आगे बोलिए...क्या करे?''

''इट मीन्स, अब फायरिंग ही अंतिम रास्ता है?'' पुलिस मुखिया जल्दी-जल्दी सिगरेट पीने लगा।

''यस सर, देयर इज नो एनी अदर ऑप्शन.. यही अंतिम रास्ता है।''

''मतलब यह हुआ कि इस देश की संपत्ति और हम जैसे सैकड़ों नेताओं की जान बचाने के लिए अब हमें मजबूरी में गोली चलानी ही पड़ेगी?''

''यस सर, मजबूरी है।''

''तो फिर देख लो। जनहित में कुछ कठोर निर्णय लेने ही पड़ेंगे। वैसे मैंने ऊपर से परमिशन ले ली है। यू मे प्रोसीड टू फायर...। बट, पहले लाठी भाँजो, उससे भी बात न बने तो फिर....''

पुलिस मुखिया ने मामले को जिस तरह पेश किया, उससे साफ हो गया था कि अब गोली

चल जाएगी। पुलिस भी यही चाहती थी, कि भीड़ को नियंत्रित करने के लिए लाठी-गोली चलाना तो उसका अधिकार ही है। फिर वह मौके भी तलाशती रहती है। वह दिन पुलिस वालों के लिए उत्सव से कम नहीं होता, जब वह लोगों पर डंडे चलाती है या गोलियाँ दागती है।

शैतान सिंह ने अब मुसकराते हुए पूरे खलनायकी तेवर के साथ झूमरलाल से कहा, ''देखिए, आप यहाँ से आगे नहीं बढ़ सकते। प्रतिबंधित धारा लगी हुई है और मुझे ऊपर से आदेश भी मिल गया है कि लोग अगर कहना न मानें तो फायरिंग शुरू कर दो। इसलिए मेरी चेतावनी को मान लें और आगे न बढ़ें।''

''लेकिन हम लोगों से खतरा क्या है भाई? हम लोग निहत्थे हैं। ये साधु लोग हैं। सीधे-सादे लोग हैं। गो भक्त हैं। केवल नारे ही लगा रहे हैं। क्या नारे लगाने से भी अशांति पैदा होती है? किसी के पास किसी किस्म का हथियार भी नहीं है। फिर हम लोग तो केवल भवन तक ही जाएँगे और गृहमंत्री को ज्ञापन सौंपेंगे, उन्हें बताएँगे कि देखो, बाहर निकल कर कि कितने लोग जमा हुए हैं। अब तो सोचो। हम लोग गौ भक्त हैं। हिंसक नहीं। हम से क्यों घबरा रही है सरकार?''

''वह मैं कुछ नहीं जानता। हमें आदेश दे दिया गया है कि अगर भीड़ आगे बढ़ती है तो फायरिंग शुरू कर दो।''

''अच्छा, तो हमें गोली मारी जाएगी? हद है। ठीक है, हम भी देखते हैं। चलाओ गोली। हम नहीं रुकेंगे। साथियो, यह सरकार हम साधुओं और गौ सेवकों को लाठी-गोली के दम पर रोकने की कोशिश कर रही है, लेकिन हम नहीं रुकेंगे। चाहे हमारी जान ही क्यों न चली जाए।''

झूमरलाल ने अपनी छाती तान दी और बोले, ''चलाओ गोली....मार डालो हमें।... गायें कट रही हैं, बेमौत मर रही हैं....हम भी मर जाएंगे।''

''गौ माता की...जय''....

भीड़ नारे लगाते हुए निर्भय हो कर आगे बढ़ने लगी। पुलिस ने लाउडस्पीकर से चेतावनी दी, लेकिन भीड़ रुकी नहीं। वह बढ़ती रही। पुलिस मुखिया ने कहा-

'लाठीचार्ज... ठीक करो इन सबको..।'

पुलिस वाले शुरू हो गए।....

भीड़ तितर-बितर होने लगी....भगदड़ मच गई....

कुछ लोग पुलिस के व्यवहार से कुपित हो कर पत्थर फेंकने लगे... पुलिस वालों से ही भिड़ गए... गुत्थमगुत्था की नौबत आ गई....पुलिस वाले और उत्तेजित हो गए....वे तेजी के साथ लाठी प्रहार करने लगे....जितनी लाठियाँ चलती, भीड़ उतनी जोर से नारे लगाती-

''गौ माता की जय....गो माता की जय...''

आखिरकार पुलिस को लगा, अब लाठीचार्ज से बात नहीं बनेगी, तो उसने हवाई फायर शुरू कर दिया।

फिर भी साधु-संत आगे बढ़ते जा रहे थे...अब पुलिस ने गोलियाँ दागनी शुरू कर दी। धाँय...धाँय...धाँय...

गौ सेवक गोलियाँ खा कर नीचे गिरने लगे.....

गोलियाँ चलती रहीं और साधु पटापट गिरते रहे।...

वातावरण मार्मिक चीत्करों से भर गया था..

''आह,मर गए''...

हाय, मार डाला''...

''बचाओ''....

तरह-तरह की दर्द से भरी मार्मिक आवाज़ें।

दूर खड़े हो कर तमाशा देखने वाले लोग भाग कर इधर-उधर छिपने लगे।....

धाँय-धाँय-धाँय....

फायरिंग को देख कर लग रहा था कि पुलिस पागल हो गई है। 'ऊपर' से आदेश मिल जाने के बाद अकसर पुलिस की जैसे मनचाही मुराद पूरी हो जाती है। वर्षों की कसर एक दिन में ही निकाल लेती है।

पुलिस की बंदूकें गोलियाँ दाग रही थीं....

...और गौ सेवक 'गौ माता की जय'...का घोष करते हुए नीचे गिरते जा रहे थे।

पूरी राजधानी में गोलीकांड की ख़बर आग की तरह फैल चुकी थी। जिसे भी गोलीकांड की जानकारी मिली, वह विधानभवन की ओर भागा कि देखें तो सही, क्या हुआ। चारों ओर भगदड़ मच गई थी।... गोलियाँ चलने के कारण कुछ साधु, गौभक्त वहीं मर गए थे। कुछ लोग बुरी तरह घायल हो कर कराह रहे थे।.....कुछ भगदड़ के कारण जख्मी हो गए थे।

कुछ गंभीर रूप से घायलों को अस्पताल में भर्ती किया गया, लेकिन उनकी जानें नहीं बच सकीं।

बहुत देर तक फायरिंग होती रही। जब भीड़ इधर-उधर हुई और सड़क पर कोई इंसान नज़र नहीं आया, तो पुलिस को लगा कि अब गोली का साम्राज्य कायम हो चुका है। वहाँ लहूलुहान-सन्नाटा पसर चुका था। जब पुलिस आश्वस्त हो गई कि अब आंदोलनारियों से सरकार को किसी तरह का खतरा नहीं है, तब वह शांत हुई। धाँय-धाँय का खूनी स्वर थमा, तो बचे-खुचे और इधर-उधर छिपे लोगों ने राहत की साँस ली।

...और तब तक लोक-तंत्र की स्थापना का दम भरने वाली राजधानी एक खूनी इतिहास की चश्मदीद गवाह बन चुकी थी।

अचानक लोगों को जलियाँवाला बाग का गोलीकांड याद आ गया, जब जनरल डायर ने खूनी खेल खेला था।

''क्या यह मुल्क सचमुच आज़ाद है?' किनारे खड़े एक दर्शक ने आँसू बहाते हुए पूछा, 'वह नीच जनरल डायर बीच-बीच में ज़िंदा क्यों हो जाता है?''

''जनरल डायर एक व्यक्ति नहीं, एक चरित्र है। यह कालजयी-सा चरित्र बन गया है। यह हमारा पीछा नहीं छोड़ेगा। सरकार कोई भी रहे। अपनी या गैरों की, गोरों की या कालों की, डायर फायर करके लोक की आवाज़ को इसी तरह खामोश करता रहेगा।''

भीड़ के अंतिम छोर में खड़े बचे-खुचे लोग, नर-नारी, और बच्चे सभी रो रहे थे। सब के सब चीख-चीख कर खूनी सरकार के खिलाफ नारे लगा रहे थे। दूर खड़े दर्शक 'पुलिस प्रशासन मुर्दाबाद' के नारे लगा रहे लगे थे : लेकिन जो होना था, वह तो हो गया था।

गो वध तो रुका नहीं, हाँ, इनसानों का वध जरूर हो गया। वाह रे मेरा भारत।

क्या यही है कृष्ण-कन्हैया का वह देश, जहाँ गाय को माँ कहा जाता है?

कानून-व्यवस्था को बिगाड़ने के आरोप में बहुत-से गो सेवक और साधु गिरफ्तार कर लिये गए। लेकिन उन पुलिस अधिकारियों को कौन पकड़ता, जिनके कारण लाठी-गोली चलाने की नौबत आई? आम लोगों का यही कहना था और मैं मूक गाय यही कहती हूँ कि अगर जुलूस को आगे बढ़ने दिया जाता, तो गोली चालन के हालात ही नहीं पैदा होते। ...अरे, लोग विधानभवन तक पहुँच जाते, तो क्या बिगड़ जाता?...क्या भवन में घुस कर भीड़ सबकी जान ले लेती?.. अपने लोगों पर इतना अविश्वास कि उनको गोलियों से छलनी कर दिया जाय?... पुलिस बड़ी चालाकी के साथ अपना पक्ष रखती है कि, साहब, भीड़ उत्तेजित हो गई थी...गोली चलाना जरूरी था..गोली न चलाई जाती, तो बहुत बड़ी हिंसा का सामना करना पड़ता।' इसलिए बड़ी हिंसा से बचने के लिए छोटी-मोटी हिंसा का सहारा लेना ही पड़ता है। लेकिन प्रश्न यह है कि ऐसे हालात पैदा ही क्यों होते हैं?... देश के लोगों का यही अनुभव है कि पुलिस ही लोगों को अपनी हरकतों से उकसाती है, भड़काती है।...पुलिस के कारण लोग उत्तेजित होते हैं और तब पुलिस..व्यवस्था बनाने के नाम पर ही बनी-बनाई व्यवस्था बिगाड़ देती है।... आज़ादी के बाद पुलिस पर यही इल्ज़ाम लगते रहे हैं और बात सही भी है।

भीड़ आई थी गौ माता की हत्या पर रोक लगाने की माँग को लेकर, मगर अब उसे अपने मृत साथियों की लाशें गिननी थीं। इन लाशों को उन सबके शहर-गाँवों तक पहुँचाना था। जो घायल हुए, उनका उपचार करवाना था। आंदोलन तो एक तरफ रह गया था। किसी ने कल्पना ही नहीं की थी कि गौ भक्तों पर गोली चल जाएगी।

अपने देश में....

अपने ही लोगों के द्वारा..

अपनी ही चुनी सरकार के द्वारा...

अपने ही लोगों पर गोलियाँ चलेंगी...?

किसी ने भी कल्पना नहीं की थी कि अँगरेज़ों का वो दमनकारी दौर एक बार फिर ज़िंदा हो जाएगा।....

आखिर बचे-खुचे रोते-बिलखते गौ भक्तों के द्वारा तैयार ज्ञापन लिया गया और सरकार ने लिखित प्रेस-नोट भी जारी किया कि ''आज शांतिप्रिय राजधानी में एक दु:खद घटना घट गई। गोली चालन का हमें गहरा दु:ख है। हम इसकी निंदा करते हैं और एक जाँच आयोग बिठाते हैं, जो इस बात का पता लगाएगा कि आखिर गोली क्यों चली। हमें पता चला है कि कुछ असामाजिक तत्वों ने शांति-व्यवस्था को भंग करने की कोशिश की और ऐसे हालात पैदा कर दिए कि पुलिस को मजबूरी में गोली चलानी पड़ी। सरकार वचन देती है कि जो लोग गोलीकांड के लिए दोषी पाए जाएँगे, उन पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी। सरकार संसद में गौ वध के सवाल पर बहस कराएगी। सरकार जन भावनाओं का सम्मान करती है। आमराय से काम करती है। गौ वध के सवाल पर सरकार आम राय कायम कराने की पूरी कोशिश करेगी और जैसे ही आमराय बनेगी, सरकार शीघ्र ही विधेयक लाएगी। यानी गौ हत्या विरोधी कानून लागू कर दिया जाएगा।...दोषी अधिकारियों पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई होगी।....फिलहाल सरकार ने बड़ा कदम उठाते हुए पुलिस मुखिया को निलंबित कर दिया है।''....

सरकारी प्रेसनोट को पढ़ कर लोग जल-भुन गए। लगा जैसे जले पर नमक छिड़क दिया गया हो। गोलीकांड के बाद गृहमंत्री की आत्मा ने उनको धिक्कारा। वे बेचारे इतने दु:खी हुए कि पद से इस्तीफा दे दिया। शायद उनके मन के किसी कोने में नैतिकता ज़िंदा थी। वह नैतिकता, जो अब किसी भी मंत्री में नज़र नहीं आती।

देश को पता था और गोली चलाने का आदेश देने वाले पुलिस अधिकारी को भी पता था कि उसे निलंबित होना ही है। सब जानते हैं कि निलंबन कोई सजा नहीं होती। उल्टे एक तरह का सवैतनिक अवकाश ही होता है। पुलिस अधिकारी अपने कुछ निलंबित संगी-साथियों के साथ मुसकराते हुए सिगरेट फूँक रहा था। सारे निलंबित लोग आश्वस्त थे कि कुछ दिन बाद ही वे बहाल हो जाएँगे। कई बार तो यही लगता है कि निलंबन दोषी व्यक्ति या व्यक्तियों को बचाने के लिए सरकार द्वारा किया गया एक चालाक-उपक्रम भर है। निलंबन दरअसल एक चोर दरवाजा है, जहाँ से भीतर फिर घुसा जा सकता है।''

जाँच आयोग बिठाने की सरकारी घोषणा सुन कर लोग व्यंग्य में मुसकराए और रोए भी खूब। आश्वासन की गठरी लादे जीवित बचे गौभक्त, अपने-अपने साथियों की लाशें अपने ही काँधों पर उठा कर लौट गए।

उनकी आँखों में आँसू थे।....

हृदय में गुस्सा था।...

सरकार के खिलाफ बद्दुआएँ थीं।...

अपने ही देश में निरंतर पिटने-मारे जाने का गहरा दु:ख था.....

एक आंदोलनकारी ने कहा-''क्या इस देश में करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र बन चुकी गाय से जुड़ी हमारी एक सही माँग भी पूरी नहीं हो सकती?''

दूसरा बोला-''हमें मिल रही है लाठी-गोली। सिर्फ इसलिए कि अगर गोवध पर रोक

का कानून बन जाएगा, तो सरकार का वोट-बैंक नाराज़ हो जाएगा या साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठेंगे? अजीब बात है, इस देश में कुछ लोगों को गोवंश काटने का, गौ मांस खाने का भी मौलिक अधिकार चाहिए? और इस सवाल पर सरकार मौन-विरोध करने वालों पर ही गोलियाँ चला रही है? तो ऐसी स्थिति में एक अहिंसक समाज की कल्पना कैसे की जा सकती है? यह कैसा लोकतंत्र है जहाँ हिंसा के विरुद्ध खड़े लोगों को हिंसक तरीके से शांत करने की कोशिश की जाती है? आखिर कब तक इस देश में सरकारी-हिंसा को जायज ठहराया जाता रहेगा? जनरल डायर ने भी वही तर्क दिया था और आज की लोकतांत्रिक सरकारें भी कुछ-कुछ उसी डायर जैसा ज़वाब देती हैं। छि:।''

''आखिर हमें इस आज़ाद मुल्क के डायरों के कायर फायरों से कब मिलेगी मुक्ति?'' पहले ने डबडबाई आँखों के साथ सवाल उछाला।

सवाल उछला और चौराहे पर अपनी मौत मर गया।

दूसरे ने तल्खी के साथ हँसते हुए कहा-''हम तो समझते थे कि आज़ादी के बाद डायर मर गया है, लेकिन आज पता चला कि...वह तो ज़िंदा है। लेकिन मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि वह अपने आप पर शर्मिंदा होगा।''

''शर्मिंदा क्यों?''

''क्योंकि वह समझता था कि उसने लाशें गिराने का कीर्तिमान स्थापित कर दिया है, लेकिन यहाँ तो रोज़ रिकॉर्ड टूट रहे हैं।''

''कुछ मामले में तो हमें वोट की राजनीति से ऊपर उठ कर सोचना होगा।' पहला बोला, 'गाय सिर्फ हिंदुओं की नहीं, पूरी मानवता की है। इस देश के राष्ट्रवादी मुसलमान भी चाहते हैं कि गोवध बंद हो। सरायपुर के मुजफ्फर भाई ने गोवध पर रोक लगाने के लिए दो लाख लोगों के दस्तखत कराए थे। अनेक मुसलमान चाहते हैं कि कसाईखानों पर ताला लटका दिया जाए। गो भक्तों पर जिन्होंने गोलियाँ चलाईं, उन्होंने भी गाय का दूध पीया था और जिन लोगों ने अपने-अपने सीनों पर गोलियाँ खाईं, वे भी गाय का दूध पी कर आए थे।''

गौ भक्त अपने दु:खों को खून की तरह बहाते हुए पराजित योद्धा की मानिंद अपने-अपने शहरों को लौट चुके थे।

हताश....

टूटे-फूटे-से...

लुटे-पिटे-से...।

...उधर गजब संयोग हुआ कि गौ सेवकों पर गालियाँ चलने के कुछ दिन बाद राजधानी और आसपास के कुछ शहरों में भूकंप के झटके महसूस किए गए। कुछ मकान क्षतिग्रस्त हो गए। कुछ लोग मर गए और कुछ घायल भी हुए। ये वे इलाके थे, जहाँ गायों के कटने की रफ्तार ज्यादा थी। राजधानी में जिस शैतान सिंह ने गोभक्तों पर गोली चलाने का आदेश दिया

था, वह घटना के कुछ दिन बाद सड़क दुर्घटना में मर गया। जिस स्थान पर गोलियाँ चलीं, गौभक्त मारे गए, उस स्थान पर अकसर रात को सड़क दुर्घटनाएँ होने लगीं। दुर्घटना के शिकार व्यक्तियों का कथन मिलता-जुलता रहता था। लगभग सभी का यही कहना था कि 'हम लोग बहुत तेजी के साथ चले आ रहे थे कि ऐसा लगा, सामने से कोई गाय दौड़ी चली आ रही है...उसे बचाने के लिए ड्राइवर ने गाड़ी मोड़ दी, तो वह दूसरी गाड़ी से जा टकराई'।

एक बार एक कार किसी गाय से टकराई। कार में बैठे सारे लोग मर गए। मगर एक व्यक्ति बच गया। उसे खुद समझ में नहीं आया कि वह बचा कैसे। पूछताछ करने पर पता चला कि उसने अपने गाँव वाले घर में कुछ गायें पाली थीं। जब कभी वह गाँव जाता, तो गायों की सेवा जरूर करता था। लोगों ने यही माना कि गो सेवा के कारण उसकी जान बच गई। वैसे मैं इसे केवल संयोग ही मानती हूँ। लेकिन इस कथन पर मेरा विश्वास है कि करनी का फल तो मिलता ही है। भगवान् दे दे, या हालात के कारण घटित हो : अन्याय करने वाले इसी धरती पर निपटते हैं। स्वर्ग-नरक किसने देखा है। मगर जीवन में जो अच्छा जीवन है, वह स्वर्ग है, जो बुरा है, वह नरक ही है।

बहरहाल, कुछ भावुक लोगों ने यही माना कि 'गाय और गौ सेवकों की हाय अपना असर दिखा रही है, इसीलिए दुर्घटनाएँ हो रही हैं'।

अचानक कुछ लोगों को दिल्ली के वैज्ञानिकों का वो शोध कार्य भी याद आया, जिसमें उन्होंने यह सिद्ध किया था कि पशुओं की निरंतर हिंसा के कारण भूकंप-जैसे हादसे होते हैं। राजधानी में गायें तो खैर कटती ही रहती थीं, मगर गोलीकांड से लगा कि गौ भक्त भी काट दिए गए हैं। जो भी हो लेकिन एक बात तो थी कि गोली चालन के बाद से राजधानी फिर कभी शांत न रह सकी। आज तक....।

गायों की बद्दुआएँ पीछा ही नहीं छोड़तीं। वे अनेक रूपों में सामने आती हैं।

सत्रह

समय बीतता गया । गौ सेवकों पर हुए गोली कांड को लोग भूलते चले गए। फिर एक दिन ऐसा भी आया कि कभी गौ भक्तों पर कोई गोलियाँ भी चली थीं, ऐसा याद करने वाली पीढ़ी भी नहीं बची। पिज्ज़ा-बर्गर, शॉपिंग मॉल, मल्टीफ्लैक्स, इंटरनेट, फेसबुक, ट्विटर आदि में मशरूफ समय में गाय का सवाल कहाँ खो गया, पता ही न चला।

ज़िंदगी हमेशा की तरह अपनी रफ्तार में चलती रही।

इस बीच थियेटर, फ़ैशन और पश्चिम की आधुनिकता के बीच एक नई पीढ़ी जवान हो चुकी थी। गाय का या जीव-हिंसा का सवाल उसके लिए उपहास का विषय था। उनकी गोद में तरह-तरह के विदेशी नस्ल के कुत्ते ज़रूर पल रहे थे। गाय की छवि इनके ज़ेहन में कभी

उभरी ही नहीं, क्योंकि उनको बताने वाला भी कोई नहीं था कि गाय है क्या चीज़। न माता-पिता, न पाठ्य पुस्तकें, और न कोई साहित्य। कहीं भी गाय की उपयोगिता बताने वाला कोई नहीं था। वैसे थोड़े-बहुत लोग जरूर थे, जो गाय को बचाने की कोशिश में कुछ न कुछ कर रहे थे। कविताएँ लिख रहे थे। कथाएँ सुना रहे थे। गौ वंश को बचाने के लिए जितना बन सकता था, कर रहे थे। कुछ लोग ये काम मन से कर रहे थे, कुछ धन के लिए,तो कुछ पुण्यार्जन के लिए।

मैं साधारण-सी गाय हूँ।....

मुझे इसी बात का संतोष है कि किसी न किसी बहाने गाय की चिंता तो हो रही है। कभी-कभी मैं यह सोच कर सिहर जाती हूँ कि इस पीढ़ी के बाद गाय का क्या होगा? 'खाओ, पीयो और मौज़ करो' की संस्कृति में डूबे नये दौर में गाय अब सड़कों पर आवारा घूमने वाले सुअर, कुत्ते आदि जानवरों में शुमार हो चुकी है। जहाँ-जहाँ कचरा नज़र आता है, वहाँ-वहाँ गायें देखी जा सकती हैं। वैसे देखा जाए तो गाय पहले से ज्यादा ज़रूरी हो गई है: गौ मांस के चहेतों के लिए। कल को भारत में कुछ गायें ज़रूर पाली जाएँगी, लेकिन सेवा के लिए नहीं, माँस के लिए। जैसा विदेश में होता है। वहाँ गायें मोटी-ताजी होती हैं। गाय को चारे के साथ मांस भी खिलाया जाता है। सिर्फ़ इसलिए कि ज़्यादा दूध और बहुत सारा मांस मिलेगा। इसी चक्कर में विदेश में 'मेडकाऊ' जैसी बीमारी फैल रही है। शाकाहारी गाय को मांसाहारी बनाने का खामियाज़ा तो भुगतना ही पड़ेगा। भारत में 'मेडकाऊ' जैसी बीमारी नहीं हो सकती। लेकिन जिस दिन लालच सिर चढ़ कर बोलने लगेगा, लोगों का ईमान डोलने लगेगा, तो यहाँ भी लोग पश्चिम की उसी राह पर चलने लगें, तो कोई अचरज की बात नहीं।

अब भारत भी तेजी के साथ पश्चिम में ढलता जा रहा है। कंडोम, फ्री सेक्स, लिव इन रिलेशनशिप, समलैंगिता को बढ़ावा देने वाला वातावरण भारत को उत्तरआधुनिक संस्कार दे रहा है। ऐसे क्रांतिकारी दौर में गाय की बात कर के कोई भला अपने आप को गँवारू साबित करवाना क्यों चाहेगा?

खैर.... कितना दुखड़ा सुनाऊँ। आप लोग तो सब कुछ जानते ही हैं। और अब कथा के अंतिम पड़ाव में कहने को कुछ खास बचा भी नहीं है। वैसे गाय की व्यथा तो अनंत दुखों से भरी हुई है, फिर भी अब मैं यहीं रुकना चाहती हूँ।

लेकिन चलते-चलते अब यह भी बताती चलूँ कि श्वेता-श्यामा का क्या हुआ। आपके मन में भी तो जिज्ञासा होगी कि श्वेता और श्यामा का क्या हुआ। वे दोनों बेचारी भी एक दिन बूढ़ी-जर्जर हो कर इस असार-संसार से कूच कर गयीं। वे चाहती थीं कि उनके सामने ही गौ वध पर प्रतिबंध लग जाए लेकिन वे इस स्वप्न के साथ ही चल बसीं।

'रहीम गौ शाला' में आराम के साथ रहने वाली श्वेता-श्यामा बेहद बूढ़ी हो चुकी थीं। लेकिन जैसा कि गौ पालक जानता है, इन बूढ़ी गायों पर जितना चारा खर्च होता था, उससे कई

गुना वे फायदा पहुँचा रही थीं। गायों के मूत्र और गौबर से जैविक खाद बनाने का सिलसिला जारी था। यह खाद गाँवों में बिकने जाती थी। श्वेता-श्यामा भाग्यशाली थीं कि उन्हें 'रहीम गौ शाला' मिली। मुसलिम गौ रक्षा समिति की यह गौशाला उन सेठों को मुँह चिढ़ाती रही, जो अपनी बीमार गायों को कसाइयों के हाथों बेचने के धंधे में लिप्त थे।

एक दिन मुजफ्फर भाई पर जैसे वज्रपात हो गया।.....

अचानक श्यामा-श्वेता चल बसीं।

पहले श्यामा ने दम तोड़ा, फिर कुछ समय बाद श्वेता न भी दम तोड़ दिया। यह अद्‌भुत, मगर दु:खद संयोग था।

वह दिन रहीम गौ शाला के लिए शोक-दिवस सा था।

मरने से ठीक एक दिन पहले दोनों बहनें चर्चा कर रही थीं- ''पता नहीं, हमारे सामने गौ वध पर कभी रोक लगेगी या नहीं?' बूढ़ी श्यामा ने उदासी के साथ अपने जीवन कहा था, 'देवनार के कसाईघर के सामने आंदोलन तो आज तक जारी है, लेकिन गाय को लेकर अब कोई बड़ा आंदोलन नहीं होता। 'विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा' निकली तो एक माहौल बना। पूरे देश में यह यात्रा घूमी। जगह-जगह लोगों ने गौ माता के प्रति अपना आदर व्यक्त किया। हर राज्य के गौ भक्तों ने हस्ताक्षर करके राष्ट्रपति से मांग की कि देश में गौ वध पर पूरी तरह से रोक लगे। कसाईखाने बंद हों। गाय को राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया जाए। गोसंवर्धन मंत्रालय बनाया जाए। कामधेनु विश्वविद्‌यालय स्थापित किए जाएँ।''

''मैंने सुना है कि आठ करोड़ छत्तीस लाख लोगों के हस्ताक्षर वाला ज्ञापन राष्ट्रपति को सौपा गया।'' श्वेता बोली, ''यह तो दुनिया का सबसे बड़ा हस्ताक्षर-अभियान कहा जा सकता है। क्या इतने लोगों के हस्ताक्षर के बावजूद दिल्ली के कानों में जूँ रेंगेगी? कोई सुनवाई होगी?''

श्यामा के चेहरे पर टूटी-फूटी हँसी उभरी। वह बोली- ''तुम्हारी शंका जायज है। मुझे नहीं लगता कि इन आठ करोड़ हस्ताक्षरों का कोई सम्मान होगा। ये हस्ताक्षर धूल खाते पड़े रहेंगे और गौ वंश के कटने का सिलसिला जारी रहेगा। अब तो कोई भी राजधानी की ओर कूच करने की नहीं सोचता। इसकी संभावना भी नहीं है, क्योंकि सब के मन में दहशत है कि कहीं ऐसा न हो फिर गोलियाँ चलें और राजधानी की सड़कें लहू से तर-ब-तर हो जाएँ। इस देश के नकली लोकतंत्र में प्रतिरोध को कुचलने के लिए अंगरेज़ों के दौर का ही फार्मूला काम में लाया जा रहा है। और शान से कहा जाता है कि हमारे यहाँ लोकतंत्र है। यह कैसा लोकतंत्र है, जो रह-रह कर अपने ही लोगों पर गोलियाँ दागता रहता है? हुँह..।''

''सही कह रही हो बहन।'' श्वेता ने कंपित स्वर में कहा, 'लोकतंत्र में अपने ही लोगों पर जिस बेरहमी के साथ गोलियाँ चलती हैं, उसे देख कर कोई बड़े आंदोलन की बात ही नहीं करता। बाल-बच्चेदार आदमी सोचता है कि बेहतर यही है कि धरना-वरना देते रहो, नारेबाज़ी करते रहो। गाय बचे तो ठीक, न बचे तो ठीक। अपना स्वर्ग तो सुरक्षित रहेगा। गाय के नाम पर जो लोग कभी मर गए, उनकी याद में आँसू बहा लो। गोष्ठियाँ करके गौ वध का रोना रोते रहो।

सरकार को कोस लो। बस। चालाक पंडित लोग कहते हैं कि गाय के लिए कोई इतना भी कर ले, तो पुण्य कहीं गया नहीं : स्वर्ग पक्का है।''

''इधर सुनने में यह भी आ रहा है कि देश के कुछ कसाईखानों को और अधिक आधुनिक बनाने की तैयारियाँ चल रही हैं।'' श्यामा बोली, 'गौ मांस का निर्यात भी बढ़ता जा रहा है। आँकड़े बता रहे हैं कि सरकार विदेशी मुद्रा भी खूब कमा रही है। देश-विदेश के लोगों को गौ माँस खाने को मिल ही रहा है। कहीं कोई कमी नहीं। यानी कि गाय दुनिया के काम आ रही है। जीते जी तो खैर काम आती ही है, लेकिन जान देकर भी गाय मांस की शक्ल में लोगों को तृप्त कर रही है।''

''अब जैसा निर्मम दौर है, उसे देख कर सच कहूँ, तो जीने की इच्छा बिल्कुल ही मर गई है।'' श्वेता की आँखें डबडबा गयीं, ''दिल बेचैन है। पता नहीं कब तक का और दाना-पानी लिखा है।''

दूसरे दिन सुबह हुई, मगर श्यामा के शरीर में कोई हलचल नहीं थी।

मुजफ्फर भाई रोज की तरह गौ शाला आए और श्यामा की हालत देख कर घबरा गए। दौड़े-दौड़े पास पहुँचे और काँप उठे, ''अरे...यह तो....?''

गौशाला में हड़कंप मच गया।

...''यह...कैसे हुआ...?''

''कल तक तो ठीक थी...?''

''अचानक क्या हो गया...?''

''कहीं इसके किसी ने जहर तो नहीं दे दिया...? हाय अल्लाह, किसी ने यह पाप न कर दिया हो।''

मुजफ्फर भाई की आशंका सच निकली। श्यामा को किसी ने ज़हर दे दिया था। मगर किसने? कौन आया था इधर? किसकी है यह करतूत? मुजफ्फर भाई ने इधर-उधर नज़रें दौड़ाईं। गौशाला का एक हिस्सा टूटा हुआ था। पास गए तो गौर से देखने के बाद समझ गए कि किसी ने गौशाला में घुस कर गाय को ज़हर दे दिया है। मगर कौन? रहीम गौ शाला के दुश्मन भी बहुत हो गए थे।....यह भी हो सकता है कि खालबाड़ा में रहने वाले कसाइयों की करामात हो। गौ मांस के लिए ये लोग गायों को ज़हर दे कर मारते रहते हैं।

मुजफ्फर भाई यह सब सोच ही रहे थे कि अचानक श्वेता भी नीचे गिर पड़ी।

''अरे...इसे क्या हुआ..?''

...और देखते ही देखते श्वेता ने दम तोड़ दिया था। मुजफ्फर भाई फूट-फूट कर रो पड़े। उन्होंने फौरन डॉक्टर पांडे को फोन किया। कुछ ही देर में डॉ. पांडे आ गए। फैज़ भी पहुँच गया। डॉक्टर ने श्यामा और श्वेता का ध्यान से परीक्षण किया और उदास स्वर में बोले- ''भाई, इस गाय को तो किसी ने ज़हर दे कर मारा है, लेकिन दूसरी गाय सदमे से मर गई है।

लक्षण यही बता रहे हैं। कभी-कभी ऐसा हो जाता है। पशुओं में भी संवेदनाएँ होती हैं। एक का दु:ख दूसरा देख नहीं पाता। इस गाय की मौत को यह दूसरी गाय बर्दाश्त नहीं कर पाई। कुछ ध्यान दो भाई, गौ शाला में कोई भी घुस कर किसी गाय को ज़हर दे दे, यह तो बड़ी गंभीर बात है। यह काम किसी शातिर कसाई का ही लगता है।''

मुजफ्फरभाई कुछ बोलने की स्थिति में नहीं थे। फैज़ उनको धीरज बंधा रहा था।

डॉ. पांडे चले गए। मुजफ्फर भाई थोड़ी देर तक दु:खी हो कर बैठे रहे। उन्हें रह-रह कर गुस्सा भी आ रहा था। समझ नहीं पा रहे थे कि यह किस की करतूत है।

''भाईजान, खालबाड़ा वाला कल्लू आया है। इन गायों का क्या करें?''

''श्वेता-श्यामा का अंतिम संस्कार तो करना ही होगा। मैं इन गायों को खालबाड़ा के कसाइयों को नहीं दूँगा। हरगिज नहीं। मैं इनका अंतिम संस्कार करूँगा और मैं इन दोनों का स्मारक बनवाऊँगा। यहाँ गौशाला में कामधेनु-मंदिर बनाऊँगा।'' अचानक मुजफ्फरभाई गुस्से में आ गए और चीखते हुए बोले- 'कल्लू से कह दो कि इधर फटकने की कोशिश न करे, वरना ठीक नहीं होगा। बेमौत मारा जाएगा।''

मुजफ्फर भाई ने दोनों गायों की याद में दो मूर्तियाँ बनवाईं।

इस घटना से विचलित हो कर फैज़ के मन में कुछ ऐसी लगन लगी कि उसने अपनी सरकारी नौकरी छोड़ दी और गौ सेवा का व्रत लेकर घर से निकल गया। लोग उसे प्रेम से 'भाईश्री' कह कर बुलाने लगे। फैज़ खान के साथ देश के अनेक युवक-युवतियाँ भी शरीक होने लगे। फैज़ के कारण अनेक मुस्लिम भी गौ रक्षा क्रांति के सेनानी बन गए। बहुत-से लोग जहाँ गाय के सवाल पर सोये पड़े थे, वहीं फैज़ और उसके साथी साम्प्रदायिक सद्भावना की मिसाल बन कर अपनी जान की परवाह किये बगैर गौ जागरण में भिड़ गए। फैज़ ने गौ हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध की मांग को ले कर आमरण अनशन भी शुरू कर दिया। जब उसकी जान पर ही बन आई तो समझा-बुझा कर उसका अनशन तुड़वाया गया। उसके बाद भी फैज़ रुका नहीं, और गौ रक्षा क्रांति के लिए लोकजागरण अभियान पर निकल पड़ा।

तो, यह थी गायों की करुण कहानी: एक गाय की ही ज़ुबानी।

कुछ कथाओं के बारे में सुन रखा था, सो बता दिया। अभी तो न जाने कितनी ही अकथ कथाएँ सामने ही नहीं आ सकी हैं। मैं और अधिक व्यथा-कथा सुनाने की मन:स्थिति में भी नहीं हूँ। सरायपुर और उसके आसपास का दर्द मैंने बयाँ कर दिया है, लेकिन अनेक छोटे-बड़े शहर में अमूमन यही हो रहा है। कभी किसी गाय को ज़हर दे कर मार दिया जाता है, तो कभी किसी को कसाईखाने के लिए बेच दिया जाता है। कुछ गायें सेठों द्वारा संचालित गौ शालाओं की बदहालियों के कारण मर जाती हैं और कुछ गायों को करोड़पति सेठ खुद कसाइयों तक पहुँचा देते हैं जबकि ये सेठ गौ सेवा आयोग से चंदा भी झटकते रहते हैं।

कुल मिला कर मतलब यही कि गायों की नियति अंतत: मरना है।

देवपुर से ले कर देवनार तक मानवाकार दानव कसाईखाना चला रहे हैं।

एक नहीं, अनेक कसाईखाने इंसानियत को अँगूठा दिखा रहे हैं।

गौ वंश कट रहा है...

इसीलिए तो जनकवि सतीश उपाध्याय को गीत रचना पड़ रहा है-

'मैं गाय हूँ, मैं गाय हूँ, मिटता हुआ अध्याय हूँ,
लोग कहते माँ मगर, मैं तो बड़ी असहाय हूँ।
चाहिए सबको कमाई, बन गई दुनिया कसाई।
खून मेरा मत बहाओ, माँ को अपनी मत लजाओ।
बिन कन्हैया के धरा पर, भोगती अन्याय हूँ।
मैं गाय हूँ, मैं गाय हूँ।'

उधर कसाईखाने के सामने गांधी-विनोबा को मानने वाले लोग रोज प्रदर्शन कर रहे थे। पता नहीं, कब तक करते रहेंगे। गौ हत्याविरोधी प्रदर्शन एक तमाशे जैसा भी हो गया है क्योंकि लोग गौ सेवा के नाम पर एक औपचारिकता निभाने चले आते हैं। यही कारण है कि जिन दानवों के खिलाफ आंदोलन चल रहा है, उन पर भी कुछ असर नहीं हो रहा। वे सरकारों, नेताओं, और प्रशासन को चंदे दे-दे कर निर्भीक-निर्लज्ज हो चुके हैं। तनावरहित हैं, क्योंकि वे मानते हैं कि उनका कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता। यह अजब-गजब लोकतांत्रिक देश है। लोग कहते हैं कि यहाँ लूटने वाले अक्सर मज़े में रहते हैं और लुटने वाले की कहीं कोई सुनवाई नहीं होती। आम आदमी 'भगवान के घर देर है, अंधेर नही है' के 'झुनझुने' के सहारे जीवन काट देता है। गाय का सवाल भी इसी भरोसे हल होने की प्रतीक्षा में है। फिर भी...कुछ आस्थावादी लोगों को-और मुझे तो-पक्का यकीन है कि

एक न एक दिन कोई ऐसी महान सरकार ज़रूर आएगी जो गाय को 'राष्ट्रीय धरोहर' घोषित करेगी....

गौ वध बंद होगा....

भारत 'गौ राष्ट्र' के रूप में पूरी दुनिया में पहचाना जाएगा। .....

एक न एक दिन लोग हर तरह की जीव-हिंसा के सवाल पर सोचेंगे ज़रूर। ऐसा नहीं कि गाय को बचाना है तो भैंसों की बलि देनी है। गौ वंश बचे, सारा पशु-धन बचे.....

एक न एक दिन पत्थर पिघलेगा...

मन के किसी कोने में सुप्त-सी पड़ी करुणा जागेगी....

अंतत: जीतेगी अहिंसा ही। यह खूबसूरत दुनिया अहिंसा के सहारे ही सुखमय और आधुनिक बन सकेगी। .....

बस, इसी 'कल' की प्रतीक्षा में गोपाल और श्रीराम के देश की हम बे-चारी गायें अपना 'आज' कुरबान कर रही हैं।

■■

संदर्भ सूची एवं हार्दिक आभार..

(1) 'कल्याण' का 'गौ अंक' , गीताप्रेस, गोरखपुर (2) 'रामचरित मानस' -गोस्वामी तुलसीदास (3)'गौपालन'- संकलक / लेखक -आरसी पुरोहित (4) 'गोधन' मासिक पत्रिका, दिल्ली (5) 'युगनिर्माण योजना', मथुरा का गो विज्ञान विशेषांक (6) 'कत्लखाने: सौ तथ्य' - डॉ. नेमीचंद्र (7) 'कामधेनु विज्ञान', रायपुर (8) 'गौसेवा के चमत्कार',गीता प्रेस गोरखपुर (9) 'गोपाल', गीता प्रेस गोरखपुर (10) 'शांतिसेवक' पत्रिका, मुंबई (11) 'किसान और गाय' -स्वामी रामसुखदास (12)'अथ गो करुणानिधि:' - स्वामी दयानंद सरस्वती (13) 'गो हत्या यानी भारत की हत्या' - प्रीति पोरवाल (14) *पेटा* की वेबसाइट (15) गौ सेवा संबंधित अनेक आयोजनों में सहभागिता एवं गौशालाओं का भ्रमण (16) छत्तीसगढ़ गो सेवा आयोग एवं अध्यक्ष प्रेम सिंघानिया,रायपुर (17) मासिक पर्यावरण ऊर्जा टाइम्स, रायपुर (18) 'क' कला पत्रिका का 'सुसज्जित गाय विशेषांक', नई दिल्ली (19) सर्वश्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय,बेनीमाधव तिवारी, दिनकर केशव भाकरे, केयूरभूषण, राधाकृष्ण गुप्ता, हरिभाई जोशी, आरजी राव, केवीआर शर्मा, मुजफ्फर अली, प्रेमशंकर गौटिया, मनमोहन सिंह सैलानी, शशि वरवंडकर,डॉ. सुरेखा ठक्कर, डॉ. मंजुला उपाध्याय, रामानंद अग्रवाल (सभी रायपुर) श्री ओमप्रकाश (लखनऊ) डॉ. कमलकिशोर गोयनका (दिल्ली) डॉ. देवेंद्र दीपक (भोपाल), झूमरलाल टावरी, ठाकुर गौतमसिंह,(खुर्सीपार, भिलाई) डॉ. राजेश कपूर, (सोलन),चंदूलाल जैन (धमतरी) रवींद्र गिन्नौरे (भाटापारा), अरुण (नैनी, इलाहाबाद), सामलियाप्रसाद सराफ, सतीश उपाध्याय (मनेंद्रगढ़) डॉ. डीपी अग्रवाल, सीताराम अग्रवाल(बिलासपुर) (20) लोकप्रभा पाक्षिक, तेलुगु, हैदराबाद (21) आनंदवन, पथमेड़ा की वेबसाइट एवं पत्रिका कामधेनु कल्याण (22) गो ग्रास, वर्धा (23) साप्ताहिक विकलांग संदेश, बिलासपुर (24) पशुपति कल्याण परिषद, उदयपुर (25) पीपुल्स फॉर एनीमल्स का पर्चा, सिरोही (26) मड़ई पत्रिका, बिलासपुर (27) गो-सुषमा, मुंबई (28) पौराणिक एवं आधुनिक गौभक्ति कथाएँ- विकास दवे (29)विश्वमंगल गो ग्राम यात्रा की स्मारिका-2010 (30) कल्याण का वेद कथांक।

(बहुत संभव है कि कुछ महानुभावों के नाम छूटगए हों। उनसे सादर क्षमायाचना)